भारतीय चित्रकला में

मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार

एक दिग्दर्शन

चित्रकला संकाय में

पीएच.डी.

उपाधि हेतु

शोध प्रबन्ध

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

झाँसी (उत्तर प्रदेश)

2006

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) संध्या पाण्डेय

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

चित्रकला विभाग

शासकीय कमला राजा कन्या स्वशासी

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

शोधार्थी

मीनल मिश्रा

पूज्यनीय
गुरुजनों, नानाजी
एवं
पापा
को सादर समर्पित
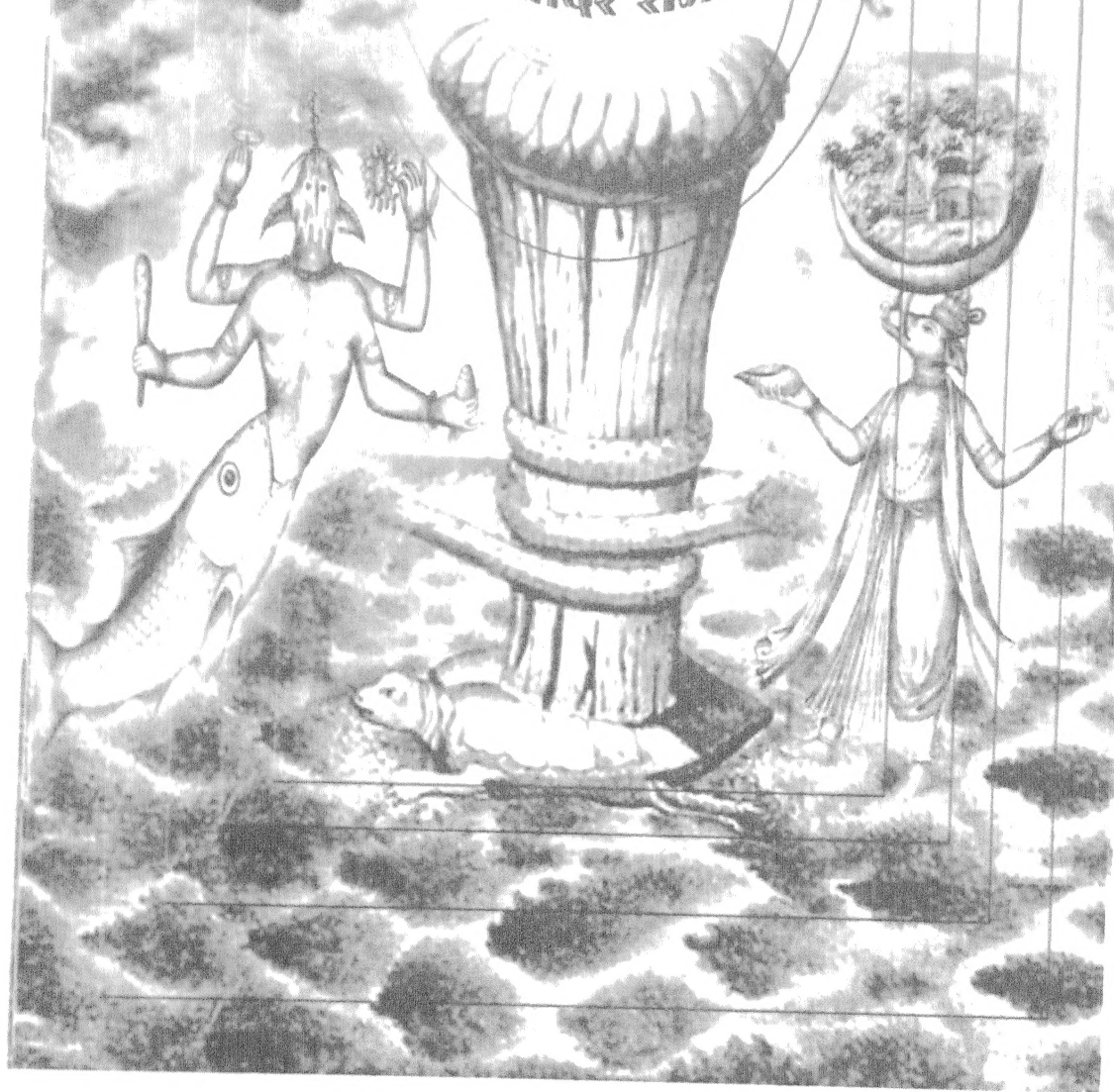
Declaration By The Candidate

I declare that the thesis entitled "भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं बराह अवतार एक दिग्दर्शन" is my own work conducted under the supervision of Dr. (Smt.) Sandhya Pandey, Prof. & Head Department of Drawing & Painting, K.R.G. College, Gwalior (M.P.), approved by Research Degree Committee Bundelkhand University, Jhansi (Centre), I have put in more than 200 days of attendance with the supervisor.

I further declare that to the best of my knowledge the thesis does not contain any part of any work which has been submitted for the award of any degree either in this University or in any other University/Deemed University without proper citation.

Signature of the Supervisor

Dr. (Smt.) Sandhya Pandey
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
चित्रकला विभाग
शासकीय कमला राजा कन्या स्वशासी
[illegible] ग्वालियर (म.प्र.)

Signature of the Candidate

Meenal Mishra

Meenal Mishra

Certificate of the Supervisor

Certificate

This is to certify that the work entitled "भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार एक दिग्दर्शन" is a piece of research work done by Meenal Mishra under my guidance and supervision for the degree of Doctor of Philosophy of Bundelkhand University, Jhansi (U.P.). That the candidate has put-in an attendance of more than 200 days with me.

To the best of my knowledge and belief the thesis :

1. Embodies the work of candidate herself.
2. Has duly been completed.
3. Fulfills the requirements of Ordinance relating to the Ph.D. degree of the University, and
4. Is upto the standard both in respect of contents and language for being referred to the examiner.

Signature of the Supervisor

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
चित्रकला विभाग
शासकीय कमला राजा कन्या स्वशासी

अनुकम्पिका

अणुक्रमणिका

प्राक्कथन

भारतीय चित्रकला प्राचीन काल से ही धर्म पर आधारित रही है जिसमें सनातनधर्म की विशेष भूमिका है। अजन्ता के चित्रों में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्रों का अंकन, भित्तियों पर सुरूचिपूर्ण ढंग से किया गया है। इसी प्रकार जैन धर्मान्तर्गत महावीर एवं अन्य देवताओं का पदानुसार एवं उनके चिन्हानुसार चित्रण मिलता है। इसी क्रम में वैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत, विष्णु के विभिन्न अवतारों को, उनके लक्षणों एवं घटनाक्रमों के अनुसार, भारतीय चित्रकला भी विभिन्न शैलियों की विशेषताओं के अनुरूप, चित्रकारों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से दर्शाया है।

सनातन धर्म से प्रारंभ से ही प्रेरित शोधार्थी को विष्णु के विभिन्न प्राणियों के रूप में अवतार लेना और उन पर भारत के महानतम ग्रंथों पुराणों और उपनिषदों की रचना किया जाना सदैव ही आकर्षित करता रहा। इसके अतिरिक्त शोधार्थी चित्रकला विषय की अध्येता होने के कारण भारतीय चित्रकला में विष्णु अवतारों के चित्रणों के विभिन्न रूपांकनों से भी प्रेषित होती रही। अतः स्नाताकोत्तर उपाधि के पश्चात् अपनी प्रेरणामयी मार्गदर्शिका डॉ. (श्रीमती) संध्या पाण्डेय के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत कर अंततः उनकी सहज अनुमति प्राप्त कर शोधार्थी ने विष्णु के महत्वपूर्ण अवतारों का शोध विषय, ईश्वर की कृपा रूप मानते हुए अपना लक्ष्य बनाया।

सम्पूर्ण भारत में परम्परागत भारतीय शैलियों में बने अवतार चित्र, पाश्चात्य यथार्थवादी शैलियों से प्रेरित अवतार चित्र एवं नवीन चेतना के विशेष

सन्दर्भ में पल्लवित एवं प्रचलित कला शैली के सर्वांगीण तत्वों के अध्ययन विश्लेषण का वामन प्रयास, प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य है।

यह सनातन धर्म की महानता है कि इसमें पृथ्वी पर स्थित समस्त जीवों को एक ही धरातल प्रदान किया गया है। शोध विषय के अन्तर्गत पृथक–पृथक प्रकृति पशुओं का देवाकृति रूप में अंकन, तो कभी अर्ध रूप में श्री हरि का अंकन, तो कभी पूर्ण रूप में पशुअंकन से अवतार चित्रांकन, समस्त पशु जगत को महत्ता प्रदान करता है, तथा संसार में उत्पन्न समस्त प्राणियों के प्रति आत्मीय व सम्मानित दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है। जिनमें से चित्रकार ने विश्व मानव विकास क्रांति के क्रमानुसार मत्स्य (जलचर) कच्छप (उभयचर) तथा शूकर (थलचर) प्राणियों को धर्म का पूज्य धरातल प्रदान किया तथा उन चित्रों के समस्त विष्णु अवतार हमारे क्रमिक विकास की क्रान्ति को दर्शाते हैं। सर्व प्रथम जल जीवन के प्राणी (मत्स्य अवतार), फिर उभयचर प्राणी (कच्छप अवतार), अंत में थलचर प्राणी (नरसिंह अवतार), तत्पश्चात् कम ऊंचाई वाला मनुष्य (वामन अवतार), इसके बाद मजबूत कद काठी वाला मनुष्य (परशुराम अवतार), सामाजिक पुरुष (श्री राम), ऐसा मनुष्य जिसके पास व्यवसाय हो (बलराम अवतार), नायक पुरुष (श्री कृष्ण) एवं कलयुग में उत्पन्न होने वाला (कल्कि अवतार)।

शोध प्रबंध को सारगर्भित बनाने हेतु पूर्वोक्त अवतारों के अतिरिक्त विष्णु के अन्य अवतारों के भी रचना काल, वेश भूषा आभूषण, आयुद्ध, रंग संयोजन, दृश्य संयोजन में इनका चित्रांकन, इनसे जुड़ी धार्मिक मान्यताऐं एवं कथानक व इनके अर्ध मानवीय दैवीय एवं पशु स्वरूप आदि का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत शोधग्रंथ विषयाध्यन के आधार पर छह अध्यायों में विभक्त किया गया है जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है। भाग एक – प्रथम अध्याय में ''भारतीय चित्रकला में अवतारों का चित्रण'' पुराणों में वर्णित कथानुसार किया गया है एवं उनसे जुड़ी धार्मिक मान्यताओं तथा किवदन्तियों को भी आवश्यकतानुसार संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। विष्णु के अट्ठाईस अवतारों का पारम्परिक शैलियों तथा समकालीन कलाओं में भी चित्रांकन, इस अध्याय में उल्लेखित है।

द्वितीय अध्याय में ''भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार के चित्रों का अध्ययन सुविधा की दृष्टि से सम्पूर्ण भारत की चित्रकला को प्रदेशानुसार चित्र शैलियों में अवतार चित्रों का विवरण प्रस्तुत करने का अक्षुण्ण प्रास किया गया है।

तृतीय अध्याय में मध्यकाल में अपभ्रंश शैली तथा बुन्देली शैली के अन्तर्गत कूर्म, वराह तथा मत्स्य अवतार के चित्रांकनों पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय के दो भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग में राजस्थानी चित्रकला को मेवाड़, मारवाड़, हाड़ोती तथा ढूंढार की चित्रकला तथा दूसरे भाग में पहाड़ी चित्रकला की वसोहली कांगड़ा, चम्बा, जम्मू, मानकोट, कुल्लू, कश्मीर, गढ़वाल, शैलियों में निर्मित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार चित्रों का अध्ययन विश्लेषण किया गया।

पंचम अध्याय में लोक कलाओं में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह आकृतियों का वर्णन है। लोककलाओं के वर्णन में कोहवर कला को विशेष स्थान दिया गया है।

षष्ठम् अध्याय में भारत की विभिन्न शैलियों में चित्रित मत्स्य कूर्म एवं वराह अवतार आकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है। प्रस्तुतशोध प्रबंध को आकर्षक एवं रूचिकर बनाने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वयं के ग्राफिक्सों का प्रयोग किया किया गया है।

सर्व प्रथम भगवान के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूं।

''यस्यालीयत शल्कसी अग्निजलधिः
पृष्ठे जगन्मण्डल दृष्टया धरजी नखे
दिति सु धाधीशः पदे रोधसी
क्रोध क्षत्रगणः शरे दशमुखः
पाणौ प्रलम्वासुरो
ध्याने विश्वमया व धार्मिक कुलं
कस्मै चिदस्मै नमः।''

भावार्थ – जिसके शल्क में समुद्र, पीठ में संसार, रीढ़ में धरती, नाखून में हिरण्य कश्यप, पैरों में तीनों लोक, क्रोध में क्षत्रिय गणः, तीर में रावण एवं हाथ में प्रलम्ब राक्षस समा गया, उनको मेरा नमस्कार है।

इस प्रयास को सफल बनाने में मार्गदर्शिका (शोधार्थी की प्रेरणा तथा आदर्श गुरू) **डॉ. (श्रीमती) संध्या पाण्डेय,** प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग, कमलाराजा, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र. के प्रति हृदय की गहराई से ऋणी हूं। यह मेरा सौभाग्य है कि अति व्यस्त होते हुए भी उन्होंने मुझे अपना स्नेहिल मार्गदर्शन प्रदान किया साथ ही मैं **प्रो. आर.पी. पाण्डेय** सर की भी ऋणी हूं जिन्होंने जाने–अनजाने मुझे मार्गदर्शन दिया। आप दोनों का विद्वतापूर्ण

निर्देशन एवं सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है। आपका ममतामयी स्नेहिल सौम्य शांत, सरल व्यक्तित्व मुझे हमेशा सीखने के लिए प्रोत्साहित करता रहा, साथ ही आपने पग–पग पर मुझे जीवन में काम आने वाला ज्ञानार्जन भी प्रदान किया। अतः आप दोनों की मैं आजन्म ऋणी रहूंगी।

इस शोध प्रबंध की पूर्णता हेतु आदरणीय एवं स्नेहमयी दीदी **(डॉ.) आरती शुक्ला** का विशेष सहयोग एवं मेरी सहकर्मी डॉ. सुनीता एवं रवि सर का सहयोग भी सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

मैं अपने समस्त बड़े बुजुर्गों, बड़े सास–ससुर, मम्मीजी– पापाजी, ननद–नन्देऊ जी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं। इनसे प्राप्त अनुमति, आशीर्वाद के लिए आभारी हूं।

मेरी प्रथम गुरु, जन्मदायनी माता **श्रीमती जयप्रभा मिश्रा** को मेरा शतशत नमन् यह शोध ग्रंथ मेरी माता द्वारा किये गये जीवन तप का ही प्रतिफल है। मैं अपने बड़े भाई एवं दोनों बड़े दीदी–जीजाजी की सदैव आभारी हूं, क्योंकि समय–समय पर उनका स्नेहिल सहयोगपूर्ण वरदहस्त मैंने अपने साथ पाया।

शोध कार्य में प्रमोद, प्रदीप, राहुल, महेन्द्र, नीटू एवं दिनेश भइया का सहयोग सदैव स्मरण रहेगा। डॉ. चाचा, पुरोहित मोसा जी, राकेश अंकल तथा शिशु मामा जी एवं उनके परिवार के समस्त सदस्यों विशेष रूप से बहिन सोनिया, भाभियों, भतीजी शैली और शिल्पा के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूं।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में भारतीय चित्रकला के भित्ति चित्रों, सचित्र ग्रन्थों,

लघु चित्रों की विपुल. सामग्री, पटचित्रों, लोककला की प्रतियों की खोजबीन में, जयपुर, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, कर्नाटक, बम्बई, आगरा, ओरछा, दतिया, कुल्लु, जम्मू, झांसी, ग्वालियर, देवगढ़, रायपुर आदि के मंदिरों महलों, विभिन्न संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों, सूरत कुण्ड, राष्ट्रीय पुस्तक मेला एवं अन्य पुस्तक बाजारों आदि क्षेत्रों का भ्रमण करने में, विभिन्न पुस्तकालयों में अध्ययन के दौरान मेरी दो–पांच महिने की नन्हीं बेटी वैष्णवी को सम्भालने में मां और पति की विशेष भूमिका रही। जिसकी कृतज्ञता मात्र ज्ञापित करके ही, उनके इस ऋण से मुक्त नहीं हो सकती। इन पुस्तकालयों के अध्ययन में राष्ट्रीयसंग्रहालय में प्रतिभा परासर की अनुमति से चौबे जी के समक्ष मुझे रंगीन चित्रों की प्रति हेतु स्वयं का प्रिन्टर इस्तमाल करने की अनुमति प्राप्त हुई।

ललितकला भवन के पुस्तकालय में मुझे मेरी बेटी सहित ग्रंथों के अध्ययन की अनुमति प्राप्त हुई। इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्ट्रल ऑफ आर्ट में भी मुझे वैष्णवी को साथ रखते हुए, अध्यापन की सुविधा मिली।

मॉर्डन आर्ट गैलरी दिल्ली, भारत भवन भोपाल, माधवराव पुस्तकालय ग्वालियर, झांसी संग्रहालय व राजकीय पुस्तकालयों से भी मुझे सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ जिससे मैं अपना शोध कार्य पूर्ण कर सकी, अपना आभार व्यक्त करती हूं।

इसी क्रम में मैं शर्जिल खान, भार्गव कम्प्यूटर, थाटीपुर चौराहा, मुरार ग्वालियर की भी आभारी हूँ जिन्होंने अल्प समय में इस शोध का टंकण कार्य पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध मेरे जीवनसाथी **श्री प्रतीक तिवारी** की सतत् प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का परिणाम है। जिनके अमूल्य सहयोग से मैं यह दुरूह कार्य पूर्ण कर सकी।

मैं अपने इस शोध प्रबंध की पूर्णता के लिए सर्वाधिक आभारी अपनी ''नन्ही सी मासूम पुत्री वै**ष्णवी** की हूं जिसने अपने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आठ माह की आयु में मुझे इतना अधिक सहयोग दिया है जो अविस्मरणीय रहेगा। जिस समय उसका एक मात्र का अधिकार अपनी मां पर था, उसने मुझे शोध कार्य का अवसर प्रदान किया तथा नन्ही सी उम्र में यह सिद्ध भी कर दिया कि लड़कियां सदैव मां की सहायक होती हैं।''

इस शोध कार्यकाल में कई परिचितों, मित्रों तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्राप्त सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूं।

विश्वदूती

चित्र–सूची

विशाल भारत

विषय प्रवेश

कला और धर्म

कलाओं का जन्म ही धर्म के साथ हुआ और धर्म ने कलाओं के माध्यम से ही अपनी धार्मिक मान्यताओं को जनसमुदाय तक पहुंचाया।

चित्र के माध्यम से ही कलाकार ने अदृश्य शक्तियों को साकार स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार यह तो निश्चित है कि प्राचीन धार्मिक परम्पराओं को संचालित करने में कला ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।[1]

कला और धर्म में से पहले कौन आया? शायद इसका निर्णय न हो सका। सम्भवतः ये दोनों आदिम व्यवस्था में कुछ अन्तर से प्रकट हुए – ''कला सौन्दर्य रूप–सभ्यता को लेकर विनोद से इठलाती हुई और धर्म, मर्यादा एवं विधि–निषेध का मापदण्ड हाथ में लिए अकड़ता हुआ।''[2]

आदिकाल से ही मनुष्य ने प्राकृतिक–अदृश्य शक्तियों को पूजने हेतु कन्दराओं की भित्तियों पर एवं प्रस्तर के लघु खण्डों पर भित्ति चित्रांकन कर निराकार स्वरूप को आकार देने का सम्भवत् प्रयास किया।

आदिमानव प्राकृतिक–अदृश्य शक्तियों से प्रसव एवं सुखी जीवन की कामना के लिये उपासना करता था और उसने भित्ति चित्रकला को उसका

माध्यम बनाया। इस प्रकार आध्यात्मिक एवं यातुक शरीर के स्वरूप, कल्पना एवं साज–सज्जा के अतिरिक्त दैनिक क्रियाओं के विषय की भित्ति चित्रकला का माध्यम बनी, जिसने कला में अपना प्रचुर सहयोग दिया।

अनादि काल से कला और धर्म में गूढ़ सम्बन्ध रहा है। प्रकृति में दृष्टिगोचर होने वाली अनन्त शक्तियाँ , आदि मानव की भय भावना की पुष्टि करती रही। बुरे कर्मो से मनुष्य को बचाने के अभिप्राय से प्रभु के क्रोध की कल्पना, ईश्वरीय आदेश के रूप में हुई इन समस्त धार्मिक तत्वों ने कलाओं को जितना संवारा उतना अन्य किसी मानवीय कर्म ने नही।

कला शब्द का अर्थ हृदय में उठने वाली भावनाओं से है। 'क' अर्थात् आनंद 'ल' अर्थात् देना (लाना) अतः कला का अर्थ मानव को आनन्द प्रदान करना है।

'धत्र' = धारण करना, इस धातु से धर्म शब्द बनता है।

धर्म शब्द की व्याख्या इस प्रकार :–

'धरति लोकान् धियते पुणयात्मानिः इति वा'

अर्थात् :–

जो लोकों को धारण करता है अथवा जो पुण्यात्माओं द्वारा धारण किया जाता है, वह धर्म है।[3] धर्म द्वारा अभ्युदय (लौकिक सुख प्राप्ति) एवं निःश्रेय (अत्यन्त उच्चतर सुख मोक्ष की प्राप्ति) है।

सुख वान्दछन्ति सर्वे हि तच्च धर्म समुद्रवम्।
तस्माद् धर्मः सदा कार्यः सर्ववर्णः प्रयन्नतः।।

अर्थात :–

सभी प्राणी सुख की इच्छा रखते हैं और वह सुख धर्म से ही उत्पन्न होता है। अतः समस्त वर्णो को सदैव प्रयत्न पूर्वक धर्म का ही आचरण करना चाहिये।[4] धर्म और कला दोनों का ही लक्ष्य मनुष्य को सुखमय जीवन प्रदान करना है। वेद और पुराणों में उनकी उत्पत्ति से सम्बन्धित लिखित कथानक इस तथ्य का प्रमाण है।

"ब्रम्ह्य ने सर्वप्रथम प्रजापति तथा ऋषियों को उत्पन्न किया तत्पश्चात् संध्या नामक कन्या को जन्म दिया। तदन्तर सुप्रसिद्ध मदन को जिसे ऋषियों ने मंथन नाम दिया उन मदन देवता को ब्रह्य ने वरदान दिया कि उनके बाणों के लक्ष्य से कोई नहीं बच सकता इसलिये सृष्टि की रचना में वे सहयोग प्रदान करे। मदन ने इसे सहर्ष स्वीकार कर अपने वाणों का प्रथम प्रयोग ब्रह्य एवं संध्या पर किया जिसके परिणामस्वरूप वे कामक्रीड़ा से पीड़ित हो गये और अपने प्रथम समागम में ब्रह्य के 49 भाव हुए। इस प्रकार ब्रह्य एवं संध्या ने जिन वस्तुओं को जन्म दिया उनमें 64 कलाऐं भी थीं।"[5]

इसके साथ ही परब्रह्म ने अपने अर्न्तमन में सृष्टि निर्माण हेतु मनुष्य की रचना करने का विचार किया। तत्पश्चात् उन प्रजाओं (मनुष्य) की रक्षा का उपाय भी सोचने लगे। और इसी विचार मग्न अवस्था में ही उनके दक्षिण अंग

से श्वेतरंगीय अनुलेपन धारण किये चार पदयुक्त पुरूष प्रकट हुए, वह कानों में श्वेत कुण्डल एवं गले में श्वेत माला पहने हुए उसकी आकृति वृषभ समान थी। इसके पश्चात् वही मनुष्य के सतयुग में चार चरण सत्य, शौच, तप, दान हुए। त्रेता में तीन पैर एवं द्वापर में दो पद युक्त बना और कलियुग में वह दानरूपी एक पैर से ही प्रजा का भरण पोषण करने लगा।

ब्राम्हणों के लिये उसने अध्ययन, अध्यापन एवं यज्ञादि छः रूप बनाए। क्षत्रियों के लिए दानद्व यजन एवं अध्ययन इन तीन रूपों से, वैश्यों के लिए दो रूपों से तथा शूद्रों के लिये केवल एक रूप से सम्पन्न होकर सर्वत्र विचरने लगा।

वेद में कहा गया है – संहिता, पद और कर्म, ये तीन उसके सींग हैं। आदि और अंत में स्थान पाये हुए दो सिरों से वह शोभा पाता है। उसकी सप्त भुजा है। उदात्त, अनुदात्र और स्वरित इन तीन स्वरों से वह सदा बद्ध रहता है। अतः इस तरह से वह धर्म से परिपूर्ण (व्यवस्थित) हुआ।[6]

अतः पुराणों के आधार पर कहा जा सकता है कि, कला और धर्म दोनों ही परमब्रम्ह की सन्तान है। विभिन्न विद्वानों ने कला और धर्म को निम्न प्रकार से परिभाषित किया हैः–

1. ''सच्ची कलाकृति दैवीय पूर्णता की प्रतिकृति होती है।''

माइकल ऐंजिलो

2. "जो सत्य है जो सुन्दर है, वही कला है।"

रविन्द्र नाथ टैगोर

3. "कला आत्माभिव्यक्ति का माध्यम है।"

हर्बट रीड

भारतीय वांग्डमय में 'कला' शब्द का प्रथमत् प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। (ऋग 8.47/16) इसके पश्चात शत्पथ ब्राह्यण तेत्रीय ब्राह्यण आरण्यक और अर्थवेद में भी 'कला' शब्द का प्रयोग हुआ है। गौरतलब यह है कि यूनानियों की भांति 'कला' का उपयोग शिल्प के रूप नहीं पाया गया। भारतीय अवधारणा भी दर्शन के निकट अधिक रही लौकिक के नहीं।

भारत की 90 प्रतिशत कला का धर्म से सम्बन्ध है एवं धार्मिक विषयों पर आधारित हैं। इस तथ्य के प्रमाण स्वरूप हम कह सकते हैं, कि चाहे वह अजन्ता एलोरा की वौद्धकालीन कला हो, अथवा मुगल कालीन, भित्ति चित्र, शिलालेख, सुलिपि एवं कुण्डल (स्क्रॉल) चित्र, ये सभी कलाएं धर्म से जुड़ी रही। इन कलाओं ने धर्म एवं धार्मिक ग्रंथों के प्रचार–प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली, कम्पनी शैली के साथ–साथ भारत के अन्य किसी भी क्षेत्र की कला का उद्देश्य धर्म को बढ़ावा देना एवं धर्मोपासना ही रहा। "भारतीय धार्मिक कथायें कभी पुरानी नहीं होती, वे सदैव प्रेरणा स्त्रोत बनी रही हैं। उदाहरण स्वरूप 'श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं।"[7]

भारतीय कला 'उपासना' के रूप में होती है। कलाकार का धर्म, कला की उपासना, सौन्दर्य एवं सौन्दर्य के रूप में ईश्वर की उपासना करना है। यह–उपासना चित्र का 'आनन्द' देने वाली है।[8]

जब संसार में धर्म का प्रादुर्भाव हुआ था, तब संसार में केवल एक ही धर्म नहीं था, वरन् कई धर्म थे। अतः सुखमय जीवन व्यतीत करने हेतु मनुष्यों ने अनेक मार्ग खोजे, जिनमें से एक मार्ग 'कला' भी था। यदि कला को हम धर्म कह दें, तो अतिश्योक्ति पूर्ण न होगा क्योंकि इस कलारूपी धर्म से हम एक ऐसे संसार की कल्पना करते हैं, ऐसे युग की कामना करते हैं जो हमारे सम्मुख जीवन के आदर्शो का उज्वल मार्ग स्थापित करें एवं शिव की साधना करके, समस्त बन्धनों से मुक्ति पाकर परम् आनन्द प्राप्त करे।

ऋग्वेद के 'ऊषा उपासना' प्रसंग में उपासना मंत्र में 'कला' शब्द आता है। यहां कला का अर्थ अंश से लिया गया है। अंश का अर्थ, परमात्मा का कला में निहित अंश भी हो सकता है।[9]

उपनिषद में कहा गया है 'यह सारा संसार एक कलाकृति है, जिसमें विराट, वृहत कलाकार के रूप में उपस्थित हैं, उसी परमात्मा के रूप चारों दिशायें भी है, ज्ञानी जन इन्हें इसी रूप में मानते हैं।'

'संसार में जो रूप एवं आकार विहीनता है, उसे दूर करना एवं दूर कर एक रूप सम्पन्न और अर्थपूर्ण विश्व का निर्माण करना, जो रचना कलाकार का यह उद्देश्य पूर्ण करती है, वही कला है।

कृति से सौन्दर्य का सृजन कला है, मनुष्य में जो कुछ भी उत्कृष्ट, प्रकृष्ट और मूल्य मंडित है वह कला के माध्यम से प्रकट शारीरिक रूप पाता है।'[10]

शुक्र नीति :– मूक भी जिसका रसास्वादन कर ले वह कला है, इस प्रकार भारतीय अवधारणा के अनुसारः

कला परब्रम्ह के निराकार से साकार रूप में लाने का साधन है।

व्यक्ति के मन में छिपी रूप सौन्दर्य की राशि को किसी भी रूप, आकार में अभिव्यक्त करना कला है।

कला सत्+1+चित्+1 आनन्द का योग है।[11]

यद्यपि भारतीय धर्म में विविधता है, किन्तु किसी ने भी कला सौन्दर्य से सम्बन्धित प्रश्न नहीं उठाये। धर्म ने कला का भरपूर उपयोग किया। मन्दिर मठों–स्तूपों का वास्तुशिल्प, मूर्तिकला, साज सज्जा सभी में कला का उपयोग हुआ। नृत्य संगीत भी उपासना का स्वरूप है। धर्म का दृष्टिकोण कलाओं के प्रति उदासीन ही रहा, पर कला ने धार्मिक प्रचार प्रसार में अपना योगदान दिया। और विषय वस्तु के लिये पौराणिक कथाओं को माध्यम बनाया। धर्म

कला की अवधारणाओं को बनाने का आधार रहा और उन्हें उदार–उदात स्वरूप दिया।[12]

''कलानां प्रवरं चित्रं, धर्म कामार्थ मोक्षदम्
भाग्लयं प्रथमम् हृदये गृहे यत्र प्रतिष्ठाम्''।[13]

अर्थात –

कला मोक्ष प्रदायिनी भी है और –कला एवं धर्म एक ही उद्देश्य हेतु अग्रसर भी है। धार्मिक अनुष्ठान, सामाजिक उत्सव और शुभयात्राओं में चित्रों की पूजा अर्चना को महत्व दिया गया है।[14]

प्रत्येक कलाकार अभिव्यक्ति के लिए दो उपादानों पर आधारित होता है, प्रथम– माध्यम एवं द्वितीय प्रेरणा माध्यम के रूप में वह शब्द, स्वर, रूप, रंग आदि का सहारा लेता है और प्रेरणा के लिए वह कभी धर्म, प्रकृति, समाज, इतिहास, साहित्य का आश्रय लेता है।[15]

भारतीय समाज का आधार स्तम्भ, धर्म ही है। धार्मिक मान्यताओं को उजागर करने तथा जनसामान्य द्वारा परमात्मा की भक्ति करने के लिये धर्म को अनेकों बार कला पर आधारित होना पड़ा वहीं दूसरी ओर धर्म कलाकार के जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन बनकर सबके सामने प्रस्तुत हुआ। चित्रकार ने समयानुसार धार्मिक चित्रों से सभी धर्मों के जनमानस वर्ग को संतुष्ट किया।[16]

केवल भारत में ही नहीं विश्व की लगभग सभी कलाओं में आदिकाल से कला और धर्म का साथ दिखाई देता है। इस तथ्य के प्रमाण हमें चीनी,

जापानी चित्रकला के अर्न्तगत जापानी स्क्रॉल पेन्टिंग (लपेट के रखे जाने वाले चित्र) कुण्डल चित्र में भी दिखाई देती है। स्क्रॉलों के माध्यम से साधु एवं धर्मानुयायियों ने अपने धर्म का प्रचार देश विदेश में किया। वही मिश्र के पिरामिड में मृतकोपासना, वैजेन्टाइन के चर्चों में ईसा मसीह के चित्र एवं मूर्तियां कला और धर्म के परिचायक है। आनंद कुमार स्वामी के अनुसार जीवन मूल्यों को धारण करने की पद्धति को धर्म कहा गया है।

धर्म में ईश्वर की पूजा एवं उपासना हेतु ही कलाकार कृति का सृजन करता है। उदाहरणस्वरूप वौद्धकालीन ऐलोरा की गुफाओं में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित मूर्तिकला, वास्तुकला एवं ईसाई धर्म में ईसा एवं मरियम की मूर्तियाँ मनुष्य की उपासना का प्रतीक हैं।

कुछ विद्वानों का मत है भारतीय कला, लोक परलोक के मध्य सेतु हैं। यहाँ अकवर के विचार उल्लेखनीय है। अकबर के अनुसार वह भी मानते है कि जब कलाकार कोई मानवाकृति का गठन करता है और उसमें प्राणों का संचार करने में स्वंय को असमर्थ पाता है, तो उसे परमात्मा का ध्यान आता हैं। हर्बट रीड के अनुसार कला धर्म का अनुकरण करने वाली मानी गई है। अतः हम कह सकते है कि भारतीय कला धर्म के निकट रही और चित्र कला का दर्शन आध्यात्म ही रहा है। बौद्ध, जैन धर्म के अनुयायियों ने धर्म के प्रचार हेतु कला

को माध्यम बनाया। बौद्ध अनुमत के समर्थकों ने भगवान बुद्ध की जातक कथाओं में छिपे संदेश को चित्रण द्वारा जनसामान्य तक पहुँचाया।[17]

वैष्णव भक्ति धारा के अन्तर्गत मध्यकालीन साहित्य और चित्रकला में अनेक रचनाऐं मिलती है 'चित्रदर्शन वैष्णव धर्म का प्रथम भक्ति भाव है और कीर्तन तदुपरान्त'[18] वैष्णव मत में अवतारवाद की प्रधानता है।

'अवतार'

"यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम
परित्राणाय साधनां विनाशाय च दुष्टकृताम
धर्म संस्थापनाथाय संभवामि युगे युगे"[19]

अर्थात् –

जब–जब धर्म की हानि होती और अधर्म की वृद्धि होती है तब –तब मैं अपने रूपों को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

साधु (सज्जन) पुरूषों का उद्वार करने के लिये पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिये एवं धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिये मैं युग–युग में प्रकट होता हूँ।

वेद पुराणों के अनुसार श्री हरि विष्णु के अनगिनत सौ से भी अधिक अवतारों का वर्णन मिलता है परन्तु उनमें से 10 अवतारों को ही महत्वपूर्ण माना गया है ये दस अवतार निम्न युगों में इस प्रकार है ।

चार अवतार क्रेता युग :– (1) मत्स्य (2) कूर्म (3)वराह (4) नरसिंह

तीन अवतार त्रेता युग :– (1) वामन (2) परशुराम (3) श्रीराम

दो अवतार द्वापर युग :–(1) श्री कृष्ण (2) बलराम

एक अवतार कलियुग :– कल्कि[20]

जब पृथ्वी पर जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था तब अवतारों की श्रृंखला में मत्स्य अवतार हुआ सर्वप्रथम जलचर (मत्स्य) उभयचर (कूर्म) उसके बाद छलचर (वराह) मनुष्य और पशु सम्मिलित स्वरूप जैसे (नरसिंह) कम ऊँचाई वाला मनुष्य (वामन) मजबूत कद काठी वाला मनुष्य (परशुराम) सामाजिक पुरूष (श्रीराम) ऐसा मनुष्य जिसके पास व्यवसाय हो (बलराम) नायक पुरूष (श्री कृष्ण) सन्देह जनक असत्यवाचक (कल्कि अवतार) उल्लेखनीय है।[21]

अतः इन मिश्रित अवतारों (मत्स्य, कूर्म, वराह) को अंग्रेजी विद्वान प्रकृति और सृष्टि के विकासवादी सिद्धान्त से जोड़ते है। मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह पुरातन पशु थे। ये जीवन को मछली, रेंगने वाले जन्तुओं और स्तनधारियों से होते हुए अर्ध मानव रूप में विकसित होने वाली प्रगति को दर्शाते हैं।[22]

नारायण ने सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड को दो भागों में बांटा। 3/4 में नित्य विभूति अर्थात् वैकुण्ठ 1/4 में लीला विभूति अर्थात पृथ्वी उसका क्रीड़ा स्थल है वह क्रीड़ा करने हेतु बारम्बार अवतरित होते हैं।[23]

अतः यह विश्व श्री हरि की लीला भूमि है।[24]

जैसे संगीत में आरोह अवरोह होते हैं कोई भी सुर सर्वप्रथम निम्न से चरम को प्राप्त कर पुनः निम्न की ओर अग्रसर होता है उसी प्रकार परमात्मा हमारे बीच किसी परिचित सी आकृति में अवतरित होकर अवतार कहलाते हैं वह जीवन निर्वाह करते हुए चरम की ओर अग्रसरित होते हैं और अपने उस कार्य के लिए जिसके लिए उन्होंने जन्म लिया है पूरा करके पुनः चरम अर्थात् वैकुण्ठ को प्राप्त होते हैं।

श्री हरि विष्णु भगवान धर्म की रक्षा बिना अवतार लिए हुए भी कर सकते हैं हमारी रक्षा के लिए सदैव तत्पर है और यही कारण था कि उन्होंने पृथ्वी पर प्राणी रूप में अवतरण किया जिससे वह हमें अपरिचित न लगे। अपने आपको साधारण बनाया जिससे हमें एहसास हो, कि हम कितने साधारण हैं वे हमारे बीच घर के सदस्य के समान आयें, ताकि हम उनका हाथ थाम कर उनका अनुसरण कर सके। अतः "श्री हरि विष्णु की चार भुजाओं में से दो भुजाऐं श्री नारायण एवं अन्य दो भुजायें लक्ष्मी जी की प्रतीक हैं।" 'शंख' उनका पवित्र वचन अथवा घोष का प्रतीक है। 'पदम' पुष्प संसार में रहते हुए

अलिप्त तथा पवित्र रहने का सूचक है। 'गदा' माया अर्थात् पाँच विकारों पर विजय का चिन्ह है। इन अलंकारों को धारण करने अर्थात् इनके रहस्य को जीवन में उतारने से नर 'श्री नारायण' नारी 'श्री लक्ष्मी' पद के तुल्य हैं।[25]

कतिपय मानस यह भी मानते हैं कि आरम्भ में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार ब्रम्ह से ही सम्बन्धित थे। जो कालान्तर में विष्णु उपासना की बढ़ती लोकप्रियता के कारण विष्णु से सम्बद्ध कर दिये गये। जिसके परिणामस्वरूप ब्रम्हा की लोकप्रियता कम होती गई। श्री हरि विष्णु के अवतारों की अनेक कथाओं का उल्लेख पौराणिक साहित्यों में मिलता है।[26]

ब्राह्मण ग्रंथों तक आते-आते महत्ता स्वयं के रूप में बढ़ जाती है। 'शतपथ ब्राह्मण' में विष्णु को वराह, मत्स्य और वामनरूप भी प्राप्त हुये एवं हरि, केशव, वासुदेव वृषभ और ऋषभ आदि नाम जो पहले इन्द्र के लिए आते थे, वे ब्राह्मण ग्रंथों में आकर विष्णु की विशेषताओं को बताने के लिए प्रयुक्त किए जाने लगे। इस प्रकार ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विष्णु इन्द्र की अपेक्षा अधिक महत्वशाली देवता बन गये। 'देवेन्द्र' पद इन्द्र से छीन के विष्णु के पास पहुंच गया।[27]

हिन्दु देवताओं में विष्णु को मुख्य देवता के रूप में स्थान दिया गया यद्यपि आरम्भिक वैदिक कालीन युग में उनकी गणना इन्द्र व अग्नि की भाँति न होकर सामान्य देवता की श्रेणी में की गई। लेकिन "वैदिक युग में विष्णु को

कहीं–कहीं आदित्य के समकक्ष भी रखा गया है जो अपने तीन पगों से प्रतिदिन दिन भर की यात्रा पूरी कर लिया करते हैं।[28] कहीं–कहीं इन्द्र के सखा के रूप में भी सबके सम्मुख प्रस्तुत हुए।[29]

श्री हरि विष्णु अपने अवतारों के कारण ही प्रसिद्ध नहीं हुए वरन् सम्पूर्ण सृष्टि के रचयिता ब्रम्हा का विष्णु के नाभि से उत्पन्न होना भी उनकी लोकप्रियता का परिचायक है। विष्णु का महत्व उनके अवतारों में ही नहीं, वरन् उनके नाभि कमल से ब्रम्हा की भी उत्पत्ति मान ली गयी है।[30]

अवतारवाद नारायण, कृष्ण, वासुदेव और विष्ण के समन्वय के बाद अधिक विकसित हुआ।[31] अवतारवाद ने वैष्णवमत के विकास की नई सीढ़ी सिद्ध हुआ। इसने वैष्णवमत को नई गति प्रदान की। पौराणिक साहित्य में अवतारवाद को नई ऊँचाई प्रदान की। यद्यपि अन्य विद्वानों ने विष्णु के अलग–अलग अवतार बताए। आरम्भ में छः अवतार थे जिन्हें बाद में दस माना। इनमें वराह, मत्स्य,कूर्म, नरसिंह, अवतारों की पशु तथा मानव के मिश्रण से रचना की गयी।[32]

महाभारत के शांति पर्व के छः 'नारायणीय खण्ड़' में विष्णु के अवतारों का उल्लेख अधिक स्पष्ट रूप से मिलता है गीता में भी इसका वर्णन किया गया है। श्री कृष्ण ने धर्म की पुनः स्थापना, साधुओं के (परित्राण उद्वार) और दुष्टों के विनाश हेतु अवतार लिया।

सनतकुमार ,नारायण, कृष्ण, नारद, पृथु और परशुराम ,सत्य अर्थो में ऋषि थे। ऋचाओं अर्ध मानव अवतारों को पुरातन ऋषि माना गया है । मत्स्य कूर्म ,नरसिंह आदि तो उनके वंश एवं गोत्रों के परिचायक मात्र है । इनमें से कुछ वर्णो के नाम उनके सम्बोधन सूचक नामों पर आधारित है । शौनक एवं मत्स्य इसी श्रेणी में रखें जा सकते है।[33]

अवतारवाद के सिद्धान्त में एक तथ्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है "किसी योनि में अवतार लेने के बाद भी अवतारी पुरूष अपने देवत्व और स्वंय के लिए विष्णु के अंशधारी होने के प्रति सदैव सजग रहता है।[34] और अपने कार्य की समाप्ति (जगत कल्याण) के पश्चात वह लीला को स्वयं में समाहित कर विष्णु में ही विलीन हो जाता है।[35]

वैष्णववाद के अवतारवाद में एक देव को प्रथम स्थान दिया गया है अतः एक देव से बहुदेववाद और बहुदेव वाद से एक देववाद के सिद्धान्त का वर्णन उपनिषदों में हैं।[36]

अवतारवाद में विश्वास करने के कारण वैष्णव दर्शन अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना हेतु विष्णु अवतरण को मानते हैं।

अवतार के भी चार प्रकार होते हैं :–

"व्यूह, विभव, आर्या अवतार और अन्तर्यामी अवतार"[37]

व्यूहवाद में श्रीकृष्ण परम स्वरूप में प्रकट होकर आस्था का केन्द्र बने हैं।[38] परमात्मा पृथ्वी पर दृश्य तो कभी अदृश्य रूप में प्रकट होते हैं अदृश्य रूप में वे हमारी आत्मा में सदैव विद्यमान रहते हैं यह उनका अन्तर्यामिन अवतार है और दृश्य रूप में प्रकट होने के लिए वह व्यूह, परा विभव आदि अवतार लेकर सबके सम्मुख प्रस्तुत हैं।[39] जहाँ व्यूह का अर्थ अद्भुत, विभव का अर्थ अवतारवाद से है। यह अवतारवाद ही चित्रकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है अन्य नहीं।

विभव (अवतारवाद) से तात्पर्य भगवान के उन अवतारों से है, जो समय–समय पर धारण किये गये। इसकी पुष्टि गीता ने भी की गई है।

अवतार तीन प्रकार के माने गये हैं :–

1. **पूर्णावतार :–**

इस अवतार से तात्पर्य राम और कृष्ण के लिये है जो समपूर्ण जीवन के लिये पृथ्वी पर आये।

2. **आवेशावतार :–**

इस अवतार से तात्पर्य परशुराम से है इन्होंने क्षत्रियों के गर्व को चूर करने हेतु मानवीय रूप में अवतार ग्रहण किया।

3. **अंशावतार :–.**

विष्णु के आयुध, शंख व चक्रादि जब भगवान के आदेश से जन्म लेकर संत साधु के रूप में अपने दैनिक कार्य को पूरा करते हैं तो वे अंशावतार कहे जाते हैं।

व्यासादि मुनियों ने छः प्रकार के अवतार उल्लेखित किये हैं जो इस प्रकार हैं अशांश अंश, आवेश, कला पूर्ण, परिपूर्ण कहे जा सकते हैं श्रीकृष्ण को परिपूर्ण अवतार माना गया है। इसके अतिरिक्त मारीचि व आदि अशांशवतार तथा अशांवतार ब्रम्हा है। कपिल, कूर्म प्रभृति को कलावतार की संज्ञा दी गई है। इसी प्रकार परशुराम को आवेशावतार कहा जाता है जबकि नर नारायण यज्ञ, वैकुण्ठ, नरसिंह, राम ये पूर्ण अवतार की श्रेणी में आते हैं।[40]

भिन्न–भिन्न पुराणों में अवतारों की संख्या और क्रम दिया गया जो 6 से बढ़कर 24 हुआ तो कहीं–कहीं उससे भी अधिक है। यद्यपि वर्तमान कालीन विद्वान अवतारों की संख्या दस ही मानते हैं और उनका क्रम इस प्रकार हैः–

"वनजो वनजौ सर्वेः त्रिरा भीसकृपोऽकपः।
अवतारा दशेवैते कृष्ण भगवान स्वयम्।।"[41]

भावार्थ :–

अवतार तो दस ही है वनजो (जल में उत्पन्न होने वाले दो अवतार मत्स्य तथा कच्छप)

वनजौ – (जंगल में पैदा होने वाले दो अवतार वराह तथा नरसिंह)

सर्वः (वामन) त्रिरा भी (तीन राम = परशुराम, दशरथीराम तथा बलराम, । सकृपः (कृपायुक्त अवतार बुद्ध) तथा अकृप (कृपाहीन अवतार – कल्कि)

दशावतारों के अतिरिक्त विष्णु के अनेक रूप हैं जैसे त्रिविक्रम गजग्राह, मोक्ष, योगी विष्णु, अष्टभुज, वैकुण्ठ, तथा विश्व रूप आदि उल्लेखनीय है।[42]

भागवत् पुराण में भी इस कथन की पुष्टि की गई है। दशावतारों के अतिरिक्त विष्णु के अन्य अवतार हैं जैसे :–

विश्वरूप	–	देव अवतार
यज्ञपुरूष	–	त्याग का अवतार
बालाजी	–	सूर्य पुत्र
धर्म	–	सत्यता का अवतार
धन्वंतरि	–	आकाशीय आयुर्वेद अवतार
मोहिनी	–	सौन्दर्य अवतार
हमसा	–	बुद्धिमान हंस
हयग्रीव	–	घोड़े के सिर वाला योद्धा
सनत कुमार	–	चार संत
नर नारायण	–	दो तपस्वी
दत्रात्रेय	–	योग व तन्त्र के जनक
नारद	–	देव मुनि (भक्ति अवतार)
व्यास	–	देवमुनि (भक्ति अवतार)
कपिल	–	सम्मुख दर्शन के जनक
ऋषभ	–	तीर्थंकर
बलराम	–	कृषि के देवता

पृथु	–	पृथ्वी के पालक
मधन्त	–	धर्म आश्रम और वर्ण के जनक[43]

अतः पुराणों में विष्णु के विभिन्न स्वरूपों, क्रिया कलापों और विभिन्न अवतारों का वर्णन प्रचुरता से दिखाई देता है।

पुराण

'पुराण'[44] इस देश की परम्परा के अतीत कालीन चित्र है। 'पुराण' शब्द को सामान्यतः प्राचीनकाल की वस्तुओं तथा कथाओं से जोड़ा गया है। 'पुरा भवम्' अथवा 'पुरा नियते' इस विग्रह से इसकी निष्पत्ति होती है। दोनों विग्रहों से उक्त अर्थ निष्पन्न होता है। प्राचीन आख्यान आदि के एकत्र संकलन का नाम 'पुराण' है। स्वयं पुराण में ही 'पुराण' के कई लक्षण दिये गये है।[45]

''सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वशों मन्वन्तराणि च।
वंशानुचारितन्चैव पुराणं पन्लक्षणम्।।''

अर्थात् –

1. सर्ग या सृष्टि 2. प्रतिसर्ग अर्थात् सृष्टि का विस्तार करने वाला तथा पुनः सृष्टि 3. सृष्टि आदि की वंशावली 4. विभिन्न मुनिओं की कलावधि 5. सूर्य और चन्द्र वंशों का इतिहास

यह पाँच विषय जिन ग्रंथों में मुख्यतः वर्णित है उन्हें 'पुराण' कहते हैं।

यद्यपि पुराणों के यही पाँच विषय और उनमें भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से सम्बन्धित लगभग सभी विषयों का विवेचन हुआ है।[46]

पुराण शब्द की उत्पत्ति "पुराणान् पुराणम" शब्द से हुई है जिसका अर्थ है – वेदों को पूरा करना।[47] अर्थवेद में पुराणों का वर्ण इस प्रकार उल्लेखित है–

"ऋचः समनि छन्दासि पुराण यजुषा सह।
उच्छिष्टाज्जषिरै सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।"

अर्थात् –
पुराणों की उत्पत्ति चारों वेदों के साथ हुई है।[48]

रामायणकाल में पुराण का अर्थ प्राचीन में की गई भविष्यवाणी से जोड़ा गया है, इस सृष्टि में जो कुछ चलित घटनाक्रम के सम्पूर्ण वृतान्त को पुराण में उल्लेखित किया गया है। शंकराचार्य के मतानुसार "सृष्टि प्रक्रिया में घटित वृतान्त का नाम पुराण" है।[49]

यद्यपि संस्कृत साहित्य में पुराण शब्द का अर्थ 'पुराना' है। सम्भवतः पुराणों का यह नाम उसके प्राचीन होने के कारण ही पड़ा होगा। " 'पुराण' भारतीय संस्कृति के विशेष कोष एवं आधार है।"[50]

"यस्मात् पुरा ध्वनि तीदं पुराणै ते न तत्स्मृतम
निरुक्त मस्त यो वैद सर्वपापैः प्रमुच्यते।"[51]

पदम् पुराण में इसे प्राचीन परम्परा का (द्योतक) कहा है।

"पुरा परम्परा वष्टि पुराणं तेन तत्स्मृतम।"[52]

अर्थात् जो उस समय भी पुराना अथवा प्राचीन था। इन पौरणिक साक्ष्यों के आधार पर स्पष्ट है कि 'पुराण' शब्द प्राचीनता का सूचक है।

यद्यपि देखा जाय तो पुराण साहित्य मूलरूप से उतना ही प्राचीन कहा जा सकता है जितना भारतीय वाङ्मय का कोई अन्य अंग। इस तथ्य की पुष्टि ब्राह्मणों, आरण्यों और उपनिषदों के उल्लेखों से हो जाती है।

सारे संसार की कलाओं में चित्रकारों ने पौराणिक कथाओं को समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान पाने हेतु प्रयोग किया। इस पौराणिक कथाओं का नायक अथवा नायिका जनसामान्य सदृश लेकिन वह आलौकिक आश्चर्यजनक घटनाओं को अंजाम देने में समर्थ थे।

पुराणों में पाई जाने वाली कथाओं का मूल आधार परमात्मा में आस्था ही है। आस्थावान समाज की कल्पना और अर्न्तचेतना से ही रसिक कथाओं का जन्म होता है। यद्यपि पौराणिक कथायें नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण है और यह आदर्श समाज के कल्याण में गूढ़ रूप से सहयोग प्रदान करती है। भारतीय पौराणिक कथाओं का मूलाधार पुराण रहे हैं यद्यपि जनसामान्य में वेदों और उपनिषदों के समान पुराण को उतना महत्व नहीं मिला तथापि पुराणों को भी प्रमाणिकता के आधार पर भारतीय समाज एवं संस्कृति में उच्च स्थान प्राप्त है। कई विद्वानों के मतानुसार वेदों के पश्चात् पुराणों का अंकन हुआ।[53]

"ऋग्यजुः सामायवरिण्या वेदाश्चत्वार उद्धतः।
इतिहास पुराण च पंचमो वेद उच्चते।।"

अर्थात् वेद व्यास जी के द्वारा ऋग, यजुर्व, साम और अथर्व नामक इन चार वेदों का उद्धार हुआ। इतिहास पुराणों को पांचवा वेद मानता है।

अतः इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पुराणों के रचयिता, ऋषि, देवर्षि आदि के चरित्रों के वक्ता, ब्रम्हाजी के मानस पुत्र मन्त्रद्रष्टा ऋषिगण को ही माना गया है।

कई विद्वानों के मतानुसार साहित्य में सत्यवती नन्दन श्रीकृष्ण द्वैपायान वेदव्यास जी को 18 पुराणों का कर्ता माना गया है। यहां कर्ता शब्द से अर्थ कार्य सम्पन्न करने वाले व्यक्ति से हैं, पद्मपुराण के रेखाखण्ड में कहा गया है–

"अष्टदशपुराणाना वक्ता सत्यवतीसुतः"

पुराणों की संख्या सर्वप्रथम एक थी जो शनैः–शनैः एक से बढ़कर अठारह हो गई है।

प्रत्येक द्वापर युग में उनका सम्पादन किया जाता रहा है इस समय तक 27 चतुर्युगी व्यतीत हो चुकी है तथा यह अट्ठाइसवी चतुर्थ युग का द्वापर युग भी व्यतीत हो चुका है अतः अब तक 28 व्यास हैं इन व्यासों के नाम विष्णु पुराण में इस प्रकार हैं:–

"द्वापरे प्रथमे व्यस्तस्यं वेदः स्वयम्भुवा
द्वितीय द्वापरे चैव वेद व्यास प्रजापति"[54]

1. ब्रम्हा 2. प्रजापति 3. शुक्राचार्य 4. ब्रहस्पति 5. सूर्य 6. मृत्यु 7. इन्द्र 8. वशिष्ठ 9. सारस्वत 10. त्रिधामा 11. त्रिशिख 12. भारद्वाज 13. अन्तरिक्ष 14. वर्णीद्व 15. त्रययारूण 16. धनन्जय 17. क्रतुन्जय 18. जय 19. भरद्वाज 20. गौतम, 21. ध्र्यात्मा 22. पाराशर 23. जातुकर्ष 24. कृष्ण 25 द्वैपायन[55]

ब्रम्हा जी जिस पुराण के स्मृता है वह एक अर्वश्लोक संख्या वाला पुराण है। जो संख्या में पहले एक था।

''पुराणं सर्वशास्त्राणां प्रथमं ब्रम्हाण स्मृतम्।
अनन्तरं च वक्रत्रभ्यो वेदास्तस्य विनिः सृताः।।''[56]

''मद्वयं भद्वंय चैव व्रत्रय ववतुष्टयम्।
अनापलिंग कुस्कानि पुराणानि पृथक – पृथक।।''

अर्थात् मकरादि दो पुराण (मार्कण्डेय तथा मत्स्य)

भकरांदि दो पुराण (भगवत तथा भविष्य), ब्रकारादि तीन पुराण (ब्रम्ह, ब्रम्हाण्ड और ब्रम्हवैवर्त), वकारादि चार पुराण (विष्णु, वामन, बराह और वायु, अ (अग्नि) नौ (नारदीय) प (पद्म) लिङ़ (लिङ़ग) ग (गरूण) कू (कूर्म) तथा स्क (स्कन्द) ये अष्टादश पुराणों के पृथक–पृथक नाम हैं।[57]

इसमें अधिकांशतः वैष्णव और शैव धर्म से सम्बन्धित हैं पद्म, ब्रह्मवैवर्त और विष्णु मुख्यतः वैष्णव पुराण है, भगवत पुराण, मत्स्य व कूर्म पुराण में भी विष्णु के अवतारों का वर्णन देखने को मिलता है। वायु तथा अग्नि पुराण भी इसी श्रेणी में आते हैं।

इन अट्ठाइस महापुराणों के अतिरिक्त अठारह उपपुराण भी है। इनके नाम इस प्रकार हैं :— 1. सनत कुमार 2. नरसिंह 3. नन्दी 4. शिवधर्म 5. दुर्वासा 6. नारद 7. कपिल 8. मानव 9. उपानस 10. ब्रहमाण्ड 11. वरूण 12. काली (कलिका) 13. वशिष्ठ 14. साम्ब 15. सौर 16. पाराशर 17. मारीच 18. भार्गव पुराण।[58]

शैव धर्म से सम्बन्धित पुराणों में शिव के अवतारों का उल्लेख है एवं विष्णु के अवतार ग्रहण करने का विवरण विष्णु पुराण में वर्णित हैं।

अतः सभी पुराण अवतार वाद का प्रतिपादन करते अवतारों से सम्बन्धित कथानक उपनिषदो, ब्राम्हण ग्रंथों एवं उपपुराणों में संक्षिप्त रूप में प्रदर्शित हैं।[59]

पुराणों का रचनाक्रम विविध स्थानों पर विभिन्नता लिए हुए हैं जिनमें से विष्णु पुराण में पाया जाने वाला क्रम अन्य पुराणों में पाये जाने वाले पुराण के क्रम से साम्य रखता है तथा अधिक प्रमाणित प्रतीत होता है। इसमें पुराणों की सूची में प्रथम स्थान पर ब्रम्हा एवं अंत में ब्रहमाण्ड हैं। कई पुराणों में ब्रहम, पद्म, विष्णु, भगवत, ब्रहमवैवर्त, कूर्म, मत्स्य बराह, गरूण, अग्नि एवं वायु पुराणों में श्री हरि विष्णु के अवतारों एवं पूजा विधि का उल्लेख मिलता है।

वायु पुराण में लिखा है :—

"यज्ञे पुनः पुनर्विष्णु यज्ञे च शिथिलः प्रभुः।
कर्तु धर्मव्यवस्थानाम अद्यर्मस्य च नाशनम्।।"[60]

वायु पुराण में निम्नलिखित तथ्यों का विवरण इस प्रकार है:—

विष्णु के पृथ्वी पर अवतार लेने हेतु संभवत यही उद्देश्य था। जो देव सत्य भगवान पुराणों में पुराणात्मा के नाम से प्रशंसित है, जो शूकर का शरीर धारण कर इस पृथ्वी का उद्धार करते हैं एवं उद्धार करने के पश्चात पुनः देवताओं को समर्पित करते है, वह श्री हरि विष्णु ही हैं।

वराह कल्प में बारह युद्ध हुए जिनमें विष्णु और उनके अवतार सम्मिलित है इन युद्धों का वर्णन संक्षेप में किया गया है इसमें प्रथम युद्ध नृसिंह का था। दूसरे युद्ध में वामन का उल्लेख है भगवान वराह ने तीसरा युद्ध किया था। चौथा अमृत मंथन एवं पांचवा दारूण तारतम्य नामक संग्राम था। छठवा युद्ध आडवक और सातवां त्रिपुर दहन युद्ध का वर्णन है।[61]

वायु पुराण में कहा गया है कि श्री हरि विष्णु के तीसरे अवतार वराह अवतार में वराह भगवान ने अपनी ड़ाढ़ से धरा को समुद्र में से निकालकर उसका उद्धार किया।

यही श्लोक 'मत्स्य पुराण' में भी दिया गया है।

<u>आश्वमेधिक पर्व</u>

''बहवी संसारमणेः वै योनोर्वर्तामि सत्तम।
धर्मसंरक्षणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च।।''[62]

<u>वन पर्व</u>

''असता निग्रहार्थक धर्म संरक्षणाय च।
अवतीर्णो मनुष्याणामजायत यदुक्षाये
सं एवं भगवात विष्णु कृष्णेति परिकीर्त्यते।।''[63]

देवी भागवत

''यदा–यदा धर्मस्य ग्लानिर्भवति भू धर।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदा तेषान् विभार्म्यहम्।''[64]

ब्रम्हपुराण में गीता के पूर्वोक्तः वचनो में सद्वश वचन पाये जाते हैं।[65]

वैदिक ग्रंथों में अवतार तत्व की परिकल्पना के सर्वप्रथम दर्शन होते हैं श्रीमद् भागवत के कथनानुसार भगवान प्रथम अवतार 'पुरूष' हैं।[66] जिसका वर्णन ऋग्वेद के प्रख्यात पुरूष सूक्त में किया गया हैं। अवतारवाद[67] का वर्णन ऋग्वेद संहिता के अतिरिक्त ब्राम्हण ग्रंथों में विशेष रूप से वर्णित है। शतपथ ब्राह्मण में इस कथन की पुष्टि होती है। शतपथ ब्राम्हण में कहा गया है कि प्रजापति ने ही कूर्म, मत्स्य एवं वराह अवतार लिया था। ऐसा ही वर्णन 'तैत्तिरीय ब्राम्हण में भी किया गया है। रामायण में भी वराह अवतार का वर्णन मिलता है।[68]

महाभारत में वर्णित है कि ब्रम्हा ने मत्स्य रूप धारण किया था। विष्णु के अवतारों के बारे में अन्य विवरण हमें महाभारत एवं पुराणों में भी मिलता है। अवतारवाद के मौलिक तथ्य की जन्मदायनी गीता ही है। गीता में राम और कृष्ण के अवतार का स्पष्ट रूप से वर्णन मिलता है। महाभारत के नारायणी पर्व, शान्ती पर्व में दस अवतारों का उल्लेख है।

भगवान के अवतारों की संख्या के विषय में विद्वानों का मतैक्य नहीं हैं। प्रथम स्कन्ध के तृतीय अध्याय में अवतारों की संख्या 22 दी गई है। श्रीमद्

भागवत के दशम तथा एकादश स्कन्धों में अवतारों का वर्णन किया गया है। जिनमें उल्लेखनीय अवतार इस प्रकार हैं :–

नरनारायण, हंस, दत्तात्रेय, कुमार, ऋषभ, मत्स्य, वराह, कूर्म, गजेन्द्र मोक्षकर्ता, इन्द्र के शापमोचक, देवस्त्रियों के उद्धारक, नृसिंह, वामन, राम, सीतापति, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।[69]

हरिवंश पुराण के वैष्णव खण्ड में भी कार्तिकेय महात्म्य अवतारों का वर्णन देखने को मिलता है। श्री वराह पुराण में गोमुख द्वारा दस अवतारों का स्तवन है।

अतः अधिकांश पुराण वैष्णव मत के समर्थक हैं और उनमें अवतारों सम्बन्धी उल्लेख बहुतायात से मिलता हैं।

इस प्रकार विभिन्न उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि कला, धर्म एवं पुराणों का सह सम्बन्ध रहा है।

धर्म के आधार पर जिन मान्यताओं को समाज में स्वीकार किया गया, उनसे मानव एवं अन्य जीव–जन्तुओं व पशुओं को भी उच्च स्थान ही दिया गया है। जिनके प्रमाण वे पुराण ही हैं। जिनमें ईश्वरीय सर्वोत्कृष्ट सत्ता भी अवतार रूप में मानवीय देह ही नहीं अपितु सिंह, कूर्म, वराह आदि का स्वरूप में प्रकट हुई। जिसे समाज में धर्म के साथ–साथ कला मे भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया अथवा कला द्वारा इन आकृतियों को अत्यधिक समृद्ध बनाया गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रदीप किरण – ''भारतीय कला – 'आकृति'' कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड. मेरठ पृ.सं.3.11
2. शर्मा हरद्वारी लाल – ''भारतीय कला – 'आकृति'' कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड. मेरठ तथैव पृ.सं. 3–11
3. कल्याण धर्म शास्त्रांक, संख्या 1 वर्ष 70, प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 153
4. दक्ष स्मृति – 3/23
5. कामिल बुलके एवं फादर रेवरेंड – ''रामकथा उत्पत्ति और विकास'', प्रयाग, 962 पृ.सं. 163 एवं कल्कि पुराण
6. संक्षिप्त वराह पुराणांक – इकानवे वर्ष का विशेषांक जनवरी 1997 कल्याण कार्यालय गोरखपुर पृ.सं. 83–84
7. शर्मा नूपूर एवं वीरेश्वर प्रकाश – कला दर्शन कृष्णा प्रकाशन मेरठ संस्करण 2005 पृ.सं. 5–6
8. वही पृ.सं. 5–6
9. ऋग्वेद की 'उषा उपासना' प्रसंग में उपासना मंत्रों में
10. शर्मा नूपूर एवं वीरेश्वर प्रकाश – ''कला दर्शन'' कृष्णा प्रकाशन मेरठ 2005 संस्करण पृ.सं. 117
11. उपनिषद पृ.सं. 8
12. वही पृ.सं. 14
13. विष्णु धर्मोत्तर पुराण चित्र सूत्र 43, 38

14. गौरोला वाचस्पति – ''भारतीय चित्रकला'' इलाहबाद 1993 संस्करण पृ.सं. 78

15. किरण प्रदीप – ''भारतीय कला 'आकृति'' मेरठ 2004 संस्करण पृ.सं. 3.11

16. मुखर्जी आर.के.– ''सोशल फंक्शन ऑफ आर्ट'' पृ.सं. 49

17. किरण प्रदीप – 'भारतीय कला–आकृति' मेरठ पृ.सं. 3.9

18. अग्रवाल श्याम विहारी – 'संत चित्रकार क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ म.प्र. पृ.सं. 9

19. श्री भगवत गीता (अ 5)

20. इण्टरनेट से प्राप्त

21. इण्टरनेट से प्राप्त

22. हन्टर – ''द इण्डियन एंपायर'' (पृ.सं. 201)

23. इण्टरनेट से प्राप्त

24. ''कल्चर हेरिटेज ऑफ इण्डिया'', भाग तृतीय पृ.सं. 308–9

25. ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक पाठ्यक्रम, प्रजापिता ब्रहमकुमारी, ईश्वरीय विश्वविद्यालय, पाण्डव भवन, आवू पर्वत राज.

26. बुन्देलखण्ड साहित्य दर्पण (वार्षिक पत्रिका 2002)

27. वैष्णव धर्म – पृ.सं. 14

28. ऋग्वेद – 1/154/1

29. वही – 1/22/19

30. महाभारत – 38/12/34

31. पगारे शरद – पूर्व मध्ययुगीन धार्मिक आस्थायें – एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पृ.सं. 120

32. भगवत पुराण – 3/18/19, मत्स्य पुराण – 246/48 अग्नि पुराण– अध्याय दो

33. "कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया", भाग तीन पृ.सं. 285

34. गीता – 4/78

35. भगवत पुराण – (श्रीकृष्ण का अपनी लीला समेटकर स्वधामगमन) कल्याण प्रकाशन पृ.सं. 30–31

36. भण्डारकर आर.जी. – "वैष्णव, शैव एवं अन्य धार्मिक मत;; पृ.स. 1–2

37. भगवत सम्प्रदाय – पृ.सं. 124

38. "द एज ऑफ इपीरियल युनिटी" – पृ.सं. 447–48

39. पगारे शरद – "पूर्व मध्ययुगीन धार्मिक आस्थाएं – ऐतिहासिक सर्वेक्षण", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पृ.सं. 130

40. गर्ग संहिता – प्रथम अध्याय – 16–20, पृ.सं. 4–5

41. द्विवेदी प्रेमशंकर – "गीत गोविन्दः साहित्य एवं कलागत अनुशीलन" कला प्रकाशन, वाराणासी।

42. श्रीवास्तव ए.एल. – "भारतीय कला सम्पदा" उमेश प्रकाशन इलाहबाद पृ.सं. 22

43. पटनायक देवदत्त – 'विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन्स' मुम्बई संस्करण 1999

44. पाण्डेय रामचन्द्र – 'प्राचीन भारतीय साहित्य' पृ.सं. 185 (पुराणों का गहरा अध्ययन करने वाले पहले व्यक्ति एच.एच. विल्सन थे)

45. मत्स्य महापुराण – पृ.सं. 1

46. अग्रवाल वीणा – 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण में चित्रकला विधान' सन्दीप प्रकाशन दिल्ली पृ.सं. 4

47. पाण्डेय राजबली – 'हिन्दु–धर्म कोश' लखनऊ पृ.सं. 45–46

48. अर्थवेद – 11.7.24 – अथर्व वेद में पुराण शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ है। पृ.सं. 15.6 11–12 एवं 11.8–7

49. बुलके कामिल, रेवरेड फादर – 'रामकथा' – (उत्पत्ति और विकास) – प्रयोग द्वितीय संस्करण 1962 पृ.सं. 161

50. शर्मा श्रीराम – अग्नि पुराण, संस्कृति संस्थान बरेली प्रथम खण्ड 1987 पृ.सं. 56

51. वायु पुराण– 1–203 (ब्रहमाण्ड पुराण के 1.1.173 खण्ड में यही श्लोक वर्णित है)

52. पद्म पुराण – 5 – 2 – 53

53. शर्मा – नूपूर, प्रकाश वीरेश्वर – 'कला दर्शन' कृष्ण मीडिया प्रकाशन मेरठ 2005, पृ.सं. 29–34

54. महर्षि वेदव्यास प्रणीतम् – 'श्री वराह महापुराणम्' प्रथम खण्डम् प्राच्य वाड्मय प्रकाशन, तुलसी प्रेस कासगंज उ.प्र. पृ.सं. 1–9

55. विष्णु पुराण

56. मत्स्य पुराण – अ. 53

57. विष्णु पुराण – 3 अंश 6 श्लोक सं. 6–13

58. अग्रवाल वीणा – "विष्णु धर्मोत्तर पुराण में चित्रकला विधान" सन्दीप प्रकाशन, दिल्ली पृ.सं. 1–18

59. मत्स्य महापुराण – पृ.सं. 7

60. वायुपुराण – 98/69

61. मत्स्य पुराण – 47/335

62. आश्वमेधिक पर्व – 54/13

63. वन पर्व – 272/7/71–72

64. देवी भागवत – 7/39

65. ब्रहमपुराण – 180 – 26–27 एवं 181/2–4

66. तथैव – 1 – 3 – 1

67. काणे – "हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र" भाग 2 पृ.सं. 317 एवं राय चौधरी, "अर्ली हिस्ट्री ऑफ वैष्णव सेक्टर", पृ.सं. 96

68. द्विवेदी प्रेमशंकर – 'गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन' भाग–दो कला प्रकाशन वाराणसी 1988 पृ.सं. 40–60

69. वही,

प्रथम अध्याय

भारतीय चित्रकला में अवतारों का चित्रण :–

भारतीय चित्रकला में अवतारों का चित्रण बहुतायत से हुआ है। इनके विषयों में धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय कला में धार्मिक अवतारों का अंकन लगभग सभी क्षेत्रों में कलाकार की रूचि के अनुसार हुआ है। इसमें जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों एवं बौद्ध धर्म की जातक कथाओं के अवतारों का बोधिसत्वों शिव एवं विष्णु के अवतारों का चित्रांकन दर्शित है।

भारतीय कला में अवतारों का सुव्यवस्थित, सुसंगठित एवं परिमार्जित रूप दिखाई देता है, वही दूसरी ओर भारतीय लोक कला में अवतार सरलता लिये हुए है। अवतारों को कहीं पौराणिक आधार पर सम्पूर्ण कथानक में, तो कहीं एकल चित्रित किया गया है, कहीं कल्पना को आधार बनाकर, तो कहीं यर्थाथवादी चित्रों का अंकन है।

वैष्णव धर्म ने कला को शैव , बौद्ध धर्मो की अपेक्षा अधिक प्रेरित एवं प्रभावित किया । विष्णु के अवतारों और इससे जुड़ी घटनाऐं बौद्ध जातक कथाओं एवं जैन धर्म से जुड़े कथानको की अपेक्षा अधिक आकर्षक प्रतीत होती है।

विष्णु के अवतार लेने से सम्बन्धित मत्स्य पुराण में एक रोचक कथा उल्लेखित है । कथानुसार श्री हरि विष्णु दैत्यगुरू शुक्राचार्य की माता का वध कर देते हैं और उनके सिर पर नारी हत्या का पाप मंड़ित होने से प्रायश्चित हेतु बारम्बार उन्हें पृथ्वी पर प्रकट होना पड़ता है।[1] ऋग्वेद के अनुसार विष्णु ऋग्वैदिक कालीन देवताओं में से एक थे , उनके वराह अवतार का उल्लेख ऋग्वेद के पृष्ठ संख्या 8/7/10 में वर्णित है। ''उपनिषदों में परमात्मा के विभिन्न रूप में प्रकट होने का प्रतिपादन है, यह माना गया है कि अनेक देव एक है तो एक देव अनेकता का रूप भी ले सकते हैं। इस कथन ने अवतारों की कल्पना को जन्म दिया'' ।[2] ब्राहम्ण साहित्य में वामन[3] वराह[4] मत्स्य[5] कूर्म[6] आदि अवतारों का उल्लेख है।

भारतीय चित्रकला में दिव्य मंगलमय श्री हरि का चित्रांकन कभी पूर्ण पशुरूप में , तो कभी अर्ध पशुरूप में किया गया है। कहीं–कहीं मानवीय एवं देवत्व स्वरूप भी प्रदान किया गया है। जिनमें प्रत्येक शैली में विष्णु के आयुध , वेशभूषा , दृश्य चित्रण रेखांकन एवं रंग संयोजन आकर्षक रूप लिये प्रस्तुत है।

पहाड़ी चित्रकला में अवतारों का चित्राकंन लघु चित्रों , भित्ति चित्रों के अतिरिक्त कुछ अन्य उपयोगी वस्तुओं पर भी किया गया है, जैसे कांगड़ा शैली में आभूषण रखने के बक्से पर भी समस्त दशावतारों का चित्रण

किया गया है। इसी प्रकार पहाड़ी की कला वसौहली शैली में वराह अवतार से सम्बन्धित चित्र मिले हैं, जिन्हे घटनाक्रमानुसार चित्रित किया गया है। वसौहली के चित्रों में ऐसी अनेक कथानक अनुसार घटनाऐं चित्रित है , जो अन्य क्षेत्र की चित्रकलाओं में नही मिलती । (चित्र संख्या 132–135)

पंजाब क्षेत्र की कला पहाड़ी कला से प्रेरित रही है , इसका उदाहरण हमे चंडीगढ़ के शीशमहल में देखने को मिलता है। (चित्र संख्या 066–067)

राजस्थान की चित्रकला में दर्शित भित्ति चित्र अपने बारीक रेखांकन एवं चटक रंग संयोजन के लिए प्रसिद्ध है। इसमें विष्णु के अवतारों के साथ 'नारी आकृति' का अंकन किया गया है। (चित्र संख्या 068–070)

मुगल चित्रकला में वराह अवतार के चित्र को युद्ध गमन प्रस्थान हेतु,पूर्व वस्त्रालंकारों से सुसज्जित अश्व के समान चित्रित किया गया है। (चित्र संख्या 071)

ओरछा एवं दतिया के भित्ति चित्रों में अवतारों का विशेष स्थान है। इसमें कई अवतारों को सामान्य पृष्ठभूमि पर, विभाजन रहित ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। (चित्र संख्या 072 एवं 073) बिहार में विश्व प्रसिद्ध मधुबनी चित्रकला अवतार चित्रों से समृद्ध है। मधुबनी कला में नवदम्पत्ति के कक्ष में शुभ दर्शन के विचार से घर की बुर्जुग महिलाऐं विष्णु अवतारों के चित्र बनाती थी। (चित्र

संख्या 163 एवं 164). वही मिथिला की माइका पेन्टिग (फलक) चित्रण अनोखे रूप में प्रस्तुत है। कतिपय विद्वानों ने तो इन्हें " फिरंगी आर्ट " की उपमा दी है। (चित्र संख्या 077–079)

बंगाल की कला कम्पनी शैली के प्रभाव से अछूती नही रही । कोलकाता से प्राप्त अवतार चित्रों में बंगाल की यर्थाथवादी शैली एवं छाया प्रकाश का सौन्दर्य दर्शनीय है। (चित्र संख्या 082–084)उड़ीसा के पट चित्रों में भी अवतारो का बहुतायत से चित्रण हुआ वहाँ विष्णु के जगन्नाथ अवतार स्वरूप का अंकन किया गया है । (चित्र संख्या 088–096) महाराष्ट्र एवं गोआ से प्राप्त अवतार चित्रों के मुकुट की शैली, बंगाल के विवाहोत्सव पर वरो के मस्तक पर पहनाये जाने वाले पारम्परिक अंलकृत मुकुट से साम्य रखती है।

मैसूर और तंजौर चित्रों में अधिकांशतः एकल अवतार चित्रण न करते हुए कलाकार ने समस्त अवतारों को सामूहिक रूप से विशाल रूप में क्रमानुसार चित्रित किया है। साथ ही अवतार पट्टिकाओं के मध्य में विभिन्न आकारों में कृष्ण के विभिन्न स्वरूपों एवं भागवत के उल्लेखनीय प्रसंग जैसे गोपिकाओं का वस्त्र हरण , शेषशायी विष्णु का चित्रण प्रमुख स्थान रखता है। (चित्र संख्या 101–102)वही पांण्डुचेरी की चित्रकला में अवतार चित्रों की श्रृंखला में तिरूपति बालाजी को दर्शाया गया है। (चित्र संख्या 104)

अतः भारतीय चित्रकला में विष्णु के समस्त अवतारो का चित्रांकन दृष्टव्य है। कहीं पर विष्णु के चार अवतारों का अंकन किया गया है तो कहीं दशावतार , वारह अवतारों का चित्र कलाकार ने अपनी स्वरूचि के अनुसार किया है। चित्रकार ने कहीं पर श्री हरि के चौबीस अवतारो को चित्रित कर धर्मपरायणता का परिचय दिया है (चित्र संख्या 169 एवं 170)लेकिन उन चौबीस अवतारों की पहचान असम्भव प्रतीत होती है। मुख्य दशावतार जो अपने आयुध एवं अर्ध पशु वेशभूषा के कारण सरलता से पहचाने जा सकते हैं।

दिव्य मंगलमय जगत पालनहार श्री हरि विष्णु के नाना प्रकार के अवतारों का वर्णन वेद :– पुराण आदि साहित्यों में संग्रहित है। यद्यपि विभिन्न अवतारों में प्रसिद्ध मुख्य दशावतार है। प्रत्येक अवतार किसी विशिष्ट उददेश्य की पूर्ति हेतु लिए गये । अतः विष्णु जी ने असुरों का वध कर धर्म की पुनः स्थापना की ।

"जब–जब होई धरम के हानी । बाढ़हि असुर अधम अभिमानी ।।
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।"

अतः श्री हरि की लीला को जनमानस तक पहुँचाने हेतु कलाकार ने रंगो एवं तूलिका का आश्रय लेकर उसे साकार रूप प्रदान किया ।

अतः भागवत पुराण के आधार पर श्री विष्णु के अवतारो को क्रमानुसार उल्लेखित किया है जो निम्नानुसार है–

1. युवा पुरूष अवतार
2. वाराह अवतार
3. नारद अवतार
4. नर – नारायण अवतार
5. कपिल अवतार
6. दतात्रेय अवतार
7. यज्ञ पुरूष अवतार
8. ऋषभ अवतार
9. पृथु अवतार
10. मत्स्य अवतार
11. कूर्म अवतार
12. धनवन्तरि अवतार
13. मोहिनी अवतार
14. नरसिहं अवतार
15. वामन अवतार
16. परशुराम अवतार
17. वेद व्यास अवतार
18. राम अवतार
19. बलराम अवतार
20. कृष्ण अवतार
21. बुद्ध अवतार
22. कल्कि अवतार[7]

इसके अतिरिक्त विष्णु के अन्य अवतारों का वर्णन भी पुराणों में दर्शित है, जो निम्न लिखित है।

23. हयग्रीव अवतार
24 हंसावतार अवतार
25. बालाजी अवतार
26. मधन्त अवतार
27. श्री हरि अवतार (गजेन्द्र मोक्षकर्ता)
28. विश्वरूप

(1) युवा पुरुष अवतार

ब्रम्हा के चार मानस पुत्र थे, जिन्हें क्रमशः सनक, सनंदन , सनातन और सनत्कुमार के नाम से जाना जाता है।[8] सनतकुमारों से जुड़ी एक रोचक कथा का वर्णन इस प्रकार है जब सनतकुमारों ने वैकुण्ठ जाने का विचार किया, तो वैकुण्ठ के छः दरवाजे (दरवाजे मोह , अहंकार व अन्य चार दरवाजों से मुक्त होने पर एवं इन्द्रिय संयम पर विजय पा लेने के पश्चात् उनका मार्ग खुल जाता है) पार करने के बाद सातवें दरवाजे पर जब वे पहुचे तो जय और विजय नामक दो द्वारपालों ने उन्हे रोका और कहा, कि तुम अन्दर जाने योग्य नही हो, क्योंकि तुमने अभी संसारिक भोग नही भोगा है, अतः पहले जीवन और मृत्यु का आनंद लो। इस कथन पर क्रुद्ध होकर सनतकुमारों ने उन्हे श्राप दे दिया ।

श्राप के परिणाम स्वरूप जय और विजय ने विभिन्न युगों में अलग – अलग रूपों में असुर रूप रखा जिसे श्री हरि ने अवतार लेकर उन्हें श्राप मुक्त किया।[9] यह असुर क्रमशः हिरण्यकश्यप , हिरण्याक्ष , सहस्त्रबाहु

अर्जुन , अंहकारी रावण एवं कंस थे जिन्हे श्राप मुक्त करने हेतु विष्णु वराह , नरसिहं , परशुराम , राम तथा कृष्ण के रूप में अवतरित हुऐ ।

भारतीय चित्रकला में कौमार्यसर्ग अथवा सनतकुमारों का चित्रण अन्य शैली की अपेक्षा जयपुर शैली में अधिकांश चित्रित है। इसके अतिरिक्त आधुनिक शैली में सनतकुमारों के चित्र विभिन्न क्षेत्रों से भी प्राप्त होते हैं। 18 वीं सदी में निर्मित जयपुर शैली का एक चित्र विविध खण्ड़ों में विभक्त है जिसमें विष्णु के चौबीस अवतारों को दर्शाया गया है। उन्ही के एक खण्ड में चारों सनतकुमारों करबद्ध अवस्था में चित्रांकित कर कलाकार ने अपनी धार्मिक भावना को उजागर किया है।(चित्र संख्या 001)

एक अन्य चित्र जो आधुनिक शैली में चित्रांकित है इस चित्र में नीलवर्णीय पीताम्बर धारी शेषशायी विष्णु के चरण की ओर चारों सनतकुमारों को हाथ जोड़े अवस्था में अंकित किया है श्री हरि के नाभिकमल पर विराजित ब्रम्हा जी ध्यानमग्न बैठे हुऐ चित्रित हैं। (चित्र संख्या 002)

(2) वराह अवतार

श्री हरि विष्णु के अवतार लेने हेतु पुराणों में वर्णित कथानक के अनुसार जब हिरण्यकश्यप के भ्राता हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को पाताल में कैद कर लिया, तो पृथ्वी को हिरण्याक्ष के चंगुल से मुक्ति दिलाने हेतु श्री हरि जनार्दन भगवान ने वराह का रूप धारण कर हिरण्याक्ष से युद्ध कर एवं उसका वध

करने के पश्चात् पृथ्वी को पाताल से अपने दन्तो द्वारा निकालकर उन्हे पुनः पूर्वानुसार स्थान दिया।[10]

महावराह के महात्म्य के विषय में ''वराह पुराण'' में चौबीस श्लोकों में प्रसंग को वराह अवतार प्रसंग में कहा गया है कि जो पुरूष आयु , यश , विजय , भूमि की मन में अभिलाषा रखता है यदि वह वराह अवतार की कथा श्रवण करे तो उसकी तत्काल मनोकामना पूर्ण होती है।[11]

जल में डूबी हुई पृथ्वी को अपनी दाड़ों पर उठाकर रसातल से ऊपर वराह भगवान निकालकर लाए और अपने खुरों से जल को रोककर उस पर पृथ्वी को स्थापित किया।[12] तैतरीय संहिता, तैतरीय ब्राह्म्ण एवं शतपथ ब्राह्म्ण जल से पूरित विश्व में प्रजापति द्वारा वायु रूप में विचरते हुए, पृथ्वी को देखने पर उनका वराह रूप में अवतरित होकर पृथ्वी को उद्धार करने का वर्णन मिलता है।

"वायु पुराण में इससे सम्बधित कथन में वर्णित है कि चक्रपाणि श्री हरि विष्णु ने तीसरे अवतार के रूप में वराह शरीर धारण कर अपनी ढाढ़ से पृथ्वी को समुद्र में से निकाल कर उसका उद्धार किया"।[13]

''इतीयती हवा इयमग्रे पृथ्व्यिास प्रादेशामत्री।
तामेमूषइति वराह उज्जधाना । सो स्या परिरिति।''[14]

अर्थात् यह विशाल रूप लिये पृथ्वी प्रदेश मात्र थी। तब प्रजापति इसे वराह रूप धारण कर पाताल से ऊपर ले आऐ।

संक्षिप्त वराह पुराणांक में कहा गया है कि श्री हरि केशव ने पृथ्वी को धारण किया था जबकि अन्य पुराणों में वर्णित है कि श्री वराह भगवान ने पाताल में से पृथ्वी को निकालकर जल में स्थान दिया । अतः वराह पुराण में यह कथानक इस प्रकार लिखित है।

जब पृथ्वी ने भगवान पद्मनाथ का स्तवन किया तो प्रसन्न होकर परमार्थ श्री हरि ने कुछ पल योग जनित ध्यान समाधि में निमग्न रहें। तत्पश्चात् बोले देवि वराह अवतार लेकर पर्वतो और वनो सहित शीघ्र ही तुम्हें इस कष्ट से मुक्ति दिलाऊँगा। इन सबके साथ तुम्हारे पर्वतो , द्वीपो , समुद्रों, सरिताओं को धारण करूंगा।

इस तरह श्री नरेश भगवान ने वसुंधरा को आश्वस्त. कर एक तेजस्वी रूप लिये वराह का शरीर धारण किया और छः हजार योजन की ऊँचाई तथा तीन हजार योजन की चौड़ाई में कुल मिलाकर नौ हजार योजन के परिमाप लिये अपना विशालकाय रूप बनाया"[15] अतः श्री हरि जो वराह रूप लिये वराह लिये थे उन्होने अपनी बॉयी डाढ़ की सहायता से पृथ्वी जो पर्वत , वन , द्वीप से सुसज्जित थी, उसे समुद्र से निकालकर ऊपर उठा लिया।

इस प्रकार परम समर्थ विष्णु रूपी श्री वराह ने अपनी ढ़ाढ़ पर कई हजार वर्षो तक पृथ्वी को स्थान दिया । तभी से श्री पीताम्बर धारी नीलवर्णीय केशव पृथ्वी के आराध्य देव के रूप में पूजित हैं।[16] ऐसी ही कथा का वर्णन श्री मत्स्य पुराण में भी मिलता है।

श्री विष्णु पुराण में पृथ्वी एवं अन्य देवताओं द्वारा वराह अवतार को यज्ञ पुरूष की संज्ञा दी गई है। पृथ्वी ने पाताल से अपनी मुक्ति के लिए जनार्दन भगवान से स्तुति की और कहा :—

"परापरात्मविश्रृात्म यज्ञपतैडनधः, त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्तवमोडकारस्त्वमन्गयः"

अर्थात हे विश्वरूपी केश्व हे यज्ञपते । हे परमात्मा अपकी जय हो आप ही यज्ञ हे , आप ही वषटकार है अग्नि भी आप का रूप हे, हे हरि आप ही वेद, वेदांग से परिपूर्ण है और यज्ञ पुरूष भी आप ही हैं।[17]

इस प्रकार विष्णु के वराह अवतार की कथानुसार रोमांचक कलापूर्ण चित्रण विविध शैलियों में अंकित है इनमें से कतिपयचित्रो का वर्णन इस प्रकार है।

आधुनिक शैली में निर्मित श्री हरि वराह का शरीर पूर्ण शूकर युक्त अंकित है। (चित्र संख्या 003) वराह भगवान जल में अपने दो पेरों पर खड़े एवं दन्त पर पृथ्वी को उठाऐ ऊपर की ओर देखते हुए चित्रित है। इस चित्र में वराह भगवान के तीन चरण शूकर के समान हैं एवं मानवीय सदृश चतुर्थ हस्त से

गले में लहलहाती हुई पुष्पमाला को थामा हुआ है। मस्तक पर विराजित स्वर्ण मड़ित मुकुट शोभायमान है। जबकि गले में मौक्तिक हार , मौक्तिक बाजूबन्द हस्त में शोभा पा रहा है। पृष्ठभूमि में समुद्र में अठखेलियां करती हुई लहरों का यर्थाथवादी अंकन है एवं आकाश में हंस पर विराजित देवतागण शोभायमान हैं।

आधुनिक शैली में बना यह चित्र यर्थाथवादी गुणों से परिपूर्ण एवं सौन्दर्यात्मक तत्वों से युक्त है । (चित्र संख्या 003)

श्री वराह अवतार से सम्बन्धित भारतीय चित्रकला में वर्णित चित्रों का विस्तृत वर्णन अग्रिम अध्याय में क्रमशः दिया गया है।

(3) नारद अवतार

जहां देवतागण विराजते हैं वहां पर नारद की उपस्थिति अनिवार्य रूप में रहती है। ये ब्रह्माजी के मानस पुत्र कहे जाते हैं। ये जगत में लोककल्याण हेतु सदाविचरण करते रहते हैं। नारायण – नारायण का जाप करने वाले नारद विष्णु के प्रिय भक्त हैं। नारद के साथ रहने वाली वीणा को 'भवज्जपमहती' के नाम से जाना जाता है। नारद पुराण में इनके रूप–कार्य का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है।[18] अठारह पुराणों में से एक नारद पुराण को विषेष स्थान का पद प्राप्त है।

भारतीय चित्रकला में पारम्परिक एवं आधुनिक व लोककला शैली में पूर्णावतार माने जाने वाले नारद का सरूचि अंकन किया है।

1. जयपुर शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 004) में नारद चरित्र चित्रांकित है , इसमें वीणा बजाते हुए नारद का मोहक चित्रण किया गया है पृष्ठभूमि में हरितिमा युक्त पहाड़ी का अंकन है ।

2. एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 005) जो आधुनिक शैली में निर्मित है । इस चित्र में स्वर्णयुक्त अलंकृत सिहांसन पर विराजित नारद का सुन्दर चित्रण किया गया है, जो एक हस्त से वींणा को पकड़े है एवं दूसरा हस्त जो ऊपर उठा प्रतीत होता है , संभवतः आर्शीवाद की मुद्रा में दर्शित है । चित्र में दायीं ओर गुलाब पुष्पगुच्छ श्वेत , लाल एवं गुलाबी रंग से पूरित है। सम्पूर्ण दृश्य को देखकर यही प्रतीत होता है कि वे महल में बैठे हैं।

(4) नर नारायण अवतार

समुद्र मंथन के समय अमृत को पाने के लिए युद्ध शुरू हो गया। तब इस युद्ध के भयानक रूप लेने पर युद्ध भूमि में नर – नारायण देव उपस्थित हुए। तब श्री विष्णु ने नर के हाथों में दिव्य घनुष को देख सुदर्शनचक्र का प्रयोग किया ।

नर ने भी स्वर्ण जड़ित अलकृंत तीक्ष्ण वाणों से वायु का मार्ग रोक दिया और पर्वत के शिखरों को अलग कर दिया। इस तरह विष्णु के

सुदर्षन चक्र एवं नर के अतुलित बल के सहयोग से युद्ध में देवताओं ने विजय प्राप्त की तथा अमृत की सुरक्षा का भार भगवान को प्रदान किया ।[19]

''विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन'' पुस्तक में नर – नारायण के अवतार के सम्बन्ध में प्रस्तुत कथानक इस प्रकार हैं, नर – नारायण नामक दो तपस्वी थे, जो हिमालय पर तपस्या करने चले गये वहॉ उनकी तपस्या भंग करने असुर धम्मोधन अपने सैनिको सहित जा पहुँचा , तब नर–नारायण ने उनसे युद्ध न करके अपने तपोबल से उन दैत्यगणों पर तृण फेंकी जो तुरन्त ही तीरों में परिवर्तित हो गये जिस कारण युद्धरत सम्पूर्ण दानवगण मृत्यु को प्राप्त हुए । इन्द्र ने भी उनकी तपस्या भंग करने के लिए अप्सरा को भेजा लेकिन नर नारायण की तपस्या भंग नही हुई उन्होंने उन अप्सराओं से भी अतिसुन्दर उर्वशी नामक अप्सरा को रचा । तब देवतागण ने विनती कर पूछा कि – आप तपस्या क्यों कर रहे हो? इसका क्या कारण है? इस पर नर–नारायण नामक तपस्वी कहने लगे कि इस माया मोह युक्त संसार मे हमारे जीवन का उददेश्य क्या हैं, हम इसी की खोज में तप कर रहे हैं।[20]

अतः भारतीय चित्रकला में अवतार चित्रों की श्रखंला में नर नारायण चित्रण लगभग अप्राप्त है। कतिपय मात्रा में चित्र देखे जा सकते हैं किन्तु अनकी पहचान असंभव प्रतीत होती है। मूर्तिशिल्प में नर–नारायण का शिल्प मंदिर की भित्तियों पर उत्कीर्णित हैं।[21]

(5) कपिल अवतार

विष्णु के अवतार स्वरूप 'कपिल' कर्दम ऋषि के पुत्र थे । पुत्र जन्म के पश्चात् कर्दम ऋषि ने इस संसार को त्याग दिया । कपिल मुनि अपने पिता के पदचिन्हो पर चले । कपिल ऋषि की मां देवआहुति भाव विह्वल हो उठी और वे ये सहन न कर सकी कि उनका पुत्र भी गृहस्थाश्रम को छोड़कर वन को प्रस्थान कर रहा है।

तब कपिल मुनि ने अपनी मां से कहा कि हे मां यह संसार माया जाल है यहां सभी साधन भौतिक जो आज हैं, कल नही अतः हमें कुछ ऐसा चाहिये जो अखण्ड़ सत्य हो , जो हमेशा इस पृथ्वी पर स्थापित्व रूप में रहे । इसी की खोज में कपिल मुनि ने जप तप किया और 'अखण्ड़ सत्य' को पाया । अतः कपिल ऋषि ही 'सम्मुख दर्शन' के जनक कहे जाते है।[22]

भारतीय चित्रकला में विष्णु अवतारों की श्रृखंला अन्य अवतारों की अपेक्षा कम मिलती है। पहाड़ी शैली से प्राप्त कपिल मुनि के एक चित्र (चित्र संख्या 006) में उन्हें वृक्ष के नीचे आसनासीन चित्रित किया गया है। कपिल मुनि का चेहरा एक चश्म युक्त है। जिनके श्वेत केश है एवं वह दाढ़ी युक्त है। जो अधोवस्त्र धारण किये माला जपते दर्शित है। निकट ही कमण्ड़ल है। पृष्ठभूमि में विभिन्न वृक्षों का अंकन है। (चित्र संख्या 006) इसी प्रकार आधुनिक शैली के कपिल मुनि के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 007) में जो कपिल मुनि को

युवाअवस्था में अकिंत किया गया है निकट ही नारी आकृति का अंकन है , जो सम्भवतः उनकी मॉ है , जो वार्तालाप करते हुए दर्शित है पृष्ठभूमि में कुटिया का अंकन है।

(6) दत्तात्रेय अवतार

कल्याण पुराण में वर्णित कथाओं के अनुसार दत्तात्रेय पुराण में वैष्णव धर्म, सप्रदायों का परिचय , योग सिद्धिया एवं उनके साधन के अतिरिक्त सूर्य एवं चन्द्रवंश तथा मन्वन्तर के परिचय द्वारा पुराणों के लक्षण व कथाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है।

अत्रि मुनि ने जब धोर तप किया तो विष्णु भगवान कहने लगे–

''ततो मयाहीभति यद भगवान सं दन्तः''[23]

अर्थात् –

मैने अपने आपको तुम्हें दिया।

श्री हरि के ऐसा कहने पर विष्णु भगवान ने अत्रि और अनुसुईया के पुत्र रूप में जन्म लिया और दन्त नाम को पाया। अत्रि के पुत्र होने के कारण वे आत्रेय कहलाऐ। अतः दन्त एवं आत्रेय के समन्वय से उनका नाम 'दत्तात्रेय' प्रसिद्ध हुआ।[24]

भारतीय कला में सामाजिक, दृश्य चित्रों के अतिरिक्त धार्मिक चित्रों का बाहुल्य है। धार्मिक चित्रों के अन्तर्गत श्री विष्णु के अवतार चित्रों का चित्रकार

ने अत्यन्त विस्तारपूर्वक वर्ण किया है। एक चित्र (चि.स.008) जो आधुनिक शैली से प्रेरित है दतात्रेय भगवान जो विष्णु के अवतार कहे जाते हैं अंकन किया गया है त्रिमुखी दतात्रेय भगवान जिनकी छः भुजायें हों जिनमें क्रमशः शखं चक्रं, गदां, त्रिशूल, पदम कमण्ड़ल शोभायमान वे पीत वर्ण युक्त अधोवस्त्र पहने हैं गले में स्वर्णजडित हार के अतिरिक्त वैजयन्ती माला भी धारण किये हैं, रूदाक्ष युक्त बाजूबन्द छः भुजाओं में पहने हुए हैं, दायी ओर गौ एवं बायीं ओर स्वान का चित्रण हैं । पृष्ठ भूमि के दृश्य में अलंकृत पुष्प पत्रों का अकंन शोभनीय है। (चित्र संख्या 008)

(7) यज्ञपुरूष

वेदों में वर्णित है तथा पुराणों में इस तथ्य की पुष्टि की गई है कि श्री हरि माधव के मत्स्यावतार को प्रथम अवतार माना गया है। पुराणों में यह भी उल्लेखित हो कि वराह के साथ यज्ञ का प्रतीक इतना संलयित माना गया है कि यज्ञ '' वराह '' के नाम से ही विश्रुत है।[25]

श्री विष्णु पुराण में 'वराह' के 'यज्ञपुरूष' नामकरण के बारे में प्रचलित कथानक का वर्णन इस प्रकार है।

पूर्वकाल में जब हिरण्याक्ष ने वसुंधरा का हरण कर उसे रसातल में कैद कर दिया तब वसुधंरा ने परम समर्थ वासुदेव से विनती की और कहा कि, हे

हरि पूर्व में मैं आपसे ही उत्पन्न हुई थी अब इस पाताल लोक से मुझे निकालकर मुक्ति प्रदान कीजिये।

"ततः समुत्क्षिप्य धरा स्वंदसृष्टा
महा वराहः स्फुटपद्मलोचनः
रसातलादुत्पल पत्र सन्निभः
समुत्थितो नील इवाचलों महानं।।"[26]

तब कमलनयन रूपी महावराह ने अपनी दाढ़ से पृथ्वी को समुद्र में से बाहर निकालकर उसे उठा लिया। तब श्याम वर्णीय नीलांचल विशाल रूप धारण किये वराह भगवान पृथ्वी को उठाये हुए रसातल से बाहर निकले।[27]

जब भगवान वराह बाहर निकले उस समय प्रसन्न वंदन मुनिजन उन्हें प्रणाम कर स्तुति करने लगे और उनके विशाल रूप का वर्णन करते हुए पुनः उन्हें यज्ञ पुरूष नाम से सुशोभित किया ।

श्री विष्णु पुराण में ही अन्य स्थान पर पृथ्वी द्वारा श्री हरि की स्तुति करने का वर्णन इस प्रकार दिया गया है।

"पदेषु वेदास्तव यूपपंस्ट्र,
दन्तेषु यज्ञाश्रितपक्षध वक्न्ने।
हुताष जिहोऽसि तनूसंहिणि,
दर्भाः प्रभो यज्ञ पुंमास्त्वमव।।"[28]

अर्थात हे वराह रूपी भगवन आप ही यज्ञ पुरूष हों, चारो वेद ही आपके चरा कमल हैं, आपका सिर परब्रह्म ही हैं, रात और दिन ये दोनों आपके नेत्र

हैं, यज्ञाग्नि जिव्हा, कुशाऐ रोमावलि है । दांत और मुख में क्रमशः यज्ञ एवं चित्तियॉ हैं, सभी सूक्त आपके स्कन्ध के रोमगुच्छ हैं। सामस्वर धीर आपका गम्भीर स्वर यजमान गृह शरीर है, धर्म आपके कान है अतः हे नित्य स्वरूप भगवान आप प्रसन्न होइये।[29]

अतः जब पृथ्वी ने वराह रूपी श्री हरि विष्णु का स्तवन किया तो उनकी विनती से प्रसन्न हो वराह भगवान ने वसुन्धरा को अपने दंतो पर उठाकर पुनः जल के ऊपर स्थापित कर दिया । पृथ्वी को जल के ऊपर तैरता देख ऐसा प्रतीत होता है मानो विशालकाय नौका पानी में स्थित हो और वो अपने विशाल रूपी आकार के कारण उसमें तैर रही हो। तब सत्यव्रत धारी श्री केशव रूपी वराह ने पृथ्वी पर लुप्तप्राय प्रकृति एवं पर्वतों को यथास्थान प्रदान किया।[30]

वराह पुराणाडकः में कहा गया है कि जब पद् कमलरूपी नेत्रों वाले पीताम्बर धारी केशव ने महावराह का रूप रख कर रसातल में प्रवेश कर वहॉ से पृथ्वी को आसुरी शक्ति की कैद से मुक्त कराया तो सिद्ध पुरूषों एवं देवताओं ने प्रसन्न होकर उन्हे यज्ञपुरूष के नाम से सुशोभित किया।[31]

भारतीय चित्रकला में पुराणों में 'वराह' एवं 'यज्ञपुरूष' को समकक्ष माना गया है , अतः यज्ञपुरूष एवं वराह एक ही है भारतीय चित्रकला में वर्णित आधुनिक शैली में निर्मित राजा रवि वर्मा शैली से प्रेरित है इस दृश्य (चित्र संख्या 009) में यज्ञपुरूष रूपी वराह एवं दैत्य हिरण्याक्ष से सवांद का चित्रण

किया गया है। जिसमें यज्ञपुरूष की उपाधि प्राप्त वराह भगवान अपने बगल में पृथ्वी रूपी नारी को स्थान दिया है यहॉ नारी को पृथ्वी माना गया है। श्री वराह एक हाथ से चेतावनी देने की मुद्रा में अंकित है यज्ञपुरूष के समक्ष मुकुटधारी असुर जो योद्धा की वेषभूषा में चित्रित है जिसके एक हस्त में तलवार एवं दूसरे में ढाल धारण किए हुए है। श्री हरि रूपी यज्ञपुरूष एवं असुरराज दोनों ही जल के मध्य खड़े हुए हैं पृष्ठभूमि में लहरों का चित्रण यर्थाथवादी पद्धति से किया गया है ।

(8) ऋषभ अवतार

ऋषभ अवतार को श्री हरि विष्णु के नोवे अवतार के रूप में जाना जाता है।[32] अयोध्या के राजा नाभि एवं मेरूदेवी के पुत्र रूप में विष्णु ने ऋषभ रूप में जन्म लिया । राजा ऋषभ के शासन काल में स्त्रियां चौंसठ कलाओं में पारगंत थीं।

राजा ऋषभ की पुत्री ब्राह्मी एवं पुत्र भरत थे जो भारत के महान राजा बने। भरत के शासक बनने के उपरान्त भारत भूमि भारत वर्ष के नाम से जानी जाने लगी।[33] राजा ऋषभ ने बाद में राजपाठ त्याग कर कैलाश पर्वत चले गये वहॉ से लौटकर योग साधना विषय पर वृहत ज्ञान का का प्रसार किया । 'उनके अनुसार' – ''एक मूढ़ प्राणी भी योग साधना कर समर्थवान बन सकता है।''

ऋषि जन द्वारा इन्हे परमहंस पद से सुशोभित किया गया। इन्हें जैन तीर्थंकर के नाम से भी जाना गया ।

ऋषभ देव को जिन की उपाधि दी गई जिसका अर्थ है 'ज्ञानी' और इनके अनुयायी जैनियों के नाम से जाने गये।[34]

भारतीय कला में ऋषभदेव के मूर्ति शिल्प के अतिरिक्त चित्रकला में भी इनके चित्र दर्शनीय है एक चित्र (चित्र संख्या 010) राजस्थानी शैली का प्रतिनिधित्व करता है इस चित्र में ऋषभदेव भूमि पर आसनासीन है सम्पूर्ण केशयशि को समेटकर उन्होने सिर पर जूड़ा बांधा हुआ है पृष्ठभाग में आभा मण्ड़ल सुशोभित है।

(9) पृथु अवतार

कल्याण पुराण में वर्णित कथानुसार राजा पृथु के अवतार का रोचक वृतान्त का उल्लेख मिलता है मनु व सुनीति का पुत्र वेन का स्वभाव अपने नाना सदृश्य था। वह अत्यन्त दुष्ट व अत्याचारी स्वभाव का था। इस कारण प्रजा कष्टमय जीवन यापन कर रही थी । जब उसे राजपद मिला तो उसने अपने राज्य में घोषणा कर दी कि ईश्वर व यज्ञपुरूष मैं ही हूँ, पूजा, पाठ, हवन, दान–पुण्य जैसे कर्म की उसके राज्य में मनाही थी।

जब हरि की चहु ओर निन्दा वह करने लगा, तो उस अर्धमिवेन से क्रोधित होकर कुशों ने उसका वध कर दिया। राजा रहित अव्यवस्थित प्रजा के

हित को ध्यान में रखते हुंए मुनियों ने वन के शरीर का मंथन किया तो उसमें से विष्णु और लक्ष्मी के अवतार स्वरूप पृथु एवं रानी अर्चि का जोड़ा प्रकट हुआ । तत्पश्चात् विष्णु के अवतार स्वरूप राजा पृथु प्रजा हित में अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया। तब इन्द्र ने सिहांसन छिनने के भय से सौवे अश्व का हरण कर लिया जिसे पृथु के पुत्र विजिताश्व ने इन्द्र से वापस लिया।[35]

इसके अतिरिक्त हरिवंश पुराण में 'पृथु' को पृथ्वी पर मानव सभ्यता की स्थापना का जनक कहा गया है।[36]

मत्स्यपुराण में राजा पृथु की रोचक कथा का उल्लेख किया गया है। पृथु का अर्थ 'मोटी भुजा' से भी है। प्रचलित कथानुसार पृथु ने विष्णु से वरदान प्राप्त कर जगत के अधिष्ठाता कहलाए। अपने पिता के अधम आचरण से दुखित हो महाबलशाली पृथु ने क्रोधवश सम्पूर्ण भू–मण्ड़ल को अग्नि को समर्पित करने हेतु उद्धत हुआ यह देख पृथ्वी गाय का रूप धारण कर भागने लगी और धर्नुविधा में प्रवीण पृथु , पृथ्वी रूपी गाय के पीछे भागने लगा । जब पृथ्वी थक कर हार गयी विनती कर कहने लगी कि हे नाथ में असमर्थ हूँ अतः आप ही इस जगत का उद्धार कीजिये । तब पृथु ने उनकी विनती स्वीकार कर मनु को बछड़ा बनाया और पृथ्वी का दोहन किया, तत्पश्चात् समस्त वर्गो ने स्वरूचि के आधार पर बछड़ा एवं पात्र का प्रयोग कर उसका दोहन किया जिसके परिणाम स्वरूप उन्हे अपना स्वरूप प्राप्त हुआ।[37]

पृथ्वी को राजा पृथु की पुत्री पद से सुशोभित किया । अतः पारम्परिक एवं आधुनिक भारतीय चित्रकला में राजा पृथु का चित्रांकन सौन्दर्य पूर्ण हैं एक चित्र में (चित्र संख्या 011) जो पहाड़ी शैली में निर्मित है । इस चित्र मे राजा पृथु अश्व युक्त रथ पर सवार है रथ के ऊपर मौलिक माल युक्त छत्र सुशोभित है। राजा पृथु जो मस्तक पर मोतियों से परिपूर्ण मुकुट धारण किए हैं एवं दाहिनी और कमर के पास तरकश टिकाऐ हैं एवं अपने दोनो हाथों से तीर कमान को खींच कर भागते किन्तु पीछे मुड़कर देखती पर निशाना साधे अंकित है। पृथ्वी रूपी गाय व अश्व के पैरों का अकंन देखकर उसके भागने की तीव्र गति का आभास होता है।

एक अन्य चित्र जो संभवतः किसी कलाकार द्वारा बनाया गया रेखाचित्र (रेखा चित्र संख्या 012) प्रतीत होता है। इसमे मृत वेन के शरीर का मथंन करते सप्तऋषि अंकित है। मध्य में चतुर्भुजी विष्णु विराजमान है जिनके हाथों में शखं, चक्र, धनुष एवं पद्म शोभित हो अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित विष्णु गले में पुष्प माल भी पहने है दायीं एवं वायीं ओर खड़े हुए ऋषि क्रमशः पॉव एवं छत्र पकड़े हुए खड़े ही वेन के शरीर को श्याम वर्ण से दर्शाया गया है सम्पूर्ण दृश्य को रेखाओं द्वारा सौन्दर्य रूप प्रदान किया गया।

(10) मत्स्यावतार

मत्स्यपुराण में सृष्टि के भगवान जर्नादन विष्णु जी के मत्स्य रूप धारित करने के अतिरिक्त अन्य सात कल्प वृतान्तो का वर्णन किया गया है। मत्स्यावतार का वर्णन चौदह सहस्त्र श्लोको में वर्णित है। मत्स्यावतार के फल के बारे कहा गया है कि विषु (जिस तिथि को दिन एवं रात बराबर होते है।) के अवसर पर जो मनुष्य स्वर्णमंडित मत्स्य एवं गौदान करता है उसे सम्पूर्ण पृथ्वी दान में देने के समान फल मिलता है।[38] श्री हरि के मत्स्यावतार लेने की रोचक कथा (त्रेतायुग) में सत्यव्रत (मनु) राजा अपनी प्रजा से अपार स्नेह रखता था। कुछ समय पश्चात् अपने सुपुत्र इक्ष्वाकु को राजपाट प्रदान कर धोर तपस्या करने हेतु पर्वत को प्रस्थान किया। तदनन्तर हजारों वर्षो तक तपस्या करने के उपरान्त ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया तब ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर मनु की इच्छानुसार प्रलयकाल में सृष्टि की रक्षा करने का वरदान दिया।

कुछ समय पश्चात् मनु कृतमाला नदी में पितरों को जल दे रहे थे उसी समय उनके हाथों में जल सहित लधु मत्स्य आ गई तो उन्होंने उसे वापिस जल में स्थान देना चाहा तो वह मछली मनु से अपने प्राण रक्षा के लिये विनती करने लगी तब मनु ने उसे अपने कमण्ड़ल में स्थान दिया देखते ही देखते लधु मत्स्य ने अपना वृहत स्वरूप बनाया ।

तब राजा ने आश्रम में पहुचकर मृत्तिका पात्र में उसको स्थान दिया किन्तु उसका स्वरूप पुनः बढ़ता गया । फिर राजा ने कुऐ में स्थान परिवर्तत किया किन्तु वह पुनः बारम्बार आकार बढ़ाती गई राजा ने पुनः उसे तालाब,गंगा एवं सागर में रखा , किन्तु मत्स्य के आकार नें इतना विशाल रूप ले लिया कि उसने अपने आकार से समुद्र को ढक लिया।[39]

तब श्री हरि की यह लीला देख सत्यव्रत भयभीत होकर मत्स्य से कहने लगे कि अवश्य ही तुम महाराक्षस अथवा स्वयं भगवान विष्णु हो क्योकि श्री हरि के अतिरिक्त अन्य कोई बीस आयुक्त योजन का शरीर धारण नही कर सकता।[40]

मनु ने प्रार्थना कर उनका वास्तविक रूप के दर्शन की अभिलाषा उनके समक्ष रखी तब मत्स्यरूपी विष्णु ने प्रसन्न होकर साक्षात दर्शन दिये और कहा कि आज से सातवें दिन यह पृथ्वी प्रलयकारी जल राशि में समाने लगेगी, उस समय एक नौका तुम्हारे पास आयेगी तब तुम सभी जीवजन्तुओं, वृक्ष, पोधों, अन्नादि विविध प्रकार के बीजों एवं सप्तऋषियों को साथ लेकर उस नौका में विराजना तत्पश्चात् तब में पुनः उसी रूप में आकर तुम सबकी रक्षा करूगा।[41]
श्री हरि ने कहा कि प्रलय के पश्चात् जब तुम्हारे द्वारा सृष्टि की पुनः रचना होगी तब में अवतार लेकर वेदो का प्रवर्तन करूगा।

हयग्रीव नामक राक्षस ब्रह्म मुख से वेद चुराकर पाताल लोक में छिपकर बैठ गया तब भगवान मत्स्य ने हयग्रीव को मारकर वेदों का भी उद्घार किया।[42]

ऐसी कथा का वर्णन कल्याण पुराण[43] अग्नि पुराण[44] शतपथ ब्राह्मण[45] में भी मिलता हैं इसके अतिरिक्त श्रीमद् भागवत के स्कन्ध 8 के चौंतीसवे अध्याय में भी मत्स्यावतार का कथा संक्षेप में उल्लेखित है।

श्री विष्णु के मत्स्यावतार का सुन्दर चित्रांकन भारत की विविध शैलियों में है। आधुनिक शैली में निर्मित एक चित्र उल्लेखनीय है। (चित्र संख्या 013) इस चित्र में श्यामवर्णीय शंख , चक्र, मुकुटधारी चर्तुभुजी विष्णु अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित मत्स्यावतार रूप धारण किये जल में विराजमान है। वे अपनी दोनो अग्र भुजाओं में वेदरूपी चारों बालकों को पकड़े हुऐ चित्रित है जिनमें से तीन बालक गौरवर्णीय एवं एक बालक श्यामवर्णीय है। पृष्ठभूमि में पारदर्शी जल का अंकन है। जैसा कि मत्स्यावतार कथा में वर्णित है कि श्री हरि ने कहा था कि प्रलयकाल में वेदों की रक्षा करूगॉ, उनका प्रर्वतन करूंगा संभवतः यह चित्र इस कथन से प्रेरित हो।

(11) कूर्मावतार

पद्मनाभ श्री हरि विष्णु के कूर्मावतार के विषय में विष्णु पुराण , श्रीमद्भागवत, ब्रह्म, पद्म पुराण, वराह पुराण, महाभारत के अतिरिक्त कूर्म

पुराण में कथाऐं उल्लेखित हैं विष्णु के दशावतार में यह मुख्य अवतार माना गया है।

कूर्म पुराण जो अठारह सहस्त्र श्लोकों से परिपूर्ण है, इसका सम्बन्ध लक्ष्मीकल्प से भी है। कूर्म पुराण में उल्लेखित है जो व्यक्ति 'अयन' के अवसर पर कूर्म पुराण के साथ स्वर्ण मंडित कूर्म अथवा कच्छप का दान करता है वह कई गुना पुण्य का भागीदार होता है।[46]

''पुराडमृर्ताथ दैतेयदानवैः सह देवताः।
मैन्थान मन्दरं कृत्वा ममन्यु क्षीर सागरम्।।''[48]

अर्थात

प्राचीन काल में मन्दराचल पर्वत को मथानी बनाकर देत्यों एवं देवताओं ने अमृत प्राप्ति हेतु क्षीर सागर का मंथन किया ।

''मथ्यमाने तदा तस्मिन कूर्म रूपी जनार्दनः।
बभार मन्दरं देवो देवाना हित काम्यया।।''[48]

अर्थात –

देवताओं के हित की कामना के उददेश्य से जनार्दन श्री विष्णु ने क्षीर सागर का मन्थन होने के समय कूर्मरूप धारण करके मन्दराचल पर्वत को अपनी पीठ पर स्थान दिया।

''देवाश्रव तुष्टुवुर्देव नारदाधा महर्षयः ।
कूर्म रूप धरं द्रष्ट्वा साक्षिणं विष्णुमत्य।।''[49]
''तदन्त रेडभवद् देवी श्री नारायण वल्लभा।
जग्रात भगवान विष्णु स्तामेव पुरूषोत्तमः।।''[50]

अर्थात कूर्मधारी साक्षी, अव्यय विष्णु को देखकर देव महर्षियों के साथ नारदादि ने भी स्तुति वन्दन किया । उसी समय नारायण की बल्लभा (लक्ष्मी) का प्रादुर्भाव हुआ, उन्हे श्री हरि विष्णु ने ग्रहण किया ।

समुद्रमंथन में लक्ष्मी के अतिरिक्त कूर्मरूपी नारायण के अनुग्रह से विविध वस्तुओं का प्राकट्य हुआ । जिनमें उल्लेखनीय है।

1. पारिजात, 2. हरिश्चन्द, 3 मन्दार, 4 पंचकल्प, 5 वृक्ष, 6 विष्णु की कोष्टुभमणि, 7 अमृतकलश लिये धन्वन्तरि वैद्य, 8 चन्द्रमा, 9 कामधेनु, 10 ऐरावत गज, 11 सूर्य का वाहन सप्तानन उच्चेःश्रवा धोड़ा , 12 विष्णु का शाङगी धनुष, 13 लक्ष्मी जी रंभा आदि अप्सराऐं, 14 शंख वारूण तथा कालकूट ।[51]

समुद्र मंथन के विषय में प्रस्तुत कथा का वर्णन कूर्म पुराण में प्रस्तुत है। दुर्वासा मुनि इन्द्र से मिलने के प्रयोजन से स्वर्ग पहुंचे। उस समय इन्द्र ऐरावत गज पर बैठकर कहीं जा रहे थे तब दुर्वासा मुनि ने उपहार स्वरूप इन्द्र को पारिजात पुष्पमाला भेंट की, उस माला को इन्द्र ने स्वयं न पहनकर गजराज के गले में डाल दी। गज उसकी खुशबू के वशीभूत हो मदमस्त हो गया और उसने वह पुष्पमाला गले से खींचकर उसका मर्दन कर भूमि पर फेंक दी। यह दृश्य देख महर्षि दुर्वासा ने अपमान से क्रुद्ध हो इन्द्र को शाप दे डाला।[52]

इस शाप प्रभाव से इन्द्र तथा तीनो लोको के देवतागंण एवं त्रिलोक का वैभव नष्ट हो गया । तब इन्द्रादि सब देवतागणों ने श्री नारायण का स्तवन किया और कहा कि हे नाथ देत्यों के कारण हम कष्टमय जीवन जी रहे हैं और महर्षि के शाप से हम श्री हीन हो गये हैं अतः आप हमारा उद्धार करें।

तब श्री हरि के उपाय अनुसार देवताओं ने दानवों का समुद्र मंथन से अमृत प्राप्ति के लिये राजी कर लिया एवं मंन्दरगिरि को मथानी को दण्ड़ एवं वासुकि को रस्सी बनाकर मंथन कर्म का शुभारम्भ कर दिया। तब सागर में वह मन्दराचल डूबता हुआ रसातल में पहुंच गया। तत्पश्चात् श्री हरि ने कर्मू का रूप धारण कर अपनी पीठ पर मन्दर पर्वत को स्थान दिया श्री हरि विष्णु का यह कच्छप रूप इतना विशालकाय था कि वह एक लाख योजन तक फैला हुआ जम्बूद्वीप के समान था।[53]

"तैतिरीय ब्राहम्ण में कूर्म के विस्तृत स्वरूप का वर्णन है।
विलोकय विहनशविधि तदेश्वरा दुरनवीर्यो विल्थाभिसन्धिः
कृत्वायपुः काच्छपभद्रभुत महत् पविश्य तोयं गिरिमुज्जहार
दधार पृस्ठेन सलययोजन प्रस्तारिणा द्वीप इवायरो महान"[54]

अर्थात

कच्छप का शरीर अत्यधिक विशाल था वह जम्बूदीप के समान एक लाख योजन तक विस्तृत था। श्री हरि के कूर्म अवतार में विशाल स्वरूप धारण करने से ही समुद्र मंथन जैसा कठिन कार्य पूर्ण हो सका ।

देवताओं एवं असुरो के मध्य युद्ध हो गया तब दैत्यगुरू शुक्राचार्य जिनके पास शिव से प्राप्त संजीवनी विद्या थी उस विद्या से वह देत्यों को पुनः जीवन दान देने लगे और देवतागण जो दुर्वासा मुनि के शाप से प्रभावित थे वे युद्ध भूमि में हारने लगे अतः उन्हे अमृत की अधिक आवश्यकता थी।

तब देवों की प्रार्थना सुन विष्णु भगवान मन्दराचल पहुँचे उस समय मन्दराचल शेषनाग के फन से लिपटा हुआ जिसे दैत्यगण एवं देवतागण पकड़े हुए थे। शेषनाग के फन की ओर देत्यों का समूह था जिसकी अगुवाई राहु कर रहे थे एवं पूंछ की और इन्द्रादि सहित प्रमुख देवता गण थे। सहस्त्र मुखाकृति वाले शेष नाग के सिर को बायें हाथ से एवं देह को दायें हाथ से देत्येन्द्र बलि खींच रहा था। अमृत मन्थन दण्ड़ को श्री भगवान विष्णु ने दोनों हाथों से पकड़ रखा था।

लगभग सौ वर्षो तक क्षीरसागर का मंथन होता रहा इस मंथन कार्य में दैत्य व देवतागण दोनों ही थक गये तब इन्द्र ने बारिश कर उन्हें शीतलता प्रदान की ।

मन्थन करते–करते हजारों लाखों जीव जन्तुओं सहित मन्दराचल पर्वत के ऊपर विराजित वृक्षो के समूह परस्पर संघर्षण से टूट–फूट कर समुद्र में गिरने लगे। उस घर्षण से उत्पन्न अग्नि ने सभी जीवजन्तुओं को भस्मसात कर दिया।

इस भयानक अग्नि को शांत करने हेतु इन्द्र ने पुनः वर्षा की जिससे वृक्षो से प्राप्त गौंद व औषधि के रस जल के साथ समुद्र में मिल गये तब अमृत स्वरूप गुणकारी रसों के मिश्रण से वह दुग्धवत जल धृत के रूप में परिणित हो गया।[55]

तत्पश्चात् समुद्र मन्थन से सर्वप्रथम चन्द्रमा का प्राकल्प हुआ । उसके बाद धृत समुद्र से पीत वर्णीय वस्त्रों से सुशोभित लक्ष्मी जी उत्पन्न हुई। फिर सुरादेवी, पीला घोड़ा, अमृत से उत्पन्न होने वाली दिव्य कौस्तुभ मणि जो भगवान विष्णु के वक्ष स्थल पर विराजित हो तदनन्तर विकसित पुष्प गुच्छ से सुशोभित पारिजात वृक्ष उत्पन्न हुआ ।

तदुपरान्त वन समुद्र मन्थन से धूम (विष) निकला जिसे सभी प्रकार के देवतागण देत्य सहन नहीं कर पा रहे थे तब भगवान शिव ने इस हलाहल विष को अपने गले में स्थान देकर नीलकंठ कहलाएं। यह विष कालकूट के नाम से भी जाना जाता है।[56]

तदुपरान्त समुद्र मंथन के दौरान आर्युवेदाचार्य धनवन्तरि का प्रार्दुभाव हुआ । फिर मदिरा और उसके पश्चात् अमृत निकला । तब अमृत प्राप्ति हेतु सुरों देवतागाणों में युद्ध शुरू हो गया तो विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर दानवों के समीप पहुंचे तो देत्यों ने मोहिनी रूप के वशीभूत हो मोहिनी स्वरूप विष्णु को अमृत कलश दे दिया । तब मोहिनी को पाने के लिये देत्यों देवताओं

में युद्ध छिड़ गया और युद्ध के दौरान वे देवताओं को अमृतपान कराने लगे । तभी राहू रूप बदल कर विष्णु के पास अमृत पीने हेतु आया तब विष्णु ने चक्र से उसका सिर काट कर दो भागो में विभक्त कर दिया जो राहू–केतू के नाम से जाने गये ।

मोहिनी को पाने लिए युद्ध जारी था। अतः देत्यों का विनाश करने हेतु श्री विष्णु ने नर नारायण[57] अवतार लिया और देवताओं को विजय श्री दिलाई तथा उन्हें अमृत प्रदान कराया[58] इसके साथ ही समुद्र मंथन से प्राप्त सामग्री को योग्यता के आधार पर देवताओं को समर्पित किया कूर्म अवतार का प्रसंग तैतिरीय आरण्यक के अतिरिक्त शतपथ ब्राहम्ण में भी उल्लेखित है।

अतः भारतीय चित्रकला में श्री विष्णु के कच्छप अवतार का विभिन्न शैलियों में चित्राकंन सौन्दर्यात्मिक तत्वों से पूरित है। आधुनिक चित्रों की श्रृखंला में हरीश जौहरी द्वारा निर्मित – कच्छप अवतार का चित्रण (चित्र संख्या 014) वाश तकनीक में किया गया है चित्र के मध्य भाग में स्थापित मेरू पर्वत पर नीलवर्णीय पीताम्बर धारी पद्मासीन श्री विष्णु विराजित हैं पर्वत के मध्य भाग में कमलासीन लक्ष्मी जी चित्राकिंत है निम्न भाग में धन्वन्तरि, जो गुलाबी आभायुक्त वस्त्रो में दर्शित है हाथों में स्वर्ण अमृत कलश लिये खड़े हुऐ हैं, जिनका मुख देवगणों की ओर है मन्दराचल पर्वत से लिपटा शेषनाग जिसे वायीं ओर पूंछ की तरफ से देवतागण पकड़े हैं जिसमे शिव, ब्रहमा के साथ

अन्य देवताओ के साथ सूढ़ उठाऐ गणेश अंकित है वही दूसरी ओर स्वर्ण मुकुटधारी असुरगण दायीं ओर फन को पकड़े हुए चित्राकिंत है वासुकि के मुख से निकलते हुए कालकूट विष को श्यामवर्णीय बादलों के समान दर्शाया गया है चित्र के निम्नतर भाग में नीले व श्वेत रंगो के संयोजन से अति सुन्दर वर्तुलाकार लहरों के मध्य कूर्म पीठ मेरू पर्वत उठाये दर्शित है। चित्रकार ने मंथन से प्राप्त रत्नो , सामाग्रियों का सौन्दर्य पूर्ण अंकन किया है।

चित्र में बॉयी ओर श्वेत व गुलाबी रंग की अनेकों सूंढ़ वाले, ऐरावत गजराज के साथ पारिजात वृक्ष जिनके निम्नतर भाग के दायीं एवं बांयी ओर स्वर्ण पत्तियों का अंकन है इसके अतिरिक्त मोर पंख की पूछ युक्त गाय जिसके पंख स्वर्ण के समान है, व मुख स्त्री आकृति युक्त है जो मुकुटधारी है एवं गले में स्वर्ण मंडित हार पहने है पृष्ठ भाग में श्वेत रंग से पूरित शंखाकृति है।

नीली पृस्ठ भूमि युक्त इस चित्र के दायी और मदंराचल पर्वत के दायी और चार अप्सराऐं अंकित हैं जो नील, हरित, गुलाबी रंगो के वस्त्रों को धारित किये है जिनमें से तीन अप्सराऐं उड़ती हुई चित्रित हैं, एवं अन्य एक अप्सरा करवद्ध अवस्था में खड़े हुए अंकित है, अप्सराओं के पास ही उच्चैः श्रवा धोड़े का अंकन अत्यन्त सुन्दरता के साथ वर्णित है।

(12) धन्वन्तरि अवतार

समुद्र मन्थन के समय ही आयुर्वेद के जनक धन्वन्तरि वेद का लोकार्पण हुआ। मत्स्य महापुराण में कहा गया है कि समुद्र के मथे जाने पर आयुर्वेद के प्रजापति परमेश्वर शाली धन्वन्तरि दिखाई दिये । जिनके हाथों में अमृत कलश था । एक अन्य विद्वान के अनुसार लक्ष्मी के साथ धन्वन्तरि का उदय हुआ।[59] धन्वन्तरि को ज्ञान विज्ञान के ज्ञाता कहा गया हे ये विष्णु के अवतार माने गये है।

अतः भारतीय चित्रकला में धन्वन्तरि अवतार के चित्रों की संख्या अल्प है अधिकाशतः कूर्मावतार चित्रो में धन्वन्तरि वैध का चित्रांकन किया है।

आधुनिक चित्रकला में धन्वन्तरि अवतार का यथार्थवादी चित्रांकन किया है। (चित्र संख्या 015) दर्शित चित्र में आयुर्वेदाचार्य धन्वनतरि के एक हस्त में अमृत कलश रखे हैं एवं दूसरा हस्त वरद मुद्रा में अंकित है जो गले में पुष्पमाला धारण किए हैं । (चित्र संख्या 015)

(13) मोहिनी अवतार

समुद्र मंथन के समय अमृत निकला, जिसका पान करने हेतु देवताओं एवं देत्यों में युद्ध शुरू हो गया। तब विष्णु ने मोहिनी स्वरूप धारण कर देव दानवो के मध्य पहुंचे और अपनी माया का जाल चँहु ओर फैलाकर दैत्यों से अमृत कलश

प्राप्त किया और युद्ध स्थल पर चारो ओर घूम कर अथवा नृत्य करते हुए देवताओं को अमृत पान कराया।[60]

श्री हरि के मोहिनी अवतार लेने हेतु रोचक कथा प्रस्तुत है भगवान शिव ने भस्मासुर की भक्ति से प्रसन्न होकर वरदान दिया कि वह जिसके सिर पर अपना हाथ रखेगा वही भस्म हो जायेगा। तब भस्मासुर वरदान फल जानने हेतु शिव के पीछे भागा तब श्री हरि विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर नृत्य में रत भस्मासुर का हाथ स्वयं उसके ऊपर रखवा कर उसे भस्म कर दिया।

अतः भारतीय चित्रकला में मोहिनी अवतार के चित्रों का विस्तृत अंकन है एक चित्र (चित्र संख्या 016) में जो जयपुर शैली में निर्मित है, मोहिनी अवतार का रोचक अकंन है इस चित्र के मध्य भाग में नृत्यांगना का रूप धारण किये मोहिनी (विष्णु) का चित्रण है , जो हाथों में अमृत कलश लिए है एवं दूसरा हाथ ऊपर उठा हुआ नृत्य मुद्रा में अंकित है। दर्शित चित्र में बायीं ओर उनके राक्षस नृत्य का आंनद उठाते हुए देखे जा सकते हैं जिनमें कोई बैठकर तो कोई लेटकर मोहिनी के रूप सौन्दर्य के साथ नृत्य का रसास्वादन करता प्रतीत हो रहा है दायीं ओर बैठे देवतागणों को सौन्दर्यमयी मोहिनी ने मंत्रमुग्ध कर रखा है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 017) जो आधुनिक शैली से प्रेरित है, इसमें मध्य भाग वृहताकार रूप लिये अंलकृत आभूषणो से युक्त नृत्यागना मोहिनी (विष्णु)

को नृत्य करते हुए चित्रांकित किया है पृष्ठभूमि देव एवं दानवों का अंकन है जो अमृत पान हेतु अपने हाथ फैलाए चित्रित है ।

(14) नरसिहं अवतार

नरसिहं अवतार का विस्तृत वर्णन तैतिरिय संहिता में वर्णित है। श्री विष्णु के नरसिहं रूप का वर्णन वराह पुराणांक में प्रस्तुत है जिसमें कहा गया है जो प्रत्येक युग में भयावह नरसिहं धारण कर विराजित है, जिनका मुख रोद्र रूप से परिपूर्ण है एवं देत्यों, असुरों का वध करना, उनका गुण है । अतः नरसिहं अवतार लेने हेतु श्री विष्णु का उद्देश्य भी यही था। " बज्रनखाय विद्रमहे तीक्ष्ण दंताय धीर्माह तन्नोनारसिहं प्रचोदयात्" इस गायत्री में नरसिहं अवतार के लिए 'बज्रनख' एवं "तीक्ष्ण दन्त " शब्द से उनकी भयंकरता का आभास होता है। असुराराज हिरण्यकश्यप को मारकर भक्त प्रहलाद को स्नेह कर अपनी गोद में बिठाकर आर्शीवाद देने वाले नरसिहं भगवान के चरित्र का वर्णन पुराणों में दिया गया है।[61] श्रीमद् भागवत पुराण के सप्तम स्कन्ध में इसका विस्तृत वर्णन है।

सतयुग की कथानुसार महर्षि कश्यप की पत्नि अदिति के दो पुत्र थे जो हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष के नाम से जाने जाते है। दोनो असुर श्रेणी में आते थे जब विष्णु ने वराह अवतार धारण कर हिरण्याक्ष का वध किया । विष्णु से शत्रुता तो वह दुखित हुआ और प्रतिशोध की ज्वाला में जलते हुए विष्णु का

धोर विरोधी हो गया. । हिरण्यकश्यप ने अजेय बनने के उद्देश्य से महान तप किया तथा अमृतत्व प्राप्ति हेतु वह महेन्द्राचल पहुँच गया जहाँ उसने जपतपकर अजेय होने का वरदान पाया । उसे देवता, मनुष्य, पशु से न मृत्यु प्राप्त होने का वरदान मिला।

जब हिरण्यकश्यप तप कर रहा था उस समय इन्द्र ने देत्य वंश का नाश करने के उद्देश्य से हिरण्यकश्यप की पत्नी कयाधु का हरण कर लिया । जब उसे देवगणों से ज्ञात हुआ, कि गर्भवती कयाधु के गर्भ पर विष्णु की कृपा है और जिनका नाम विष्णु भक्त प्रहलाद है तो इन्द्र ने कयाधु को मुक्त कर दिया।

प्रहलाद के जन्म के पश्चात् इनकी प्रभु भक्ति में तन्मयता देखकर पिता हिरण्याकश्यप नें विभिन्न तरीकों से भक्त प्रहलाद पर अत्याचार करवाना शुरू किया। जब अत्याचार ने अपनी सभी सीमाओं को तोड़ दिया तो अपने भक्त की रक्षा हेत विष्णु ने नरसिहं रूप धारण किया और उन्होंने विशाल खम्भ को चीरकर उसमें से प्रकट होकर नरसिहं ने हिरण्यकश्यप को गोधूलि वेला के समय, अपनी जंधा पर लिटाकर अपने नाखूनों द्वारा वध कर दिया।[62]

इस कथा का वर्णन अन्य पुराणों कल्कि पुराण[63] विष्णु पुराण[64] पद्म पुराण[65] मत्स्य पुराण[66] के अतिरिक्त श्री हरिदशावतार[67] में भी उल्लेखित है। भारतीय चित्रकला में पारम्परिक एवं आधुनिक व लोकशैली में नरसिहं अवतार

के विभिन्न रूपों का चित्रांकन देखने को मिलता है। प्रस्तुत चित्र (चित्र संख्या 018) जो जयपुर शैली में चित्राकित है। इसमें पीतवर्णीय नरसिहं अवतार का सुंदर चित्रण है हाथों में शंख पद्म लिये हुए है। विशालकाय नेत्र, ऊपर की ओर उठे हुए रेखाकिंत केश वाले नरसिहं भगवान ने जंधा पर हिरण्याकश्यप को लिटाकर नुकीले हस्तनखों द्वारा उनका वध करने को तत्पर है भयभीत हिरण्याकश्यप नरसिहं की ओर देखता हुआ अंकित है। सम्मुख खड़े हुए भक्त प्रहलाद नरसिहं धारी श्री हरि को प्रणाम करते हुए शोभित है । पृष्ठभूमि में वास्तुकला का चित्रांकन किया गया है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 019) जो माइका पेन्टिग में चित्रांकित है चित्र में नरसिहं भगवान खड़े हुए दर्शित है चतुर्भुजी नरसिहं भगवान के पीछे के दोंनों हस्त जिनमें शंख चंक्र शोभित है। लाल पीले हरे रंग के सयोजन से पूरित है। आगे के दोनों हाथों की मुद्रा वरद् रूप में अंकित है। स्वर्ण मुकुट धारी नरसिहं भगवान ने अपने शरीर पर अलंकृत स्वर्ण कवच पहना हुआ है । उन्होने शरीर पर हरे रंग को विशिष्ट रूप में पहना हुआ हैं स्वर्ण रत्न जड़ित अलंकृत आभूषणों के अतिरिक्त गले में पुष्पमाला पहने हैं जिसके दोनो छोर नीचे की ओर खुले हुए है पृष्ठभूमि में काष्ठ का आभास कराती हुई रेखाओं का अकंन है।

एक अन्य चित्र में (चित्र संख्या 020) विशाल मुखाकृति घुमावदार केशो को फैलाए एवं रक्तवर्णीय निकली जिव्हा युक्त नरसिहं भगवान का अंकन है। श्यामवर्णीय शरीर वाले नरसिहं का मुख पीत वर्णीय है। जिनके पीछे के एक हाथ में चक्र है एवं दूसरा हाथ गोदी में बैठे भक्त प्रहलाद के सिर पर है आगे के दोनों हाथ जिनमें से एक प्रहलाद के गाल पर एवं दूसरा हाथ उनकी गोदी में स्थित है वहीं समीप ही लाल रंग की धोती पहने मृत हिरण्याकश्यप का अंकन है जिसकी छाती से रक्त बह रहा है । उसके एक हाथ के पास ढ़ाल व तलवार पड़ी है। नरसिहं के पास ही दायी ओर गदा रखी है। चित्र की पृष्ठभूमि में नीले, सफेद रंगो की कई आभाओं का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत चित्र में नीले और पीले रंग का बाहुल्य है।

(15) वामन अवतार

जिनका कोई माप नहीं है फिर भी बलि का यज्ञ नष्ट करने का विचार किया उस योग पुरूष जिसके हाथ में दण्ड , मृगचर्म एवं छत्र शोभायमान है। जिन्होने अपने तीन पगों से तीनों लोकों को नाप लिया , ऐसे हरिहर श्री विष्णु वामन रूप में अवतरित हुए।[68]

श्री हरि के वामन अवतार लेने हेतु प्रचलित कथानक इस प्रकार है प्राचीन समय में हिरण्यकश्यप अपने अधर्मी आचरण के कारण, श्री हरि के

हाथो मृत्यु को प्राप्त हुआ । उसका पुत्र प्रहलाद जो विष्णु भक्त था, इसी के पुत्र विलोचन एवं विलोचन का पुत्र असुरराज बलि हुआ।

देवासुर पुरा युद्धे बलि प्रभृतिभिः सुराः।
जिता स्वर्गोत्परिभ्रष्टाहरि ते शरण गताः।।
सुयणामभयं दत्वा अदित्या कश्यपेन च।
स्तेतो सौ वामन भूत्वा ह्यादित्या स क्रतु ययौ।।[69]

देवासुर युद्ध में ,दैत्यराज बलि ने गुरू शुक्राचार्य की सहायता से तीनो लोकों को जीत लिया और देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया तब समस्त देवतागण श्री हरि विष्णु के पास पहुंचकर विनती करने लगे । तब विष्णु ने उन्हे अभय रहने का आश्वासन दिया। अदिति तथा उनके पति कश्चपऋषि ने भी विष्णु का स्तवन किया । फिर अदिति के गर्भ से वामन रूप धारण कर श्री हरि 'वामन' रूप में असुरराज बलि के यज्ञ स्थल पर पहुंचे।

विष्णु ने वामन स्वरूप में देत्यराज बलि से दान में तीन पग धरती मांगी। इस पर गुरू शुक्राचार्य ने बलि से कहा कि ये वामन रूप में विष्णु हैं और तुम्हारा सब कुछ ले लेगे। लेकिन असुरराज ने कहा कि यदि ये विष्णु हैं और मुझसे मांगने आए है तो मेरे लिये यह महत्वपूर्ण है मेरा अहोभाग्य है तब वामन भगवान ने दो पग में पूरी त्रिलोकी नाप ली। तीसरे पग के लिये बलि ऋणी हो गया तो भगवान विष्णु कहने लगे कि असुरराज तुम मेरे तीसरे पग को पूरा करो या मेरी अधीनता स्वीकार करो। विवश हो बलि उनके पाश से

बंध गये इस तरह श्री विष्णु ने उन्हें ज्ञान देते हुए बंधन मुक्त करते हुऐं सुतल लोक का राज्य प्रदान किया और उनके प्रासादो के द्वार पर गदा धारण किए उपस्थित रहने का आश्वासन देकर नित्य दर्शन देने का वचन दिया।[70] श्री मत्स्य महा पुराण[71], ऋग्वेद[72], शतपथ ब्राह्मण तथा भागवत पुराण[73] में भी इस कथा उल्लेख मिलता है।

अतः भारतीय चित्रकला में इस रोचक कथानुसार सुन्दर वर्णन पारम्परिक, आधुनिक, लोककला शैलियों में विविधता लिए प्रस्तुत है। एक चित्र में (चित्र संख्या 021) गुलाबी रंग के अधोवस्त्र पहने हुए अलंकृत वस्त्राभूषण से युक्त देत्यराज बलि सिहांसनासीन है। पीछे की ओर सेविका खड़ी है जो हरी और नारंगी आभायुक्त वस्त्रों को धारण किए है। बलि के समक्ष काष्ठ छत्र धारण किए वामन अवतार लिए, विष्णु लधुरूप में खड़े है।। इसमें वामन भगवान राजसी वस्त्राभूषण से सुसज्जित है। वामन प्रभु के पीछे संभवतः देत्य गुरू शुक्राचार्य दौनों हाथों को पकड़े हुऐ खड़े हैं वे नील वर्ण युक्त धोती एवं पीतवर्ण का अधोवस्त्र पहने हुए खड़े हैं। पृष्ठभूमि में एक और महल का अर्धभाग निर्मित है तो बायीं और स्वच्छ आकाश निर्मल नदी एवं वृक्षों का अंकन है।

प्रदीप झा द्वारा रचित गीत गोविन्द में कपड़े पर अकिंत एक (चित्र सख्यां. 022) राजस्थानी शैली से ओतप्रोत है। इसमें बालरूप धारण किये वामन

भगवान को त्रिविक्रम अर्थात (तीन पैर युक्त) नाम को चरितार्थ करते हुए अंकन किया गया है। वामन भगवान प्रथम पद वैकुण्ठ पर द्वितीय चरण पृथ्वी एवं तृतीय चरण बलि के सिरपर स्थित है। रक्त वर्णीय धोती व अलंकृत आभूषण पहने वामन को विशाल रूप में दर्शाया है। चर्तुभुजी वामन के हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, दण्ड़ तथा कमण्डल है। वामन भगवान के सिर के पृष्ठ भाग में सूर्य के समान तेजयुक्त आभामण्डल चित्रित है। वामन के सामने ही हाथ जोड़े जयदेव विराजमान है। चित्र के निम्न भाग में नीले रंगयुक्त आड़ी रेखाओं द्वारा संयोजन किया है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 023) जो आधुनिक शैली में अंकित है । इस चित्र में श्री हरि विष्णु के वामन अवतार को बाल रूप में चित्रित किया गया है। उनके एक हाथ में कमण्डल, कटोरा तथा दूसरे हाथ में दण्ड एवं काष्ठ छत्र पकड़े हुए है। शरीर पर मृग छाल एवं गले में रूद्राक्ष के आभूषण शोभायमान है । इसके अतिरिक्त गले में पड़ी पुष्पमाला का भी अंकन है। विशाल नेत्र युक्त श्याम वर्णीय वामन भगवान की केशराशि का लहरदार चित्रण एवं सिर के पीछे बना आभामण्ड़ल शोभा को द्विगुणित कर देता है। पृष्ठभूमि पहाड़ी व हरितिमा युक्त है।

(16) परशुराम अवतार

परशुराम भृगुपति व विष्णु के आवेशावतार कहे जाते है। श्री हरि ने परम पराक्रमी परशुराम का रूप धारण कर , इक्कीस बार सम्पूर्ण भूमण्डल पर विजय

प्राप्त की एवं उसे कश्यप ऋषि को प्रदान किया। परशुराम अवतारी भगवान सत्पुरूषों के रक्षक व दैत्यों के सहांरक के रूप में प्रचलित है।[74]

श्री हरि ने परशुराम अवतार लिया इस संदर्भ में प्रचलित कथा इस प्रकार है।

परशुराम जमदग्नि व रेनुका के पॉचवे पुत्र थे । पुत्रोत्पति के फलस्वरूप रेणुका एवं विश्वामित्र की माता को प्रसाद मिला, जो देववश आपस में बदल गया। इसी कारण परशुराम जी ब्राह्मण होते हुए भी, गुणों में क्षत्रिय स्वभाव लिए थे एवं विश्वामित्र ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के बाद भी ''ब्राह्मषि' पद को प्राप्त किया।[75] ये अपने पिता के परम भक्त थे। परशुराम जन्म से ब्राह्मण व कर्म से क्षत्रिय थे। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने इन्हे तीक्ष्ण धार वाला अमोधपरशु (फरसा) भेंट स्वरूप दिया। अतः इसे धारण करने के कारण इनका नाम परशुराम पड़ गया। इनका वास्तविक नाम राम था।

कृतवीर्य पुत्र सहस्त्रबाहू अर्जुन दत्तात्रेय की कृपा से समस्त भूमण्ड़ल पर राज्य कर रहा था सहस्त्रवाहु अर्जुन द्वारा अपने पिता व माता के अपमान का बदला लेने के उद्देश्य से परशुराम ने सहस्त्रबाहु अर्जुन के साथ – साथ पृथ्वी को भी क्षत्रिय विहीन कर दिया। स्वयं महेन्द्र पर्वत निवास करने चले गये।[76]

इस प्रकार क्षत्रियों के उद्दत देखकर, शांति स्थापना करने हेतु, हरि भगवान परशुराम रूप में अवतरित हुएं इनका चरित महाभारत[77] व पुराणों के साथ–साथ मत्स्यपुराण[78] , विष्णु पुराण[79] व भगवत पुराण[80] में वर्णित है।

सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिवधनुष भंग करने पर स्वयं जनकपुरी पहुचे और वहॉ उन्होने राम में ही विष्णु दर्शन कर वैष्णव धनुष प्रदान किया व स्वयं महेन्द्र पर्वत पर पहुॅचकर तपस्या द्वारा परमसिद्धि को प्राप्त किया।[81]

भारतीय कला में परशुराम अवतार के सुन्दर चित्रो का वर्णन मिलता है। राजस्थानी शैली का एक चित्र उल्लेखनीय है। यह जयदेवकृत गीत गोविन्द में चित्रित है इस चित्र में (चित्र संख्या 024) रक्तवर्णीय वस्त्रों में परशुराम दर्शित है, जिनके एक हाथ में परशु एवं दूसरे से क्षत्रिय का सिर पकड़े चित्रित है, उनके आस पास अन्य क्षत्रियों के मुण्ड धरा पर यत्र तत्र बिखरे हुए हैं। नील वर्णीय परशुराम अलंकृत मौक्तिक आभूषणों से शोभायमान है। मस्तक के पृष्ठ भाग में सूर्य सदृश आभामण्ड़ल चहु ओर प्रकाशित है। निकट ही करबद्ध मुद्रा में जयदेव खड़े हैं।

गुलेर शैली में निर्मित एक चित्र में (चित्र संख्या 025) परशुराम का क्षत्रियों से युद्ध का चित्रण है। इसमें परशुराम व सहस्त्रबाहु का युद्धांकन दर्शाया गया है। कमर तक लहराती केशराशि व चर्म को वस्त्र बनाकर पहने हुए परशुराम के एक हाथ में परशु व दूसरे हाथ में सहस्त्रबाहु के केश हैं जिन्हें पकड़ कर वह उसका सिर फाड़ने को उद्दत है।

पृष्ठभूमि में किले के अन्दर दर्शित मार्ग, जो युद्ध भूमि का आभास कराता है। यहां पर परशुराम व सहस्त्रबाहु के युद्ध के अतिरिक्त विविध आयुधों

व कटी हुई भुजाओं के अतिरिक्त गज व अश्वो तथा क्षत्रियों के क्षत विक्षत शरीर धरा पर विखरे हुए है।

मैसूर शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 026) में परशुराम द्वारा अपनी माता का सिर धड़ से अलग करने का चित्रांकन है । चित्र के बायीं ओर पालथी मारे रेणुका बैठी है तथा दायीं ओर खड़े परशुराम द्वारा अपनी मॉ का सिर तलवार से अलग करने का अकंन है। अलंकृत वस्त्र आभूषणों व मौक्तिक हार से सुसज्जित परशुराम व रेणुका का सौन्दर्यपूर्ण चित्रांकन है। पालथी मारे एक हाथ दूसरे हाथ पर रखे रेणुका देवी के अधोवस्त्र का लहरदार अंकन किया गया है।
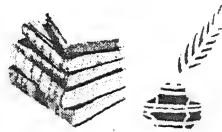
(17) व्यास अवतार

श्री हरि विष्णु के कलावतार के रूप में भगवान व्यास का नाम आता है। इनकी माता का नाम सत्यवती था । जो केवर्तराज की पोष्य पुत्री थी। इनका जन्म यमुना द्वीप में होने से एवं नीलवर्णीय होने के कारण इन्हे 'कृष्ण द्वैपायन' नाम से सम्बोधित किया गया।[82] पुराणों के सम्पादक कर्ता वेद व्यास को ही माना गया है।

प्रारम्भ में वेद एक ही था। सत्यवती सुत व्यास ने मनुष्यों की शक्ति एवं आयु का ह्रास होते देख वेदों का विस्तार (व्यास) किया। इसीलिये उन्हे 'वेदव्यास'

भी कहा जाता है। अठारह पुराणों के अतिरिक्त अन्य ग्रंथो व उपपुराणों के रचियता भी वेद व्यास को माना गया है।[83]

इसके साथ ही पंचमवेद अर्थात महाभारत ग्रंथ भी व्यास भगवान द्वारा निर्मित है। वे अलौकिकता से परिपूर्ण थे। उन्होनें समय–समय पर पाण्डवों की सहायता भी की।[84] (कल्याण पुराण कथाड़क सं. 1 पृष्ठ संख्या 333–334) उनके मुख मण्ड़ल के पृष्ठ भाग में सूर्य समान आभामण्ड़ल प्रकाशित है पृष्ठभूमि में कुटिया का अंकन किया गया है। वेद व्यास के बारे में विस्तृत विवरण श्रीमद् भागवत पुराण में भी उल्लेखित है।

भारतीय चित्रकला में अवतार चित्रण की श्रृंखला के अर्न्तगत वेद व्यास का चित्राकंन दर्शनीय है। एक चित्र में (चित्र संख्या 027), जो आधुनिक शैली में निर्मित है, इसमें मध्य में चर्तुभुजी लम्बोदर आसन पर विराजमान हैं जो चौक पर ताड़ पत्र पर महाभारत लिखने में व्यस्त है। निकट ही दवात भी रखी है एवं चौकी के पास मूसक सिर उठाए चित्रित है। दायीं ओर सत्यवती नन्दन व्यासमुनि वक्ता के रूप में दर्शित है वहीं बायीं ओर अन्य ऋषि का भी चित्रण है। गजानन अलंकृत वेशभूषा एवं मुकुट धारण किए हैं। व्यास मुनि ने आभूषणों में रूद्राक्ष को पहना हुआ है, पृष्ठभूमि ने काष्ठ कुटीर का अंकन किया है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 028) आधुनिक शैली का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है । इस चित्र में हरि के अवतार स्वरूप व्यास ऋषि को वेद

पुराणों की रचना में निमग्न दर्शाया है । उनके निकट ही पुराणों का संकलन है। चौकी पर रखी दवात एवं पंख को कलम बनाकर लेखन में व्यस्त व्यास ने रूद्राक्ष की माला पहनी हुई है।

(18) रामावतार

श्री विष्णु के निम्नलिखित अवतारों में रामावतार अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया है । महामानव, अलौकिक शक्तियों के रूप में विष्णु ने अयोध्या के राजा दशरथ के यहॉ राम के रूप में जन्म लिया और पिता की आज्ञा का पालन करने हेतु चौदह बरस का वनवास पाया। उस समय दैत्यराज रावण, लंका का राजा था। उसने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाकर सम्पूर्ण आर्यावर्त पर एक छत्र आधिकार जमाना चाहा और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने युद्ध की विभीषिका फैलाई, अत्याचार किये। अहंकार और काम का आश्रय लेकर श्रीराम की धर्म पत्नी सीता को छल, बल द्वारा हरण कर लंका में ले गया।

श्री राम ने पत्नी के प्रतिशोध के कारण संसार को कष्टों से मुक्ति दिलाने हेतु रावण को मृत्युलोक पहुॅचाकर, एक आदर्श राज्य की स्थापना की । रामायण, महाभारत, श्री मद्भागवत तथा वेदों में भी रामाअवतार के बारे में विस्तृत उल्लेख वर्णित है। दशरथ का वर्णन वैदिक साहित्यो में भी लिखित रूप में प्रस्तुत है । ऋग्वेद में अन्य राजाओं के साथ दशरथ की प्रशंसा की गई है । वही श्री राम के भी विवरण मिलता है।[85]

यधपि राम का चरित्र एक शील, शक्ति , मर्यादा पुरूषोत्तम का रहा है, उनकी लीलायें जन्–मानस को संधर्ष मय जीवन के साथ–साथ आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। उनकी कथाऐं, आस्था और भक्ति का केन्द्र भी मानी गई है। इसीलिये भारतीय सस्कृति व कला भी राम के चरित्र से प्रभावित रही और चितेरों ने अपनी कला में उनके विविध रूपों को उकेरा। अतः भारतीय चित्रकला में पारम्परिक, लोक शैली के अतिरिक्त आधुनिक शैली में भी रामावतार विस्तृत रूप में चित्रांकन दर्शनीय है। मैसूर शैली की एक चित्र (चित्र संख्या 029) के मध्य भाग में विशाल रूप में प्रस्तर निर्मित सेतु पर श्रीराम विराजित है। सम्मुख ही मारूतिनन्दन हनुमान हाथ जोड़े खड़े हैं। वही श्री राम के पीछे लधुरूप में लक्ष्मण को करवद्ध खड़े हुए दर्शाया है। श्री राम लक्ष्मण एवं हनुमान अंलकृत मौंक्तिक व स्वर्ण आभूषणों व वस्त्रालंकारो से शोभायमान है। पृष्ठभूमि में पुष्पलताओं की झालर अलंकृत रूप में, ऊपर सम्भवत मैसूर शैली के अधिकांश चित्रो में दर्शनीय है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 030) जो ताड़ पत्र पर बनाया गया है इसमें ताड़ पत्र पर राम रावण का युद्ध दृश्य का चित्रांकन किया गया है । इसमें छःमुखी रावण जो अर्ध अधोवस्त्र धारण किये है, त्रिकोणीय मुकुट पहने हुए, लंका पति जिसकी सत्रह भुजाऐं है, जिनमें विविध अस्त्र शस्त्र शोभा पा रहे है। चित्र में बायीं ओर क्षतिग्रस्त रूप में अश्वयुक्त रथ का अंकन है। दशानन के

सम्मुख ही अश्व युद्ध वाले रथ पर श्री राम धनुषवाण रावण पर ताने हुए बैठे है। शारीरिक अनुपात की दृष्टि से आकृतिया अपेक्षाकृत लघु रूप लिये है। मुगल शैली में निर्मित लघु चित्र (चित्र संख्या 031) में श्री राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा लेते हुए दिखाया गया है । अग्नि की विशाल लहरकारी लपटों के मध्य जानकी को अलंकृत रूप सौन्दर्य लिये इस तरह दर्शाया गया है कि अग्नि की लौं उन्हे स्पर्श तक नहीं कर रही । विशाल अग्नि के बायीं ओर श्यामल आभायुक्त श्री राम एवं गौरवर्णीय लक्ष्मण को बैठे हुए हाथों में धनुष लिये चित्रांकित किया है। पृष्ठ भूमि में मुगल वास्तुशिल्प के साथ–साथ प्राकृतिक दृश्य का अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया गया है ।

अष्ठभुज आकार का एक चित्र (चित्र संख्या 032) हाथी दांत की पटली पर 2x1 इंच के आकार में चित्रित है, इसमें श्रीराम लक्ष्मण को हस्ति पर बैठे दर्शाया गया है। श्याम वर्ण वाले गजराज के अग्रभाग में हनुमंत अहिरावत रूप में श्वेतवर्णीय रूप में है। हस्ति के दायीं एवं बायीं ओर अश्वो पर सवार वानर सेना एवं सैनिकों को दर्शाया गया है । गजराज के अग्रभाग में ध्वज धारी पैदल सैनिकों समूह है, तो वही पार्श्व में चवंर धारी सैनिक विविध रंगीय वेशभूषा में है। पृष्ठभूमि में धुंधली आभा लिये भवन, सरिता , वृक्ष एवं बादलों का चित्रण सौन्दर्य रूप लिये हुए दर्शित है । नीलवर्णीय राम पीताम्बर वस्त्रों में शोभित है। वहीं रक्तिम वस्त्रों में लक्ष्मण हाथ में चवंर पकड़े, भगवान राम की

सेवा में तत्पर है । राम एवं लक्ष्मण के मस्तक के पृष्ठ में आभामण्ड़ल प्रकाशित है।

(19) बलराम अवतार

श्री हरि के नवम् अवतार के रूप में बलराम को माना जाना है।[86] ये देवकी के सातवे पुत्र थे । जिसे देवकी ने कंस के भय से वासुदेव की अन्य पत्नी, जो गोकुल में नंद बाबा के गृह में निवास करती थी, उसके गर्भ में स्थापित कर दिया। इस कारण ये बलदेव कहलाऐ।[87]

भारतीय कला में विष्णु अवतारों के अन्तर्गत बलराम का चित्रांकन प्रायः सभी शैलियों में किया गया है। उन्ही में से एक गढ़वाल शैली में चित्रित इस चित्र में (चित्र संख्या 033) बलराम अपने हल द्वारा चट्टान से जलन निकाल रहे हैं।

चित्र में दायीं ओर विशालकाय चट्टान के समीप ही श्वेत वर्णीय बलराम का सौन्दर्यात्मक चित्रण है । नीलवर्णीय अधोवस्त्र व पीतवर्णीय उत्तरी वस्त्र, बलराम कमर में रक्तवर्ण का पटका बांधे है । उनकी एक भुजा में वज्र व दूसरी भुजा में हल शोभायमान है। निकट ही चट्टान से जलधारा बह रही है, जिसे बलराम ने अपने हल द्वारा चट्टान में से जल को निकाला है।

इसके साथ ही भारतीय चित्रकला में अन्य शैलियो ने बलराम का चित्रण देखने को मिलता है। एक चित्र में (चित्र संख्या 034) चर्तुभुजी बलराम का बंगाल

शैली में अंकन है। बलराम के कमलो में क्रमशः, बज्र, शंख, हल आदि शोभा पा रहे हैं।

(20) कृष्ण अवतार

श्री कृष्ण को विष्णु का परिपूर्णावतार माना जाता है। मथुरा में चाणुर एवं कंस जैसे दैत्यों के अत्याचारों के भार से पृथ्वी दबी जा रही थी। अतः पृथ्वी वासियों को भय एवं आंतक से मुक्ति दिलाने हेतु, इस धरा पर बढ़े हुऐ आंतक के भार को उतारने तथा कसं का वध करने के लिए ही हरिहर विष्णु तारनहार बनकर कृष्णावतार रूप में इस भूमि पर अवतरित हुए।[88]

अपनी लीला रच कर उन्होने कंस एवं अन्य दैत्यो का संहार कर माता पिता को कारागार से मुक्त कराया। युद्ध स्थल पर अर्जुन के सारथि बन उन्हें शाश्वत , सत्य , धर्म और कर्म का उपदेश दिया, जो गीतासार बनकर जनमानस का कल्याण केन्द्र बना।[89]

कृष्ण चरित सगुण व मनमोहक रहा है । श्री कृष्णलीला समाज के लिये प्रेरणा प्रद तो है ही, साथ ही कृष्ण राधा का चरित प्रेम संदेश प्रदान करता है। अतः भारतीय चित्रकला में कृष्ण का चरित्रांकन में उनकी लीलाओं के अतिरिक्त राधा , कृष्ण, वासुदेव, यशोदा , गोपिया , गौ के साथ–साथ यमुनातट व उससे जुड़ा प्रकृति सौन्दर्य भी दर्शनीय है।

एक चित्र (चित्र संख्या 035) जो उड़ीसा शैली में अंकित है । कृष्ण बलराम व उनके सखा को माखन चुराते हुए दर्शाया गया है। नंद किशोर अपने सखा के ऊपर खड़े हुए मटकी में से माखन नीचे गिराते हुए अंकित है। वही पृष्ठ भाग में द्वार के निकट नारी आकृति में संभवत यशोदा खड़ी है, जो इनकी लीला को उत्सुकता वश निहार रही है। एक अन्य चित्र में (चित्र संख्या 036) गोवर्धन पर्वत को अपनी अगुंल पर उठाऐ नीलवर्णीय श्री कृष्ण ब्रजवासियों ग्वालबालों एवं गऊओं के साथ चित्रित है। चित्र की पृष्ठभूमि श्यामल रूप में श्याम धनवर्णीय मेधों में मध्य स्वर्णिम बिजली प्रकाशित हो रही है। वहीं मेधों से वर्षा होती दिखाई दे रही है। रंगो में चित्रित गोवर्धन पर्वत पर बैठा मयूर जोड़ा, एक दूसरे के सम्मुख प्रेम पूर्वक निहारते प्रतीत हो रहे हैं। मध्य में स्थित पीताम्बरधारी श्री कृष्ण, जो शीश पर मोर मुकुट जिसमें पदम् पुष्पों का अंकन है, अलंकृत आभूषणों गले में वनमाला पहने हैं। पुष्पमाला उनके पेरों को स्पर्श करती प्रतीत हो रही है। श्री कृष्ण का बायें हाथ भयभीत ग्वालबाल के सिर पर रखा है। निकट ही गुलाबी वस्त्रो को धारण किये मुगलिये वेशभूषा में नंद बाबा हाथ को उठाऐ हुए हैं।

अलवर शैली में बने एक चित्र (चित्र संख्या 037) में नीले रंग वाले बांके बिहारी, राधा एवं गोपियों के साथ रासलीला का चित्रण किया गया है। मध्य में वृक्ष के निकट मोर मुकुटधारी, पीलावस्त्र धारण किए मनोहर वासुरी को अपने

अधरों से लगाये हुए हैं। निकट ही सौन्दर्य स्वामिनी राधा उन्हे निहारते हुए प्रदर्शित है। दांयीं एवं बांयीं ओर स्थित गोपियाँ, हाथ में श्वेत रंग की चवर को पकड़े हैं। निम्न भाग में सरिता प्रवाहित है, जिसमें लाल, गुलाबी, पीले पद्म पुष्प प्रफुल्लित है। निकट ही बैठे मयूर राधाकृष्ण व गोपियो के सौन्दर्य का रसास्वादन कर रहे है पृष्ठ भूमि में बादलों का वर्तुलाकार अंकन ही साथ ही हरितिमा युक्त वनस्पति भी चित्रित है। वसौहली शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 038) में कृष्ण द्वारा कंस वध का चित्रण किया गया है। कृष्ण के पीछे की ओर बलराम हाथ उठाये दूसरे हाथ में वज्र धारण किये मारने को उद्वत है। श्री कृष्ण कंस के शीश की जटाओं को पकड़कर सिंहासन से खींच कर उन पर वार करते हुए चित्रित हैं। उल्लेखनीय रेखा चित्र में (रेखा चित्र संख्या 039) सारथि बने श्री कृष्ण अर्जुन को गीता सार देते हुए दर्शाये गये हैं। चार अश्वों से जुता हुआ रथ जिस पर मोर मुकुट पहने श्री कृष्ण का रेखांकन लयकारी रेखाओं से आबद्ध है। रथ के पीछे की ओर करवद्ध मुद्रा में धनुष तरकश धारी अर्जुन खड़े है । रथ में ही छत्र व ध्वज अंकित है। ध्वजा में पर्वत उठाये पवन पुत्र हनुमान को स्थान दिया गया है। लयकारी रेखाओं मे बने इस चित्र का सौन्दर्य अनुपम है।

(21) बुद्ध अवतार

कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने अपने दशावतार महाकाव्य में बुद्ध नवम् अवतार के रूप में वर्णित किया है।[90] जयदेव कृत गीत गोविन्द[91] में भी बुद्ध अवतार को नवम् अवतार मानकर नवम् रूप में चित्रांकन किया है।

श्रीमद् भागवत में भी बुद्धावतार का विभिन्न स्थानों पर वर्णन मिलता है।[92]

पृथ्वी पर जब अधर्म का बोलबाला हो गया। चहु और धर्म के नाम पर जीवहत्या हो रही थी, तब उन जीवों के विनाश को रोकने हेतु मायादेवी के गर्भ से श्री हरि ने विष्णु रूप में अवतार लिया। जब उन्होनें मायावी संसार को दुखों के विशाल सागर में डूबा पाया, तो उन्हें इस संसार से विरक्ति हो गई। अतः अमृत्व की खोज हेतु, वे घर वार छोड़ वन को प्रस्थान कर गये। जहॉ उन्हे ज्ञान बोध की प्राप्ति हुई और वे सिद्धार्थ से भगवान बुद्ध कहलाऐ।[93]

भगवान बुद्ध ने संसार में घूम कर प्रेम अहिंसा जीव हत्या को रोकने एवं सद्भाव का संदेश दिया। अतः भारतीय चित्रकला में बुद्ध सम्प्रदाय की दोनों शाखाओं हीनयान व महायान ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय कला में बौद्ध अवतार से सम्बन्धित मूर्ति शिल्प एवं उनकी जातक कथाओं का अंकन दर्शित है।

उल्लेखनीय चित्र (चित्र संख्या 040) उड़ीसा पट चित्रण में निर्मित है इसमें गोलाकार आकृति के मध्य विष्णु को बुद्ध अवतार रूप साम्य रखता प्रतीत होता है। अलंकृत आभूषणों एवं पुष्पमाला पहने बुद्ध भगवान चर्तुभुजी है, जिनके हाथों में पद्मगदा, शंख चक्र शोभा पा रहे हैं। पृष्ठभूमि में अलंकृत पुष्प वल्लरियों के अतिरिक्त पुष्प पत्रों का चित्रण चारों ओर किया गया है।

उल्लेखनीय चित्र (चित्र संख्या 041) जो महाराष्ट्र शैली में प्रदर्शित है, इसमें पुष्प पत्रिकाओं युक्त वनस्पति के मध्य पद्मासन भगवान बुद्ध (हाथ जोड़े) मुद्रा में बैठे है सिर पर स्वर्णिम मुकुट पहने, कर्णकुण्ड़ल व स्वर्णिम अलंकृत आभूषणों व मौक्तिक हार से सुसज्जित बुद्ध भगवान का सुन्दर अंकन किया गया है। एक अन्य (चित्र संख्या 041) जो आधुनिक शैली में निर्मित है, इसमें पीतवर्णीय बुद्ध भगवान ध्यान मग्न मुद्रा में पद्मासीन है। पृष्ठभाग में वास्तुशिल्प में विभिन्न मुद्राओं को एक रंग में ही चित्रित किया गया है।

(22) कल्कि अवतार

जिस काल में धर्माचरण लुप्त हो जायगा तब श्री हरि 'कल्कि' के रूप में अवतार लेकर अधर्मियों का अन्त करेगे।[94] कल्कि पुराण एक प्राचीन उपपुराण है। 'कल्कि' भगवान विष्णु के ये अन्तिम अवतार माने गये हैं। यह अवतार कलियुग के अन्त में होगा।[95]

शास्त्रों में वर्णित है, कि कलियुग के अन्तिम दिनों में एक उदार हृदय वाले श्रेष्ठ बाह्मण के घर अवतरित होंगे तथा देवदत नाम के श्वेत रंग के अश्व पर सवार होकर दुष्टों का संहार कर धर्म की पुनः स्थापना करेंगे।[96] एक विद्वान के अनुसार कल्कि अवतार मुरादाबाद जिले के सम्भल कस्बे में विष्णु यश नाम ब्राह्मेण के यहां अवतार लेगें।[97]

इस कथा का प्रतिपादन विष्णु पुराण[98] महाभारत[99] हरिवंश पुराण[100] ब्राह्मपुराण101 में भी मिलता है।

महाभारत एवं मस्त्यपुराण में कलकी अवतार की कार्य शैली के अतिरिक्त कल्कि के वर्ण का भी वर्णन मिलता है। कल्कि का वर्ण हरित पिंगल हरा,भूरा का सम्मिश्रण होगा। तथा वह अश्व पर सवार होकर कार्य सम्पन्न करने में सहयोग प्रदान करेगें।[102]

भारतीय चित्रकला में कल्कि अवतार का चित्रण प्रायः सभी शैलियों में दर्शित है। एक चित्र (चित्र संख्या 043) जो जयदेव द्वारा रचित गीत गोविन्द में से संग्रहित किया गया है चटक रंगो का प्रयोग है। इसमें रक्तिम वस्तात्रलांकार एवं अलंकृत आभूषणों से सुशोभित चर्तुभुज धारी विष्णु के अवतार कल्कि श्वेत रंगीय सुसज्जित अश्व पर सवार है। कल्कि भगवान के हाथों में तलवार , चक्र, गदा व शंख शोभायमान है। वे दुष्टों का चक्र से सहांर करते हुए देखे जा सकते है। निम्न भाग में अधर्मी मानव यंत्र तंत्र खड़े हुऐ हैं।

अश्व के सम्मुख जयदेव हाथ जोड़े खड़े हुए है। सम्पूर्ण दृश्यांकन विविध चटक रंगों से पूरित है एवं अंलकृत रूप लिये हुए है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 044) कांगड़ा शैली में दर्शित है,इसमें नील वर्णीय पीताम्बरधारी कल्कि भगवान,जो श्वेत रंग के सजे हुए अश्व को खींचते हुए चित्रित है। कल्कि का मुख अश्व की ओर चित्रांकित है। पृष्ठभूमि में निम्न भाग में हरितिमा फैली है, वहीं आकाश वर्तुलाकार बादलों से आच्छादित है।

जयपुर शैली में अश्व को खींचते हुए (चित्र संख्या 045) उड़ीसा के पट चित्र में कल्कि अवतार में सिर्फ लाल रंग के अश्व की पीठ पर तलवार का अंकन है। (चित्र संख्या 046) महाराष्ट्र शैली में छत्रधारी अश्व की पीठ पर चढ़ते हुए, वहीं आधुनिक शैली में पंखो से सुसज्जित एवं छत्र को धारण किये अश्व के निकट एक पैर खड़े हुए चित्रांकित है।

(23) हयग्रीव अवतार

जब पृथ्वी का जल में विलय हो गया और विष्णु योग निद्रा का आश्रय ले नाग शैया पर शयन कर रहे थे, तो उनके नाभि से सहस्त्रदलीय पंकज प्रकट हुआ, जिस पर ब्रह्माजी विराजित थे। इस पद्म पुष्प पर रजोगुण एवं तमोगुण की दो बूंदे गिरी हुई थी, जिस पर नारायण की दृष्टि पड़ते ही असुरों में परिवर्तित हो गई। बलवान मधु कैटभ ने कमल नाल के सहारे ब्रम्ह्म के निकट पहुंचकर वेदों का हरण कर लिया। तब ब्रम्ह्म जी ने बिष्णु से विनती

कर पुनः वेदों को प्राप्त करना चाहा । तत्पश्चात् विष्णु ने हयग्रीव जंधा पर दैत्यों को लिटाकर उनका वध किया।

दूसरे कल्प में दिति पुत्र हयग्रीव जो विशाल भुजाओं से सम्पन्न था उसने देवी माँ की तपस्या कर अमर होने का वरदान मांगा और कहा कि मुझे कोई हयग्रीव ही मारे । अतः हयग्रीव का वध करने के लिये विष्णु ने हयग्रीव रूप रखकर हयग्रीव को मृत्यु लोक पहुँचाया और पृथ्वी को दैत्यविहीन किया।[103]

भारतीय चित्रकला में श्री विष्णु में हयग्रीव अवतार के चित्रों की श्रृंखला विभिन्न शैलियाँ में दर्शित है।

चित्र में (चित्र संख्या 048) जो माइका शैली से सम्बन्धित है। इसमें हरित रंग युक्त श्री हरि हयग्रीव अवतार लिये हुए है। चर्तुभुजा धारी हयग्रीव जो स्वर्ण जड़ित अलंकृत मुकुट पहनें है, जिनके हाथों में पुष्प पत्र युक्त शंख , चक्र व तलवार व ढ़ाल लिये शोभित है। हयग्रीव भगवान से स्वण्र कवच पहना हुआ है जिनके हाथों गले एवं चरण कमल में स्वर्ण आभूषण सुसज्जित हैं। श्वेत व नीले अधोवस्त्र के अतिरिक्त वे लाल रंग का पटका पहने हुए है। गले में पुष्पमाला जो नीचे की ओर खुला हुआ है। इस तरह की वनमाला इस शैली के सभी चित्रों में देखी जा सकती है। एक अन्य चित्र गोवा चित्र में (चित्र

संख्या 049) एवं मैसूर शैली में (चित्र संख्या 050) अलंकृत आभूषणों वस्त्रों से आच्छादित हयग्रीव का अंकन साम्य रूप रखता हुआ प्रतीत होता है।

जयपुर शैली में निर्मित एक चित्र में (चित्र संख्या 051) चर्तुभुजधारी हयग्रीव दैत्य संभवतः (मधु अथवा कैटभ) के मस्तक पर गदा से प्रहार करते हुए चित्रांकित हयग्रीव के हाथों में शंख, पद्म, गदा व चक्र स्थित होने से उनकी शोभा को द्वि–गुणित कर रहे हैं। पृष्ठ भूमि हरितिमा युक्त भूमि व पहाड़ी का अंकन है।

(24) हसांवतार

भगवान विष्णु के चौबीस अवतारो के अतिरिक्त दशावतार में भी हंसावतार मुख्य है एक बार सनत कुमारों (ब्रम्ह्म जी के मानस पुत्र) ने अपने पिता ब्रह्माजी से एक प्रश्न पूछा। स्वयं ब्रह्मा जी भी, इस प्रश्न के गूढ़ रहस्य को न समझ सके, तब उन्होंने श्री हरि का स्मरण किया तो उनका ध्यान करते ही नारायण उनके सम्मुख हंस रूप में प्रकट हुए।

"तस्यांह हंसरूपेण सकाशमगमं तदा"।[104]

तब हंस अवतार लिये चक्रधारी श्री विष्णु ने उनकी समस्या का समाधान बताते हुयें कहा–कि आपलोग जिस शरीर को 'आप' कहकर पुकारते हैं, उस शरीर में पृथ्वी जल, मांस मज्जा , रक्त सभी शरीर में समाये हुए हैं। इस तरह

देव, मानव जीवजन्तु सभी शरीर के तत्वों व आत्मदृष्टि से एक रूप है, अतः सर्वत्र रहने वाला आत्मतत्व में ही हूँ।[105]

चित्रकला की भारतीय शैलियों मे श्री हरि के हंसावतार का चित्रण दर्शित है। एक चित्र (चित्र संख्या 052) तंजौर शैली का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है। इसमें विशालकाय हंस पर सवार वस्त्रांलकार एवं मुकुटधारण किये त्रिमुखी ब्रम्ह्म हंसावतार रूपी विष्णु पर आसीन है। अलंकृत आभूषणों व वस्त्रांलकारो से सुशोभित ब्रम्ह्म एवं विष्णु रूपी हंस का चित्रण अलंकारिकता से परिपूर्ण है।

(25) बालाजी

बालाजी भी विष्णु के अवतार माने गये है। इस प्रसंग हेतु रोचक कथा इस प्रकार है, जब मनु ने विशालरूपी लहरों के ऊपर बरगद पत्र पर श्यामवर्णीय बालक को अपनी नौका के समीप आते देखा, तो उसके चेहरे पर प्रलय में भी भय का भाव नहीं था। वह निरछल रूप में अपने मुख में पैर का अगूंठा डाले बाल क्रीड़ा में मग्न था ।

मनु यह दृश्य देखकर समझ गये कि यह विष्णु के अतिरिक्त अन्यत्र कोई नही हो सकता। उसी समय बालाजी ने बालरूप में ही आपने हाथों के मध्य सम्पूर्ण ब्रम्ह्मण्ड के दर्शन मनु को दिये।[106]

भारतीय आधुनिक कला में बालाजी का चित्रण (चित्र संख्या 053) दक्षिण भारतीय शैली के अतिरिक्त अन्य शैलियों में भी देखा जा सकता है। उल्लेखित चित्र में बाल रूप में चित्रित बालाजी को बरगद के पत्र पर मुख में पैर का अगूंठा डाले चित्रित है। शीश के पृष्ठभाग में सूर्यमण्डल का प्रकाश है। अलंकृत स्वर्ण व मोतियों के आभूषणों को शरीर पर धारण किये बालक रूप में बालाजी अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रहे है। शीश के अग्रभाग पर छिटकी केश राशि उनके सौन्दर्य को और बढ़ाकर रही है उनके हाथों एवं चरण में विष्णु के प्रतीक चिन्ह शोभायमान है।

जो दक्षिण भारत की आधुनिक शैली एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 054) जो बालाजी का है। इस चित्र में श्याम वर्णीय बाला जी के विश्व प्रसिद्ध रूप का अंकन किया गया है। उनके मस्तक पर शोभित चन्दन तिलक बालाजी कमल नयनों का आंशिक भाग ढके हुए है। यज्ञोपवीत धारी श्री बालाजी भगवान के दायीं ओर शंख बॉयीं ओर चक्र का अंकन है। विविध अंलकारिक स्वर्ण एवं रत्न जड़ित आभूषणों से सुसज्जित बालाजी का सौन्दर्य अनुपम रूप लिए प्रस्तुत है।

(26) मधन्त अवतार

मधन्त को समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था का जनक कहा गया है। श्री हरि द्वारा मधन्त अवतार लिया गया। पुराणों में इस कथा का रोचक प्रसंग

दिया गया हैं। एक बार मधन्त के राज में बारिश न होने से अकाल पड़ गया। ईश्वर द्वारा बलि मांगे जाने पर मधन्त ने किसी का भी बध करने से मनाकर दिया। अतः प्रजा की आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने के कारण मधन्त राजा स्वयं को ही कष्ट एवं यातनाऐं देने लगा।

तब इन्द्र ने प्रसन्न होकर वर्षा की। मधन्त ने जीवन के समस्त कार्यो का सफलता पूर्वक निर्वहन किया। तत्पश्चात् उसने समाज में वर्णो का विभाजन किया और अंत में मोक्ष की खोज में निकल पड़े और तपकर, ज्ञान प्राप्त कर, स्वयं को विष्णु में विलीन कर दिया।[107]

चित्रकला में मधन्त अवतार का रेखाचित्र प्राप्त है। उल्लेखित चित्र में (चित्र संख्या 055) मध्य में राजा मधन्त विराजमान है,जो अंलकारिक आभूषणों से सुसज्जित है। उच्च भाग चार भागों में विभाजित खण्डों में क्रमशः ब्राम्ह्मण , क्षत्रिय , वैश्य , शूद्र को प्रतीकों सहित दर्शाता गया है एवं निम्न भाग के चार खण्ड़ में ब्रम्ह्चारी गृहस्थ , वानपरस्थ एवं सन्यासी मानवों का अकंन, उनके द्वारा की गई वर्ण व्यवस्था का सूचक है।

(27) हरि अवतार (गजेन्द्र मोक्ष)

अगस्त मुनि के श्राप से ग्रसित राजा इन्द्रद्युम्न ने गज का रूप धारणकर लिया। एक दिन जल क्रीड़ा कर रहे थे, तभी जल के अन्दर ग्राह (मकर) ने उनका पैर अपने मुख में दबा लिया। जल के अन्दर गजेन्द्र व मकर में युद्ध

छिड़ गया। यह युद्ध एक सहस्त्र वर्ष तक चलता रहा। तब गजेन्द्र की विनती सुन आकाश मार्ग से हरि गजेन्द्र के पास पहुचकर ग्राह का मुख चीर कर उसका वध कर दिया तब तुरन्त ही गजेन्द्र रूपी इन्द्रधुम्न अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो गये और श्री हरि भी तुरन्त अपने रूप में आ गये। यही कारण है कि इन्हे गजेन्द्र मोक्षकर्ता या गज ग्राह के नाम से भी जाना जाता है।[108] भारतीय कला में हरि अवतार रूप में गजेन्द्र मोक्ष का चित्रांकन किया गया है, जयपूर शैली,आधुनिक शैली में गजेन्द्र मोक्ष का चित्रण दर्शनीय है इसके अतिरिक्त औरछा के भित्ति चित्रों में भी हरिअवतार का अकंन किया गया है । उल्लेखित चित्र में (चित्र संख्या 056) विशाल सागर के मध्य गहरे हरे रंग वाले ग्राह के मुख में श्यामवर्णीय गजेन्द्र का पाव दवा हुआ दर्शाया गया है । सागर के मध्य अनेकों पद्म पुष्प का अकंन किया गया है। वही आकाश मार्ग से चर्तुभूजी मुकुट धारी नीलवर्णीय रक्तिम वस्त्राभूषणो से अंलकृत श्री हरि आते हुये चित्रित है । गजेन्द्र सूंढ में पद्म पुष्प गुच्छ दवायें हुये श्री हरि को पुष्प गुच्छ देने को उद्धत है । दूसरी और भूरे रंग में शीश पर मुकुट पहने गरूड़ हरि से क्षमा याचना करते हुये अंकित है । पृष्ठ भाग में प्रफुल्लित पुष्प युक्त वृक्षों को अंकन सम्पूर्ण चित्र को सौन्दर्य में वृद्वि करता प्रतीत होता है । एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 057) जो आधुनिक शैली में बना हैं। इसमें मुकुलित पद्म पुष्प युक्त सरोवर के मध्यम गजेन्द्र व मकर के पुट्ट का दृश्यायन है वही आकाश मार्ग से आते श्री हरि हंस पर विराजित है चर्तुभुजी

विष्णू विविध अंलकरणों एवं आभूर्ष्णों से सुसजिज्जत है पृष्ठ भाग में प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण दृश्य को अधिक सौन्द्रर्य प्रदान करता दिखाई दे रहा है ।

(28) आदि पुरुष अवतार (विष्वरूप)
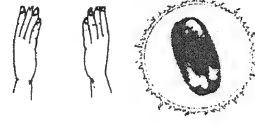
यह विष्णू का प्रथम अवतार है जो सौलह कलाओं से परिपूर्ण है समस्त अवतार एवं बृम्ह्म भी इसी से प्रकट हुये पद्म पुराण में इसका विस्तृत वर्णन उल्लेखित है।[109] इसमें सृष्टि के आरम्भकाल में पद्म से ब्रह्म की उत्पत्ति का विवरण दिया गया है। आदि पुरुष के विराट स्वरूप वर्णन शब्द सीमा में कर पाना असम्भव है। विद्वानों के अनुसार आदि पुरुष में विष्णु के समस्त अवतार व वस्तुऐं इसी से उत्पन्न होकर इसी में समाहित हो जाती हैं।[110]

विभिन्न विद्वान आदिपुरुष एवं विश्वरूप के एक रूप के सम्बन्ध में मतक्य नहीं है। कई कतिपय विद्वानों के अनुसार आदिपुरुष ही विश्वरूप है तो कुछ विद्वानों का मानना है कि आदि पुरुष एवं विश्वरूप दोनों के स्वरूप भिन्न हैं। जिसमें विश्वरूप के विवरण में वर्णित है कि श्री हरि स्वयं कहते हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में वे विराट स्वरूप लिये प्रस्तुत हैं वे ही नारी एवं पुरुष हैं तीनों काल भी उनमें ही समाहित हैं वे स्वयं ही कर्ता–भर्ता एवं हरता हैं। चारों वेद पंच तत्व, छः प्रकार के दर्शन सप्तऋषि, अठारह दिशाऐं एण्वं समस्त राशियां, समस्त 108 सद् आत्माऐं मुझमें ही समाहित हैं।

सारासमुद्र उद्र है, पर्वत मालाऐं मेरी ही अस्थियां हैं, पृथ्वी पर कल–कल करती नदियां मेरी शिराऐं एवं धमनियां हैं, एवं इस भूमि पर लघु वृहत वृक्ष, ही मेरे रोम हैं। सम्पूर्ण आकाश एवं धराद्व सारा ब्रह्माण ही मुझमें समाविष्ट है। अतः मैं वृहत पुरुष, आदिपुरुष, विश्वरूप के नाम से जाना जाता हूं।[111] श्री हरि विष्णु का विराट स्वरूप लेने का संभवतः यही उद्देश्य था कि जब युद्ध भूमि में अर्जुन विचलित हो उठे तो श्री कृष्ण ने उन्हें समझाया और कहा कि आत्मा अजर एवं अमर है कोई किसी को नहीं मारता, ये शरीर नाशवान है और ये सभी रूप एवं शक्तियां स्वयं से प्रकट होकर इस प्रसंग का चित्रण भारतीय चित्रकला की अभिन्न शैलियों में देखने को मिलता है। जबकि आदि पुरुष नाम से चित्र प्रत्यक्ष रूप से देखने में नहीं आते लेकिन विश्वरूप नाम से चित्रण पारंपरिक शैलियों के अतिरिक्त आधुनिक शैली में भी बहुतायत से हुआ।

दक्षिण भारतीय शैली का एक विश्वरूप चित्रण (चित्र संख्या 058) में उल्लेखनीय है। इसमें कमलनयन भगवान श्री विष्णु विभिन्न हस्तयुक्त ना ना प्रकार के आयुध लिए हुए अंकित हैं। उनकी भुजाओं में ध्वज तथा छत्र शोभित हैं। शरीर में विभिन्न पशु एवं जन्तुओं का वास है। व कंधे के दोनों और गजेन्द्र सूढ़ उठाए चित्रित हैं। जगत नारायण विष्णु के दायें चरण में कच्छप एवं बायें चरण में सिंह शांत भाव में बैठे शोभायमान हैं। इसके अतिरिक्त विविध

नाग समूह फन उठाये अपने अंक में सिंह को समाये हुए दर्शाये गये हैं। पृष्ठभूमि में ना ना प्रकार की पत्रिकाओं सहित पुष्पगुच्छ चित्रित हैं। बालमुकुन्द श्री विष्णु के शरीर के मध्य भाग में कुण्डलनीय चक्रों का अंकन है। (चित्र संख्या 056)

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 059) जो आधुनिक शैली में निर्मित है इसमें श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए बायीं ओर घूरते बैठे हुए हैं एवं श्री कृष्ण के उपदेश को ध्यानमग्न होकर सुन रहे हैं पृष्ठभूमि में श्री विष्णु का विशालकाय विश्वरूप चित्रित है जिसकी अठारह भुजाएें हैं और समस्त भुजाओं पर क्रमशः विभिन्न अवतारों का चित्रांकन किया गया है। भुजाओं में विष्णु के विविध आयुध शोभायमान हैं। अनेकानेक देवताओं के शीश से सुसज्जित हैं एवं श्री नारायण आशीर्वाद देते हुए अंकित हैं।

भारतीय चित्रकला में विष्णु के अट्ठाईस अवतारों को क्रमानुसार उल्लेखित किया गया है यद्यपि विष्णु के अन्य अवतारों का वर्णन भी पुराणों एवं साहित्यों में वर्णित है लेकिन अन्य अवतारों के चित्र अल्यल्प मात्रा में उपलब्ध हैं। विष्णु द्वारा अवतार ग्रहण करके असुरों का वध धर्म की स्थापना का सुन्दर कथानक भी इस अध्याय में प्रस्तुत है। हरि अवतार से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं का सुन्दर सचित्र वर्णन चित्रों को सौन्दर्यात्मक धरातल प्रदान करता प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे, पूर्वी मुम्बाई 1999 पृ.सं. 10

2. भंडारकर आर.जी. "वैष्णव, शैव एवं अन्य धार्मिक मान्यताऐं, पृ.सं. 2

3. तैतिरीय संहिता 2/1/3/1

4. शतपथ ब्राह्मण 14/1/2/11 तैतरीय संहिता /6/2/412/3, शतपथ ब्राह्मण 7–5, 1–5

6. वही 7/5/1/5

7. पोठडेप आर.के. "द कोन्सेप्ट ऑफ अवतार्स" बी.आर. पब्लिकेशन दिल्ली, 1979, पृ.सं. 13

8. वही, पृ.सं. 13

9. पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे, पूर्वी मुम्बाई, 1999, पृ.सं. 79

10. कल्याण पुराण कथाड्क, 1963, पृ.सं. 250–251

11. पाण्डेय वीणा पाणि "हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन", उत्तर प्रदेश 3/40/24–25

12. श्री हरि "दशावतार" 779 गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 7792/बी

13. "वायुपुराण" अनुवादक श्री राम प्रताप त्रिपाठी, शास्त्री, काव्यतीर्थ, साहित्य रत्न संवत् 2007, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सन्तानवेवा अध्याय।

14. शतपथ ब्राह्मण 14, 1,2,11

15. संक्षिप्त वराह पुराणांड्क, 51वें वर्ष का विशेषांक, जनवरी 1977 कल्याण कार्यालय, गोरखपुर, अध्याय 114–श्री वराह अवतार वर्णन पृ.सं. 187

16. वही

17. श्री विष्णु पुराण प्रथम अंश चतुर्थ अध्याय श्लोक 22, पृ.सं. 16

18. कल्याण पुराण कथांक 1963, पृ.सं. 322–323

19. मत्स्य पुराण अमृत मन्थन नामक दो अध्याय पृ.सं. 673–675 श्लोक सं. 26–36

20. पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे, पूर्वी मुम्बाई, 1999 पृ.सं. 63

21. वही

22 वही

23. श्री भागवत 2/7/4

24. इन्टरनेट से प्राप्त

25. यज्ञ वराह के विस्तृत विवेचन के लिए शतपथ ब्राह्मण 14,2,11 एवं डॉ. अग्रवाल एतद्विषयक लेख पुराणाम् वर्ष 5 भाग 2, पृ.सं. 119–236, जुलाई 1963, रामनगर, वाराणासी।

26. श्री विष्णु पुराण प्रथम अंश – चतुर्थ अध्याय श्लोक 4 से 26, पृ.सं. 15

27. वही

28. वी, श्लोक 32, पृ.सं. 17

29. वही श्लोक 33, पृ.सं. 17

30. वही श्लोक 34, पृ.सं. 17

31. संक्षिप्त वराह पुराणङ्क, 51वें वर्ष का विशेषांक, जनवरी 1977 कल्याण कार्यालय गोरखपुर, पृ.सं. 55

32. इन्टरनेट से प्राप्त

33. पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे, पूर्वी मुम्बई 1999, पृ.सं. 65

34. पाण्डेय, आर.के. "द कान्सेप्ट ऑफ अवतार्स" बी.आर. पब्लिशिंग, दिल्ली, 1979, पृ.सं. 22

35. कल्याण पुराण कथाणक संख्या 1963, पृ.सं. 322–323

36. शर्मराम आचार्य "हरिवंश पुराण" बरेली, 1986, श्लोक 76

37. श्री मत्स्य पुराण में वेन पुत्र पृथु वर्णन नामक दसवा अध्याय, पृ.सं. 24 श्लोक 34–35

38. श्री मत्स्य पुराण की नामावलि और उनके संक्षिप्त परिचय अध्याय 53, पृ.सं. 47

39. वही, भृगुवंश कीर्तन नाम एक सौर पंचानेवा अध्याय श्लोक 1–46, पृ.सं. 566

40. वही

41. वही

42. श्री हरि 'दशावतार' 779/ए, गीता प्रेस, गोरखपुर

43. कल्याण पुराण कथाड्क संख्या (1963), पृ.सं. 296–297

44. शर्मा राम "अग्नि पुराण" बरेली, पृ.सं. 120

45. शतपथ ब्राह्मण 1,8,11

46. श्री महामत्स्य पुराण में पुराणों की अनुक्रमणिका नाम तिरेपन्वा अध्याय श्लोक 64–74 पृ.सं. 149–151

47. छः सहस्त्र श्लोकों वाली कर्मपुराण संहिता के पूर्व विभाग में प्रथम अध्याय पृ.सं. 1,3,37–1,1,117 तक श्लोक 27

48. तदैव श्लोक 28

49. तदैव श्लोक 29

50 तदैव श्लोक 30

51. कर्म पुराणङ्क जनवरी एवं फरवरी संख्या वर्ष 71 गीता प्रेस गोरखपुर पृ.सं. 32

52. श्रीमद् भागवत पुराण 8/17 कूर्म पुराण 1/1/27–28

53. तदैव

54. तैतरीय ब्राह्मण 7,1,5,1, श्री मत्स्य महापुराण में अमृत मन्थन का दो सौ उनन्चासवां अध्याय पृ.सं. 665–669, श्लोक 46–61

55. वही, अमृत मन्थन प्रसंग में कालकूटोत्पति नाम 250 व अध्याय श्लोक 52–61 पृ.सं. 669–673

56. वही

57 तदैव़ 251, व अध्याय श्लोक 26–36 पृ.सं. 663–675

58 तदैव

59. पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन टाइनडे, पूर्वी मुम्बाई 1999 पृ.सं. 60

60. श्री मत्स्य महापुराण "दो सौ उनन्चासवां अध्याय, पृ.सं. 663–670

61. भागवत् पुराण 7,8 एवं अग्नि पुराण 4,3–5, 276–10, 276–13

62. कल्याण पुराण कथाङ्क (1963) संख्या पृ.सं. 281–284

63. शर्मा राम "विष्णु पुराण" बरेली, पृ.सं. 52

64. शर्मा राम "विष्णु पुराण" अंश 6, अध्याय 2

65. शर्मा राम "पद्मपुराण" बरेली, पृ.सं. 4

66. श्री मत्स्य महापुराण में निम्न अध्याय –

162 विष्णु का नरसिंह रूप धारण करना और प्रहलाद की प्रार्थना

164 हिरण्यकश्यप का निधन और जगत की प्रसन्नता

67. श्री हरि "दशावतार" 779 गीता प्रेस, गोरखपुर

68 संक्षिप्त वराह पुराणांक 51वे वर्ष जनवरी 1977 विशेषांक कल्याण कार्यालय गोरखपुर पृ.सं. 55

69. शर्मा राम "कल्कि पुराण" बरेली, पृ.सं. 52

70. कल्याण पुराण कथांड्क 1963, सं.1, पृ.सं. 281–284

71. मत्स्य महापुराण 244, अध्याय वामन अवतार की कथा पृ.सं. 645

72. ऋग्वेद प्रथम मण्डल 154 शुक्त के अनुशीलन से विष्णु के वैदिक स्वरूप का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है।

73. शतपथ ब्राह्मण 1,2,5,7, भगवत पुराण के अष्टम स्कन्द में 16

74. संक्षिप्त वराह पुराण 51 वर्ष जनवरी 1977द्ध गोरखपुर पृ.सं. 55

75. धर्म ध्वज समाचार 23–29 अप्रेल 2006, नई दिल्ली, पृ.सं. 5

76. श्री शर्मा राम "कल्कि पुराण" बरेली पृ.सं. 52 एवं अग्नि पुराण एवं मिश्रा अनीता शोध ग्रंथ "पुराणों ने वर्णित रामलीला चित्रांकन"

77. महाभारत 11,49,111,98,16–17 आदि

78. मत्स्य पुराण 47वां अध्याय

79. विष्णु पुराण 4,7,4,11

80. भगवत पुराण 1,3,20 2,7,22 9,15,16

81. कल्याण पुराण कथाणांड्क (1963) पृ.सं. 331–333

82. कल्याण पुराण कथाणांड्क (1963) पृ.सं. 33

83. तदैव

84 पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे पूर्वी मुम्बाई, 1999, पृ.सं. 64

85. ऋग्वेद 1, 126, 41

86. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द" कला प्रकाशन वाराणासी 1988

87 पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" पूर्वी मुम्बाई, 1999, पृ.सं. 49

88. संक्षिप्त वराह पुराण्ड्क 15वें वर्ष जनवरी 1977 कल्याण कार्यालयद्व गोरखपुर पृ.सं. 55

89. शर्मा राम "कल्कि पुराण" बरेली, पृ.सं. 52 एवं श्री हरि दशावतार 779 गीता प्रेस गोरखपुर

90. क्षेमेन्द्र "दशावतार महाकाव्य" में समाप्ति काल 1060

91. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीतगोविन्द" के समस्त संस्करण

92. श्री भगवत पुराण 2,7,37 6,8,1,9 10,40,20 एवं 11,9,23

93. श्री हरि दशावतार 779 गीता प्रेस गोरखपुर

94. पाण्डेय रामचन्द्र पुराण और भारतीय साहित्य में उनका स्थान, मोतीलाल वाराणासी, पृ.सं. 215 (इसी तरह की भविष्यवाणी तुलसीदास कृत और विनय पत्रिका में पृ.सं. 338 में)

95. डॉ पाण्डेय राजबली "हिन्दी धर्म कोश" लखनऊ, पृ.सं. 168

96. सर लिवियन्स एम. अनुवादक डॉ. राय रामकुमार "भारतीय प्रज्ञा अथवा हिन्दुओं के धार्मिक दार्शनिक एवं नैतिक सिद्धान्तों के उदाहरण वाराणासी, वि.सं. 2022, सन् 1965, पृ.सं. 327.

97. डॉ. पाण्डे लक्ष्मीकांत तुलसीदास कृत विनय पत्रिका पं.सं. 380

98. विष्णु पुराण अध्याय चार पृ.सं. 24

99. महाभारत वन पर्व 190–91

100 हरिवंश पुराण 1–41

101 ब्रह्मपुराण एक सौ चौरान्हवा अध्याय

102. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीतगोविन्द" कला प्रकाशन वाराणासी 1988

103. कल्याण पुराण कथानक (1963) संख्या पृ.सं. 326–327

104 श्रीमद् भागवतद् पुराण 11/3/19

105 तदैव 11/13/7

106 पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे पूर्वी मुम्बाई, 1999, पृ.सं. 12

107. तदैव पृ.सं. 38

108. कल्याण पुराण कथाण्ड्क 1963, पृ.सं. 329–330

109 श्री शर्मा राम "पद्म पुराण" संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब बरेली सन् 1986, सृष्टि खण्ड पृ.सं. 37

110. http:/www.Champawat.netfirms.com (Downloded-Jan 2004).

111. पटनायक देवदत्त "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन" जैन ट्राइनडे पूर्वी मुम्बाई, 1999, पृ.सं. 19–15

द्वितीय अध्याय

भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार का चित्रण

अध्याय – 2

भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारों का चित्रण –

भारतीय चित्रकला में श्री नारायण के अवतारों का चित्रण विविध शैलियों में विस्तृत रूप से अंकित है। विष्णु के अवतार चित्रों के दर्शन सर्व प्रथम अपभ्रंश शैली में दृष्टव्य हैं तत्पश्चात् राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी, तंजौर, बंगाल शैली कम्पनी शैली व आधुनिक शैली में अलग–अलग स्थानों पर विभिन्नता लिए श्री हरि का रूप सौन्दर्य वर्णित है। विष्णु के चौबीस अवतारों में प्रमुखता से मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारों का चित्रण सम्पूर्ण भारतीय चित्र शैलियों में सर्वोत्कृष्ट है। ये चित्र तत्कालीन वेशभूषा, आभूषणों व उत्कृष्ट वास्तुशैली के अतिरिक्त उस समय की धार्मिक भावना के भी परिचायक हैं।

ये चित्र तत्कालीन शासक, चित्रकार एवं जनसामान्य की ईश्वरीय भक्ति के द्योतक हैं। भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारों का चित्रण भिन्न–भिन्न स्थानों पर विभिन्नता के साथ किया गया है किसी भी स्थान की कला, उस स्थान के सांस्कृतिक गौरव, विकास, धार्मिक भावना तथा ऐतिहासिक उत्थान एवं पतन की परिचायक है।

भारतीय चित्रकला में अवतारों चित्रण का प्रचार, प्रसार हर युग में किया गया। अतः विश्लेषण के आधार पर भारतीय चित्रकला में वराह, मत्स्य, कूर्म अवतारों के चित्रों को प्रदेशानुसार निम्न प्रकार से विभक्त किया गया है –

1. जम्मू कश्मीर में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन

2. हिमाचल प्रदेश में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
3. पंजाब में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
4. राजस्थान में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
5. उत्तर प्रदेश में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
6. मध्यप्रदेश में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
7. बिहार में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
8. असम में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
9. गुजरात में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
10. बंगाल में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
11. महाराष्ट्र में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
12. उड़ीसा में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
13. गोवा में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
14. कर्नाटक में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
15. आन्ध्र प्रदेश में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
16. तमिलनाडु में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन
17. इन्टरनेट द्वारा सम्पूर्ण भारत में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारांकन।

1. जम्मू कश्मीर

जम्मू कश्मीर में वराह, मत्स्य, कूर्म अवतारों का चित्रण प्रायः किया गया। जम्मू कश्मीर शैली पर मुगलिया व अन्य पहाड़ी शैली का प्रभाव दिग्दर्शित है। मानवाकृतियां व वस्त्रालंकार, मुगल शैली के अनुरूप ली गई है। यहां पर

चित्रकारों द्वारा जिन चित्रों की रचना हुई है, वे स्थानीय कलाकारों द्वारा न अंकित कर बाहर से आश्रय प्राप्त चितेरों द्वारा निर्मित किये गये हैं। अतः यहां की कोई स्वतंत्र शैली विकसित नहीं हो सकी। अतः जम्मू कश्मीर में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतारों का चित्रण बाहर से आए चितेरों द्वारा किया गया। यद्यपि विष्णु के अवतारों के चित्रों की अल्पसंख्या है।

कश्मीर शैली में चित्रित मत्स्य अवतार के एक चित्र (चित्र सं. 060) जिसमें विशाल मत्स्य के मुख से आयुधधारी चर्तुभुजी विष्णु को अवतरित होता दर्शाया गया है विष्णु के वस्त्रालंकारों पर मुगल शैली का प्रभाव परीलक्षित होता है। शंख चक्र, गदा से युक्त विष्णु के दोनों भागों में करबध्य मानवाकृतियां हैं तथा बायीं ओर नोकासीन आकृति संभवतः मनु की है। उन्हीं के नीचे ढाल धारण किए मानवाकृति चित्रित है। पृष्ठभूमि में लता बेलों के अतिरिक्त वृक्षों का भी अंकन है। निम्न भाग में निर्मित सागर में पंकज पत्रों सहित प्रफुल्लित है।

कूर्मावतार के एक चित्र (चि.सं. 061) में कूर्माकृति खरगोश की भांति बनाई गई है, जिसकी पीठ पर मंदराचल का अंकन है। मंदराचल पर्वत पर पद्मासीन, श्री हरि विष्णु की चारों भुजाऐं शंख चक्र पद्म तलवार से शोभायमान हैं। सागर की सतह पर शेषनाग की पूँछ को विष्णु, शिव एवं अन्य देव पकड़े हुए हैं, शेष नाग के मुख की ओर दैत्याकृति चित्रित है। श्री विष्णु के समीप ही धन्वन्तरि अमृत कलश सहित बैठे हैं एवं हाथ जोड़कर विष्णु को प्रणाम करते हुए दृष्टव्य हैं। इसके साथ ही कल्पवृक्ष, ऐरावत, कामधेनु गाय का चित्रांकन हैं वहीं दायीं ओर सम्भवतः धनुष–बाण पकड़े हुए लक्ष्मी, अप्सरा एवं उच्चैश्रृवा अश्व को

चितेरों ने कथानुसार अंकित किया है। सरोवर में मुकुलित सरोज पुष्प दृश्य को अत्यधिक सुन्दरता प्रदान करते हुए अंकित हैं।

कश्मीर शैली में चित्रित वराह अवतार के एक चित्र में (चि.सं. 062) मुगल वस्त्रालंकारों से सुशोभित श्री हरि रूपी वराह भगवान जिन्होंने अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठा रखा है। चतुर्भुज विष्णु भुजाऐं शंख दण्ड तलवार से सुशोभित हैं। श्री वराह सागर की सतह पर गिरे हुए हिरण्याक्ष के ऊपर खड़े हैं। एक हाथ से पूछ धारी हिरण्याक्ष के सींग को पकड़े हुए हैं। सागर में विभिन्न पद्मदल पत्रों सहित मुकुलित हैं, पृष्ठभाग में लता, बेलों के अतिरिक्त शंक्वाकार रूपी वृक्षों का अंकन है। श्री वराह के दायीं ओर मानवाकृति का अंकन है, जिसने अपने केशों को, जूड़े के रूप में ऊपर की ओर बांध रखा है।

2. हिमाचल प्रदेश

पहाड़ी चित्रकला (हिमाचल प्रदेश) में विष्णु के अवतार चित्रों की श्रंखला के अन्तर्गत विभिन्न अवतारों का चित्रण देखने को मिलता है। यद्यपि यहां के चित्रकारों का मुख्य विषय राधा कृष्ण का प्रेम प्रसंग रहा है। जिसमें काव्य ग्रन्थों में काव्य की भावना को चित्रित करने से पहले श्री हरि के दशावतारों का चित्रण अवश्य करते थे।[1]

मत्स्य अवतार का चित्रण – हिमाचल प्रदेश में मत्स्य अवतार का चित्रण प्रायः कागंड़ा, वसौहली, गुलेर, नूरपूर, कुल्लू आदि में किया गया है। प्रायः मत्स्यावतार धारण किए विष्णु विभिन्नता लिए प्रस्तुत हैं वहीं मत्स्य का अंकन कहीं अर्ध रूप में तो कहीं पूर्णता लिए हुए हैं। कहीं पर मत्स्य का यर्थाथवादी अंकन है,

तो कई चित्रों में अलांकारिक रूप लिए हुए है। कई चित्रों को विष्णु के मत्स्यावतार की कथा को सम्पूर्णता प्रदान की है तो कतिपय चित्रों में मत्स्य व विष्णु का अकंन देखने को मिलता है। वहीं कूर्मावतार में विष्णु को कछुए पर खड़े हुए अंकित हैं, मेरू पर्वत भी विभिन्न चित्रों में विविधता लिए है कहीं पर वे शंकुआकार बने हैं तो कहीं पर दण्ड (काष्ट लकड़ी) जैसा रूप लिए है। मंदराचल के उच्च भाग में कहीं पर गणेश का अंकन है, तो कहीं पर विष्णु अपनी सहधर्मिनी लक्ष्मी के साथ आसीन है। शेषनाग के चित्रों व रंग संयोजन में भी असमानता है। समुद्रमन्थन से प्राप्त रत्नों का चित्रण अत्यंत बारीकी लिए प्रस्तुत है। वराह अवतार लिए विष्णु कतिपय चित्रों में अर्धमानवीय रूप में चित्रांकित हैं तो कुछ चित्रों में वे पूर्ण शूकर रूप धारण किए हैं। कहीं पर पृथ्वी में वनस्पति व प्राकृतिक अंकन देखने को मिलता है, तो कुछ चित्रों में पृथ्वी के साथ गौ, प्राकृतिक सौन्दर्य, वास्तुशिल्प को भी चित्रित किया है। वराह अवतार लिए श्री विष्णु के वस्त्रालंकारों में भी विविधता देखने को मिलती है।

अतः हिमाचल प्रदेश की चित्रकला में हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा शैली की एक उल्लेखित चित्र (चि.सं. 063) जो विविध खण्डों में विभाजित है। श्री हरि के दशावतारों का चित्रण देखने को मिलता है। चित्र का ऊपरी भाग तीन असमान भागों में विभक्त है जिसके प्रथम भाग में श्री हरि के मत्स्यावतार का चित्रण आंलकारिक रूप में चित्रित है। नीलवर्णीय जगदीश्वर जो मत्स्यमुख में खड़े हुए अंकित हैं, जिनके समीप ही सींगधारी संभवतः ह्यग्रीव शंख में से निकलता हुआ प्रतीत हो रहा है। चतुर्भुजी विष्णु जो चक्र, पद्म व गदा धारण किए हैं एवं उनका अन्य चतुर्थ हस्त दैत्य के केशों को पकड़े हुए दर्शित है। विष्णु पीताम्बर एवं

रक्तवर्णीय उत्तरीय वस्त्रों को पहने हुए तथा विविध अलंकृत आभूषणों से सुशोभित है। मस्तक के पृष्ठ भाग में सूर्यमण्डल का प्रकाश चहुँ ओर फैला हुआ है। आलंकारिक रूप लिए मत्स्य द्विरंगों में पूरित है। जिससे मत्स्य का सौन्दर्य द्विगुणित हो उठा है। पृष्ठभूमि में आकाश श्वेतवर्णीय, मेघों से आच्छादित है वही निम्नभाग में जल में मुकुलित पद्म गुलाबी आभा लिए चित्रित है। मध्यभाग में हरितिमा युक्त धरा का अंकन है। कूर्म अवतार का एक चित्र (चित्र संख्या 064) इस श्रंखला के दूसरे भाग में है जो प्रथम एवं तृतीय खण्ड से अपेक्षाकृत वृहत रूप लिए है। इसमें मध्यक्षेत्र में कूर्म के ऊपर मंदराचल पर्वत पर विराजमान श्री विष्णु पद्म पर आसीन है। नील वर्ण के पीताम्बरधारी विष्णु विविध अलंकृत वस्त्राभूषणों के अतिरिक्त अपनी भुजाओं में शंख, चक्र, पद्म एवं गदा को धारण किए है। मंदराचल से लिपटा शेषनाग जिसके फन की ओर स्वर्ण मुकुट पहने दो दैत्य चित्रांकित हैं। जिन्होंने अर्ध अधोवस्त्र व मोक्तिक आभूषण पहने हैं। वहीं बांयीं ओर देवताओं का अंकन है जिसमें विष्णु व संभवत् शिव शेषनाग की पूछ पकड़े हुए हैं।

इसी खण्ड के तृतीय भाग में वराह अवतार (चि.सं. 065) का चित्रण है इसमें विशाल आकार लिए चर्तुभुजी वराह का अर्धमानव रूप में अंकन है। पीतवर्ण में अधोवस्त्र पहने एवं रक्तिम वर्ण का उत्तरीय वस्त्रों तथा कलात्मक स्वर्ण आभूषणों से सुशोभित श्री हरि स्वर्ण मुकुट धारण किए हैं। श्री वराह का मुख नीलिमायुक्त है, वहीं शरीर गौर वर्णीय है। अपने दन्तों पर पहाड़नुमा पृथ्वी को धारण किए वराह हाथों में शंख चक्र पद्म धारण किये हैं, निकट ही ह्यग्रीव नामक दैत्य हाथों में गदा धारण किए बैठा है। जिसने अर्ध अधोवस्त्र पहने हैं। सींगधारी

दैत्य के केशों को वराह भगवान ने अपने हाथों से पकड़कर, अपने एक पैर को देत्य के ऊपर रखे हुए चित्रित हैं। पृष्ठभूमि अन्य दो चित्रों के समान है।

3. पंजाब
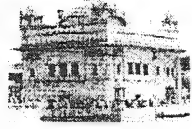
पंजाब में पल्लवित चित्रकला में यद्यपि विविध विषयों का चित्रांकन किया गया है लेकिन इन सबके साथ–साथ विष्णु के अवतार चित्र भी यहां के चित्रकारों के प्रमुख विषय रहे। यहां निर्मित चित्र पहाड़ी चित्रकला से समानता रखते हैं। पहाड़ी चित्रशैली में पहले चिन्ह यद्यपि पंजाब प्रान्त में प्राप्त हुए किन्तु हिमालय के विस्तृत अंचल में बसे हुए विभिन्न पहाड़ी प्रान्तों में उसका विकास हुआ।[2] पटियाला के शीश महल की भित्तियों पर वराह एवं कूर्म अवतार के चित्र अंकित हैं जो फ्रेस्कों पद्धति से बने हैं।[3] अतः यहां की चित्रकला में विष्णु के दशावतारों का चित्रण किया गया है जिनमें से दो चित्र उल्लेखित हैं।

उल्लेखित एक चित्र में (चि.सं. 066) जो पटियाला के शीश महल की भित्ति पर अंकित हैं अर्धवृताकार रूप लिये इसका ऊपरी भाग मेहराब आकृति लिए है। मध्यभाग में कूर्म की पीठ के ऊपर मेरू पर्वत बनाया गया है, जिस पर पड़मासीन विष्णु का चित्रण है जो हाथों में शंख, गदा, पद्म आदि धारण किये है। सम्पूर्ण चित्र द्विभाग में विभक्त है, निम्न भाग में सागर का लहरदार अंकन है। मंदराचल पर्वत पर लिपटे शेषनाग की पूछ को ब्रह्मा एवं शिव ने हाथों में पकडा हुआ है एवं फन की ओर सिंहधारी दैत्यों का अंकन है जो विशेष प्रकार के आभूषणों को पहने हैं तथा अर्ध अधोवस्त्र धारण देत्य प्रसन्न मुद्रा में चित्रांकित हैं। दूसरी

ओर ब्रह्मा एवं शंकर जो अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ देखे जा सकते हैं। प्रथम भाग में ऊपर की ओर चित्रित हरितिमायुक्त धरातल पर समुद्र मंथन के समय निकले ऐरावत हस्ति, उच्चैःश्रवा अश्व, कल्प वृक्ष का अंकन है। उच्च भाग में मेघ युक्त गहरे बादलों का अंकन है। जिसके दांयीं एवं बांयीं ओर सूर्य एवं चन्द्रमा का अंकन है। सम्पूर्ण चित्र का हाशिया में सुन्दर पुष्प पत्रों को अलंकृत रूप में चित्रित किया गया है।

वराह अवतार का एक चित्र (चि.सं. 67) पटियाला में शीश महल की भित्ति पर अंकित है, अर्धवृत्ताकार रूप में निर्मित इस भित्ति का ऊपरी भाग मेहराब युक्त है। प्रदर्शित चित्र में वराह अवतार धारण किए श्री विष्णु का मुख श्यामवर्णीय है एवं शरीर गौर वर्णीय चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में चक्र, पद्म, गदा शोभा पा रहे हैं। वराह भगवान ने अपने चतुर्थ हाथ में दैत्य के बालों को खींचकर पकड़ा हुआ है। श्री वराह ने मुख ऊपर करके अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाया हुआ है। पृथ्वी में चित्रित दृश्य में प्राकृतिक सौन्दर्य में अतिरिक्त वास्तुशिल्प भी दर्शनीय है। अलंकृत वस्त्राभूषणधारी वराह भगवान के मस्तक के पीछे सूर्य का आभामण्डल प्रकाशवान है। वराह में पीछे की ओर दूत को पंखा झलते हुए दर्शाया गया है। श्री वराह के चरणों के नीचे राक्षस का चित्रण है। श्री वराह का बायां पैर दैत्य की छाती पर एवं दायां पैर असुर के पैरों के ऊपर अंकित है। इस प्रकार वराह के द्वारा दबा होने के कारण असुर की जीभ एवं आखें बाहर को निकली प्रतीत हो रही हैं। असुर के एक हाथ में गदा का अंकन है। चित्र का पृष्ठ भी तीन भागों में विभाजित है, उच्च भाग वर्तुलाकार मेघों से पूरित है, मध्य भाग में धरातल को चित्रित किया

गया है, जिसमें हरितिमा व लघु पेड़ों के अतिरिक्त वृक्षों को भी, चित्रकारों ने अंकित किया है। दायीं ओर वृक्ष का अंकन है, तो बायीं ओर ऋषियों का समूह अंकन है जो हाथ जोड़े माला हाथों में पकड़े हुए अंकित है। निम्न भाग में चित्रित सरोवर में पद्म पुष्प व पत्रों को पल्लवित अवस्था में चित्रित किया है।

4. राजस्थान

राजस्था क्षेत्र की विशेष शैली में, श्री विष्णु के दशावतारों का चित्रण बहुतायत रूप में उपलब्ध है। यहां पर निर्मित अवतारों के चित्र भित्तियों, पोथीचित्रों के अतिरिक्त कपड़े पर भी चित्रांकित है।

राधा कृष्ण का प्रेम प्रसंग यद्यपि राजस्थानी चित्रकारों का पसंदीदा विषय रहा है, इसके अतिरिक्त व्यक्ति चित्र, प्रकृति चित्र, आलंकारिक आलेखनों के साथ–साथ श्री विष्णु के अवतारों का चित्रण सभी शैलियों में चित्रित है। चितेरों ने श्री विष्णु के अवतारों को कथानुसार चित्रित किया है, तो कहीं अवतार रूप में ही पद्मनाथ का चित्रांकन देखने को मिलता है। कहीं पर चित्रकारों ने सपाट पृष्ठभूमि का उपयोग किया है, तो कई चित्रों की पृष्ठभूमि प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है।

अतः राजस्थानी कला में दशावतारों की श्रंखला में ही वराह, मत्स्य, कूर्म का चित्रण प्रमुखता से एवं विस्तृत रूप में किया गया है।

राजस्थान में प्रचलित विभिन्न शैलियों (मेवाड़, मालवा, जोधपुर, किशनगढ़, बीकानेर, जयपुर) में गीत गोविन्द के आधार पर चित्रित दशावतारों का अंकन किया गया है।[4]

राजस्थानी शैली के उल्लेखित चित्रों जो गीत गोविन्द पर आधारित फड़ शैली में बने अवतार चित्र हैं। इस चित्र में वराह, मत्स्य, कूर्म का अत्यंत सुन्दर चित्रण चित्रकारों के कला कौशल का प्रमाण प्रस्तुत करता है।यहां प्रदर्शित एक चित्र (चि.स. 068) श्री विष्णु के मत्स्य अवतार से संबंधित है। फड़ शैली में बने एक चित्र की पृष्ठ भूमि हल्के गुलाबी रंग की आभा लिए हुए है, इसमें श्री विष्णु को मत्स्य मुख से निकला हुआ दर्शाया गया है। अलंकृत तत्वों से पूरित मत्स्य मुख द्विरंगों में विभाजित है। वहीं मत्स्य मुख का ऊपरी भाग श्वेत रंग से पूरित है जिस पर रक्तवर्णीय विशाल नेत्र का अत्यंत सुन्दर अंकन है। मत्स्य मुख का निम्न भाग मत्स्य शरीर पर अंकित रेखाओं के सदृश है जो स्वर्ण एवं श्वेत रंगों में पूरित है। नील वर्णीय श्री विष्णु रक्तिम वस्त्रालकार एवं पीताम्बर धारण किए हुए है। चतुर्भुजी विष्णु के कर कमलों में शंख, चक्र, गदा एवं चारों वेद शोभायित हैं। स्वर्ण एवं रत्नजड़ित मुकुट मोर पंख युक्त हैं शीश के पृष्ठ में सूर्य मण्डल का प्रकाश अंकित है। मत्स्य अवतार धारण किए विष्णु के सम्मुख हरे एवं रक्त वर्णीय वस्त्रों से सुशोभित जयदेव इनकी स्तुति करते हुए चित्रित हैं।

पृष्ठभूमि का विभाजन दो भागों में किया गया है। ऊपरी भाग में मेघों का अंकन वर्तुलाकार रूप लिए है वहीं निम्न भाग में सरोवर को चापाकार रेखाओं द्वारा नील रूप में चित्रित किया है। चित्र में उच्च भाग में दांयी ओर मत्स्यावतार का वर्णन स्थानीय लिपि में दर्शित है।

कूर्मावतार का एक चित्र (चि.सं. 069) हल्की आभावाली धरातल पर चित्रित है। इसमें कूर्म का हरे रंग से पूरित कर उसे विशाल स्वरूप प्रदान किया

है। कूर्म के चारों चरण मनुष्यों के पद समान हैं। कच्छप के मुख के स्थान पर, नील वर्णीय श्री हरि, चर्तुभुज स्वरूप में शोभायमान हैं। जो अपने हाथों में गदा, चक्र, पद्म एवं शंख को धारण कर रक्तिम एवं पीतवर्णीय वस्त्रों में अत्यधिक अनुपम छवि का सौन्दर्य बिखेरते हुए प्रतीत हो रहे हैं। मस्तक के पीछे गोलाकार आभा मण्डल दर्शित है। कूर्म की पीठ पर गोल आकृति वसुधा को, नारी आकृति के रूप में चित्रित किया है। वहीं जो हरित व लाल रंगों के वस्त्रालंकारों से सुसज्जित मुकुट धारण किये, हाथों को जोड़े हुए प्रदर्शित हैं। गोलाकृति के ऊपर संभवतः मेरू पर्वत का चित्रांकन है। श्री हरि के सामने करबद्ध जयदेव का अंकन है। पृष्ठभूमि त्रिभाग में विभक्त है उच्च भाग सपाट है मध्यम भाग में नील रंग से लहराकार रेखाओं द्वारा उसे सरोवर का रूप दिया है, वहीं निम्न भाग में चापाकार रेखाओं द्वारा स्थान को पूरित किया है। निम्नतम भाग में कूर्मावतार से जुड़ी कथानक लिपिबद्ध है। सम्पूर्ण चित्र चटक रंग संयोजन से परिपूर्ण है।

वराह अवतार के कथानक से जुड़े एक चित्र में (चि.स. 70) जो फड़ चित्र की श्रेणी में आते हैं इसमें नील वर्णीय जगदीश्वर वराह, पशु एवं देव रूप में प्रदर्शित है। स्वर्ण युक्त मोर मुकुट को अपने मस्तक पर पहने हुए श्वेत दन्त पर पृथ्वी का भार उठाए अंकित है। श्री वराह का मुख गेहुंआ वर्ण सदृश है तथा लाल रंग की जिव्हा बाहर निकली हुई है। वहीं शरीर नीले रंग से युक्त है। रक्त व पीत रंग के वस्त्राभूषणों से शोभित वराह हरि के चारों हस्तों में पद्म, चक्र, शंख, गदा का अंकन है। मत्स्याकार विशाल नयन व घुंघराले केश तथा मोक्तिक आभूषणों से सजे, हुए वराह हरि का सौन्दर्य अवर्णनीय है। हरि के चरणों तले हरित सींग धारी

दैत्य है, जो लाल रंग के अर्ध अधोवस्त्र पहने हुए है। संभवतः ह्यग्रीव नामक असुर का चित्रण है, जो स्वर्णिम आभूषणों को पहने हुए हैं एक हाथ अपनी जंघा पर एवं दूसरा हाथ ऊपर की ओर उठाए भयातुर अवस्था में नयनों को कांढे हुए दर्शित है।

5. उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश की कला में मुगल शैली का प्रभाव अधिक है। अकबर काल में हिन्दु धार्मिक चित्रण अधिकता से हुआ। धार्मिक चित्रों की श्रेणी में श्री विष्णु के अवतार चित्रों का भी बहुधा अंकन हुआ है।

आइने अकबरी में अबुल फजल ने लिखा है कि हिन्दु चित्रकारों के चित्र धार्मिकता से ओतप्रोत हैं। संसार मे ऐसे कलाकारों की सूची अल्प है जो इन चितेरों से साम्यता रखते हों।[5] यद्यपि मुगल शैली में बने विष्णु के दशावतारों के चित्रों का महत्वपूर्ण चित्रसमूह गुजरात के वर्नाकुलर सोसाइटी अहमदाबाद में स्थित है।[6] इसके अतिरिक्त जहांगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई, प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय मुम्बई तथा राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में प्राप्त है।[7] यद्यपि मुगल शैली में श्री हरि अवतार के दशावतारों का चित्राकंन स्वतंत्र रूप से तो मिलता ही है इसके अतिरिक्त श्री मद्भागवत तथा गीता गोविन्द में भी चित्रित पोथियों के रूप में परिलक्षित है।

अवतार चित्रों की श्रंखला में वराह अवतार का चित्रण ही अधिकता प्राप्त है। जिनमें उत्तर प्रदेश से वराह अवतार के एक चित्र में (चि.सं. 071) जो मुगल शैली का प्रतिनिधित्व करता है, इसमें वराह हरि को पूर्ण शूकर रूप में चित्रित

किया है। युद्ध मैदान में गमन करने से पूर्व, सुसज्जित अश्व के समान शूकर के मुख पर नकेल का चित्रण किया गया है। इस तरह का प्रयोग केवल मुगल शैली में ही चित्रित है। विशाल नेत्रों वाले वराह हरि ने अपने लम्बे नुकीले दन्तों पर पृथ्वी को उठाया हुआ है जो गोलाकार सपाट रूप लिए है। वराह हरि गले में घण्टीयुक्त माला पहने हैं, वही लम्बे–लम्बे नखों ने उन्हें अन्य शैलियों में वर्णित वराह से अलग रूप में दर्शित है। निकट ही करबद्ध मुद्रा में पतली एवं लम्बी मानवाकृति का अंकन है। यह गुजरात के वर्नाकूलर सोसायटी अहमदाबाद संग्रह में दर्शित है।[8]

6. मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश के ओरछा दतिया एवं ग्वालियर क्षेत्र की कला पर मुगल तथा राजस्थानी कला का प्रभाव है। यहां पर अवतार से सम्बन्धित घटनाक्रम, तो कहीं पर केवल अवतार का चित्रांकन किया गया है। कई चित्रों में विष्णु के विविध अवतारों को एक ही पृष्ठभूमि पर दर्शाया गया है। जिन्हें देखने पर यही आभास होता है, मानों वे एक परिवार के सदस्य हों।

अतः विष्णु के अवतारों को प्रमुख रूप से भित्तियों पर ही चित्रांकित किया गया है। इसके उदाहरण दतिया व ओरछा के महलों, मंदिरों तथा छत्रियों की भित्तियों पर परिलक्षित हैं। यह भित्ति चित्र बुन्देली कलम का प्रतिनिधित्व करते हैं।[9]

अतः म.प्र. की कला में ओरछा के राजा महल के रानी कक्ष में मत्स्य, कूर्म, अवतार का चित्रण उल्लेखित है। इस चित्र में (चि.सं. 072) कूर्म के अतिरिक्त मत्स्यावतार से जुड़े घटनाक्रम को भी चित्रित किया है।

उल्लेखित मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं. 072) में मत्स्य की श्वेत त्वचा के अर्ध भाग पर भूरे रंग से आड़ी रेखाओं का अंकन है। चतुर्भुजी विष्णु के चारों हाथों में शंख, चक्र, पद्म, गदा शोभायमान है। स्वर्ण जड़ित मुकुट पहने श्री विष्णु स्वर्णिम एवं मोक्तिक हार व अलंकृत आभूषण पहने मत्स्यरूपी श्री हरि के समक्ष भूरे व चिकत्तेदार सींगधारी ह्यग्रीव नामक असुर को लघु आकार में चित्रित शंख में से उदित होते हुए दर्शाया है। अपने केशों को फैलाए ह्यग्रीव हाथों में ढाल व गदा को पकड़े हुए है वहीं श्री विष्णु गदा द्वारा असुरराज पर प्रहार करते हुए अंकित हैं। इसमें दाहिने भाग में विष्णु के कूर्मावतार का चित्रांकन किया गया है। इसमें विशाल अलंकृत कूर्म के मुख से विकसित श्री हरि तो गौर वर्णीय हैं एवं अनेकों अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित हैं। इनकी चर्तुभुजाओं में चक्र गदा पदम व शंख दृष्टव्य हैं। सम्मुख ही सींगधारी पूँछयुक्त दैत्य विशालाकृति लिए असुर अपनी जिव्हा निकाले उल्टा चित्रित है जो हाथों में गदा व ढाल पकड़े हुए हैं संभवतः ह्ययग्रीव जिसने पीले रंग का अर्ध अधोवस्त्र धारण किया हुआ है। दैत्य के सींग पर गदा द्वारा विष्णु प्रहार करते हुए प्रस्तुत हैं।

चित्र के दाहिनी ओर श्री हरि के ह्यग्रीव अवतार का चित्रांकन किया गया है। इस चित्र में हवनकुण्ड की अग्नि के मध्य चतुर्भुजी नील वर्ण विष्णु अपनी रक्तवर्णीय अधोवस्त्रालंकार से सुशोभित देत्य के ऊपर गदा से प्रहार करते हुए चित्रित हैं। निकट ही चर्तुभुजी ब्रह्मा जी आसीन हैं जो हवन करते हुए प्रदर्शित हैं, ब्रह्मा जी के निकट हवन सामग्री व विभिन्न पात्र रखे हैं। पृष्ठ भूमि के उच्च भाग में वृक्षों का लघु अंकन है, तो निम्न भाग में चापाकार आकृति को चित्रांकित किया है। सम्पूर्ण दृश्य चटक रंगों से पूरित है।

वराह अवतार का एक चित्र (चि.स. 073) ओरछा की भित्ति पर परिलक्षित है, तीनों भागों में लाल रंग की मोटी रेखाओं द्वारा विभक्त इस चित्र में मध्यम में वराह भगवान का अंकन है जो अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हुए है। चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में सुशोभित शंख, चक्र, गदा, पद्म है। वहीं नीलवर्णीय विष्णु अपने चरणों से दैत्य पर पैर दबाये हुए हैं। सींगधारी दैत्य विष्णु के अग्रभाग में बैठे हुए किन्तु पीछे मुड़कर देखते हुए असुर को दर्शाया गया है। पृष्ठ भाग प्राकृतिक सौन्दर्य से आच्छादित है। यह चित्र पूर्ण रूप से अस्पष्ट है।

7. बिहार

बिहार में चित्रकला का उद्‌भव वैदिक काल से ही ज्ञातव्य है। मैथिली के पिता जनक ने अपनी अष्टवर्षीय पुत्री के विवाह में राम के स्वागतार्थ अनेक चित्र बनवाये जिससे विवाह उपलक्ष्य पर चित्रकारी यहां की प्रमुख परम्परा बन गई।[10]

यहां की कोहवर कला में अवतारों को विशेष स्थान प्राप्त है। अन्य शैली में कागज पर प्राकृतिक रंगों द्वारा ब्रश के स्थान पर रूई के फोहे से रंगों को पूरित किया जाता था। विदेशी शैली से प्रभावित फिरंगी आर्ट में विष्णु अवतारों के उत्कृष्ट उदाहरण प्राप्त हैं, जो मिथिला की माइका पेन्टिंग्स के नाम से विख्यात हैं।[11]

बिहार की चित्रकला में श्री हरि में अवतार चित्रों में क्रमशः मत्स्य, कूर्म, वराह का चित्रण प्रमुखता लिए हुए ही यहां मत्स्य अवतार के चित्रों में कहीं पर

उर्ध्वभाग में अर्ध मानवाकृति हैं और निचले भाग को मत्स्याकार रूप में चित्रित किया है एक चित्र के अद्ध मत्स्य शरीर के ऊपरी भाग में नारी का अंकन है जिसे विद्वानों ने मत्स्यावतार ही माना है।[12]

वहीं कूर्मावतार में कूर्म के ऊपर श्री हरि को उकेरा है तो कहीं पर विष्णु को, चतुर्भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पद्म के अतिरिक्त परशु तो कहीं कमण्डल को चित्रित किया है। वराह अवतार चित्रों में वराह मुख के स्थान पर मूंछयुक्त मानवमुख का अंकन है जिसके लम्बे–लम्बे दन्त बनाये हैं, तो कहीं पर वराह मुख को चित्रित किया है जो अपनी ढ़ाढ़ पर वसुंधरा को उठाए हुए तथा पालथी मारकर वृताकार में बेठे हुए चित्रांकित हैं।[13]

श्री हरि अवतारों की श्रंखला में मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं.074) जो कागज पर निर्मित है चित्र में मत्स्य रूपी विष्णु के शरीर का निम्न भाग मछली के समान है, जिसके शारिरिक उभारों को श्याम एवं गुलाबी कोमल रेखाओं द्वारा दर्शाया गया है। नील वर्णीय, चतुर्भुजी विष्णु के करकमलों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा एवं पंकज पुष्प का अंकन नारंगी एवं काले रंगों के प्रयोग से किया गया है। चित्र में प्रदर्शित मुख पार्श्व मुद्रा में अंकित है जबकि नेत्र सम्मुख मुद्रा में है। विष्णु के काले लहरदार केशों के ऊपर नारंगी, गुलाबी, हरे तथा काले रंग का सुन्दर मुकुट अंकित है, जिसके पीछे सपाट पीले रंग के आभा मण्डल के किनारे छोटे छोटे सटे रंगीन गोलों को चित्रांकित किया गया है। नारंगी रंग के उत्तरीय वस्त्र को चित्र में पृष्ठभूमि पर चित्रांकित किया गया है। पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग को भिन्न प्रकार के पुष्प पत्रों के अंकन से सुसज्जित किया है। निचले भग में काली

तरंगों द्वारा तल का अंकन है। चित्र के चारों तरफ गुलाबी रंग की त्रिकोणीय आकृतियों की श्रंखलाबद्ध रूप में अंकिन है।

हाथ द्वारा निर्मित कागज पर चित्रित कूर्मअवतार का एक चित्र (चि. सं. 075) श्याम वर्णीय विशाल नेत्रों वाले श्री हरि का ऊपरी भाग सम्मुख मुद्रा में अंकित है। स्वर्णिम एवं रक्तिम आभूषणयुक्त श्री हरि के करकमलों में क्रमशः पीतवर्णीय शंक, चक्र, गदा एवं रक्तवर्णी कमल पुष्प का अंकन है। निचला भाग कछुए के ठोस कवचाकार है। नारंगी रंग का तिलक, पीले रंग के कुण्डलधारी श्री हरि के काले घुंघराले केशों के पीछे नारंगी रंग की आभा से निकलती किरणों का सुन्दर अंकन है। पृष्ठभूमि को तीन भागों में विभक्त किया गया है। निचले भाग में लाल, काली, पीली ज्यामितिक आकृतियों का अंकन श्रंखलाबद्ध रूप में किया गया है। मध्य भाग में पीले सपाट रंग की पृष्ठ भूमि में काली रेखाओं द्वारा पट्टिकाओं का अंकन है एवं ऊपरी भाग में हरे पत्रों युक्त बल्लयिां शोभा पा रही हैं। चित्र के चारों ओर लाल रंग का सपाट प्रयोग किया गया है।

मधुबनी शैली के एक चित्र (चि.सं. 076) में सूकर मुख तथा मानव शरीर युक्त वराह का चित्रण कूर्म अवतार के चित्र सांम्य रखता है। चित्र में वराह भगवान को बालक सदृश चित्रित किया गया है। उनकी कमर में हरित रंग का वस्त्र शोभा पा रहा है तथा नारंगी रंग की आड़ी पट्टिकायुक्त अद्योवस्त्र धारण किया है दो पट्टिकाओं के मध्य श्वेत पृष्ठ भूमि के ऊपर अनेक कोमल व सीधी रेखाओं का अंकन है तथा चरणों के पार्श्व भाग की पृष्ठभूमि में नारंगी रंग के चापाकार द्वारा धरातल का चित्रण किया गया है।

कागज पर. बनी मधुबनी शैली एवं कोहवर भित्तिचित्रों के अतिरिक्त मिथिला की पुरनिया हवेली से प्राप्त माइका चित्र बिहार की एक विशिष्ट शैली से परिचित कराते हैं। दशावतारों के यह चित्र पश्चिमी एवं पूर्वी कलाओं के अनूठे समागम से बने हैं। इन्हें विद्वानों द्वारा "फिरंगी आर्ट" की उपमा दी गई है।[14]

मत्स्य अवतार के चित्रों (चि.सं. 077) में नील वर्णीय, चतुर्भुजी विष्णु की भुजाओं में लाल, हरे रत्नों से जड़ित शंख, चक्र के अतिरिक्त तलवार और ढाल का अंकन है। सम्राट के संदृश स्वर्णिम कवजधारी श्री हरि के शरीर का निचला भाग नुकीले दन्त से युक्त, मत्स्य मुख से विकसित है। मत्स्य के शारीरिक उभार को दर्शाते हुए चित्रकार ने नीले रंग का प्रयोग किया है तथा उसके पंख, पुच्छ एवं मुख के भीतरी भाग को लाल रंग से दर्शाया गया है। स्वर्णिम आभूषणों से सुसज्जित मत्स्य कंधों पर रक्त वर्णीय वस्त्र शोभा पा रहा है। पृष्ठ भूमि का अधिकांश ऊपरी भाग सपाट मटमेले सफेद रंग से पूरित है। निचले भाग में सफेद एवं नीले रंगों के सपाट किन्तु मिश्रित तुलिका घातों के क्रमगत अंकन से जल को चित्रित किया गया है।

इसी श्रंखला के एक अन्य चित्र (चि.सं. 078) में पृष्ठ भूमि एवं विष्णु के ऊपर भाग में परिवर्तन किये बिना, मत्स्य के स्थान पर कूर्म शरीर अंकित कर कूर्मावतार का सुन्दर चित्रांकन है। चित्र में चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में क्रमशः शंख व चक्र है अन्य एक हाथ आशीर्वाद देते हुए चित्राया गया है। दांयां हाथ कूर्म शरीर के ऊपर चित्रित है। भूरे रंग से चित्रित कूर्म के मध्य भाग में सफेद नीले रंगों के प्रयोग से त्रिकोणीय विभाजन है। कूर्म के शरीर पर कर्णीय आकार में विपरीत

दिशाओं से रक्त वर्णीय वस्त्र को लपेटा हुआ चित्राया गया है जिसके दोनों छोर भुजाओं से होते हुए स्वतंत्र रूप से चित्रित हैं।

वराह अवतार का एक चित्र (चि.सं. 079) छाया प्रकाश अंकन के अनूठा उदाहरण है। नीलवर्णीय वराह देव का मुख पार्श्व मुद्रा में अंकित है। कवजधारी वराह स्वर्णिम आभूषणों से अलंकृत है। चक्र, शंख धारी विष्णु अपने एक हाथ से आर्शीवाद दे रहे हैं व दूसरे हाथ से कमर पर बंधे हरे वस्त्र को सम्भालते हुए चित्रित हैं। श्वेत अद्योवस्त्रधारी श्री हरि भगवान के हाथों से होता हुआ रक्तिम वस्त्र चित्र के दायें तथा बांयी ओर की शोभा बढ़ा रहा है।

8. असम

बिहार के साथ ही असम चित्रकला ने भी दशावतार चित्रण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां भी पोथी चित्रण की प्रथा का प्रचलन था। यद्यपि दशावतारों के चित्रण में असम के चित्रों को ह्यग्रीव ने सर्वाधिक आकर्षित किया तथापि अन्य अवतारों के चित्र भी श्रंखलाबद्ध रूप में चित्रांकित किये गये।

यहां पर महाराज रुद्र सिंहके समय (1696 ई.) में गीत गोविन्द पर आधारित एक मात्र चित्रित पोथी प्राप्त हुई है। पोथी में ह्यग्रीव के अतिरिक्त उन अवतारों के भी सुन्दर चित्र हैं। 18वीं शदी के अन्त तक पोथी चित्रण का सपाट पटरों पर बनने वाले चित्रों ने ले लिया। ग्वापड़ा जिले के धुबड़ी से प्राप्त एवं गोहाटी विश्वविद्यालय पुस्तकालय में संग्रहित पटरों पर भी गीत गोविन्द सदृश्य चित्रण किया गया है।[15]

असम की चित्रकला में अवतार चित्रण श्रंखलाबद्ध रूप में होते हुए भी पृथक–पृथक तोरणों के नीचे एकल रूप में किया गया है।[15] चित्र के साथ चित्र का विषय एवं अवतार के नामांकन की प्रथा का प्रचलन असम चित्रकला की विशेषता को दर्शाता है। बेसिल ग्रे के अनुसार–

''अलग–अलग देवताओं की अलग–अलग तोरणों के नीचे दिखाना असाम की चित्रकला पर पाल शैली की प्रभाव है।''

असाम से प्राप्त एक चित्र (चि.सं.080) में विष्णु के अवतार पोथी चित्र हैं। जो तीन भागों में विभक्त हैं इसके दाहिनी एवं बायीं ओर श्री हरि के अवतार चित्र अंकित हैं। दाहिनी ओर कूर्म अवतार का अंकन है जिसमें विशाल आकृति लिए कूर्म चित्रित है, जिसके पृष्ठ भाग की ओर मानवीय आकृति खड़ी है।

वहीं बायीं ओर वराह हरि का चित्रण है जिसमें चतुर्भुजी विष्णु वराह स्वरूप धारण किए हैं तथा निकट ही एक मानवीय आकृति दर्शनीय है जो बैठी हुई अंकित है। यह चित्र लगभग अस्पष्ट सा प्रतीत होता है।

9. गुजरात

पश्चिमी भारत में दशावतारों की चित्रण प्रक्रिया 15वीं सदी से आरंभ हुई।[17] गुजरात की चित्रकला में अपभ्रंश शैली में बने दशावतार चित्र गीतगोविन्द आधार पर चित्रांकित किये गये। यहां की पाण्डुलिपियों[18] ने भी दशावतार के प्रचार प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान किया। यहां मत्स्य, कूर्म, वराह को पूर्ण पशुरूप में, तो कभी अर्धपशु एवं अर्धमानव रूप में चित्रित किया गया।

अवतार चित्रों को चित्रकारों ने आस्थावान रूप में पूर्व दिशा की ओर मुख करके बनाया है। सर्व प्रथम वह इष्टदेव का ध्यान कर सम्पूर्ण पृष्ठभूमि को पीतवर्णीय रंगने के पश्चात् उस पर काली स्याही द्वारा चित्रांकित करते थे। उन्होंने रंगाकन हेतु श्वेत, पीत, नीलापन लिये सफेद कृष्ण एवं, नीले रंग को प्रधान रंगों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। यहां के चित्र मनोहर प्रतीत होते हैं एवं इनमें दर्शित कमियां ही इनकी शैलीगत विशेषताओं को उजागर करने में सहायक सिद्ध होती हैं। चित्रों में कमियों के बाद भी गति काफी है।[20]

यहां बने वराह अवतार चित्रों में जैन पोथियों में बने हरिनेमेगेश देवता के सीगों के अतिरिक्त अन्य शारीरिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। अतः यहां के अवतार चित्रों पर जैन शैली के प्रभाव को नहीं नकारा जा सकता।[21] गुजरात शैली में अंकित जावर गीत गोविन्द के एक चित्र में विष्णु के दशावतारों का चित्रांकन, पीतवर्णीय पृष्ठभूमि के ऊपर काली स्याही के तुलिका आघात द्वारा किया गया है। चित्र के निम्न भाग में श्री कृष्ण का प्रेम प्रसंग को वृक्ष एवं गायों के मध्य चित्रित किया गया है। ऊपरी भाग में दशावतारों के श्रंखला में सर्वप्रथम वक्रतुण्ड देव का चित्रण हैं।

क्रमशः दूसरे स्थान पर मत्स्य अवतार का सुन्दर अंकन (चि.सं. 081) देखने को मिलता है। जिसमें गौरवर्णीय चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में उनके आयुद्ध शोभा पा रहे हैं। लाल अधोवस्त्र धारी श्री हरि कृष्णकाय मत्स्य के मुख में से उदित होते हुए अंकित हैं। काले रंग के मत्स्य पर श्वेत रंग का उभार एवं नेत्र के स्पष्ट दर्शन होते हैं। चित्र में दानव का अंकन स्पष्ट रूप से नहीं किया गया है। पृष्ठभूमि

तीन भागों में विभक्त है। ऊपरी भाग में आकाश को अंकित करने का असफल प्रयास किया गया है। मध्य भाग में सपाट पीले रंग से पूरित है तथा नीचे के भागों में जल का सुन्दर चित्रांकन है।

वहीं तीसरे आयत में (चि.सं.081) कूर्मा का अर्धमानवीय स्वरूप देखने को मिलता है। जिसमें गौरवर्णीय श्री हरि समुख मुद्रा में स्वर्ण मुकुट एवं आयुद्ध धारण किये हैं। श्री हरि कंठ में रक्तवर्णीय हार पहने हैं। निम्न भाग में श्वेत, श्याम रंग द्वारा कच्छप का स्पष्ट अंकन है। पृष्ठ भूमि को पुनः अग्रवर्णित शैली में ही चित्रित किया गया है।

इस श्रंखला के नये आयत में (चि.सं.081) श्री वराह का पूर्ण शूकर रूप में अंकन है। प्रस्तुत चित्र में वराह चरित्र को अन्य अवतारों की अपेक्षा आंशिक तुलिका आघात द्वारा बड़े रोचक ढंग से चित्रांकन किया गया है। चित्र को देखकर यही आभास होता है कि यह चित्र पाण्डुलिपि अंकन में निपुण चित्रकार का ही है। गौर वर्णीय शूकर मुख ऊपर की ओर किये हुए एवं पिछले पैरों को धरातल पर टिकाये हुए एवं अग्र भाग के पैरों को ऊपर उठाये हुए, संतुलित मुद्रा में खड़े हुए अंकित हैं।

पृष्ठ भूमि तीन भागों में विभक्त है। ऊपरी भाग सपाट श्वेत वर्णीय मध्यपीट वर्णीय एवं निम्न नील वर्णीय दर्शित है। नीलवर्णीय एवं पीत वर्णीय पृष्ठ भूमि के कर्णीय विभाजन के ऊपर वराह का गतिपूर्ण अंकन शोभा पा रहा है।

10. बंगाल

कलकत्ता बंगाल शैली का प्रमुख केन्द्र रहा है। कम्पनी शैली एवं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की क्रांति भारत में एक साथ विकसित हुई। कुछ विद्वान यहां के चित्रों को नवजागरण के अग्रदूत की उपमा भी प्रदान करते हैं।

वहीं एक ओर आनन्द कुमार स्वामी एवं ई.बी ह्वेल ने बंगाल चित्र शैली को बहुत अधिक प्रभावी तथा महत्वपूर्ण तो नहीं माना, किन्तु यह स्वीकार किया कि इस शैली ने भारतीय चित्रकारों को नयी दिशा में आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया।[23]

यहां की कला में दशावतारों को मांसल सौन्दर्य को परिपूर्ण ढंग से दर्शाने के अतिरिक्त चटक रंगों के प्रयोग से निर्मित पटचित्रों में प्रमुख स्थान मिला। 19वीं शताब्दी के अंत तक यह कला भी अवनति की ओर अग्रसर हुई। यहां की लोक कला में चित्रित दशावतार पर चित्रों का विशेष महत्व है।[24] इन पटों एवं चित्रों का प्रयोग बंगाल के नाट्य क्रीड़ा में बहुतायत से होता रहा।

नाया एवं पिंगल के चित्रकारों द्वारा रचित मिदनापुर की लोककला में निर्मित दशावतार एवं दुर्गा पाटों पर शुद्ध चटक एवं अमिश्रित रंगों का सुन्दर प्रयोग किया गया।[25] स्थान की कमी के कारण लकड़ी के पाटरों पर विष्णु के समस्त अवतारों का चित्रित नहीं किया जाता था वरन दो चार अवतारों का ही अंकन किया गया।[26] उदाहरण स्वरूप लोक कला में चित्रित मत्स्य, कूर्म, वराह एवं नरसिंह अवतार का यह चित्र है। (चि.सं. 16) इन पर चित्रों की सुरक्षा हेतु इन पर लाख चढ़ाई जाती थी। जिससे चित्र को विशेष प्रकार की चमक एवं स्थायित्व

मिलता था।[27] पटचित्रों के अतिरिक्त यहां विष्णु के अवतारों की कई श्रृंखलाऐं चित्रित की गई। जिसमें प्रत्येक अवतार का एकल रूप में पृथक दृश्य संयोजन में बारीक रेखाओं द्वारा, लयबद्ध छाया प्रकाश से युक्त, यथार्थवादी अंकन है। यह चित्र अपने आप में विशिष्ट एवं परिपूर्ण है और किसी भी अन्य शैली से प्रेरित प्रतीत नहीं होते।

मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं.082) में मत्स्य मुख से एक बलिष्ठ शरीर वाले देवाकृति का उदित होते हुए अंकन है। जिसका शीर्ष सम्भवतः समुद्र में पाई जाने वाली, किसी विशेष प्रजाति की मछली से साम्य रखता है। उनकी भुजाओं में शंख, चक्र का अंकन पारम्परिक ढंग से किया गया है। जबकि गदा के स्थान पर बज्र एवं पद्म शोभित है। निचले भाग में पूर्ण विकसित गोलाकार नेत्र युक्त मत्स्य का विशाल अंकन है। चित्र में दायीं ओर शंख में से विकसित सींगधारी दानव का अंकन है।

चित्र में मत्स्य को नाव खींचते हुए दर्शाया गया है। इस नाव में जीव–जन्तुओं एवं लता पत्रों सहित मनु आसीन हैं, किन्तु इस चित्र में नाव के आसीन प्राणियों के समक्ष प्रलय दृश्य के भयानक चित्रांकन एवं अदृश्य श्री हरि द्वारा उनकी नाव का मार्गदर्शन अनूठा प्रयोग है।

श्रृंखला का एक अन्य चित्र समुद्र मंथन (चं.सं. 083) की घटना का है। जिसमें कूर्म की पीठ पर आसीन मेरू पर्वत रूपी मथानी को बासु की नाग रूपी रस्सी से मथा जा रहा है। चित्र में दांयी ओर देवतागण रस्सी को पकड़े हैं एवं बायीं ओर असुरों का निजी विशेषताओं सहित अंकन किया गया है। चित्रकार ने

अमुख देवताओं को सीमित संख्यायें अंकित कर, वेशुकी नाग के प्रारम्भ व अंत को नहीं दर्शाया। अतः उसने अपने चातुर्य द्वारा कम अंकन कर, अधिकता को दर्शाने का सफल प्रयास किया है। मेरूपर्वत पर सिर्फ कमल पुष्प का अंकन है। सम्पूर्ण पृष्ठ भूमि को आकाश तथा जल में विभक्त कर कूर्म, असुर एवं देवताओं के चरणों की गति से जल में होने वाली हलचल का चिंत्राकन भी उल्लेखनीय है।

वराह अवतार के उल्लेखित चित्र (चि.सं. 084) में शूकर मुख वाले मुकुटधारी वराह का शरीर मानव सदृश्य है। इनकी दोनों भुजाओं में क्रमशः शंख, चक्र है। धोती सदृश्य अद्योवस्त्र धारी वराह के कंधों पर दुपट्टा लहराते हुए अंकित है। वराह भगवान के चरण कमलों के नीचे दैत्य का मानवीय रूप में अंकन है। दाढ़ीयुक्त दैत्य के सींग और केशों का भी कुशलतापूर्वक चित्रण किया गया है। वराह भगवान ने अपने दंतों पर पृथ्वी को स्थान दिया है। जिसमें प्रकृति के मध्य वास्तुअंकन शोभायमान है। पृष्ठभूमि दो भागों में विभक्त है जिसके ऊपरी भाग में आकाश एवं निम्न भाग में समुद्र का चित्रांकन है।

11 महाराष्ट्र

महाराष्ट्र की चित्रकला में कागज पर गोलमुखाकृति वाले दशावतारों के चित्र देखने में मिलते हैं। यहां से प्राप्त दशावतारों की पोथियों में अवतारों को पुष्प युक्त वल्लरियों के मध्य एकल रूपी में चित्रित किया गया है। चित्र में चटक रंग संयोजन एवं मोटी काली रेखाओं के दर्शन होते हैं। तोरण द्वारों का अंकन यहां की कला पर पाल शैली के प्रभाव को दर्शाता है। दशावतारों का चित्रण करने वाले चित्रकारों में यहां संतुशुभराम[28] का नाम प्रमुख है।

मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं. 085) में मत्स्य के पिछले भाग और मानव शीर के कमर के ऊपरी भाग के संयोग से मत्स्य अवतार को चित्रित किया है। जबकि अन्य शैलियों में मानव का तो अर्धांकन ही होता था परन्तु वह पूर्ण रूपेण विकसित मत्स्य के मुंह में से उदित होता हुआ चित्रित किया जाता था। गोलामुखाकृति वाले श्री हरि अलंकृत आभूषणों से शोभायमान हैं। इनकी अग्र भुजायें आयुद्ध रहित एवं अन्य दो शंक चक्रधारी हैं। स्वर्णिम मुकुटधारी श्री हरि के कंधों पर उत्तरी वस्त्र शोभायमान है। अधोवस्त्र का स्थान मछली के पीछे भाग वाले शरीर ने लिया है। मत्स्य के दायीं एवं बायीं ओर हरे पत्रों से युक्त वानस्पतिक अंकन है।

कूर्म अवतार के एक चित्र (चि.सं. 086) में श्री हरि को अर्ध पशु रूप में चित्राया गया है। यह चित्र पूर्ववर्णित मत्स्यावतार के चित्र में साम्य रखता है। इसके ऊपरी अर्धमानव रूप का अंकन मत्स्य अवतार के समान ही है। कमर का निम्न भाग कच्छप के आकार का है। कच्छप के दो पैरों का अंकन भी चित्र में किया गया है एवं कच्छप शरीर के ऊपरी भाग भी मत्स्य के समान चापाकार शारीरिक उभारों को चित्रित किया गया है, पर अपनी चौड़ी आकृति के कारण यह अपेक्षाकृत मोटा तथा नाटा प्रतीत होता है।

वराह अवतार के एक चित्र (चि.सं. 087) में श्वेत दंतों वाले श्री वराह स्वर्ण मुकुट धारण किये हैं। वराह का मुख शूकर का व अन्य शरीर चतुर्भुजी विष्णु का है। पीताम्बरा धारी श्री हरि के कंठ में मुक्तक मालाऐं कान में कुण्डल, हाथों में कंगन, बाजुओं में बाजूबंद, कमर में पेटी एवं चरणों में पाजेब का अति सुन्दर चित्रांकन किया गया है।

12. उड़ीसा

उड़ीसा की चित्रकला में अन्य विषयों के अतिरिक्त दशावतार से जुडे गीतगोविन्द में निर्मित चित्र ताड़ पत्र पर बने हैं। 16वीं शती में बने ये चित्र सर्वप्रथम मिले थे।

यद्यपि लकड़ी पर बनने वाले पट चित्र हों या कागज पर बनने वाले चित्र सभी ने अवतारों के प्रमुख विषय वस्तु बनाया। उड़ीसा में भुवनेश्वर के राजकीय संग्रहालय में गीत गोविन्द के आधार पर चित्रित दशावतार से सम्बन्धित लगभग बीस पोथियां ताड़पत्रीय हैं।[29]

उड़ीसा के पट चित्रों को छः श्रेणियों में बांटा गया है, जिनमें से विष्णु अवतार चतुर्थ श्रेणी में आते हैं। ये पट चित्र भिन्नता लिए निर्मित हैं कहीं लम्बतत् पट्टिका में श्री हरि के अवतारों का अंकन है। तो कहीं पर ये वृहत वृत्ताकार रूप लिये पद्म पत्र सदृश में दशावतारों के चित्रों के साथ दर्शनीय है। ये पट चित्र बनाने वाले अधिकांश चित्रकार शूद्र हैं, जिनके उपनाम महाराना, महापात्रा, दास आदि हैं। इन चितेरों के चित्र निर्माण में गृह स्वामिनी एवं बच्चे भी सहयोग देते थे, जो प्रायः रंग निर्माण का कार्य करते थे।[30]

श्री हरि के अवतार चित्र ताश के पत्तों पर भी अंकित हैं, जो पुरी के सांस्कृतिक चित्रकारों द्वारा बनाये गये हैं, इन्हें विशेष विधि द्वारा चित्रित हस्त निर्मित डिब्बे में सुरक्षित रखा जाता था।

उड़ीसा के ताड़ पत्र, कागज एवं पट चित्रों के अतिरिक्त लोककला में

भी अवतार चित्रों का चित्रांकन किया गया है। अतः उड़ीसा की कला में मत्स्य अवतार हमें ताड़ पत्र कागज, पट चित्र के अतिरिक्त ताश के पत्र पर भी दृष्टव्य है।

उल्लेखित चित्र (चि.सं.091) ताड़ पत्र[31] पर बनाया गया है, इसमें मत्स्य मुख से निकले हुए श्री हरि को दर्शाया गया है, चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में शंख, चक्र, गदा व पुष्प का अंकन है, जो पद्म संभवत् पद्म है। हरि विष्णु के कटि प्रदेश से ही उनका पीताम्बर लहराते हुए चित्रित है। अलंकृत आभूषणों से सुशोभित श्री विष्णु की आकृति लोक शैली से साम्य रखती प्रतीत होती है। निम्न भाग में दर्शित जल को अर्ध वृत्ताकार रेखाओं द्वारा दर्शाया गया है। चित्र के दांयीं एवं बांयीं ओर अलंकृत हाशिया निर्मित है।

पट चित्र में बने विष्णु के मत्स्य अवतार को (चि.सं. 088) अत्यंत सुन्दर रूप प्रदान किया है। प्रायः वर्गाकार आकृति में मध्य वृताकार स्वरूप के मध्य में मत्स्य रूप में से विकसित विष्णु का सुन्दर अंकन है। चतुर्भुजी विष्णु के एक हाथ में चक्र, तो दूसरे में शंख है। अग्र भाग के दोनों हाथों से वे चारों वेद रूपी बालक को थामे है एवं करबद्ध मुद्रा में दर्शित हैं। आलंकारिक आभूषणों से पूरित श्री विष्णु मूंछधारी हैं तथा उनके कंधे पर डले हुए दुपट्टे का कोमलाकंन अत्यधिक सौन्दर्यमयी है। वही हस्त एवं उंगलियां भी कोमल रूप लिए हैं मत्स्य द्वि रंगों में दर्शित जिस पर हल्के रंग के ऊपर गहरी रेखाओं द्वारा मत्स्य चमड़ी पर निर्मित रेखाओं के सदृश अंकन दिखाई देता है। प्रायः जल को सामान्य रेखाओं द्वारा पूरित

किया है। वृताकार के चारों ओर पुष्प पत्र युक्त आलेखन चारों और समरूपता लिए है वहीं हाशिये में लहरदार बेलों का चित्रांकन किया गया है।

एक अन्य चित्र वृताकार रूप में पद्म पुष्प सदृश पुष्प का अंकन है। यह भी पट चित्र (चि.सं. 094) है, इसमें मध्य में सागर की लहरों पर शेषनाग को अपनी शैया बनाकर उस पर विराजमान है। नील वर्णीय विष्णु, पीताम्बर धारी है, वह शेष नाग हल्के पीले रंग से पूरित है। विष्णु की नाभि से निकले पद्म पुष्प पर ब्रह्मा जी विराजमान हैं इस वृत को चारों ओर 104 भागों में विभक्त पुष्प पत्र में विष्णु में दशावतार का चित्रण है। इन्हीं पुष्प पत्र के एक भाग में मत्स्यमुख से उदित होते हुए श्री हरि गौर वर्णीय स्वरूप में चित्रित हैं। चतुर्भुजी विष्णु अपने हाथों प्रचलित प्रतीत चिन्हों के साथ शोभायमान हैं। वहीं कंधे पर पड़ा उत्तरीयवस्त्र नीले रंग का है। मत्स्य को द्वि रंगों में चित्रांकित किया गया है। प्रथम भाग सपाट रूप में चित्रित है ताश पत्र पर निर्मित (चि.सं. 092) मत्स्यवतार में श्री विष्णु के मत्स्य अवतार को तीन अलग–अलग वृतों में दर्शाकर पूर्णता प्रदान की है प्रथम भाग में मत्स्य शरीर धारी श्री विष्णु का ऊपरी भाग मानवीय जो चतुर्भुजी है एवं सिंहासन पर विराजमान है। सिंहासन के दायीं ओर मत्स्य तो बायीं ओर चांवर का चित्रण है। वहीं मध्य भाग में दर्शित वृत में विष्णु का मत्स्य अवतार का चित्र अपेक्षाकृत विशाल रूप लिए है। इसमें चतुर्भुजाधारी विष्णु अपने प्रतीक चिन्हों के साथ दर्शित है बायीं ओर लघु रूप में एक अन्य मत्स्य को भी चित्रित किया है तीसरे गोलाकार में अलंकृत रेखाओं एवं आलेखनों के मध्य में एक विशाल मत्स्याकृति चित्रांकित है जिसके एक ओर तीन दूसरी ओर द्वि पंख युक्त मत्स्य को दर्शाया गया है।

उड़ीसा के चित्रों में मत्स्य के अतिरिक्त कूर्मावतार का चित्रण भी ताड़ पत्र पर (चि.सं. 091) चित्रों के अतिरिक्त ताश के पत्ते पर अंकित है। ताड़ पत्र पर निर्मित कूर्मावतार रूप लिये विष्णु का चित्रण पूर्व वर्णित चित्र के सदृश है इसमें मुख खोले हुए कूर्म में से श्री हरि विकसित होते हुए अंकित हैं। कूर्म के निम्न भाग में पूर्व मुकुलित पुष्प का अंकन है। श्री हरि की आकृति अपभ्रंश शैली से कतिपय समानता रखती प्रतीत होती है वहीं पर चित्र में (चि.सं. 089) कूर्मावतार लिए जगदीश्वर का चित्रण सौन्दर्य से परिपूर्ण है। मुकुट शीश पर मुकुट पहने श्री हरि, अलंकृत वस्त्राभूषणों से शोभायमान हैं, वहीं चारों भुजाओं में शंख, पद्म, चक्र गदा पकड़े मूछ युक्त श्री हरि का शारीरिक सौष्ठव कलात्मक रेखाओं द्वारा प्रदर्शित है। वर्गाकार के मध्य वृताकार के अन्दर चित्रित वासुदेव का कूर्म शरीर आलंकारिक रूप लिए है। जल में मध्य खड़े हुए कूर्म रूपी विष्णु के दोनों चरण में जल में निमग्न हैं। निम्न भाग में जलाशय को सीधी रेखाओं द्वारा अंकित किया गया है। चित्र का हाशिया व अलंकृत आलेखन मत्स्यावतार में वर्णित आलेखनों के सदृश्य है। पट चित्रों की श्रंखला (चि.सं.094) वृताकार रूप लिए पद्म पुष्प की एक पत्रिका में मत्स्य अवतार के बगल में कूर्मावतार का चित्रण है। इसमें कूर्म का शरीर श्याम वर्णीय है। वहीं गौर वर्णीय मत्स्यावतार लिए विष्णु का मुकुट भी गहरे रंग से पूरित है। प्रचलित प्रतीत चिन्हों को चारों हाथों में थामे, श्री हरि गहरे श्याम रंग के उत्तरीय को पहने हैं।

वही ताश पत्र पर निर्मित कूर्मावतार भी पूर्व वर्णित चित्रानुसार विभागों में चित्रांकित हैं। (चि.सं.092) इसमें पृथम वृताकार में सिंहासन पर कूर्म अवतार धारण किए श्री विष्णु चतुर्भुजी रूप में है, वहीं सिंहासन के दायीं ओर कूर्म को

अंकित किया है। बांयीं ओर चंवर को उकेरा है। मध्यभाग में दर्शित गोलाकार के मध्य चार भुजाधारी विष्णु क़र्म स्वरूप में देखे जा सकते हैं जो अपने हाथ में शंख, चक्र, गदा व दम पकड़े हुए हैं तीसरा अन्य वृत जिसमें आलेखनों के मध्य दो कर्म दर्शाये गये हैं इसका संबंध संख्या दो से। प्रथम मत्स्य में एक मत्स्य चित्रित थी जिसे संख्या 1 से संबंधित माना गया है। कूर्मवतार के एक चित्र में समुद्र मंथन की घटना का चित्रण है (चि.सं. 093) लम्बवत पट्टिकायुक्त पट के ऊपर मध्य भाग में मंदराचल पर्वत स्थित है। जिसके चारों और पीतरंग का शेषनाग लिपटा हुआ हैं। मेरूपर्वत के उच्च भाग में पद्मपुष्प पर लक्ष्मीजी विराजमान हैं जो रक्तिम वस्त्रों को धारण किए है तथा वस्त्रालकारों से सुशोभित है। चित्र के दाहिनी ओर फन की तरफ असुरो को दर्शाता गया है, जो विविध रंग के वर्णयुक्त हैं, जिनका मुख भी अलग रूप में दर्शित है, कोई सींगधारी है, किसी की नसिका वृहदकार है, किसी ने मुकुट धारण किया, तो कोई बिना मुकुट में अंकित है। मूंछधारी दैत्यों ने प्रायः अलग–अलग रंगों के वस्त्रों को धारण कर रखा है। वे प्राय गुलाबी, नीले, लाल, नारंगी वह हल्के रंग में प्रदर्शित है। चित्र के बायें भाग में पूछ की ओर सर्वप्रथम नील वर्णीय विष्णु चर्तुभुजधारी हैं, जो शंख, चक्र धारण किए हैं व आगे के दोनों हाथों से शेषनाग को पकड़े हुए हैं। मुकुट व आभूषणों से सुशोभित श्री हरि जो नारंगी व पीत रंग के अधोवस्त्रों को पहने हुए तथा मेरू पर के उच्च भाग पर आसीन लक्ष्मी जी की ओर देखते हुए चित्रित हैं। विष्णु के बाद ब्रह्मा शिव व अन्य देवता भी पूंछ पकड़े हुए हैं, जो विविध रंगों के वस्त्रों से सुशोभित हैं, एवं अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित हैं। देवतागण व शिव तथा ब्रह्मा अपने प्रचलित प्रतीक चिन्हों के साथ हैं यहां शिव गौर वर्णीय हैं तो ब्रह्मा पीत वर्णीय।

पृष्ठ भाग में ऊपर की ओर समुद्र मंथन से निकली विभिन्न वस्तुओं का अंकन है जिसमें लक्ष्मी के दांयीं ओर ऐरावत हस्ति श्वेत रूप लिये है तथा नारी मुख वाली कामधेनु गाय तथा सूर्य का अंकन है, सभी बादलों के मध्य चित्रांकित है।

दाहिनी ओर अमृतकलश, पारिजात वृक्ष जो पुष्प पत्र सदृश है। उच्चैश्रवा अश्व जिसकी पीठ पर पंख निर्मित हैं तथा अंत में सूर्य का विशाल अंकन है ये भी श्वेत रंग के मेधों के मध्य दर्शाये गये हैं। चित्र की पृष्ठभूमि में उच्च भाग में लघु एवं वृहत बादलों को वर्तुलाकार रूप में उकेरा है, तो निम्न भाग में गहरे नीले रंग से विशाल सागर का अंकन है, चित्र में ऊपरी भाग की पृष्ठभूमि हल्के भूरे रंग से पूरित है, चित्र में चारों ओर हल्के रंग की धरा पर श्वेत बिंदियों से निर्मित आलेखनयुक्त हाशिया है।

इसी प्रकार वराह अवतार का चित्र भी ताड़ पत्र पर चित्रांकित है। इस चित्र में (चि.सं. 091) पूर्व वर्णित, अन्य पूर्व वर्णित अन्य अवतारों में समान शरीर वाले श्री हरि का मुख शूकर का है, तो शरीर मानव का दर्शाया गया है। चारों भुजाओं में आयुध एवं प्रतीक चिन्ह शोभायमान है, वहीं वराह ने नारी आकृति लिए पृथ्वी को दन्तों पर न उठाकर अपने हाथ पर बैठाया हुआ है। श्री विष्णु जो चिकतेदार अधोवस्त्र पहने हैं व मुकुटधारी हैं, कटि में बंधा हुआ दुपट्टा या पटके का अंकन अन्य चित्रों के सदृश्य है। चित्र में निर्मित हाशिये का अंकन अलंकृत है।

पट पर बने चित्र में (चि.सं. 090) पूर्व वर्णित पृष्ठभूमि वाले पट पर वृताकार के मध्य श्याम वर्णीय वराह का अंकन किया गया है। चारभुजाओं से

शोभायित स्वर्ण मुकुटधारी, श्री हरि का हस्तमुद्रा अंकन अलग रूप लिए है, जो उसे कलात्मक स्वरूप प्रदान करता है अपने दन्तों पर पृथ्वी उठाए अंकन अन्य चित्रों की अपेक्षाकृत अत्यधिक सूक्ष्म है। लम्बी माला धारण किए विष्णु आलंकारिक वस्त्राभूषणों, अधोवस्त्रों में दर्शित हैं। निम्न भाग पर अर्धवृताकार रूप में पृथ्वी चित्रित है, तो उच्च भाग की पृष्ठभूमि में लघु पुष्प पत्रों का अंकन है।

इसी श्रृंखला में वराह अवतार के उल्लेखित चित्र में (चि.सं.094) को श्याम वर्ण में अंकित है, जो लाल रंग के अधोवस्त्र एवं पीताम्बर धारण किए है तथा अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हुए है। इसमें भी पृथ्वी का लघु रूप चित्रांकित है।

ताश पत्र पर (चि.सं.92) वराह अवतार का चित्रण भी पूर्व में वर्णित चित्रानुसार है, इसमें भी वृताकार तीन अलग–अलग भागों में विभक्त है जिसमें प्रथम वृत में सिंहासन पर आसीन विष्णु वराह रूप लिए है तो मध्य में चित्रित वृत में विष्णु के वराह अवतार का अंकन है, जो अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाए हुए है। तीसरे वृत में अर्ध वृत में चित्रित आलेखन के ऊपरी भाग में तीन की संख्या को प्रदर्शित करते तीन शंखों का चित्रण किया गया है।

इस प्रकार उड़ीसा में श्री हरि के दशावतारों को कहीं अलग–अलग क्रमानुसार चित्रित किया है, तो कहीं वृत में दशावतारों को एक साथ दर्शाया है। कहीं पर लम्बवत पट्टिका में विष्णु के दशावतारों का अत्यंत सुन्दर कलात्मक आलेखनों कोमल रेखाओं व चटक व हल्के रंगों के संयोजन से चित्र को आलंकारिक सौन्दर्य प्रदान किया गया है। (चि.सं. 095–096)

13. गोआ

समुद्र के किनारे बसे गोआ में हिन्दू धार्मिक चित्रों का उल्लेख मिलता है। यहां के चितेरों ने विष्णु के दशावतारों को प्रथक–प्रथक किन्तु श्रंखलाबद्ध रूप में चित्रांकन किया है। इन चित्रों में मत्स्य, कूर्म, तथा वराह अवतारधारी श्री हरि के मुकुट ही नहीं अपितु उनके मुख के पृष्ठ भाग में चित्रित आभा मण्डल कहीं गोलाकार तो, कहीं अण्डाकार, तो कहीं अर्धवृत्ताकार रूप में चित्रित हैं। कटि प्रदेश में बंधा हुआ कटिबन्ध एवं यज्ञोपवीत इन चित्रों की विशेषता है। अतः गोवा की चित्रकला में यज्ञ वराह को मानवीय स्वरूप प्रदान कर उसे शासक का रूप प्रदान किया गया है। अतः गोवा की चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह के चित्रों का वर्णन क्रमानुसार है।

मत्स्य अवतार लिए श्री हरि के एक चित्र (चि.सं. 097) में विष्णु के शरीर का ऊपरी भाग मानवीय रूप में है, तो निम्न भाग मत्स्याकार लिए हुए है। शीश पर धारित मुकुट है तथा पर शंख चक्र से पूरित पृष्ठ भुजाऐं तथा अग्र भुजाऐं आशीर्वाद देते हुए चित्रांकित हैं। गले में लम्बवत आकार की, दोनों छोरों से मुक्त पुष्प माला अंकित है। मस्तक के पृष्ठ में चित्रित आभा मण्डल अलंकारिक रूप में दृष्टव्य है वहीं निम्न भाग में चित्रित मत्स्य का ऊपरी भाग काली रेखाओं द्वारा तरंगाकार लिए हुए है।

मत्स्य अवतार के एक रंगीन चित्र में (चि.सं.100) मत्स्य मुख से विकसित स्वर्णिम मुकुटधारी चतुर्भुजी श्री हरि दैव अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित

है, गौर वर्णीय हरि के शरीर को अपेक्षाकृत अधिक पतला व लम्बा अंकित किया है। गौर रूप में दर्शित मत्स्य के अलंकरण हेतु नीले रंग का प्रयोग किया गया है। चित्र में पृष्ठभूमि का अंकन नहीं है।

गोआ की चित्रकला में चित्रित कूर्मावतार के एक चित्र (चि.सं.098) में गोलमुखाकृति वाले मुकुट, आभूषण एवं शंख, चक्रधारी श्री भगवान को सुम्मुख मुद्रा में चित्रित्र किया गया है। जिनके शरीर का निम्न भाग चित्तेदार है, जो कच्छप के सदृश है। कच्छप के निम्न भाग एवं दोनों चरणों के नीचे अण्डाकार आसन है। इसके अतिरिक्त चित्र में घुंघराले केश, कंठ मालाओं, कुण्डलों, कटीबंध यज्ञोपवीत आदि का सुन्दर चित्रांकन है। यह चित्र पूर्व में वर्णित मत्स्य के चित्र से साम्य रखता है।

कूर्म अवतार के एक अन्य चित्र में (चि.सं. 106) लम्बे मुख वाले श्री हरि ने पतला लम्बा अलंकृत रत्न जड़ित स्वर्णिम मुकुट धारण किया है। इनके कान के कुण्डल गोलाक़ार हैं एवं पृष्ठ की दो भुजाओं में भी दण्डक के ऊपर गोलाकार आकार का चित्रण है। आगे के दोनों हाथ आशीष प्रदान करने में व्यस्थ हैं यह मत्स्य तथा वराह की अपेक्षा आकार में चौड़ा तथा छोटा है। पीले रंग का उत्तरी वस्त्र धारण किये श्री विष्णु के शरीर का निम्न भाग कच्छप का है। जिसके आकर्षण बनाने हेतु इसमें नीली तथा पीली कांती उत्पन्न करनें का प्रयास किया गया है। गौरवर्णीय कच्छप के ऊपरी भाग अथवा कूर्म अवतार के मध्य भाग पर हल्के रंग की पृष्ठ भूमि पर काले गहरे रंग से चित्रित नेत्र शोभा पा रहे हैं।

गोवा की चित्रकला में वराह अवतार (चि.सं.099) पार्श्व मुद्रा में अंकित

हैं जिन्होंने अपनी ढूड़ं पर दन्तों की सहायता से पृथ्वी को सन्तुलित किया है। वसुन्धरा के चित्रांकन मे चित्रकार ने भारत वर्ष के मानचित्र को भी धरती के मध्य भाग मोटा तथा अन्य भाग क्रमशः पतला होते हुए चित्राया गया है। जिनके किनारों पर गोलाकृति बनाते हुए पुष्पगुच्छ अंकित हैं। वराह का यज्ञोपवीत स्वतंत्र रूप से चित्रित किया गया है। जबकि मत्स्य, कूर्म के चित्रांकन में जनेऊ के बंधन के अन्तर्गत चित्रित किया गया था। वराह का आभा मण्डल उनके एक चश्म शूकर मुख के अनुरूप चित्रित किया गया है एवं श्री वराह के वस्त्र आभूषणों का चित्रांकन विष्णु के दैवीय स्वरूप के अनुरूप ही किया गया है।

वराह अवतार के एक अन्य चित्र (चि.स. 109) में लम्बे मुखाकृति वाले सूअर मुख के ऊपर स्वर्णिम मुकुट शोभा पा रहा है जिनके छोटे–छोटे दो दन्त हैं और उन्होंने कानों में कुण्डल, हाथों में आयुद्ध, कंठ में कंठ मालाऐं, भुजाओं में बाजूबंद एवं स्वर्ण की पायलें पहने हुई हैं। यहां एक छोटे बालक के रूप में वराह का अंकन है। चित्रकार द्वारा "वराह का एक छोटे बालक के रूप में प्रकट होने वाले" प्रसंग की ओर संकेत करता है। सम्भवतः वराह के विशाल रूप से पूर्व की कल्पना ने ही चित्रकार को प्रेरित किया है। पीताम्बरा धारी वराह का अधोवस्त्र मध्य से लटकता हुआ। वस्त्र धरातल को स्पर्श करताहुआ चित्रित है एवं उत्तरी पीताम्बर स्वछन्द रूप से वराह के दायीं एवं बायीं ओर अंकित है।

14 कर्नाटक

भारतीय चित्रकला में अनुपम उदाहरण तंजौर शैली में परिलक्षित हैं। मैसूर व तंजौर शैली की अपनी अलग पहचान है। यहां पर प्राप्त चित्रों की विषय

शैली में कृष्ण सम्बन्धी. चित्रों की भरमार है। इसके अतिरिक्त विष्णु के अवतार सम्बन्धी चित्र भी हमें प्राप्त होते हैं।

मैसूर हिन्दू राज्य होने से यहां के तत्कालीन शासक राजा कृष्णराम जी ने चित्रकारों को आश्रय दिया।[33] तंजौर शैली के चित्रकार स्थानीय न होकर सम्भवतः राजस्थान से आये थे। चित्रकारों ने राजस्थान में राजकीय आश्रय प्राप्त न होने के कारण अथवा राजस्थानी क्षेत्रों में राजनैतिक उथल–पुथल होने के कारण सुदूर दक्षिणी राज्यों की शरण ली।[34] यहां पर हस्तिदन्त एवं काष्ठफलक पर निर्मित शबीह चित्र उत्तम कोटि के माने गये। 1868 में राजा कृष्णराव के निधन के साथ ही यह शैली निम्नता को प्राप्त हुई।[35]

मैसूर एवं तंजौर शैली में बने एक पट चित्र को विविध लघु एवं वृहत भागों में विभाजित किया है जिनमें से एक लम्बवत् आकार की पट्टिका में विष्णु के दशावतारों का क्रमबद्ध उल्लेख है।

विशाल आकार लिए एक विस्तृत चित्र (चि.सं. 101) जो विविध लघ्ज्ञु एवं वृहद भागों में विभक्त है। इसमें निम्न से ऊपर की ओर तीसरे लम्बवत खण्ड को दस भागों में विभाजित किया है जिसमें मध्य वर्गाकार खण्ड में कृष्ण व उनकी पत्नी संभवतः सत्यभामा एवं रूकमणि का चित्रण है दाहिनी ओर पांच अवतारों का चित्रण है तो बांयीं ओर अन्य पांचों अवतारों को अंकित किया है। 19वीं शती में मध्य में बने इस चित्र को आठ भागों में बांटा गया है जिसके उच्च भाग से छटवें खण्ड अथवा निम्न भाग से तृतीय खण्ड के मध्य में कृष्ण सत्यभामा व रुकमणि के साथ अंकित हैं। चित्र में नीले, लाल, हरित, श्वेत पीत व स्वर्ण रंगों की विभिन्न आभाओं का प्रयोग दर्शनीय है।[36]

श्री हरि आसन पर विराजमान हैं। प्रायः मत्स्य मुख से विकसित विष्णु सम्मुख अवस्था में है जो अलंकृत वस्त्राभूषणों व अपने प्रचलित प्रतीकों के साथ शोभायमान है। द्वितीय खण्ड में कूर्म अवतार धारण किए श्री हरि आसनासीन हैं जिनका निम्न भाग कच्छप रूप में तो उच्च भाग मानवीय रूप लिए आलंकारिक आभूषणों एवं वस्त्रायुधों के साथ प्रदर्शित है। उनके चारों भुजाओं में प्रतीक चिन्ह शोभायमान है।

वहीं तृतीय खण्ड वराह मुख धारण किए विष्णु भगवान पार्श्व मुद्रा में विराजित हैं, जो अपने दन्तों पर धरा को उठाए हुए हैं। प्रथम भाग में हस्तों में शंख, चक्र अंकित हैं तो अग्र भाग की भुजाऐं आर्शीवाद मुद्रा में है। वस्त्रालकारों व अलंकृत आभूषणों से सुशोभित वराह भगवान आसन पर खड़े हैं इसी प्रकार विष्णु के अन्य अवतारों का क्रमबद्ध चित्रण प्रदर्शित है।

श्री हरि के तीनों अवतारों में शारीरिक माप एवं वर्ण समानता लिए है। मस्तक पर चन्दन तिलक भी इन चित्रों में दर्शित है।

इस प्रकार दर्शित पट चित्र में विष्णु की लीलाओं के अतिरिक्त अन्य दैवीय स्वरूपों का अंकन विभिन्न खण्डों में अंकित है।

तंजौर शैली के एक चित्र में (चि.सं. 102), जो विशाल स्वरूप लिए दर्शित है यह भी लघु एवं वृहत तथा समान, असमान खण्डों में चित्रित है। इसमें भी श्री हरि की लीलाओं के अतिरिक्त अन्य दैवीय स्वरूपों, प्रतीक चिन्ह तथा ध्वज का अंकन है।

ऊपर से तीसरे भाग की लम्बवत पट्टिका में श्री हरि के अवतारों का वर्णन क्रमानुसार किया गया है। इसमें दशवतारों का चित्रण दर्शनीय है।

दस खण्डों में विभक्त इन चित्रों में मत्स्य, कूर्म वराह के अतिरिक्त नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण तथा ह्यग्रीव का चित्रांकन है। लम्बाकार पट्टिका के प्रथम खण्ड में आसन पर शोभायमान मत्स्यधारी विष्णु चतुर्भुजी है जो हाथों में शंख, चक्र गदा आदि धारण किए है। मुकुट एवं सुन्दर अलंकृत वस्त्राभूषण पहने श्री विष्णु के वस्त्रों को द्वि रेखाओं द्वारा दर्शाया गया है।

द्वितीय खण्ड में कूर्म अवतार धारण किए विष्णु का ऊपरी भाग मानवीय रूप लिए है, वहीं निम्न भाग में कच्छप का अंकन है। इसमें भी सुन्दर आभूषणों व वस्त्रों तथा मुकुट पहने श्री विष्णु आसन पर खड़े हुए हैं।

तृतीय खण्ड में पार्श्व मुद्रा में वराह हरि चौकी पर विराजमान हैं। मुकुट पहने तथा आलंकारिक रूप लिए वस्त्र एवं आभूषण जगदीश्वर के शरीर पर देखे जा सकते हैं। हाथों में प्रतीक चिन्ह शोभा पा रहे हैं। 10वीं शती के प्रारम्भ में बने तंजौर शैली के इन चित्रों में नीले, लाल, हरे, सफेद, पीले और सुनहरे वर्णो की विभिन्न आभाओं का प्रयोग किया गया है।

15 आन्ध्रप्रदेश

आन्ध्र प्रदेश की कला में भी चित्रों के विषय विविध हैं, जिनमें धार्मिक चित्रों को भी स्थान दिया गया है। इसमें श्री हरि के अवतार चित्रों का भी उल्लेखनीय वर्णन है।

अतः आन्ध्रप्रदेश की कला में लोकचित्र शैली में प्राप्त इस चित्र (चि.सं. 103) में कूर्मावतार का चित्रण है। इसमें श्री विष्णु के कूर्म अवतार से जुड़ी घटना को चित्रांकित किया है। हल्के भूरे रंग की पृष्ठभूमि में सम्पूर्ण कथानक दो भागों में विभक्त है ऊपरी भाग में समुद्र मंथन का दृश्य है तो निम्न भाग में मोहिनी अवतार से जुड़ी घटना को चित्रित किया है।

कूर्मावतार से जुड़ी कथा के अनुसार जब श्री हरि ने कूर्म स्वरूप धारण किया तो उस समय की घटना का दृश्य अंकित है। ऊपरी भाग में मध्य में चित्रित मंदराचल जो गहरे नीले रंग से पूरित है, इसके उच्च भाग मुकलित पद्म पुष्प पीले व गुलाबी रंग में दर्शित है। श्वेत रंग में वर्णित शेष नाग जिसका फन बांयीं ओर है एवं पूछ दायीं ओर अंकित है, त्रिमुखी शेषनाग का चित्रण सम्मुख मुद्रा में है। फन को पकड़े तीन असुर जो मानवीय स्वरूप लिए है, जिनका ऊपरी भाग वस्त्र विहीन है। वहीं निम्न भाग में अधोवस्त्र हरे, कत्थई व गुलाबी रंग से परिपूर्ण हैं। वहीं दाहिनी ओर खड़े हुए देवतागण जो स्वर्ण मुकुटधारी हैं विविध आलांकारिक स्वर्णिम आभूषणों से सुसज्जित देवगणों ने उत्तरीय वस्त्र एवं अधोवस्त्र पहना हुआ है जो विभिन्न रंगों से प्रदर्शित है। नील वर्णीय मेरू पर्वत के निम्न भाग में हल्के भूरे रंग से कच्छप को अंकित किया है वही समुद्र मंथन से प्राप्त पारिजात वृक्ष, उच्चैश्रवा अश्व के अतिरिक्त पीतरंग में सूर्य व श्वेत रंग से चन्द्रमा का अंकन है।

निम्न भाग के मध्य में विष्णु के मोहिनी स्वरूप लिए नारी का अंकन हो जो अपने हाथों में स्वर्ण अमृत कलश से देवताओं को अमृत पिलाते हुए अंकित है।

रक्तिम एवं नील वर्ण के संयोजन वाले वस्त्रों को पहने मुकुटधारी विष्णु

(मोहिनी) का वर्ण गौर है। वहीं देवता भी गौर वर्ण रूप लिए हैं स्वर्ण मुकुट धारी देवता व ब्रह्मा गहरे चटक रंगों वाले वस्त्रों को धारण किये है। वहीं दाहिनी और हाथ जोड़े सम्भवतः दैत्यगण मानवीय वैशभूषा धारण किये है जिनके अधोवस्त्र भी गहरे नीले, कत्थई, व हरे रंगों से पूरित है। पृष्ठ भाग में लघु एवं वृहत पुष्प पत्रों का अंकन किया गया है।

16. तमिलनाडू
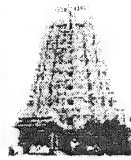
श्री विष्णु के अवतार चित्र हमें तमिलनाडु में भी प्राप्त होते हैं। इसमें विष्णु को बालाजी स्वरूप प्रदान किया गया है।

तमिलनाडु के एक चित्र (चि.सं. 104) के मध्य में तिरूपति बालाजी का अत्यंत सुन्दर चित्रांकन है इसके ऊपरी भाग में विष्णु के प्रतीक चिन्हों क्रमशः चक्र, पद्म व शंक का अंकन है। वहीं निम्न भाग के एक खण्ड में विष्णु का चित्र है, तो दूसरे खण्ड में विष्णु लक्ष्मी को एक साथ दर्शाया गया है। जगदीश्वर के दशावतारों को दायीं एवं बायीं और पांच–पांच समान वृताकारों के मध्य अंकित किया गया है।

बांयीं और नीचे से ऊपर के क्रम में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार का चित्रण दर्शनीय है।

प्रथम वृत में श्री हरि विष्णु के पृष्ठ में मत्स्य का पूर्ण चित्रण किया गया है वहीं द्वितीय वृत में कूर्मावतार का अंकन है अग्र भाग में श्री विष्णु दर्शाये गये हैं।

तृतीय खण्डं में वराह अवतार धारण किये हुए श्री विष्णु अंकित हैं जो अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हैं पृष्ठ में सागर दर्शनीय है।

17 इन्टरनेट से प्राप्त विष्णु के अवतार चित्र
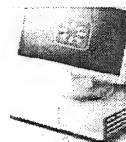
परम्परागत भारतीय शैलियों के अन्तर्गत मत्स्य कूर्म व वराह अवतार का चित्रण प्रचुर मात्रा में हुआ है। और आज भी चित्रकारों ने इस धार्मिक सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। धार्मिक चित्रों के प्रति उनकी रूचि पूर्व में भी देखाई देती थी जो, आज तक विद्यमान है। आधुनिक चित्रकारों द्वारा निर्मित धार्मिक चित्र केवल केनवास, कागज पुस्तकों व भवनों की भित्तियों पर ही नहीं देखे जा सकते हैं, वरन् आधुनिक संचार माध्यमों में भी धार्मिक अवतार चित्रों का दर्शन होता है, जो हमें टी.वी. इन्टरनेट, आदि पर भी उपलब्ध है।

आधुनिक शैली में वॉश चित्रण विधि[37] से बने हरीश जौहरी के अवतार चित्र सर्वोत्कृष्ट हैं जिनका वर्णन निम्नानुसार है।

मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं. 105) में मत्स्यमुख से विकसित नील व हरित रंग के समायोजन से दर्शित इस चित्र में विष्णु का चतुर्भुजी अंकन है दर्शित मत्स्य मुख का ऊपरी भाग व निम्न भाग पीत व नारंगी रंग के समायोजन से पूरित है वहीं मध्य भाग में नीला रंग है जिस पर हल्के नीले रंग की शल्ख का अंकन अत्यंत सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। सागर में उठती लहरों को भी वर्तालुकार व गोलाकार स्वरूप प्रदान कर नील रंग की विभिन्न आभाओं का प्रयोग

देखने को मिलता है। श्री विष्णु के मस्तक पर पीत चन्दन लगाए हुए एवं अपने शरीर पर विभिन्न अलंकृत आभूषणों व स्वर्ण मुकुट को धारण किए हैं तथा जिनके हाथों में क्रमशः गदा, चक्र, शंख, पदम शोभायमान है। पृष्ठ भाग में चित्रित आभामण्डल हल्के गुलाबी व गहरे गुलाबी रंग से पूरित है पीताम्बर पहने उत्तरीय अधोवस्त्र का भी लहरदार अंकन है।

कूर्म अवतार के एक चित्र (चि.सं. 106) में श्री विष्णु को श्याम वर्ण में अंकित किया गया है। इसमें चतुर्भुजी विष्णु हाथों में उत्तरीय वस्त्र को लपेटे हुए हैं वहीं विभिन्न अलंकरणों व स्वर्णिम मुकुट से सुसज्जित शंख, चक्र, गदा, पद्म से सुशोभित श्री विष्णु के मस्तक पर पीत चन्दन व लाल तिलक शोभित है। मस्तक के पृष्ठभाग में आभा मण्डल भी प्रकाशित हैं।

कूर्म का अत्यंत सुन्दर व यर्थाथवादी चित्रण किया गया है जिसके चार पैर सुशोभित तथा सरोवर में खड़े हुए कूर्म के चारों ओर, लहरों का वृताकार अंकन है। वृत्ताकार चारों ओर सामने से पीछे की ओर क्रमशः वृहत से लघु आकार के कूर्म का चित्रण हरित वर्णीय है। कूर्म की खाल पर चित्रित वृत हरे व कत्थई रंग से पूरित है।

पृष्ठभाग दो भागों में विभाजित है निम्न भाग में दर्शित सागर को गहरे नीले व स्लेटी रंग की आभाओं में दर्शाया गया है वहीं ऊपरी भाग में पीत व नारंगी रंग युक्त आभामण्डल चित्र के अर्ध भाग को घेरता हुआ दृष्टव्य है।

वराह अवतार के एक चित्र में (चि.सं. 107) नील वर्णीय श्री हरि वर्तुलाकार सागर की लहरों के मध्य खड़े हुए अंकित है। वराह का एक पैर लहरों पर अंकित है, तो दूसरा चरण आधा उठा हुआ है। सम्पूर्ण चित्र की रेखाऐं लयात्मक तत्वों से पूरित हैं। चारभुजाधारी कमल नयन विष्णु जिनके हाथों में गदा, चक्र, पद्म व शंख शोभायमान है तथा पीत व रक्त वार्णीय अधोवस्त्र धारण किए हुए है। जिनको नारंगी व पीत रंग का उत्तरीय अधोवस्त्र अथवा दुपट्टा लहराते हुए दिखाया गया है। स्वर्ण मुकुट शीश पर पहने हुए तथा अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाए श्री हरि वराह दर्शित हैं। पृथ्वी भी हरित व पीत रंग से पूरित है वहीं आभामण्डल श्वेत वर्णीय है। वर्तुलाकार लहरों के मध्य दर्शित मत्स्य का अत्यंत सुन्दर कोमलांकन लाल व पीले रंग द्वारा किया गया है। चित्र की ऊपरी पृष्ठभूमि में हल्के लाल रंग का दर्शन है।

भारतीय चित्रकला में अन्य विषयों के साथ–साथ हिन्दू धर्म के अवतार चित्रों का बाहुल्य है। सम्पूर्ण भारत के प्रत्येक प्रदेश में अवतार चित्रों का अंकन चित्रों, पोथीचित्रों, कपड़े, ताड पत्र के अतिरिक्त जनोपयोगी वस्तुओं एवं ताश पत्रों पर मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के अतिरिक्त अन्य अवतारों के चित्र सर्वोत्कृष्ट रूप लिए हैं।

भारतीय चित्रकला में अवतार चित्र सर्वप्रथम पोथी चित्रों में दृष्टव्य होते हैं जो आगे कागजों, भित्तियों में कहीं पारम्परिक शैली में तो कहीं आधुनिक शैली एवं लोकशैली में परिलक्षित हैं।

सन्दर्भ

1. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन" प्रथम संस्करण 1988, पृ.सं. 61

2. गौरिला वाचस्पति "भारतीय चित्रकला" चोखम्बा सांस्कृतिक प्रतिष्ठान, दिल्ली 1990, पृ.सं. 240

3. सिंह कवल जीत "वाल पेन्टिंग ऑफ पंजाब एण्ड हरियाणा" आत्मराय एण्ड सन्स प्रकाशन दिल्ली, लखनऊ, चित्र सन्दर्भ से।

4. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन", प्रथम संस्करण, 1988, पृ.सं. 59

5. द्विवेदी प्रेम शंकर "राजस्थानी चित्रकला" कला प्रकाशन, वाराणासी 2002, पृ.सं. 11

6. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन" प्रथम संस्करण 1988, पृ. 62

7. तदैव

8. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – पश्चिमी भारतीय लघु चित्रों में" कला प्रकाशन वाराणासी, 1988

9. चहल आई.एम. "ओरछा के भित्ति चित्र" पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्राहलय, मध्यप्रदेश, भोपाल, सम्पादकीय में से

10. झा लक्ष्मीनाथ "मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला" मित्रनाथ झा प्रकाशन, ग्राम सरिसब विहार, पृ.सं. 177–181

11. तारकनाथ बड़ेरिया "बडेरिया "भारतीय चित्रकला का इतिहास" नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 17

. The hare krmas -Trancendental art gallery-Dasavatara gallery II-Mica painting.htm.

12. ठाकुर उपेन्द्र "मधुबनी पेन्टिंगस" शक्ति मलिक, अभिनव प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.सं. 129

13. वेक्आड येव्स "द आर्ट आफ मिथिला" सेरीमोनियल पेन्टिंग फ्राम एन. एनसिएन्ट किंगडम" थामस एण्ड हुडसन, लण्डन।

14. ठाकुर उपेन्द्र "मधुबनी पेन्टिंग" अभिनव प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 129

15. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द पूर्वी भारतीय लघु चित्रों में" कला प्रकाशन, वाराणासी, पृ.सं. 89 चित्र 21

16. एडवर्ट ग्प्रर्ट "हिस्ट्री ऑफ असम", 1973 ई.

17. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द" कलाप्रकाशन, वाराणासी, पृ.सं. 53

18. डॉ. सक्सेना एस.एन. "भारतीय चित्रकला" मनोरमा प्रकाशन, पृ.सं. 41

19. चतुर्वेदी गोपालमघुकर "भारतीय चित्रकला – ऐतिहासिक संदर्भ" जागृति प्रकाशन, अगरा रोड़, अलीगढ़, 1982, पृ.सं. 88

20. मजुमदार एन.आर. "जनरल आफ द यूनिवर्सिटी, बाम्बे", 1980, पृ.सं. 131

21. द्विवेदी प्रेमशंकर "पश्चिमी भारतीय चित्रों में गीतगोविन्द" कला प्रकाशन वाराणासी, पृ.सं. 22

22. वात्सायन कपिला "जवर गीत गोविन्द" राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली एवं The Sampradaya Sun - independent vaisnava news - feature stories - Nov. 2005-177 htm.

23. क्षत्रिय शुकदेव "बंगाल शैली और उसके प्रमुख चित्रकार" चित्रायन प्रकाशन मुजफ्फर नगर, पृ.सं.15

24. वाचस्पति गौरोला "भारतीय चित्रकला" दिल्ली, 1990 पृ.सं. 132

25. दत्त सरोज जीत "फोक पेन्टिंग ऑफ बंगाल" खामा प्रकाशन नई दिल्ली पृ.सं.16

26. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द" कला प्रकाशन वाराणासी 1988, पृ.सं. 56

27. चोहान सिंह सुरेन्द्र, "भारतीय चित्रकला" राहुल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1994, पृ.सं. 23

28. चित्ररंजन "श्री संत शुभराम कलाकृति संग्रह" महाराष्ट्र राज्य साहित्य, पृ.सं. 0–14

29. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन" वाराणासी 1988, पृ.सं. 57

30. मेहन्ती बी. "पाटा पेन्टिंग्स ऑफ उडीसा" सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ.सं. 9

31. पाठे. दीनानाथ, पाण्डे, भगवान, रथ विजय कुमार जयदेव और गीत गोविन्द – उड़ीसा के विशेष संदर्भ में, हर्मन प्रकाशघर नई दिल्ली, पृ.सं.8

32. रोसी बरब्रा "फ्राम द ओसीन ऑफ पेन्टिंग्स" इण्डियाज पापुलर पेन्टिंग्स 1589 टू दी प्रिजेन्ट, आक्सफोर्ट यूनीवर्सिटी, न्यूयॉर्क, 1998 पृ.सं. 213, चित्र.सं. 96

33. चौहान सिंह सुरेन्द्र "भारतीय चित्रकला" राहुल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1994, पृ.सं. 33

34. तदैव

35. तदैव

36. व्यास चिन्तामनी एण्ड दलजीत "पेन्टिंग ऑफ तंजौर एण्ड मैसूर" गीता प्रकाशक झांसी, उ.प्र. 1988, चित्र संदर्भ में से

तृतीय अध्याय

मध्यकाल में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार का चित्रण

अपभ्रंश शैली

पालनपुर

भुज

अहमदाबाद

सूरत

बुन्देली शैली

मुरैना

भिंड

ग्वालियर

दतिया

गुना

ओरछा

सागर

पन्ना

जबलपुर
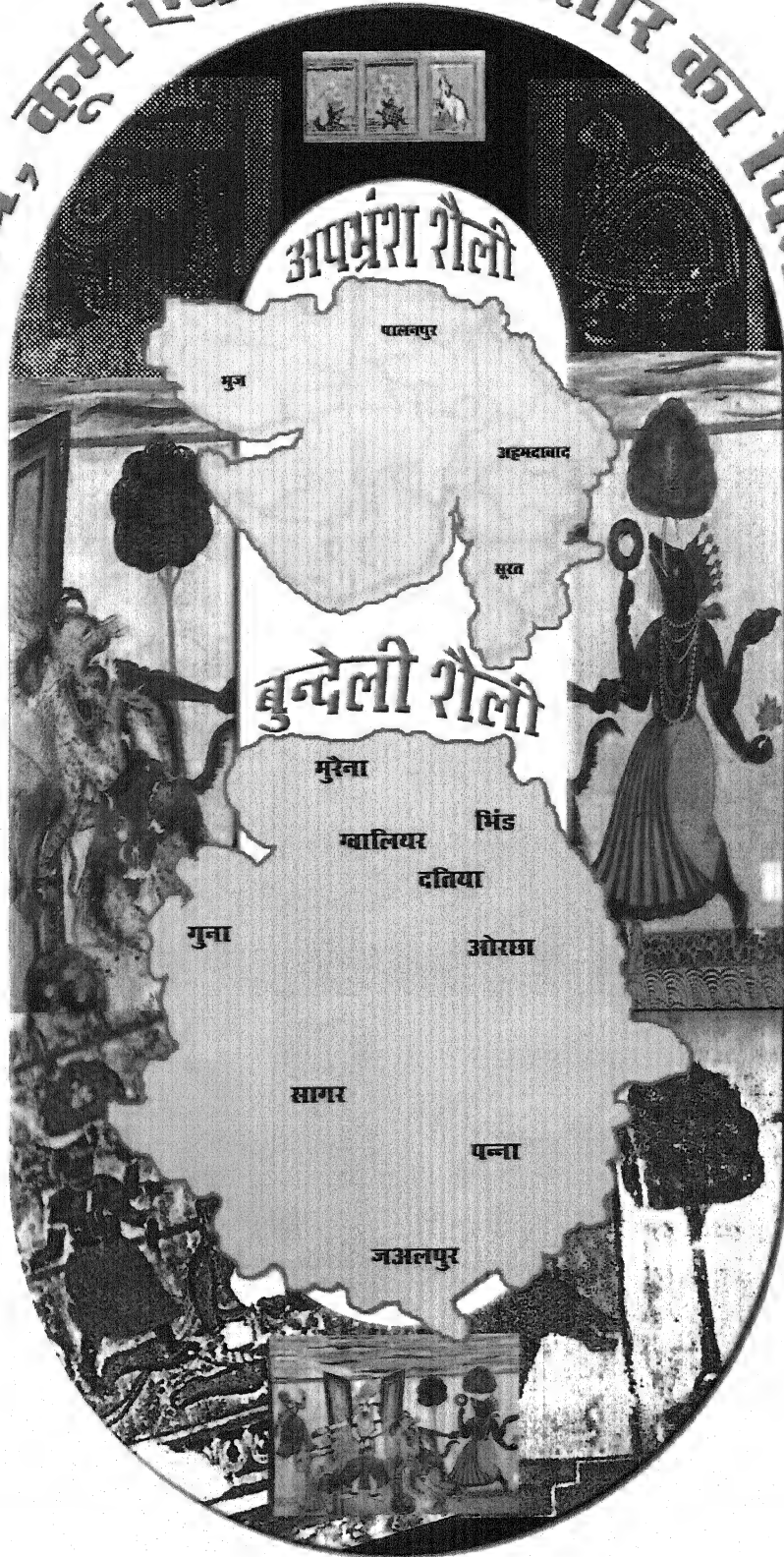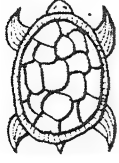
अध्याय – 3

मध्यकाल में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार का चित्रण –

भारतीय मध्यकाल में कला का उद्‌भव 8वीं सदी में माना गया है।[1] युग के प्रारम्भिक काल से ही विदेशी आक्रान्ताओं के कारण हिन्दू संस्कृति व जन जीवन का ह्रास होने लगा। ऐसी दशा में कला का पल्लवन भी नहीं हो पा रहा था क्योंकि धर्म में जीव जन्तु व मानवीय चित्रण करना वर्जित था, अतः यह कला चित्रालेखनों पुत्र पत्रों तक ही सीमित रह गई इस तरह शनैः शनैः चित्रकला का पतन होने लगा। अतः मध्यकाल की कला में अजन्ता चित्रों का सौन्दर्य नहीं था जो अजन्ता शैली की मुख्य विशेषता थी।

अतः अजन्ता एलोरा के भित्ति चित्रों का स्थान ताड़ पत्र में पोथी चित्रों ने एवं काष्ठ फलक, पट चित्रों ने ले लिया। यद्यपि इन पोथी चित्रों में अजन्ता शैली का ओज व माधुर्य नहीं था क्योंकि कला के क्षेत्र में आयी स्थिरता के कारण मूर्ति व चित्र शैली में जड़ता दिखाई देने लगी।

उत्तर मध्यकाल की चित्रकला का रूप अब पहले की अपेक्षा अधिक अलंकृत हो गया। कागज के प्रचलन ने पोथी चित्रों को बढ़ावा दिया।[2] पहले ताड़ पत्र, काष्ठ पट्टिका, कपड़े पर चित्र बनते थे। अब उत्तर मध्यकाल में कागज पर भी चित्र बनना शुरू हो गये। अतः इस युग की कला अपभ्रंश शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। अपभ्रंश शैली के भी विविध नाम हैं, परि. भारतीय शैली, गुजरात शैली

आदि।[3] जबकि आनन्द कुमार स्वामी ने इस शैली को परि. भारतीय शैली का नाम दिया।[4] सर्वप्रथम चित्रित पाण्डुलिपियां जैन शैली की ही थी, इसके उदाहरण ताड़ पत्र पर प्राप्त होते हैं। उल्लेखित पाण्डुलिपियों का चित्रांकन दो प्रकार से किया गया है। एक चित्र (चित्र संख्या 108–अ) से काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग की तुालिका द्वारा बड़े ही सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित ढंग से दशावतार सम्बन्धित विषय पर तिपि का चित्रांकन पटना जिले में देखने को मिलता है।

वहीं एक अन्य चित्र में (चित्र संख्या 108–ब) में पाण्डुलिपि को सफेद पृष्ठभूमि पर काले रंग द्वारा अंकित किया गया है।

अपभ्रंश शैली

भारतीय कला के इतिहास में गुजरात शैली, अपभ्रंश का नाम उल्लेखनीय है क्योंकि उनके द्वारा ही भारतीय चित्रकला का उज्जवल अतीत आलौकिक होता है। इस शैली का क्षेत्र विशाल था, सम्पूर्ण पश्चिमी भारत में इस शैली के चित्रों का अंकन किया गया। अपभ्रंश शैली पश्चिम भारत तक ही सीमित नहीं थी वरन् गुजरात मालवा, जौनपुर इसके प्रमुख गढ़ रहे हैं।[5]

ताड़ पत्रों, पट चित्रों के अतिरिक्त कागज पर बने चित्रों का अंकन बहुतायत से मिलता है। 1251 ई.पू. में इन पाण्डुलिपियों का चित्रांकन किया गया। इसमें पाण्डुलिपि को लिपिबद्ध किया गया।[6] 1237 ई. में रचित 'कामसूत्र' ताड़पत्र पर निर्मित सर्वप्रथम पाण्डुलिपि मानी गई है।[7] डॉ. राधा कृष्णन के अनुसार जैन हस्तलिखित चित्रों में सवांद चेहरे से आंख बाहर को निकली हुई तथा काजल की रेखा कानों तक खिंची हुई, नुकीली नाक, आम की गुठली जैसी दाढ़ी पतले होंठ,

गले में त्रिरेखाऐं कंधों तंक लहराते केश तथा रक्त, पीत व नील तथा सुनहरे रंग का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया है, जिससे यह नये स्वरूप में अलग शैली में परिलक्षित होती है जिसे अपभ्रंश व परि. भारतीय शैली कहते हैं। यद्यपि अपभ्रंश शैली के चित्रों की विषय वस्तु जैन पौथियों से सम्बन्धित है।

अपभ्रंश शैली में वैष्णव सम्प्रदाय के चित्र बने। जिसमें गीत गोविन्द की विभिन्न पोथियों का चित्रांकन किया गया जिसमें दशावतारों के चित्र भी दर्शनीय हैं। इसमें रेखाकंन की अपेक्षा रंग को अधिक महत्व दिया गया है।[8]

इस शैली के ताड़ पत्रीय चित्रों में 1060 ई. के चित्रित ताड़पत्रीय ग्रंथ 'औध नियुक्ति वृति' तथा 'निशीय चूर्णो' के चित्रों (1100 ई.) का उल्लेख मिलता है। कागज चित्रित अपभ्रंश शैली की सबसे सुन्दर प्रति 16वीं शती में निर्मित अहमदाबाद के कल्पसूत्र की है इसमें लिपि में काले रंग की जगह स्वर्णाक्षरों का उपयोग मिलता है।[9] 15वीं शती में अपभ्रंश शैली के चित्र हमें वैष्णव ग्रंथी 'गीत गोविन्द'. में मिलते हैं।

अपभ्रंश शैली का प्रिय विषय गीतगोविन्द भी रहा है। अपभ्रंश शैली में चित्रित भारत के विभिन्न कला संग्रहों से प्राप्त गीतगोविन्द के लघु चित्रों की सूची इस प्रकार है –

1 1456 ई. में गोगुन्दा से प्राप्त गीतगोविन्द की प्रति।

2. पावागढ़ के पंडित बाल शंकर भट्ट जी अग्निहोत्री के संग्रह में स्थित पोथी नं. 2

3. गुजरात के वर्नाकुलर, सोसायटी में स्थित गीतगोविन्द के पोथी नं.3

4. एन.सी. मेहता संग्रह अहमदाबाद में स्थित गीतगोविन्द की पोथी नं.4

5. बड़ौदा के बैठक मन्दिर केवड़ा बाग में स्थित गीतगोविन्द की पोथी नं6

6. सिटी पैलेस, जयपुर संग्रहालय स्थित अपभ्रंश परम्परा से युक्त, चित्रित गीतगोविन्द की पोथी नं.7[10]

गीतगोविन्द के अतिरिक्त अपभ्रंश चित्रकला के उदाहरण निम्न स्थान तथा निम्न काव्यों में परिलक्षित होते हैं –

उदयपुर में चित्रित (1422–23 ई.) सुपासनाह चरित्रम ग्रंथ, उत्तराध्ययन सूत्र (15वीं शती का प्रारम्भ), देवशानापाड़ा स्थित जैन ज्ञान भण्डार वाली कल्पसूत्र की प्रति (15वीं शती का उत्तरार्द्ध), कालकाचार्य कथा (प्रारम्भिक 16वीं शती), रतिरहस्य (75 चित्रों वाली)? अवधि काव्य और चन्दा (1525 ई.) भक्त मंगलकृत बालगोपाल स्तुति की प्रतियां (16वीं शती), राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली तथा भारत कला भवन, वाराणसी व एन.सी. मेहता संग्रह, अहमदाबाद में स्थित कल्पसूत्र की प्रतियां (16वीं शती) उल्लेखनीय है। कपड़े पर चित्रित (1451 ई.में) अहमदाबाद का वसंत विलास पट्ट उल्लेखनीय है। इन चित्रों में अजीब सजीवता है।[11] वसंत के अपभ्रंश शैली में बने विष्णु अवतार चित्रों का उल्लेख भी दृष्टव्य है। कतिपय विद्वानों के अनुसार यह कला जैन एवं पाल शैली का परिष्कृत (बिगड़ा) रूप है। यहां दर्शित पाण्डुलिपियों के अंकन में भी त्रुटियां देखने को मिलती हैं। आकृतियों का शारीरिक अनुपात सही नहीं है। नारी कद की आकृति जैन चित्रकारों ने ही

संभवतः हिन्दू धर्म के विष्णु अवतारों का चित्रण करने का प्रयास किया जिसमें कहीं पर उन्हें सफलता मिली। अपितु त्रुटिपूर्ण चित्रांकन देखने को मिला। इस पर थाल व जैन शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इस शैली के चित्रकारों ने अवतार से जुड़े विष्णु के स्वरूप को अवतार में प्रदर्शित कथानक के अनुरूप न बनाकर उसे नये रूप में प्रस्तुत किया है। उदाहरण के रूप में नरसिंह अवतार का एक चित्र (चित्र.सं–।।।) के इस चित्र में नरसिंह भगवान के सिंह के शीश स्थान पर गज का शीश अंकित है। पृष्ठ भाग की दोनों भुजाओं में गदा व चक्र का अंकन है वे अपनी दोनों अग्र भुजाओं के नखों द्वारा गोदी में लेटा हुआ हिरण्यकश्यप नामक राक्षस के प्राण लेने को तत्पर है। हाथ एवं पैरों की आकृतियों में ऐठन है। निम्न भाग में सिंह आकृति दर्शित है। समीप ही मानवीय आकृतियों का अंकन है, संभवतः प्रहलाद के साथ तीन नारियां प्रदर्शित हैं। चित्र के बांयीं ओर एक के बाद एक दो नारी आकृतिया खड़ी हुई दर्शित हैं। समीप ही एक बैठी हुई नारी के नीचे और संभवतः प्रहलाद को बैठे हुए दर्शाया गया है। निम्न भाग में खाली स्थान की पूर्ति हेतु लम्बवत् पट्िटा में पुष्पों का क्रमबद्ध अंकन है, वहीं चित्र के उच्च्य भाग में भी पुष्पों का चित्रण किया गया है।

इसी प्रकार का त्रुटिपूर्ण अंकन हमें परशुराम अवतार एवं वामन अवतार के चित्र में देखनों को मिलता है। इस चित्र में परशुराम के हस्त में परशु के स्थान पर त्रिशूल का अंकन किया गया है। वामन अवतार के चित्र में वामन भगवान को बालक रूप में न दर्शाकर राजा से भी बड़ा तथा सींगयुक्त अंकित किया है। राजा

व वामन भगवान के शीश के ऊपर विविध आकृतियों का अंकन तथा नारी के पैरों के जूते का अंकन देखकर चित्र पर मुगल शैली का प्रभाव दर्शित होता है।[12]

यद्यपि ग्वारहवीं शती से 15वीं सदी तक इन ग्रंथों में भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं का चित्रण न करके अन्य विषयों पर चित्रों का निर्माण किया गया। इन चित्रों में गीत गोविन्द काव्य के चित्र प्रमुख हैं। जयदेवकृत गीत गोविन्द में कृष्ण काव्य को उत्कृष्ट ग्रंथ माना गया है जो संभवतः 12वीं शती में निर्मित हुआ। जयदेव ने अपने काव्य कौशल से मानवीय पृष्ठभूमि में देवीय पात्रों का निर्देशन किया वह प्रशंसनीय है।[13]

गीत गोविन्द काव्य के आधार पर चित्रित श्री विष्णु के दशावतार से सम्बन्धित चित्रावली पूर्वी व पश्चिमी भारत में अत्यधिक मिलती है।[14] श्री हरि के दशावतार का चित्रण पोथियों में अधिक पाया गया है, जिनका उल्लेख इस प्रकार है –

1. पश्चिमी भारतीय लघु चित्रों में दशावतार
2. पूर्वीय भारतीय लघु चित्रों में दशावतार
3. पहाड़ी लघु चित्रों में दर्शित दशावतार
4. दक्षिण भारतीय एवं मुगल लघु चित्रों में वर्णित दशावतार

पश्चिम भारत में गीतगोविन्द की कागज पर निर्मित पोथियों में अपभ्रंश शैली के चित्रों में दशावतारों का उल्लेख है। पश्चिमी भारत में गीतगोविन्द से संबंधित दशावतार का प्रचलन 15वीं शती से मिलता है।[15]

यद्यपि गोगुन्दा गुजरात के वर्नाकुलर सोसायटी, एन.सी. मेहता संग्रह अहमदाबाद, काकरोली, राष्ट्रीय संग्रहलाय नई दिल्ली सिटी पैलेस जयपुर में गीत गोविन्द की पोथियां उपलब्ध हैं। पश्चिमी भारत में गीतगोविन्द की पोथी नं 2 में दशावतार का अत्यंत सुन्दर, भावात्मक चित्रण दर्शित है। पश्चिमी भारत से प्राप्त गीतगोविन्द की सचित्र पोथियों में से गोगुन्दा में 1456 ई. में प्राप्त पोथी नं.1 अधिक प्राचीन है, इस पोथी में पुस्तिका पृष्ठ है। यह पोथी महाराज कुम्भा के शासनकाल में निर्मित हुई।[16] पोथी के 13वें पत्र में दशावतारों का अंकन है, इस प्रकार एन.सी. मेहता के संग्रह वाली पोथी के एक पृष्ठ में वर्णित चित्र (चित्र संख्या 110) के ऊपरी भाग में काले रंग से देवनागरी, संस्कृत एवं गुजराती भाषा के समायोजन से मत्स्यावतार से संबंधित श्लोक लिखित हैं। जिसमें विष्णु के दशावतारों का उल्लेख किया गया है। श्लोक के निचले भाग में विविध खण्डों का विभक्त कर दशावतार का अंकन किया गय है। जिसके दूसरे तीसरे, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ खण्ड में मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन अवतार का चित्रांकन किया गया है। इसमें प्रथम तीन खण्ड में क्रमशः वराह, मत्स्य, कूर्म के चित्र में कूर्म का पेट अर्धअण्डाकार रूप में चित्रित है, जिसकी गर्दन आगे को निकली हुई तथा पूंछ उठी हुई है। यहां मत्स्याकृति में सामान्य मत्स्य के समान अंकन है वराह अवतार का चित्र नष्ट प्रायः है। अतः गीतगोविन्द की वर्णित प्रतियों में दशावतार अंकन गीत गोविन्द काव्य के आधार पर क्रमानुसार उल्लेखित है।[17]

इस प्रकार पावागढ़ के पंडित बालशंकर भट्ट जी अग्निहोत्री के संग्रह में गीत गोविन्द काव्य की सचित्र पोथी नं.2 में दशावतारों का चित्रण दर्शनीय है।

यह पोथी गोगुन्दा से प्राप्त गीत गोविन्द की सचित्र पोथी के समकालीन हैं।

कागज पर चित्रित ये पोथी ताड़ पत्र के स्थान पर बनाई गई है। इस पोथी में 102 पन्ने हैं जिसके एकादश सर्ग में इसका वर्णन है। आगे के कुछ पन्ने उपलब्ध नहीं हैं, इसमें हिन्दु देवी देवताओं के चित्रों के अतिरिक्त विष्णु भगवान के मत्स्यावतार, कच्छप, अवतार, नरसिंह, वामन, परशुराम, वराह अवतारों के चित्र अंकित हैं। इस पोथी की लिपि अत्यंत सुन्दर है इस पोथी के साथ कागज के दो स्टेन्सिल पन्ने भी मिले हैं जिनका प्रयोग लिखावट हेतु किया गया। पोथी की दशावतार स्तुति द्वारा ज्ञात होता है कि इसमें लिपिकार देवकृष्ण नागर ब्राह्मण थे जो गुजरात के नरप्रद गांव के रहने वाले थे।[18]

गीत गोविन्द की पोथी नं. 2 में एक मत्स्यावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 109) का उल्लेख मिलता है। यहां इस चित्र में भगवान मत्स्यरूप में (अण्डाकार) वृताकार आसन पर विराजमान है जो संभवतः सरोवर का द्योतक है। विशाल रूप लिए मत्स्य के आसपास लघु मछलियों को भी स्थान दिया गया है। आलंकारिक स्वरूप लिए मत्स्य पूंछ के निकट ही नारी आकृति अंकित है। जिसकी वेशभूषा समकालीन अपभ्रशं शैली में वर्णित वेशभूषा से साम्य रखती है। उसके पैरों में स्थित नुकीले जूते जो सम्भवतः जैन शैली की पोथियों में नहीं दिखाई देते। अतः इस नारी के पैरों में जूते देखकर मुगलिया प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। चित्र का ऊपरी भाग में चापाकृति दर्शायी गई है जो आकाश का प्रतीक है वहीं निम्न भाग लम्बवत् पट्टिका में दर्शित लाल रंग की पृष्ठभूमि पर पुष्पों का समान क्रमबद्ध अंकन किया गया है।

कूर्म अवतार के एक चित्र में कच्छप रूप धारण किए एक विशाल आसन पर खड़े हुए हैं। सामने की ओर दो स्त्री आकृति का अंकन है जो संभवतः देवियां हैं। नारी आकृतियों का चित्रण अत्यंत आकर्षक रूप लिए है। दो रजिस्टरों में दर्शित इस चित्र के ऊपरी रजिस्टर के उच्च्व भाग चापाकृति रूप लिए है। जिसमें पद्मपुष्प अंकित है। छोटी–छोटी दो नारी आकृतियां पैरों में जूते पहने हैं जो अपने हाथों में पद्म कलिका लिए हुए है। रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु पद्म पुष्प का चित्रण कर उस स्थान को भर दिया है।[19]

एक पोथी में दर्शित वराह अवतार के एक चित्र में उनका मुख शूकर युक्त न होकर जैन चित्रों में हरि नेगमेश[20] यक्ष के समान है शरीर उनका मानवीय रूप लिए है जिनके ऊपरी दोनों हस्तों में क्रमशः षटांग एवं त्रिशूल है वहीं निम्न भाग का हस्त एक कमर की ओर मुड़ा हुआ है, तो दूसरा घुटने पर रखा है। वराह के दायीं एवं बांयीं और पुरुषाकृतियां अंकित हैं जिनके शीश पर मुकुट तथा पृष्ठ में आभामण्डल है व नुकीली दाढ़ी अंकित है। निकट ही नारी आकृति खड़ी है व देवता का वाहन जो कच्छपनुमा उसका भी चित्रण दृष्टिगोचर है।[21] गुजरात के वर्नाकुल सोसाइटी के संग्रह में स्थित यह पोथी 15वीं शती के अन्त में प्राप्त हुई। सर्वप्रथम एन.सी. मेहता ने इसका उल्लेख जनरल ऑफ दि यूनिवर्सिटी ऑफ बाम्बे में किया था। कागज पर निर्मित इस पोथी की लम्बाई 9'' तथा चौड़ाई 4'' है, कुल मिलाकर 34 पन्ने एवं 35 लघु चित्र हैं, पन्नों पर बिना लेप लगाये ही, चित्रों में चटकीले रंग भरे गये हैं। पोथी में पूरे पन्ने उपलब्ध न होने के कारण इसका लिपिकाल एवं चित्रकार के बारे में जानकारी नहीं मिलती।[22]

जोधपुर किला पुस्तकालय में भागवत की सचित्र पोथी है, इस पोथी में चित्रों को सुनिश्चित स्थान पर ही चित्रित किया गया है। पांच पन्नों में दर्शित 10 अवतार चित्र हैं और प्रत्येक चित्र के नीचे श्लोक का सम्बन्धित अंश लिखित है। इसमें वराह अवतार के दो चित्र एवं मत्स्य अवतार का एक चित्र दर्शित है।[23] पूर्वी भारतीय लघु चित्रों में भी दशावतार को चित्रसमूह उल्लेखित है। अतः बंगाल, लाहौर, बंगाल और उड़ीसा मे भी इस शैली के चित्र उपलब्ध होते हैं।[24] बंगाल के सुलतानों तथा विष्णुपुर में हिन्दू राजाओं के समय में निर्मित लघु चित्र केवल पोथियों के पटरे पर ही बनते थे जिनकी विषयवस्तु राधाकृष्ण से सम्बन्धित थी।

प्राचीनतम दशावतार में चित्र जो पटरे पर चित्रित हैं वे विष्णुपुर से प्राप्त होते हैं। इन चित्रों को पूर्वी भारतीय गीत गोविन्द से सम्बन्धित दशावतार के सबसे पुराने चित्रों की श्रेणी में रखा गया है।[25] पटरे पर स्थानाभाव के कारण विष्णु के कुछ ही अवतारों का चित्रांकन किया गया है। इन चित्रों पर लोककला के अतिरिक्त उड़ीसा शैली का प्रभाव भी परिलक्षित है। उड़ीसा चित्रों की तरह इनमें कोणीयता, आलंकारिकता एवं लयात्मकता के गुण दर्शित हैं।

उड़ीसा में भी दशावतार के चित्रों का अंकन हुआ है। अतः दशावतार से सम्बन्धित चित्र ताड़ पत्र पर 16वीं शती से प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में अवस्थित गीत गोविन्द की सचित्र पोथी है जिसमें श्री हरि के दशावतार का अंकन किया गया है।[25]

असम से भी दशावतार चित्रण गीत गोविन्द में प्राप्त होते हैं। यह पोथी राजा रुद्र सिंह के समय 1696 में चित्रित की गई।[26] इसमें विष्णु के अन्य अवतारों

के अतिरिक्त हयग्रीव का चित्रांकन किया गया है। हयग्रीव को गौर वर्ण पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है, जिसका शरीर मानवीय एवं शीश घोड़े का है।[27]

राजस्थान की प्रायः सभी शैलियों में दशावतारों के चित्र प्रदर्शित हैं। राजस्थान में प्रचलित विभिन्न शैलियों में कतिपय गीतगोविन्द के आधार पर चित्रित दशावतारों का विवरण वर्णित है।

उदयपुर के राजकीय संग्रहालय में स्थित 1714 ई. में चित्रित गीत गोविन्द के चित्र समूहों एक दृश्य में दशावतारों का अंकन किया गया है जिसमें अन्य अवतारों के साथ मत्स्य, कच्छप व वराह अवतारों का अंकन एक के बाद एक ऊपर नीचे तथा बीच में तीन भागों में प्रदर्शित है।

एक चित्र में भगवान विष्णु शूकर का रूप धारण कर अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हुए हैं। चतुर्भुजी विष्णु पैरों में पाजेब व शीश पर अलंकृत मुकुट तथा अधोवस्त्र पहने हुए चित्रित। श्री हरि का सिर शूकर रूप में एवं शरीर मनुष्य रूप में दर्शित है। बोने कद में चित्रित वराह हरि के सम्मुख पृथ्वी करबद्ध अवस्था में खड़ी हुई है, पृष्ठ भाग में जल का अंकन है।[28]

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर वाली गीतगोविन्द की दशावतार प्रति में श्री हरि के अन्य अवतारों के साथ–साथ वराह, मत्स्य, कूर्म का भी चित्रण किया गया है। मत्स्यावस्तार के एक चित्र में श्री विष्णु मत्स्यमुख से विकसित होते हुए अंकित है। मत्स्य का रूप अत्यंत भयानक व रौद्र रूप लिए है।[29]

सिटी पैलेस जयपुर संग्रहालय में स्थित गीत गोविन्द की जयपुर शैली में चित्रित पोथी में दशावतारों का चित्रण यर्थाथवादिता के दर्शन होते हैं।

भारतकला भवन वाराणसी में 16वीं शती की बूंदी शैली में चित्रित गीत गोविन्द की सचित्र प्रति में दशावतार का अंकन दर्शित है जिसे एक ही पृष्ठ पर तीन समानान्तर पट्टिकाओं में विभक्त कर श्री हरि के दशावतारों को चित्रित किया गया है।[30]

इस प्रकार राजस्थान के प्रत्येक भागों में प्रचलित शैलियों में दशावतार का चित्रण किया गया।

यद्यपि पहाड़ी लघु चित्रों की मुख्य विषय वस्तु राधाकृष्ण का प्रेम प्रसंग रहा तथापित जयदेव रचि गीत गोविन्द, भागवत पुराण आदि ग्रंथों की चित्रावली तत्कालीन कलाकार के चित्रों के विषय रहे।

बुन्देली शैली

बुन्देली शला का विकास अठाहरवीं शती के उत्तरार्द्ध में बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। बुन्देला राजपूतों के संरक्षण बुन्देली शैली का विकास हुआ। राजस्थानी एवं मुगल शैलियों के निकट होते हुए भी, बुन्देली शैली का स्वतंत्र अस्तित्व रहा। लेकिन ग्वालियर के निकट होने के कारण कलाकारों के आपसी मेलजोल के परिणाम स्वरूप ग्वालियर कला का प्रभाव बुन्देलखण्ड पर लक्षित हुआ।[31] 16वीं शती में बुन्देली शैली चरमोत्कर्ष पर थी। उस समय ओरछा एवं दतिया बुन्देली शैली के प्रमुख केन्द्र माने गये। ओरछा के शासकों ने अपनी कला का उपयोग मंदिरों व महलों में भित्तियों पर पूर्ण रूप से किया।[32]

बुन्देला राजाओं की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध ओरछा के स्मारक समूह, स्थापत्य कला एवं भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।[33] अब ओरछा के भित्ति चित्रों में अन्य विषयों की अपेक्षा विष्णु के दशावतारों का चित्रांकन दृष्टव्य है जिसमें बुद्ध और कल्कि को छोड़कर अन्य का चित्रण उल्लेखित है।[34] इसके साथ ही दतिया के महलों की भित्तियों पर अंकित दशावतार चित्रण पर बुन्देली प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है।

ओरछा के राजमहल की भित्तियों पर मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के चित्र दर्शनीय हैं।

राजमहल के बरामदे में दर्शित विष्णु के दशावतारों में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार का चित्रांकन किया गया जो नष्टप्राय स्थिति में है व काफी धुंधले प्रतीत होते हैं। इन चित्रों को देखकर यही प्रतीत होता है कि कभी इन चित्रों को चटक रंगों से पूरित किया गया होगा। राजमहल के प्रथम रानी के कक्ष में ऊपरी भित्ति पर अंकित अवतार चित्र (चित्र संख्या 072) एक ही पृष्ठभूमि पर चित्रांकित है। जिनमें प्रथमतः कूर्म में से श्री विष्णु उदित होते हुए दर्शित हैं। श्री विष्णु पीत रंग के अर्ध अधोवस्त्र पहने हुए दैत्य पर अपनी गदा से प्रहार करते हुए दृष्टव्य हैं। यह राक्षस कूर्म के समीप ही औंधे मूँह गिरा हुआ चित्रित है।

विशाल आकार वाले इस चित्र के मध्य में मत्स्यावतार का चित्रण (चित्र संख्या 072) है। अलंकृत रूप में अंकित मत्स्य जिसकी अर्ध निचली श्वेत त्वचा पर आड़ी रेखायें भूरे रंग से पूरित हैं, इसी मत्स्य मुख़ से नीलवर्णीय विष्णु विकसित होते हुए दृष्टव्य हैं। वे हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए व मुकुट पहने

हुए तथा श्वेत मौक्तिक माल व अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित विष्णु का चित्रण शोभनीय है। समीप ही लघु श्वेत शंख से उदित होता हुआ भूरे रंगयुक्त ह्यग्रीव दैत्य का अंकन है जो हाथों में ढाल व दूसरे हाथ में गदा पकड़े हुए हैं। ह्यग्रीव दैत्य पर विष्णु दाहिनी भुजा से प्रहार करते हुए चित्रित है।

राजमहल के एक अन्य भित्ति चित्र (चित्र संख्या 111) में वराह अवतार का अंकन है, जिसमें वराह मुखधारी श्री हरि विष्णु के शरीर पर पीताम्बर अधोवस्त्र है तथा अलंकृत आभूषणों से सुशोभित है। वे अपने श्वेत दन्तों पर रक्त वर्णीय पृथ्वी को धारण किए है। पृथ्वी पर नारी आकृति लिए रक्तिम वस्त्रों में सुशोभित वसुंधरा का चित्रांकन है। चतुर्भुजधारी वराह रुपी विष्णु जो हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्‌म धारण किये हैं, दैत्य पर प्रहार करते हुए अंकित हैं। सींगयुक्त भूरे रंग वाले दैत्य हिरण्याक्ष, जिसके शरीर पर बड़े–बड़े रोम हैं। राक्षस पर गदा से प्रहार करते हुए दर्शाया गया है। अद्‌भुत रूप लिए इस दैत्य के शरीर पर चिकत्ते दर्शित हैं।

प्रथम रानी के कक्ष मे प्रवेश करते ही बांयीं भित्ति मध्य सतह पर अलंकृत आलेखनयुक्त आयताकार हाशिये में समुद्र मंथन का दृश्य चित्रांकित है। (चित्र संख्या 112) महीन श्याम रंग से पूरित वर्तुलाकार रेखाओं वाले समुद्र के मध्य अंकित कूर्माकृति, जिसकी पीठ अपेक्षाकृत ऊंची है जिसके ऊपर बेलनाकार मदराचंल पर्वत आसीन है मेरू पर्वत के शिखर पर लघु रूप में गुम्बदकार मंदिर के अन्दर चतुर्भुजी श्री विष्णु विराजमान हैं। गिरि से लिपटे वासुकि नाग के मुख मण्डल की ओर विविध अद्‌भुत भयानक रूपों वाले लंगोटधारी राक्षसों का अंकन

है। जो श्याम, श्वेत, स्लेटी व चित्तेदार वर्णों से पूरित है। वासुकि के पूछ की ओर क्रमशः चर्तुमुखी मुकुटधारी ब्रह्मा गौर वर्ण में है वहीं नील वर्णीय शिव इन्द्र के साथ–साथ अन्य देव भी अंकित हैं। एक अन्य देवआकृति नष्ट प्रायः स्थिति में है चित्र के ऊपरी सतह पर समुद्र मंथन से प्राप्त सामग्रियों का यंत्र–तंत्र अंकन है जिनमें ऐरावत उच्चेश्रवा अश्व, पद्म, गदा, चक्र, शंख, कलश, सूर्य, चन्द्र आदि को चित्रित किया गया है। वराह अवतार का एक चित्र (चित्र संख्या 073) प्रथम रानी के कक्ष की छत पर दर्शित है। इस चित्र में वराह रूप धारी श्री विष्णु अपने श्वेत दन्तों पर धरा का भार वहन करते हुए अंकित हैं। चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में पद्मपुष्प सहित विविध आयुध सुशोभित हैं, वे अपने एक पैर से ह्यग्रीव नामक दैत्य का पैर दबाए तथा नील वर्णीय स्वरूप में अंकित हैं। अद्भुत मुख धारी दैत्य के सींग वर्तुलाकार हैं जो भयातुर मुद्रा में विराजित हैं तथा श्री हरि को पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए चित्रित हैं। पृष्ठभूमि में वृक्षों का अंकन किया है। सम्पूर्ण चित्र धुंधला एवं नष्टप्रायः अवस्था में दर्शित है।

तृतीय रानी के कक्ष में मत्स्यावतार का चित्रांकन (चित्र संख्या 113) मत्स्यावतार की कथा के अनुरूप किया गया है। पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग में पेड़ों का अंकन है। वहीं निम्न भाग में वर्तुलाकार रेखाओं द्वारा जलाशय का चित्रण है। चित्र के दाहिनी भाग में निम्न स्थान पर एक ओर वृक्ष का अंकन दर्शित है। समुद्र की लहरों के मध्य विशालकाय मत्स्य मुख से विकसित नीलवर्णीय कमलनयन पीताम्बरधारी श्री विष्णु हैं, जो चर्तुभुजी हाथों में शंख, चक्र, आदि आयुधों से सुशोभित हैं। श्री हरि के सम्मुख ही वृहत्ताकार शंख मुख से निकलता हुआ

भयानक रूपधारी ह्यग्रीव दैत्य का चित्रण है जिसकी जिव्हा बाहर को निकली प्रतीत हो रही है। पूरे शरीर पर चिकतेदार त्वचा लिये राक्षस के हाथों में ढाल व तलवार को दर्शाया गया है।

वराह अवतार का एक अन्य चित्र तृतीय रानी के कक्ष में प्रवेश द्वार की भित्ति के अन्तः भाग पर चित्रांकित है, जिसमें वराह अवतार लिए श्री विष्णु की मुखाकृति की दिशा दूसरी ओर है। रक्त वर्णीय वस्त्र धारण किए तथा अनेकानेक अलंकृत आभूषण पहने मुकुट धारण किए श्री हरि का रूप सौन्दर्य अत्यंत सर्वोत्कृष्ट है। वहीं दैत्य पीले रंग के वस्त्रों को धारण किए ही पृष्ठभूमि में वृक्षों का अंकन दर्शाया है। वराह हरि अपने दन्तों पर पृथ्वी को धारण किए हैं। रक्त वर्णीय वस्त्रों से सुशोभित नारी आकृति लिए धरती मां की पृष्ठभूमि हल्के नीले रंग से पूरित है।

इसी तरह वराह अवतार का एक चित्र लक्ष्मी मंदिर के मध्य कक्ष की छत पर चित्रांकित है। अत्यन्त लघु रूप में दर्शित इस चित्र में आलंकारिकता का समावेश है। चित्र का स्वरूप लघु होने से रंग स्पष्ट नहीं दिखलाई देते हैं।

मत्स्यावतार का एक चित्र पंचमुखी महादेव मंदिर में ही स्थित नंदी मंदिर की अन्तः भित्तियों पर मत्स्यरूपी विष्णु का चित्रांकन किया गया है। भित्ति पर दर्शित इस चित्र की चौड़ाई कम एवं लम्बाई ज्यादा होने के कारण चित्र में दर्शित मानवाकृतियां नाटे कद की बनी हैं, जिनमें चटक रंगों का प्रयोग नहीं किया गया है।

श्वेत मत्स्य मुख से उदित होते हुए श्री विष्णु गहरे भूरे रंग से पूरित है,

जिनके सम्मुख वृहत्ताकार रूप लिए ह्ययग्रीव नामक दैत्य हाथों में गदा व ढाल लिए हुए हैं, जिस पर मत्स्यावतार लिए श्री विष्णु गदा द्वारा प्रहार करते हुए अंकित हैं। समीप ही चतुर्मुखी ब्रह्मा विराजमान हैं।

पंचमुखी महादेव मंदिर में मत्स्यावतार के दाहिनी ओर का प्रथम चित्र, कूर्मावतार लिए श्री विष्णु का अवतार चित्र है ,हल्के पीले रंग से पूरित कूर्म की पीठ पर मंदराचल गिरि पर्वत के शिखर पर पूर्ण पल्लवित मुकुलित पुष्प पर चर्तुभुजी गौर वर्णीय विष्णु शीश पर मुकुट धारण किए विराजमान हैं। मदरांचल से लिपटा वासुकि नाग के मुख की ओर द्विसींगधारी एक दैत्य मुकुट धारण किए है। एक अन्य दैत्य सींग विहीन है, वहीं पूछ की ओर चतुर्मुखी, ब्रह्मा, शिव जो श्वेत वस्त्रों में सुशोभित हैं तथा चतुर्भुजी मुकुट धारण किए विष्णु भी समुद्र मंथन में सहयोग देते हुए दर्शाये गये हैं। चित्र में ऊपरी भाग पर समुद्र मंथन से प्राप्त सामग्री का रूप अपेक्षाकृत वृहद है। चित्र में दर्शित दैत्य व देवगण लघु कद में अंकित हैं।

लक्ष्मी मंदिर के मध्य कक्ष की छत पर समुद्र मंथन का चित्रण पूर्वानुसार वर्णित है। यहां मंदराचल गिरि का शिखर अपेक्षाकृत वृत्ताकार स्वरूप लिए है जिसकी निचली सतह पर विष्णु लक्ष्मी सहित आसीन है चित्र में ऊपरी सतह पर भक्तगण का अंकन किया गया है चटक रंग से पूरित यह चित्र नष्टप्राय अवस्था में दर्शित हैं।

राजा राम मंदिर के मुख्य द्वार के दाहिनी भित्ति की ऊपरी सतह पर श्री विष्णु के बायीं ओर मत्स्यावतार का चित्र वर्णित है। समीप ही वेद धारी ब्रह्मा को

भी चित्रित किया है। नीलवर्ण से परिपूर्ण समुद्र में मत्स्य मुँह से उदित तथा शंख से प्रवाहित राक्षस का चित्रांकन दृष्टव्य हैं

यहीं स्थिति पृथु अवतार के बांयीं और पौराणिक घटनानुसार कूर्मावतार लिए श्री हरि का चित्रण दर्शित है, चित्र के ऊपरी सतह पर भक्तगण लक्ष्मी व विष्णु की स्तुति करते हुए चित्रित है। इसी भित्ति के आखिरी भाग में वराह अवतार का चित्रण किया गया है यह चित्र आयताकार है, जिसमें नीले रंग का प्रयोग अत्यधिक देखने को मिलता है।

इसी प्रकार जहांगीर महल एवं रायप्रवीण महल के समक्ष छतरियों की भित्ति पर भी जनश्रुति के अनुसार अवतार चित्रों का अंकन था, किन्तु वे अब नष्ट हो चुके हैं। दतिया के महल की भित्ति पर वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 114) में श्री विष्णु को वराह अवतार धारण किए चित्रांकित किया गया है। अर्ध मानवीय रूप धारण किए श्री वराह का मुख शूकर का है, जो अपने शीश पर मुकुट एवं अलंकृत आभूषणों से सुशोभित हैं। वे अपने श्वेत दन्तों पर वसुन्धरा को उठाए हुए चित्रित हैं समीप ही दैत्याकृति लिए ह्ययग्रीव का अंकन है जो मानवाकृति रूप लिए है, श्री वराह भगवान राक्षर के पैर पर विराजमान हैं तथा उनका अग्र पद मुड़ा हुआ दर्शित है। मध्यकाल की चित्रकला में अन्य धार्मिक विषयों के अतिरिक्त श्री हरि के दशावतार के चित्र पोथी चित्रों में दर्शित हैं। अपभ्रंश शैली के अवतार चित्रों में अपभ्रंश शैली के साथ–साथ कल्पिय चित्रों में मुगल प्रभाव भी दृष्टिगोचर हैं। उदाहरण अपभ्रंश शैली के एक चित्र मे नारी आकृति द्वारा पहने गये जूते मुगल कला में अंकित जूतों से साम्य रखते प्रतीत होते हैं।

जहां अपभ्रंश शैली में पाण्डुलिपि एवं पोथी चित्रों में दशावतारों का उल्लेख एवं चित्रांकन दृष्टव्य है वहीं ओरछा व दतियां के भित्ति चित्रों में अवतार चित्र प्रमुखता लिए शोभायमान है। यहां की पृष्ठभूमि पर विष्णु के विभिन्न अवतारों को एक साथ चित्रांकित किया है, जो देखने पर एक ही परिवार के सदस्य प्रतीत होते हैं।

अतः अपभ्रंश एवं बुन्देली शैली में बने मत्स्य, कूर्म, वराह अवतारों के चित्रों में यदाकदा त्रुटिपूर्ण एवं भावहीन अंकन होने पर भी वे चटक रंग संयोजन तथा प्रवाहपूर्ण रेखाकंन से विविध अवतारों का प्रभावशाली प्रदर्शन करने में समर्थ है।
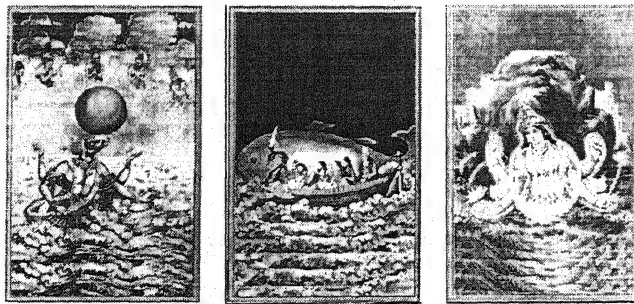
सन्दर्भ

1. सक्सेना एस.एन. – ''भारतीय चित्रकला (चित्रकला में आधुनिक परिवेश में विश्वविद्यालयों की भूमिका)'' मनोरमा प्रकाशन पृ.सं. 39
2. चतुर्वेदी गोपाल मधुकर – ''भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक संदर्भ)'' जागृत पकाशन अलीगढ़, 1982, पृ.सं. 89
3. सक्सेना एस.एन. – ''भारतीय चित्रकला (चित्रकला में आधुनिक परिवेश में विश्वविद्यालयों की भूमिका)'' मनोरमा प्रकाशन पृ.सं. 40
4. गौरेला वाचस्पति – ''भारतीय चित्रकला'', चौखम्भा प्रकाशन दिल्ली, 1990, पृ.सं. 133
5. सक्सेना एस.एन. – भारतीय चित्रकला ''(चित्रकला में आधुनिक परिवेश में विश्वविद्यालयों की भूमिका)'' मनोरमा प्रकाशन पृ.सं. 40
6. वात्स्यायन कपिला – 'जावर गीत गोविन्द' – राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली रंगीन चित्र सं. 2 अपभ्रंश शैली
7. सक्सेना एस.एन. – ''भारतीय चित्रकला (चित्रकला में आधुनिक परिवेश में विश्वविद्यालयों की भूमिका)'' मनोरमा प्रकाशन पृ.सं. 41
8. चतुर्वेदी गोपाल मधुकर – ''भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक संदर्भ)'' जागृति प्रकाशन, अलीगढ़ 1982, पृ.सं. 93
9. गौरेला वाचस्पति – ''भारतीय चित्रकला'', चौखम्भा प्रकाशन दिल्ली, 1990, पृ.सं. 136
10. द्विवेदी प्रेमशंकर – ''पश्चिम भारतीय लघु चित्रों में गीतगोविन्द'', कला प्रकाशन वाराणसी 1988, पृ.सं. 19–20

20. मजूमदार एम.आर. – ''जनरल आफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बाम्बे'', चि.सं. 7 पृ.सं. 131
21. द्विवेदी प्रेमशंकर – ''पश्चिम भारतीय लघु चित्रों में गीतगोविन्द'' कला प्रकाशन वाराणसी 1988, पृ.सं. 20

21. वही

22. वहीं पृ.सं. 9

23. वही

24. गौरेला वाचस्पति – ''भारतीय चित्रकला'', चौखम्भा प्रकाशन दिल्ली, 1990, पृ.सं. 136

25. द्विवेदी प्रेमशंकर – ''गीतगोविन्द साहित्यिक एवं कलागत अनुशीलन'' कला प्रकाशन वाराणसी पृ.सं. 56

25. वही पृ.सं. 56

26 वही पृ.सं. 57

27. वही

28. वही पृ.सं. 58

29. वही पृ.सं. 60

31 वही, पृ.सं. 61

32. गौरेला वाचस्पति – ''भारतीय चित्रकला;;, चौखम्भा प्रकाशन दिल्ली, 1990, पृ.सं. 157

33. चहल आई.एम. – ''ओरछा के भित्ति'' पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, म.प्र. भोपाल चित्र पृ.सं. 9

34. तदैव, पृ.सं. 5

35. तदैव

चतुर्थ अध्याय

राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार का चित्रण

१. जम्मू कश्मीर

२. हिमाचल प्रदेश
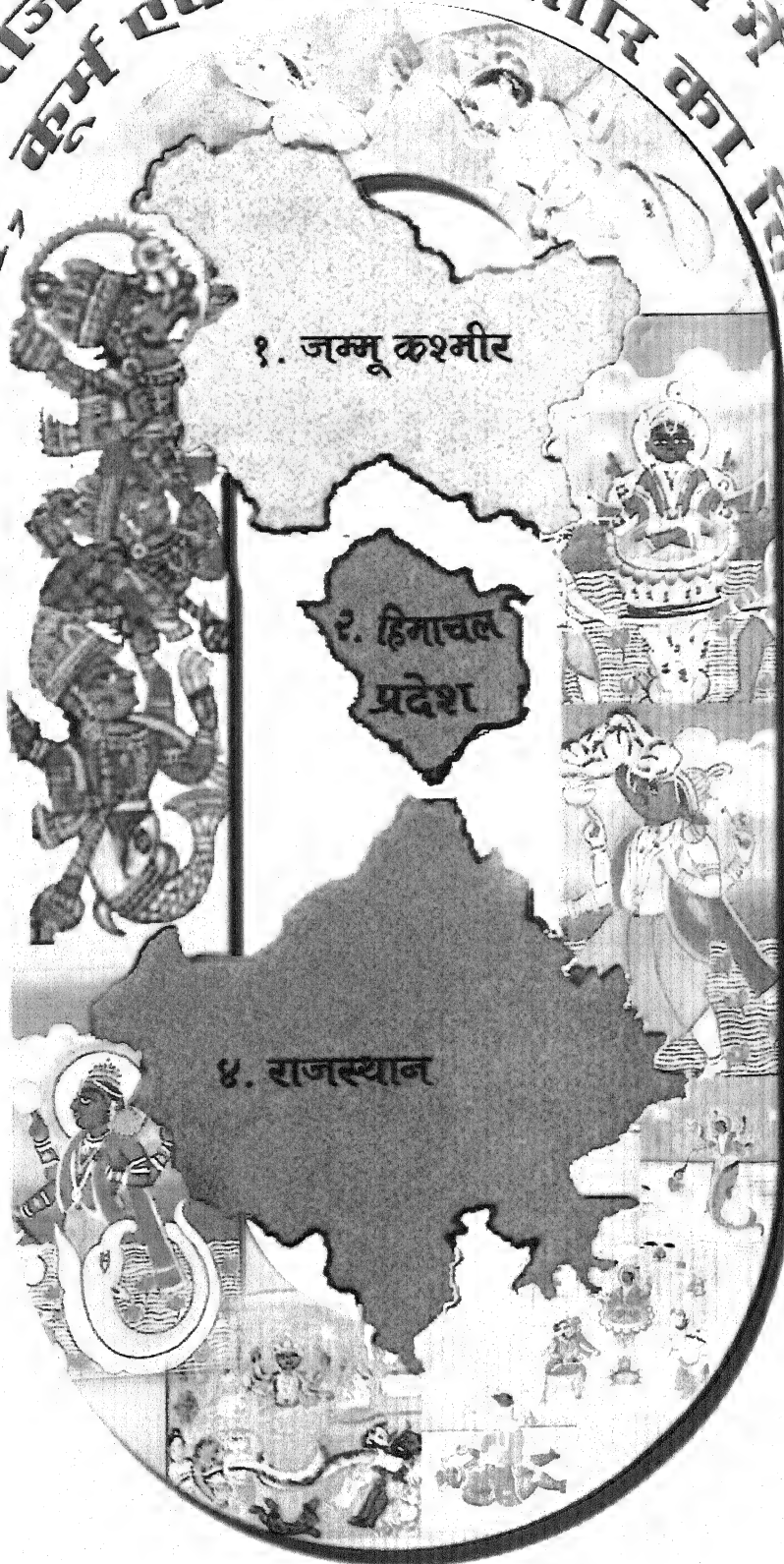
४. राजस्थान

अध्याय – 4

राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली में मत्स्य कूर्म एवं वराह अवतार का चित्रण

राजस्थानी शैली

भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में 15वीं शताब्दी का समय पुर्नर्जागरण का रहा है। इस काल में संगीत, वास्तु–साहित्य एवं कला के क्षेत्र में नयी चेतना का उदय हुआ। राजस्थान का शाब्दिक अर्थ है (राज राजा; स्थान निवास) अर्थात् राजाओं का निवास।[1] राजाओं के संरक्षण में पोषित, पल्लवित, मनमोहक श्रंगारिक चित्रकला राजस्थान की हवेलियों, महलों की भित्तियों पर चित्रित की गई हैं। राजस्थानी चित्रकला की जड़ें भित्तिचित्रों में दिखाई देती हैं।[2]

राजस्थानी चित्रकला की पूर्ण परम्परा के अनेक पोथी चित्र, भित्ति चित्र उपलब्ध होते हैं जो उसके उद्भव को दर्शाते हैं। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने मरूप्रदेश (माखाड़) में सातवी शती के श्रीरंग धर नामक चित्रकार का उल्लेख किया है। 15वीं शती में निर्मित मांडू महल के भित्तिचित्रों में राजस्थानी चित्रों का प्रस्फुटित होता है।[3] अतः भित्ति चित्रों के अतिरिक्त कागज पर 14वीं शती में निर्मित अपभ्रंश चित्रों की वेशभूषा एवं रंग संयोजन में राजस्थानी शैली का प्रभाव दिखता है। रामकृष्ण दास के अनुसार ''राजस्थानी शैली का उद्भव अपभ्रंश शैली से गुजरात एवं मेवाड़ में कश्मीर शैली के प्रभाव द्वारा 15वीं सदी में हुआ''।[4]

अजन्ता की चित्रकला की परम्परा को जीवित रखने का श्रेय गुहिल वंशीय मेवाड राजाओं को है। जिन्होंने भारतीय संस्कृति व कला को अनवरत सहेजे रखा। मेवाड़ के इतिहास में राणा कुम्भा का स्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि राजा कुम्भा ने ललितकलाओं को न केवल संरक्षण दिया, अपितु उसे पोषित एवं पल्लवित भी किया। अतः राजस्थानी चित्रकला के संर्वधन में प्राचीन इतिहास एवं भौगोलिक संरचना भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और लोक जीवन की कलाओं में अभिरूचि के फलस्वरूप चित्रकला ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

राजस्थानी चित्रकला का विकास एवं निर्माण एक ही स्थान पर न होकर अलग–अलग एवं विभिन्न कलाकारों द्वारा किया गया। यद्यपि राजस्थान में वैष्णव सम्प्रदाय की भक्ति भावना चहुं ओर फैली है। इसी कारण चितेरों ने जयदेव, चण्डीदास, सूरदास, मीराबाई आदि के काव्य ग्रंथों को प्रेरणा स्त्रोत बनाकर उनके शब्दों को तूलिका द्वारा साकार रूप प्रदान किया।

यद्यपि राजस्थानी शैली के चित्रों पर जैन धर्म का प्रभाव भी है, तो मुगल शैली का अस्तित्व भी दिखता है, दक्खिनी छवि भी इन चित्रों में परिलक्षित है इसके बाद भी राजस्थानी चित्रकला का अपना स्वरूप है, शैली है। अतः राजस्थानी चित्रकला ने विभिन्न शैलियों की विशेषताओं को आत्मसात कर उनके संयोजन से एक नई शैली को जन्म दिया, जो राजस्थानी शैली के नाम से जानी जाती है।[5]

अतः राजस्थानी चित्रकला का भौगोलिक एवं शैलीगत आधार पर निम्नलिखित शैलियों में विभाजित किया है –

1. मेवाड़ शैली – (उदयपुर, देवगढ़, नाथद्वारा आदि)

2. हाड़ौती शैली – (बूंदी, कोटा, झालावाड़)

3. डूढ़ार शैली – (अजमेर, जयपुर, अलवर आदि)

4. मारवाड़ शैली – (जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नानौर, अजमेर)[6]

राजस्थानी चित्रकला का विकास एवं निर्माण प्राचीन नगरों, मन्दिरों, मठों एवं महलों में हुआ। तत्कालीन शासकों, धर्माचार्यो, रियासत के कला प्रेमी सामंतों व जागीरदारों के संरक्षण में राजस्थानी चित्रकला पल्लवित एवं पोषित हुई। अतः दरबार में चितेरों मूर्तिकारों, कवियों, साहित्यकारों को आश्रय प्राप्त होने से राजस्थानी कला दिनों दिन उन्नति की ओर अग्रसर हुई, और 17वीं 18वीं सदी में चरमोत्कर्ष पर पहुंची। अधिकांश रियासतों के चितेरों ने जिन चित्रों का निर्माण किया इनमें स्थान के आधार पर मौलिकता, राजनैतिक सम्पर्क व सामाजिक सम्बन्धों के कारण एक नई विधा को जन्म दिया और वह भौगोलिक सांस्कृतिक आधार पाकर नई चित्र शैली कहलाई।

राजस्थान की सीमाऐं म.प्र., उ.प्र., गुजरात, पाकिस्तान, पंजाब और हरियाणा को छूती हैं। अतः राजस्थान की छोटी बड़ी रियासतों एवं पड़ोसी प्रदेशों की संस्कृति का आदान–प्रदान होने से इन प्रदेशों की चित्रशैलियों की विशेषताऐं भी राजस्थानी शैली पर परिलक्षित हैं।

मेवाड़ शैली

राजस्थान के दक्षिण भाग में 23° 49", 25° 28" उत्तरी अक्षांश और 73° से 75° 49" पूर्वी देशान्तर के मध्य भाग में स्थित है। मारवाड़ से अलग करने वाली अरावली पर्वत श्रंखलाऐं पश्चिम में स्थित हैं। अरावली पर्वत श्रंखलाओं के मध्य

स्थिर मेवाड़ भू–खण्ड .प्राचीनकाल से विभिन्न संस्कृतियों का केन्द्र रहा है। 'मेव' अथवा 'मेर' जाति के लम्बे समय तक इस क्षेत्र में निवास करने के कारण इसे 'मेवाड़' व 'मेदापाद' शब्द से सुशोभित किया गया।[7] जैन, अपभ्रंश व मालवा शैली के संयोजन से नई विधा विकसित हुई, वही राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भिक एवं मौलिक स्वरूप मालवा शैली में देखी गई। अतः राजस्थानी चित्रकला के उद्भव एवं विकास में मेवाड़ शैली का प्रथमतः योगदान राहा है। राजस्थान की विविध लघु चित्र शैली मेवाड़ में ही पोषित व पल्लवित हुई।[8] मेवाड़ ही आरम्भिक राजस्थानी चित्रकला का प्रथम केन्द्र रहा है। इसका प्रमाणिक क्रम 1229 ई. से मिलता है।[9] महाराणा प्रताप के उत्तराधिकारी राणा अमर सिंह 1599–1620 ई. के समय में रचित रागमाला 1605 की कलाकृतियों में मेवाड़ शैली का प्रारूप उभरकर आया।[10] महाराजा जगत सिंह (1628–52) तथा राजसिंह (1652–81) के समय में मेवाड़ चित्रकला का स्वर्ण युग था। उनके समय में रचित चित्रों की रंग योजना एवं आलेखन शैली में बूंदी की चित्रकला को प्रभावित किया।[11]

18वीं सदी के शुरूआत में मेवाड़ चित्र शैली अत्यधिक लोकप्रिय होने से कई चित्रों का निर्माण हुआ लेकिन उनकी रचना शैली पूर्व की भांति नही थी। डॉ मोतीचन्द्र के अनुसार उदयपुर ही मेवाड़ शैली का मुख्य केन्द्र रहा इस शैली के अन्य केन्द्र थे चवन्दा तथा चित्तौड़। प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम में सुरक्षित ''गीतगोविन्द'' के चित्र तथा अन्य आधार पर यह चित्र 17वीं सदी के मध्य उदयपुर में चित्रित हैं।[12] इनमें मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के चित्र देखने को मिलते हैं।

उदयपुर गवर्नमेंट संग्रहालय में 1714 ई. में गीतगोविन्द के आधार पर

चित्रित चार सेटों वाली पोथी में भी 'दशावतार' चित्रावली दृष्टव्य है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान उदयपुर (1723 ई.) में चित्रित मेवाड़ शैली गीतगोविन्द के आधार पर चित्रित दशावतार से सम्बन्धित चित्रों में भी मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के चित्र उल्लेखनीय हैं।

उदयपुर राजकीय संग्रहालय में स्थित 1714 ई. में मेवाड़ के राजा संग्राम सिंह के राज्यकाल में निर्मित गीतगोविन्द चित्रावली के चित्र समूहों के एक दृश्य में दशावतारों का चित्रांकन काव्य के आधार पर किया गया है, जिसमें मत्स्यावतार, कच्छप, शूकर के चित्र पट्टिका रूप में अंकित हैं।

मेवाड़ शैली में निर्मित आयताकार पट्टिका युक्त एक चित्र में (चित्र संख्या 115) दशावतार चित्रावली के अन्तर्गत मत्स्य, कूर्म तथा वराह अवतार का चित्र उल्लेखनीय है। सम्पूर्ण चित्र विभिन्न आयताकार पट्टिका में विभक्त है। जिसमें श्री हरि के दशावतार का चित्रण विभिन्न खण्डों में ज्ञातव्य है। प्रथम खण्ड के ऊपरी आयताकार पट्टिका के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ भाग में वराह, कूर्म, मत्स्य का चित्र दर्शित है। द्वितीय भाग में वराह अवतार के चित्र में विष्णु भगवान पूर्ण शूकर का रूप धारण कर पृथ्वी को अपने दन्तों पर उठाए हुए हैं। तृतीय भाग में कूर्मावतार का चित्रण है जो अपनी पीठ पर वृक्ष सदृश मंदराचल पर्वत को उठाए हुए हैं। चतुर्थ भाग में मत्स्यावतार का चित्रण है, जिसमें श्री हरि पूर्ण मत्स्य रूप लिए हुए हैं उनके मुख पर कांटा सदृश एक अन्य आकृति परिपलक्षित है।

आयताकार पट्टिका दशावतार चित्रावली में केवल मत्स्य, कूर्म, वराह

का अवतार चित्र पूर्ण पशु रूप में अंकित है अन्य अवतार मे श्री हरि मानवीय रूप में चित्रित हैं।

वराह अवतार के एक चित्र में (चित्र संख्या 116) पीली पृष्ठभूमि में श्री हरि वराह रूप धारण किए हैं। श्यामवर्णीय श्री विष्णु का मुख शूकर का एवं शरीर मानवीय रूप में अंकित हैं। जो अण्डाकार स्वरूप में दर्शित पृथ्वी को अपने नुकीले दन्तों पर उठाए हुए हैं। पृथ्वी के अन्दर भवन वृक्षों का अंकन शोभनीय है। चतुर्भुजी विष्णु अपने अग्र भुजाओं में पद्म पुष्प धारण किए है। वहीं पृष्ठ भुजाओं में शंख, चक्र का अंकन है। स्वर्ण मौक्तिक मुकुट एवं अलंकृत मौक्तिक माला से सुशोभित वराह हरि नारंगी रंग का अधोवस्त्र पहने हुए हैं जो सिर विहीन पूंछ युक्त ह्यग्रीव नामक दैत्य के ऊपर खड़े हैं। भगवान वराह का एक चरण उसकी छाती पर एवं दूसरा चरण उसके पैरों पर स्थित है जो अपने हाथों में गदा पकड़े हुए है। गुलाबी वर्ण युक्त दैत्य के पैरों के समीप ही ह्यग्रीव का सिर पड़ा हुआ है द्विसींगधारी दैत्य व मूंछ युक्त एवं जिव्हा बाहर निकाले चित्रित हैं। चित्र की पृष्ठभूमि के अग्रभाग में लघुवृक्ष एवं मध्य भाग में अपेक्षाकृत वृहद वृक्षों का चित्रांकन किया गया है।

मेवाड़ शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 117) में मत्स्यावतार का अत्यंत सुन्दर चित्र ज्ञातव्य है, लयात्मक रेखाओं द्वारा निर्मित मत्स्य अर्धश्वेत व अर्धश्यामवर्णीय रूप में अंकित हैं। ऊपर की ओर देखते हुए मत्स्य मुख से विकसित श्री हरि विष्णु चतुर्भुजी अपने प्रचलित आयुधों एवं पद्म पुष्प के साथ चित्रांकित हैं। अलंकृत आभूषणों मौत्तिक माला एवं कंठ में पटका धारण किए श्री विष्णु मुकुट विराजमान हैं।

पृष्ठभूमि द्विभाग में विभाजित है ऊपरी भाग में आकाश का सपाट अंकन है वहीं निम्न भाग में सरोवर का अंकन हैं जिसमें पद्मपुष्प मुकुलित अवस्था में शोभायमान है। मेवाड़ शैली में बने एक चित्र (चित्र संख्या 180) को दो बराबर भागों में व्यक्त किया गया है। चित्र के प्रथम भाग में कूर्म अवतार के समुद्र मंथन का दृश्य है जिसमें कूर्म की पीठ पर दंड रूप में मेरू पर्वत का चित्रांकन किया गया है। पर्वत के ऊपर पद्मासीन, विभिन्न प्रकार के अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित चतुर्भुजी विष्णु अपने आयुद्धों से चित्र के मध्य भाग में अंकित हैं। मेरू पर्वत की दायीं ओर शंकर और ब्रह्मा जी, शेषनाग को खींचते हुए एवं बांयीं ओर असुरों को अंकित किया गया है। आकाश में समुद्रमंथन से प्राप्त रत्नों का अंकन किया गय है। चित्र के ऊपरी भाग में क्षेत्रीय लिपि में अवतार सम्बन्धी तथ्य लिखे गये हैं।

इसी चित्र के दूसरे भाग में अंकित वराह, अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हुए हैं। इनकी भुजाओं में क्रमशः शंख, चक्र, गदा, पद्म शोभा पा रहे हैं। स्वर्णमुकुट धारी श्री हरि का कंठहार अपेक्षाकृत लम्बा है। उनके पैरों में पाजे, कानों में कुण्डल, हाथों में कंगन एवं गले में विभिन्न प्रकार के हार शोभा पा रहे हैं। शूकर मुख वाले श्री हरि वराह अपेक्षाकृत नाटे तथा भारी शरीर वाले प्रतीत हो रहे हैं। चित्र की सपाट पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग में क्षेत्रीय लिपि में वराह स्तुति अंकित है।

मारवाड़

राजस्थानी चित्रकला के इतिहास में मारवाड़ चित्र शैली अपना महत्वपूर्ण पक्ष प्रस्तुत करती है। मारवाड़ में राठौर राजपूतों का शासन था। जोधपुर शहर रावजोधा ने 1459 ई. में बसाया आगे जाकर इसी वंश ने किशनगढ़, बीकानेर,

नागौर, अजमेर को बसाया।[13] मारवाड़ शैली के आरम्भिक चित्रों में तिथि अंकित रागमाला (1625 ई.) उल्लेखनीय है।[14] 17वीं सदी से 19वीं सदी तक मारवाड़ शैली का स्वर्णयुग माना गया इस युग में अति सुन्दर चित्रों का अंकन हुआ।

मारवाड़ शैली का प्रारम्भिक समय 17वीं सदी रहा। मुगल एवं स्थानीय अपभ्रंश शैली के समन्वय से नई स्वतंत्र विधा का जन्म हुआ जो कालान्तर में मारवाड़ शैली के नाम से जानी गई। 1803 ई. में महाराज मानसिंह के शासनकाल, मारवाड़ शैली का अन्तिम चरण माना गया।[15]

जोधपुर शैली की विशेषताऐं हैं, चटखरंग नुकीली जोधपुरी पगड़ी, जिसकी अलग पहचान है। लम्बे घुंघराले केश, तथा उन्नमित नैन। मानवीय पुरुष आकृतियां लम्बी, खूबसूरत एवं अनेक मुख पर शौर्य झलकता प्रतीत होता है। बड़ी आँखें नाक आगे को निकली हुई, घनी दाढ़ी लम्बे केश, वहीं स्त्रियां लम्बी, तीखे नैन–नक्श युक्त व कटि प्रदेश तक झूलते केशों से सम्पन्न हैं।

यद्यपि मारवाड़ शैली के उत्कृष्ट चित्र दृष्टव्य नहीं है। जोधपुर दरबार के संग्रहालय में दर्शित चित्र अधिकांशतः महाराजा मानसिंह कालीन हैं।[16]

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर में स्थित 1789 ई. में गीतगोविन्द के आधार पर चित्रित दशावतार चित्रावली में कूर्म, मत्स्य तथा वराह अवतार के चित्रों में पीले रंगों की बहुलता सहित अंकित हैं।[17]

जोधपुर में ही गीतगोविन्द काव्य के आधार पर चित्रित दशावतार की एक महत्वपूर्ण पोथी है जिसमें सभी अवतारों को अलग–अलग पृष्ठ पर चित्रित किया गया है।

इसमें मत्स्यावतार के प्रदर्शन में चित्र की पृष्ठभूमि हरित है, इसमें श्री हरि मत्स्यमुख से निकलते प्रतीत होते हैं। मत्स्य का चित्रांकन अत्यंत रौद्र व भयानक रूप में दृष्टव्य है।[18]

हाड़ोती

राजस्थान के दक्षिण पूर्व 25° और 26 अक्षांश तथा 75° 15" और 76.19" दक्षिण देशान्तर पर बूंदी राज्य स्थित था। बूंदी के उत्तर में जयपुर एवं टोंक पश्चिम में उदयपुर और दक्षिण एवं पूर्व में कोटा राज्य स्थित था।

चौहान वंशी हाड़ाओं का शासन बूंदी, कोटा, झालावाड़ क्षेत्र में रहा यहां भी चित्रकला का विकास हुआ। बूंदी शैली, कोटा शैली झालावाड़ शैली की चित्रकला हाड़ौती शैली के अन्तर्गत आती है।[19]

हाड़ौती शैली के आरम्भिक समस्त चित्र बूंदी शैली के हैं। बून्दी की स्थापना 1342 ई. के लगभग हुई।[20] 18वीं सदी के चित्रित विषयों पर मुख्यतः जोधपुर शैली एवं वस्त्रों पर जयपुर शैली का प्रभाव परिलक्षित है।[21] बूंदी के महत्व, हवेलियां, चित्रशालाऐं आज भी सुन्दर भित्ति चित्रों से सुशोभित हैं जिनमें अन्य विषयों में श्रंगार, कृष्णलीला, उत्सव के अतिरिक्त दशावतार के चित्र उल्लेखनीय हैं। इन चित्रों में प्रकृति चित्रों को विशेष रूप से प्रमुखता दी गई है।

बूंदी कलम का स्थानीय वैभव कुछ वर्षों बाद कोटा में दर्शित हुआ।[22] बूंदी राज्य के शासक रावरतन के द्वितीय पुत्र माधौसिंह हाड़ा को शाहजहां ने उपहार स्वरूप कुछ परगने जागीर में दिये तब 1631 में कोटा राज्य की स्थापना हुई।[23]

डब्ल्यू.जी. आर्चर के अनुसार 1680 ई. में बूंदी शैली के कलाकारों ने कोटा राज्य में अपना निवास बनाया।[24] कोटा के शासक रामसिंह प्रथम (1695–1707) के शासन काल में निर्मित कलाकृतियों पर बूंदी शैली का प्रभाव दृष्टव्य है। राजाराम सिंह ने कोटा शैली को स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया। कोटा के आरम्भिक चित्रों को छोड़कर बाद के अधिकांश भित्ति चित्रों पर स्थानीय प्राकृतिक सौन्दर्य स्पष्ट दर्शित है। आखेट दृश्यों में विशेषतः स्थानीय पाषाण चट्टानों, नदियों के किनारे व जंगल आम व खजूर के वृक्ष मयूर, सारस, शुक पक्षियों का बहुतायत में अंकन हुआ जो कोटा में भित्ति चित्रों व लघु चित्रों में स्पष्ट परिलक्षित है। राजस्थानी चित्रकला की विषय वस्तु पर मध्यकालीन धार्मिक भावना रीतिकालीन साहित्य व संस्कृति का प्रभाव दृष्टव्य है। धार्मिक विषयों में रामायण एवं महाभारत प्रमुख रहे हैं। श्रंगार विषयों में कवियों की रचनाऐं जिनमें बिहारी सतसई, रसिक प्रिया, गीत गोविन्द आदि चित्रों का सृजन हुआ।[25]

राजस्थानी चित्रकला के अन्तर्गत बूंदी कोटा शैली के चित्रों में भी अवतार चित्र दृष्टव्य हैं। भारत कला भवन वाराणसी संग्रह में कागज पर गीत गोविन्द के आधार पर चित्रित लगभग 1600 ई. के मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के चित्र दर्शनीय है। इनमें एक दृश्य अवतार चित्रावली में एक ही पृष्ठ पर श्री हरि के अवतारों को तीन समानान्तर पट्टिकाओं के मध्य चित्रित किया गया है।[26]

वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 119) में श्री हरि का शरीर मानवीय रूप में एवं मुख शूकर युक्त है, श्याम वर्ण युक्त शरीर धारण किए एवं मुख गौर वर्ण का है जो अपने ढ़ाढ़ों पर पृथ्वी को उठाये हुए हैं। वृताकार रूप लिए

पृथ्वी के अन्दर बूंदी शैली में भवनों का वास्तुशिल्प अंकित है। नारंगी रंग के अधोवस्त्र धारण किए श्री हरि पुष्पमाला एवं अन्य अलंकृत आभूषणों से तथा अपने हाथों में मुकुलित पद्मपुष्प के अतिरिक्त प्रचलित आयुधों से सुशोभित है। वराह हरि के चरणों के नीचे ह्यग्रीव नामक दैत्य लेटा हुआ नारंगी रंग का लंगोट पहने अंकित है जिसका वर्ण हरित आभा लिए है। पृष्ठभूमि दो भागों में विभक्त है। ऊपरी भाग में नारंगी आभायुक्त अरुणिमा लिए आकाश एवं बादल है वहीं प्रकृति सौन्दर्य हरितिमा का आवरण ओढ़े हुए दर्शित है, विभिन्न वृक्षों के अतिरिक्त धरती पर मुकुलित पुष्पों का यत्र तत्र अंकन है।

ढूंढार की चित्रकला

पुराने समय में जयपुर और इसके आसपास का भाग ढूंढार क्षेत्र के अन्तर्गत आता था। ढूंढार शैली में आमेर, जयपुर अलवर, शेखावटी, उनियारा आदि का समावेश है।

आमेर शैली के प्राचीन उदाहरण 1600 से 1614 के लगभग आमेर की छतरियों के भित्ति चित्र में संग्रहित है, इसके अतिरिक्त बैराठ, मौजमाबाद, भावपुरा के भित्ति चित्रों में दर्शनीय है।[27] सवाई जयसिंह का शासनकाल (1699–1743) रहा उन्होंने 1727 ई. में जयपुर राजधानी स्थापित की इस काल में निर्मित चित्र उच्च कोटि के हैं।

जयपुर शैली ने लम्बे समय तक अपना वर्चस्वबनाये रखा यह एक स्वतंत्र चित्र शैली के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित किया। आरम्भ में इस शैली के चित्रों पर मुगल प्रभाव दृष्टव्य था। इस शैली के चित्रों की तकनीक, संयोजन वर्ण

विधान, आकृति, वस्त्रालकार को देखकर प्रतीत होने लगता है कि अमुख चित्र जयपुर शैली से सम्बन्धित है। अलवर, भरतपुर, टोक, उनियारा आदि शैलियों पर इसका प्रभाव ज्ञातव्य है।

जयपुर शैली के चित्रों में दशावतार के चित्र भित्ति चित्रों के साथ–साथ पोथी चित्रों में भी दर्शनीय हैं।

सिटी पैलेस जयपुर संग्रहालय स्थित गीत गोविन्द काव्य के आधार वाली 18वीं शती में निर्मित दो पोथियों में दशावतार के चित्र उल्लेखनीय हैं। इन चित्रावली के एक दृश्य में विष्णु भगवान के अवतार स्वरूपों को विविध खण्डों में चित्रांकित किया गया है जिनमें मत्स्यावतार कच्छप अवतार, वराह अवतार के चित्र अंकित हैं।[28]

चण्डीगढ़ संग्रहालय पंजाब में स्थित गीतगोविन्द काव्य के आधार पर 18वीं शती के अन्तिम भाग में जयपुर शैली में चित्रित पोथी की दशावतार चित्रावली ज्ञातव्य है।[29]

गुजरात के वर्नाकुलर सोसाइटी अहमदाबाद में स्थित जयपुर मुगल एवं दक्षिण भारतीय शैलियों में गीतगोविन्द काव्य के आधार पर दशावतार के चित्र उपलब्ध हैं।[30]

ढूढ़ार शैली की एक महत्वपूर्ण शाखा अलवर की चित्र शैली का जन्म अलवर राज्य की स्थापना के बाद ही माना गया है। राव राजा प्रताप सिंह बरुका (1756–1790) की जयपुर राज्य से मतभेद होने के कारण अपनी राजनैतिक चातुर्यता, कुशलता व वीरता के बल पर जयपुर एवं भरतपुर के कुछ भाग पर

क्षैत्राधिकार कर अलवर राज्य की नींव डाली। महाभारतकाल में अलवर के आसपास का क्षैत्र मत्स्य प्रदेश के नाम से ज्ञातव्य है।[31]

जयपुर और दिल्ली शैली के समन्वय से अलवर शैली बनी[32] राजगढ़ के महलों में शीश महल का भित्ति चित्रण कराकर राव राजा बख्तावर सिंह ने यहां की चित्रकला की नींव डाली। तिजारा के राजा बलवन्त सिंह के दरबारी चितेरे जमुनादास, सालिगराम, छोटेलाल, नन्दराज आदि ने अलवर शैली के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिवदान सिंह के समय में गजदन्त की पट्टिका पर अनेकों चित्रों का निर्माण हुआ।[33]

अलवर शैली में भी दशावतार का चित्रण किया गया है जो अलवर संग्रहालय में प्रदर्शित हैं इसमें उपलब्ध सेट विनयसिंह के काल में 1840 ई. में चित्रित किया गया। जिसमें मत्स्य, कूर्म, वराह अवतारों के अतिरिक्त अन्य अवतारों के चित्र ज्ञातव्य हैं।[34]

अलवर शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 120) में वराह अवतार का चित्रण अंकित है। इस चित्र में श्री हरि का वर्ण नीलाक्ष है जो शूकर मुख युक्त अपने श्वेत दन्तों पर पृथ्वी का भार वहन करते हुए अंकित है। पृथ्वी में चट्टान के ऊपर भिन्न–भिन्न स्थानों पर वास्तुशिल्प एवं वानस्पतिक सौन्दर्य चित्रांकित है। श्री हरि शीष पर स्वर्ण मुकुट, पीत अधोवस्त्र, रक्तवर्णीय दुपट्टा गले में डाले हुए अलंकृत आभूषण एवं श्वेत व पीताभ पुष्पयुक्त लम्बी माला धारण किए हुए तथा अपने अग्र भाग में तलवार को इस प्रकार पकडे हैं मानों राक्षस का वध करने को उत्सुक हैं उनके मुख पर रौद्र भाव स्पष्ट रूप से दर्शित है। वराह भगवान के पृष्ठ हस्त में स्वर्ण गदा एवं शंख शोभित हैं।

श्री हरि के सम्मुख राक्षस हाथ में गदा एवं काली ढाल को पकड़े हुए हैं गौर वर्णीय राक्षस गले में नीलाभ दुपट्टा डाले तथा रक्तिम अधोवस्त्र धारण किए वराह हरि से युद्ध करने को तत्पर हैं।

पृष्ठभूमि विविध भागों में विभक्त है। निम्न भाग में मुकुलित कुसुम पुष्प युक्त सरोवर है जिसके ऊपर की ओर नारंगी रंग से पूरित पाषाणों के यत्र तत्र वानस्पतिक अंकन है। इसके साथ ही हरितिमा युक्त धरातल है जिस पर विविध पुष्प पत्र का चित्रण किया गया है। पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग में श्वेत आभा लिए बादलों का चित्रण है जो हल्की नीली पृष्ठभूमि पर अंकित है। चित्र के ऊपरी भाग में लम्बवत पट्टिका पर हिन्दी एवं उर्दू लिपि में अवतार का नाम उल्लेखित है।

अलवर शैली का ही एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 121) टहला नामक स्थान पर निर्मित धरती की भित्ति पर वराह अवतार का चित्र दर्शनीय है। वराह अवतार धारण किए श्री हरि अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाये हुए है अण्डाकार पृथ्वी के मध्य में अलवर शैली का वास्तु अंकन महल के रूप में अंकित है। श्यामल वर्ण धारण किए चतुर्भुजी हरि के हाथों में प्रचलित आयुधों के साथ वे श्वेत रंग के अधोवस्त्र से सुसज्जित है।

वराह के चरण कमलों के नीचे काले वर्ण में असुर लेटे हुए शोभायमान हैं। वराह के चरणों के नीचे दबा होने के कारण वह उठने में असमर्थ है। पृष्ठभूमि द्विभाग में विभक्त है जिसमें धरातल पर हल्के भूरे रंग की पृष्ठभूमि पर लाल व स्लेटी कलर के संयोजन से पुष्प पत्रों का चित्रांकन है वही ऊपरी भाग की पृष्ठभूमि में हल्के नीले रंग से पूरित आकाश का सपाट अंकन है।

अम्बर शैली

राजस्थान की प्राचीन राजधानी आमेर की चित्रकला में जयपुर शैली का प्रादुर्भाव हुआ, 1728 ई. में नवनिर्मित शहर जयपुर में इस राजधानी का विलय हो गया। जयपुर से पूर्व आमेर कुशवाहा शासकों की राजधानी थी।

आमेर अथवा अम्बर के महलों, मन्दिरों के भित्तियों पर दशावतार के चित्र उल्लेखित हैं।

अम्बर चित्र शैली के एक चित्र (चित्र संख्या 122) जो जगत शिरोमणि मन्दिर की भित्ति पर निर्मित है इसमें श्री हरि के मत्स्यावतार का चित्रांकन दृष्टव्य है। चापाकार आकृति लिए जलाशय में अलंकृत मत्स्य मुख से विकसित श्री हरि चतुर्भुजी हैं जिनके हाथों में क्रमशः पद्म, गदा व संभवतः पुराण अथवा वेद अंकित हैं वे अपने अग्र भाग की भुजा से शंख मुख से उदित राक्षस के केशों को पकड़े हुए हैं। विशाल कान वाले इस राक्षस के हाथों में वेद पकड़े हैं जो श्री हरि को स्वयं द्वारा चुराए हुए वेद दे रहा है। समीप ही ब्रह्मा एवं शिव खड़े हैं। बाघाम्बर पहने एवं नाग को आभूषण बनाए तथा लम्बे केशों से सुसज्जित शिव करबद्ध मुद्रा में खड़े हैं। उनके निकट ही चतुर्मुखी एवं चर्तुभुजी ब्रह्मा अपने हाथों में पद्म, वेद, पुराण एवं कमण्डल हाथों में धारण किए हैं। मत्स्य हरि के पृष्ठ भाग में चार मानवीय आकृतियां हाथों में संभवतः चांवर लिए अंकित हैं। इन आकृतियों की वेशभूषा से वे ऋषि मुनि ज्ञात होते हैं।

अम्बर शैली के अन्य एक चित्र (चित्र संख्या 123) में कूर्मावतार का चित्रण है। कूर्म की पीठ पर स्थित मंदराचल पर्वत के उच्च भाग पर पद्म पुष्प पर

श्री विष्णु आसीन हैं। समुद्र मंथन के इस दृश्य में शेषनाग मंदराचल से लिपटे हुए हैं जो रस्सी का काम कर रहे हैं। शेषनाग के मुख की ओर विभिन्न मुख मुद्राओं में वर्णित राक्षसों का अंकन है जिनके मुख पशु रूप में हैं तथा शरीर मानवीय आकृति लिए दर्शित है। शरीर की त्वचा काली चिकत्तेदार है तथ वे कोपीन वस्त्र पहने हैं मौक्तिक आभूषणों से पूरित हैं वहीं शेष नाग के पूंछ की ओर ब्रह्मा शिव व अन्य ऋषि पूछ पकड़े समुद्र को मथते हुए अंकित हैं। चतुर्मुखी ब्रह्मा शीश पर स्वर्ण मुकुट एवं आभूषणों तथा अधोवस्त्र धारण किए हैं वहीं शिव की जटाओं से बहती गंगा तथा गले में सर्पमाल तथा खुले केश व वाघचर्म के स्थान पर अर्ध अधोवस्त्र धारित हैं। समीप ही खड़े ऋषि दाढ़ी युक्त तथा केशों को जूड़े के रूप में बांधे हुए एवं बाजूबंद के रूप में रुद्राक्ष पहने हुए हैं।

पृष्ठभूमि दो भागों में विभक्त है निम्न भाग में समुद्र का अंकन है तो उच्च भाग में आकाश शोभायमान है जिसमें समुद्रमंथन से निकली सामग्रियों, ऐरावत, गज, कामधेनू, गाय,उच्चैः श्रवा अश्व, अमृत कलश, आदि का चित्रण है, चित्र के ऊपरी भाग में दायीं एवं बायीं ओर चन्द्रमा एवं सूर्य चित्रांकित हैं। इसके अतिरिक्त शेखावाटी, उनियारा, करौली में भित्ति एवं कागज पर अवतार चित्रों का निर्माण किया गया।

जयपुर शैली

1727 ई. में सवाई जयसिंह ने जयपुर शहर को वैज्ञानिक एवं नियमबद्ध रूप में बसाया।[35] महाराजा जयसिंह का काल चित्रकला के लिए महत्वपूर्ण रहा। महाराजा ईश्वरी सिह और माधौसिंह (1750–1768) के समय से जयपुर की

लघुचित्र शैली पर मुगलिया प्रभाव कम होकर विशुद्ध राजपूत शैली की झलक दिखाई देने लगी। महाराजा प्रताप सिंह (1779–1803) के समय में जयपुर शैली चित्रों का सौन्दर्यवर्धन हुआ। सवाई जगतसिंह के समय तक जयपुर शैली परम्परागत रूप में चलती रही और आगे जाकर यह कम्पनी शैली के प्रभाव में आ गई।[36]

जयपुर शैली में निर्मित श्री हरि के मत्स्य कूर्म वराह अवतार के चित्र उल्लेखित हैं। मत्स्य अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 124) में श्री हरि मत्स्य मुख से विकसित होते हुए चित्रित हैं। नील वर्णीय चतुर्भुजी विष्णु जो शीश पर स्वर्ण मुकुट एवं पीत वर्णीय अधोवस्त्र पहने हैं उनके कटि प्रदेश में रक्तिम दुपट्टा बंधा हुआ है वे अलंकृत आभूषणों से पूरित हैं तथा हाथों में प्रचलित आयुधों एवं पद्मपुष्प को धारण किए तथा एक हाथ से श्वेत शंख से उदित होते हुए हरित वर्णीय ह्यग्रीव के केशों को पकड़कर चित्रित हैं। कर जोड़े हुए ह्यग्रीव क्षमा दान हेतु प्रार्थना कर रहा है पीताभ आभा युक्त अलंकृत मत्स्य सरोवर के मध्य में चित्रांकित है तथा सरोवर में मुकुलित पद्मपुष्प पत्रों सहित दृष्टव्य है उच्च भाग की पृष्ठभूमि पर हल्के हरे रंग से पूरित है।

कूर्मावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 125) यह भी जयपुर शैली में निर्मित हं। हरित वर्णीय कूर्म की पट्टिका पर मदाराचंल शोभायमान है जिसके उच्च भाग पर पद्म पर विराजित नीलवर्णीय चतुर्भुजी विष्णु अपने प्रचलित प्रतीक चिन्हों के साथ शोभायित है। श्री हरि के मस्तक पर स्वर्ण मंडित मुकुट एवं छत्र का अंकन है मंदराचल से रस्सी का रूप में लिपटे शेष नाग के मुख की ओर दो

राक्षसों का अंकन है जो कच्छाधारी है तथा दांयीं ओर पूंछ को पकड़े ब्रह्मा एवं शिव खड़े हैं चित्र के ऊपरी भाग में समुद्र मंथन से प्राप्त सामग्रियों का अंकन है जिसमें कामधेनु गौ, अश्व, ऐरावत गज, पारिजात वृक्ष के अतिरिक्त सूर्य, चन्द्रमा को स्थान दिया गया है।

जयपुर शैली में निर्मित वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 126) में नीलवर्णीय वराह मुख धारी श्री हरि अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाए हुए हैं। पीताभ धोती पहने तथा पुष्पमाला एवं अलंकृत आभूषण धारी तथा प्रचलित आयुध से पूरित श्री हरि हरित वर्णीय मुकुटधारी दैत्य के ऊपर रौद्र रूप में विराजमान हैं।

धरा पर लेटा हुआ राक्षस जो लंगोट पहने हैं एवं पूरे शरीर पर चकत्ते बने हैं, देत्य एक हाथ में ढाल व दूसरे में गदा पकड़े हुए है पृष्ठ भूमि तीन भागों में विभक्त है, सबसे ऊपरी भाग की गहरी नीली वर्तुलाकार पृष्ठभूमि में हल्के नीले बादलों का अंकन है। मध्यभाग में हल्के हरे रंग से परिपूर्ण है। निम्न भाग श्वेत रंग में दृष्टव्य है।

जयपुर की लघुचित्र शैली के अन्तर्गत अठारहवीं सदी में कहीं–कहीं टेम्परा पेपर चित्रों को सम्पूर्ण चौबीस भागों में विभक्त कर, श्रीहरि के चौबीस अवतारों का अंकन है। चौबीस खण्डों में विभक्त इन चित्रों के एक भाग में मत्स्य अवतार का चित्रण है। मत्स्य अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 127) में श्वेत मत्स्य मुख से विकसित नीलवर्णीय कमलनयन अपने अलंकृत आभूषणों प्रचलित आयुधों के साथ शोभनीय है। शीर्ष पर स्वर्ण मुकुट पीत अधोवस्त्र पहने विष्णु अपने

एक हाथ से श्वेत शंख से निकलते हुए सींगधारी दैत्य के सींग को पकड़े हुए दाढ़ी मूछ युक्त देत्य गौर वर्णीय है जो आभूषण धारण किये है।

कूर्मावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 128) में काले रंग से पूरित कूर्म की पीठ पर मदराचल विराजित है। मंदराचल के उच्च भाग पर पद्मासीन विष्णु पीताभ अधोवस्त्र पहने शीश पर मुकुट धारण किए तथा प्रतीक चिन्हों के साथ अंकित हैं। मेरू गिरि से लिपटा शेष नाग जो श्वेत व श्याम रंग से पूरित है इसके मुख की ओर काले व श्वेत रंग धारी सींग युक्त दैत्य मूछों एवं ढ़ाढ़ी में दर्शित हैं। वहीं पूछ की ओर ब्रह्मा शिव व ऋषि खड़े हुए हैं। दो भागों में विभाजित पृष्ठभूमि के ऊपरी भाग जो हरितिमायुक्त हैं इससे समुद्र मंथन से निकले उच्चैश्रवा अश्व, श्वेतवर्णीय ऐरावत गज के अतिरिक्त विष्णु के दांयीं एवं बांयीं और संभवतः धन्वन्तरि एवं नारी आकृति को चित्रित किया गया है।

वराह अवतार के एक चित्र में (चित्र संख्या 129) पीताम्बराधारी श्री हरि शूकर मुख वाले वराह को सम्पूर्ण दृश्य के मध्य भाग में चित्रित किया गया है। निजी आयुद्धों से सुशोभित वराह के दंतों पर गौर वर्णीय वसुन्धरा का अंकन है। वराह का दाहिना पैर सीधा तथा बांयां पैर दैत्य की जंघा पर प्रहार करते हुए दर्शाया गया है। दाढ़ी–मूंछ युक्त सींगधारी दैत्य ने नारंगी रंग का उत्तरीय वस्त्र धारण किया है। तीनों भागों में विभक्त पृष्ठभूमि में क्रमशः नीलवर्णीय आकाश, हरितिमायुक्त प्रकृति एवं हल्के भूरे रंग का धरातल चित्रित किया गया है।

राजस्थान की फड़ चित्रकला में भी विष्णु दस अवतारों का एकल चित्रांकन (चित्र संख्या 068) (चित्र संख्या 069), (चित्र संख्या 070) एवं समूह

चित्रांकन (चित्र संख्या 130) दर्शनीय है। कपड़े पर चित्रित इन चित्रों में चटक नारंगी, भूरे, पीले तथा नीले रंगों का बाहुल्य है। गीत गोविन्द आधार पर बने इस चित्र के मध्य भाग में श्री कृष्ण का अंकन है जिनके चारों तरफ विष्णु के दशावतारों का क्रमबद्ध रूप से चित्रित किया गया है।

वहीं एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 131) राजस्थानी शैली का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। कूर्म अवतार का यह चित्र राजस्थान के अन्य चित्रों से भिन है। इस में नील वर्णीय विष्णु की देवत्त आकृति को बहुरंगी कच्छप से उदित होते हुए अंकित किया गया है। जिनके पृष्ठ भाग में मेरू पर्वत से लिपटे शेषनाग का अलंकारिक अंकन है। शेष नाग के फन की ओर भयभीत दैत्यगण एवं पूंछ की ओर देवतागणों का यत्र–तत्र अंकन है। चित्र में समुद्र मंथन से प्राप्त रत्नों का भी सूक्ष्म एवं अलंकारी चित्रांकन किया गया है। जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, गजराज, कल्पवृक्ष, कौस्तुभ्यमणी, अमृतकलश, पद्मासीन लक्ष्मी, रम्भा आदि अप्सरायें नारी मुखाकृति वाली पंखयुक्त, नारी के विकसित वक्षस्थल एवं गाय के थनों सहित भिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित कामधेनु को अंकन इन चित्र की विशिष्टता का परिचायक है। चित्र की पृष्ठभूमि दो भागों में विभक्त है। निम्न भागों में समुद्र एवं ऊपरी भाग में रक्त वर्णीय पृष्ठ भूमि के ऊपर सघन पीत वर्णीय बिंदियों का अंकन किया गया है।

अतः राजस्थान के विस्तृत भू–भागों पर असंख्य कलाकारों ने, विभिन्न संरक्षकों के अधीन भित्तियों एवं पोथियों पर मत्स्य, कूर्म, वराह आदि अवतारों को उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत किये।

पहाड़ी शैली
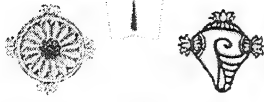
17वीं सदी में ओरंगजैब की उपेक्षा व 18वीं सदी के मध्य तक मुगल साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो जाने के कारण राजकीय सम्मान प्राप्त चितेरे नये आश्रय प्राप्त करने हेतु अन्य स्थानों की ओर मुखरित हुए उनमें से कुछ चित्रकारों ने दक्षिणी हिमालय के लघु राजाओं का आश्रय लिया और उन्हीं के हाथों 18वीं सदी में पहाड़ी चित्र शैली का जन्म हुआ। इन स्थानों पर स्थानीय शैली पहले से ही प्रचलन में थी। अतः स्थानीय शैली व मुगल शैली के समन्वय से एक नई कला शैली प्रकाश में आई जिसमें मुगल प्राकृतिक सौन्दर्य का कलात्मक व अनूठा रंग संयोजन व प्राकृतिक दृश्य संयोजन तथा नारी सौन्दर्य का मनोहर रूप चित्रण दर्शित है।

पहाड़ी चित्रकला का उद्गम 19वीं और 20वीं सदी में हिमाचल और पंजाब में एक साथ हुआ।[37] यद्यपि पहाड़ी चित्रशैली से पहले पंजाब में चित्रशैली परिलक्षित हुई लेकिन हिमालय की वादियों व अंचलों में बसे पहाड़ी क्षेत्रों व पंजाब में उनका विकास एक साथ हुआ तथा अवनति भी लगभग एक साथ हुई।[38]

इसके उद्गम से भारतीय चित्रकला के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय का जुड़ाव हुआ तथा कला जगत की विचारधारा और आलंकारिक रूचि पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव दिखाई दिया।

प्रारम्भ में पहाड़ी शैली के चित्रों में 17वीं सदी में निर्मित मुगल शैली के यर्थाथवादी चित्रों का प्रभाव दर्शित है[39] किन्तु बी.एन. गोस्वामी ने सिद्ध किया कि पहाड़ी चित्रकला मुगलिया कलाकारों की मेहनत का परिणाम नहीं वरन् पहाड़ी

क्षेत्रों में बसे स्थानीय कलाकारों की अपनी मौलिक कृति थी।[40] सर्वप्रथम मेत्काफ नामक व्यक्ति ने कांगड़ा में पहाड़ी चित्रों को देखा।[41] 20वीं सदी में आनन्द कुमार स्वामी ने इन चित्रों के सौन्दर्य को पहचाना और राजपूत शैली का वर्गीकरण दो भागों में किया। (1) राजस्थानी कला (2) पहाड़ी कला।

आनन्द कुमार स्वामी ने कुछ लेख लिखे और 1916 ई. में उनके द्वारा रचित कृति 'राजपूत पैन्टिंग''[42] में पहाड़ी शैली के चित्र अपने अप्रतिम सौन्दर्य व कलात्मक रूप में प्रकाशित हुई।

1930 ई. में श्री जे.सी. फ्रेन्च ने पंजाब की पहाड़ियों का भ्रमण कर मण्डी कुल्लू और चंबा आदि चित्रों का संग्रह करके उसे हिमालय आर्ट नामक पुस्तक में संग्रहीत किया। इसमें फ्रेंच ने गुलेर, मण्डी, कुल्लु, चम्बा आदि राज्यों को पहाड़ी चित्रों को उल्लेख किया है।[43]

पहाड़ी चित्रकला लगभग 15 हजार वर्गमील क्षेत्र तक विस्तृत है यह क्षेत्र जम्मू से टिहरी व पठानकोट से कुल्लू तक लगभग 150 मील लम्बा व 100 मील चौड़ा है।[44] पहाड़ी क्षेत्र मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा आर्थिक रूप से कमजोर है। यद्यपि बाहरी शक्तियों के हमले से ये पहाड़ी क्षेत्र के राज्य बचे ही रहे किन्तु आन्तरिक व आपसी लड़ाई में उलझे रहे। लेकिन फिर भी प्रजा में शान्ति का समर्थन करते थे।[45] इन्ही राज्यों के संरक्षण में चित्रकारों ने अपने आश्रयदाताओं की रूचि के अनुसार विविध विषयों पर चित्र रचनाऐं की जिसके फलस्वरूप पहाड़ी चित्र शैली नवरूप लेकर पल्लवित हुई।

विभिन्न विद्वानों के मतानुसार पहाड़ी कला का जन्म गुलेर में हुआ।

1780 में इस शैली ने कांगड़ा में पदार्पण किया और कालान्तर में यह कांगड़ा शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। कांगड़ा के राजा गोवर्धन चन्द्र व प्रकाश चन्द्र और भूपसिंह ने कला को संरक्षण पोषण प्रदान किया। राजा संसार चन्द्र के संरक्षण में पहाड़ी व मुगल चितेरों ने मिलकर सुन्दर चित्रावली निर्मित की। राजा संसार चन्द्र के समय में पहाड़ी कांगड़ा कला को प्रोत्साहन अधिक मिला व अत्यधिक सुन्दर चित्रों का निर्माण हुआ।

अतः पहाड़ी शैली भी राजस्थानी शैली की भांति विभिन्न उपशैलियों में विकसित हुई जिसकी विशेषताऐं इन चित्रों में दर्शित हैं।

यद्यपि पहाड़ी चित्रकला में रामायण, महाभारत, कृष्णचरित नायिका भेद, बारहमासा, दुर्गाशप्शती, प्राचीन भारतीय नारी जैसे राधा, सीता, पार्वती, दमयन्ती, आदि विषयों का सजीव चित्रांकन कर उनका मनोहर रूप का दर्शन मिलता है लेकिन इन सबके साथ विष्णु के दशावतारों का अंकन पहाड़ी चित्रकला में वैष्णव सभ्यता एवं मान्यता को ध्यान में रखकर अत्यंत सुन्दर चित्रांकन किया गया है।

बसोहली शैली

बसौहली रावी तट पर स्थित लघु राज्य है। पथरीली चट्टाने, चौड़ी व तीव्रता से प्रवाहित होने वाली सरिताओं के तट पर बसोहली स्थित है वर्तमान में यह जम्मू राज्य के कथुआ जिले में स्थित है। इस राज्य की नींव 765 ई. में कुल्लू के राजा भोगपाल ने राणाबिल्लो को हराकर रखी।

1673 ई. में राजा कृपालपाल बसौहली के शासक बने उनके समय में बसौहली कला चरमोंन्नति पर पहुंची। यह कांगड़ा के राजा संसारचन्द्र की तरह

कला प्रेमी शासक था।[46] 1757 में राजा अमृत पाल के समय में भी कला को प्रोत्साहन व संर्वधन मिला। राजा मदनपाल व अमृत पाल के समय में गीत गोविन्द का निर्माण हुआ।[47] वहां की रानी मालिनी विष्णु भक्त होने के कारण उन्होंने तत्कालीन चितेरों 'मानक' व अन्य चित्रकारों से गीतगोविन्द का चित्रण करवाया।[48] गीत गोविन्द से सम्बन्धित लगभग सभी सेटों में दशावतारों से सम्बन्धित चित्रण दर्शित है। एस.एस. रंधावा ने अपनी पुस्तक बसौहली पेन्टिंग में भी गीत गोविन्द के चित्रों का वर्णन किया है।[49] डब्ल्यू.जी. आर्चर ने 'गीत गोविन्द' के चित्रों के सम्बन्ध में कहा "भारत में अन्यत्र चित्रकला में रंग और रेखाओं के स्पष्ट गुण उभरे हैं लेकिन पंजाब हिमालय से बाहर कहीं भी रूमानियत हर्षोन्माद और बिलक्षणता से युक्त इतनी सुन्दर और विशिष्ट अभिव्यक्ति नही मिलती।[50]

गीत गोविन्द के अतिरिक्त रामायण, महाभारत, भागवतपुराण, राक्षस प्रिया के अतिरिक्त दशावतार चित्रण कलाकारों का प्रिय विषय रहा है। यहां के चितेरों ने दशावतार चित्रण में रौद्र रस व युद्धाकंन दृश्यों को प्राथमिकता दी जिनमें वराह व परशुराम चित्रण अधिक किया गया। 'वराह अवतार' तत्कालीन चितेरों का प्रिय विषय रहा जिसके फलस्वरूप वराह व हिरण्यकश्यप युद्ध के दृश्य की चित्रावली की कई श्रंखलाऐं चित्रित की जिन पर मुगलिया प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है। बसोहली राजाओं एवं तत्कालीन मुगल शासकों के सम्बन्ध मधुर होने के कारण व आदान प्रदान होने से चित्रों पर मुगल कला की छाप पड़ना स्वभाविक है।

बसोहली चित्रकला में विष्णु के मत्स्य, कूर्म वराह अवतार के चित्रण में चितेरों ने कलात्मक सौन्दर्य का परिचय दिया है।

भागवतपुराण के बारह स्कन्धों में दशम अध्याय महत्वपूर्ण हैं जिसमें विष्णु अवतार का उल्लेख है वहीं तृतीय स्कन्ध में वराह अवतार से सम्बन्धित चित्रों का अंकन किया गया है।[51]

वराह अवतार से जुड़े एक चित्र में (चित्र संख्या 132) हिरण्याक्ष नामक असुर देवों को डराते हुए चित्रित है इस चित्र में त्याग रूप धारण किये हिरण्याक्ष जिसका सम्पूर्ण शरीर राक्षसी रूप में है पूंछ उठाए मुंह खोले तथा गदा हाथ में पकड़े हुए देवों के पीछे भागते हुए अंकित है गले में व हाथों में मौक्तिक आभूषण शोभायमान है वहीं पेरों के नख अत्यंत नुकीले व बड़े–बड़े है। बड़े–बड़े सीगों वाला हिरण्याक्ष नामक दैत्य लंगोट पहने है।

वहीं आगे किन्तु पीछे मुड़कर देखते हुए देवगण भयभीत होकर भाग रहे हैं जो सुन्दर वस्त्र व अलंकृत आभूषणों व मस्तक पर मुकुट एवं तलवार लटकाए हुए अंकित हैं देवों की वेशभूषा व वस्त्रों पर मुगलिया प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है

वराह अवतार से जुड़े एक अन्य चित्र में (चित्र संख्या 133) में हिरण्याक्ष राक्षम विभावरी को युद्ध के लिए ललकारता हुआ अंकित है। महल में सिंहासन विभावरी स्लेटी जामा पहने कमर में तलवार लटकाऐ हैं तथा मस्तक पर मुकुट धारण किए हैं उनके एक हस्त में धनुष है तो दूसरे हस्त को ऊपर उठाए हैं। विभावरी के सम्मुख सींगधारी विशालमुख वाला हिरण्याक्ष खड़ा है जिसके नुकीले दन्त व जिव्हा बाहर को निकली है अलंकृत आभूषणों को पहने लंगोट लगाये हिरण्याक्ष पूछ को उठाए हुए, युद्ध के लिए ललकारते हुए अंकित हैं वहीं विभावरी वृद्धावस्था के कारण उसके युद्ध आमंत्रण को अस्वीकार कर उसे चेतावनी देता है

कि उसका विनाश श्री हरि के हाथों होगा। इस चित्र में दर्शित मानवाकृति व वस्त्राभूषण पर मुगल प्रभाव देखा जा सकता है।

एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 134) में हिरण्याक्ष का नारद से संवाद दृश्य का अंकन है 1765 ई. में रचित वसौहली शैली के इस चित्र में श्वेत व नीली पट्टिकायुक्त कालीन पर दायीं ओर हिरण्याक्ष बैठा है वहीं बांयीं ओर नारद बैठे हुए वार्तालाप में निमग्न हैं। सिर पर केशों का जूड़ा बांधे कर्ण कुण्डल गले में रुद्राक्ष व पुष्पमाला पहने तथा गमछा डाले हुए नारद अधोवस्त्र पहने हुए बैठे हैं उनके निकट ही वीणा रखी हैं नारद के सम्मुख बैठा विशालमुखी द्विसींगधारी व नुकीले दंतों व नखयुक्त असुरराज हिरण्याक्ष लंगोट पहने पूछउठाए व मौक्तिक आभूषण धारण किये है साथ ही उसने मौक्तिक यज्ञोपवीत भी पहना हुआ है तथा अपने कंधे से गदा को टिकाये हुए है।

नारंगी रंग की पृष्ठभूमि में प्राकृतिक व वनस्पतिक अंकन का मनमोहक चित्रण है। अग्रभाग में चित्रित सरिता में स्लेटी रंग की पृष्ठभूमि पर श्वेत रंगों का लहरदार अंकन है। वसौहली शैली में चित्रित वराह व हिरण्याक्ष युद्ध का अत्यंत सुन्दर चित्रण है। हिरण्याक्ष व वराह युद्ध को एक चित्र (चित्र संख्या 135) में भगवान हरि पूर्ण शूकर रूप धारण किए हैं वे अपने नुकीले दन्तों पर अण्डाकार रूप लिए पृथ्वी को उठाए हैं। नारंगी रंग की पृष्ठभूमि लिए पृथ्वी के मध्य में श्वेत रूपी गौमाता बैठी हुई हैं जो पृथ्वी स्वरूपा हैं, उनके चहुँ ओर महलों व भवनों के अतिरिक्त प्राकृतिक सौन्दर्य का चहुओर चित्रण है, विशाल शरीर धारण किया गया है।

वराह भगवान के सम्मुख ही हरित वर्णीय द्विसींगधारी असुरराज अंकित हैं जिसके सींग ऊपर की ओर स्वर्ण जड़ित हैं। मुख खोले श्वेत नुकीले दन्तों से डराता हुआ हिरण्याक्ष रक्तिम वर्ण का कच्छा पहने है तथा कमर में पीत वर्णीय पटका लटकाए व हाथों में स्वर्ण गदा पकड़े है। अलंकृत स्वर्णिम व मौक्तिक आभूषण धारण किये असुर के हाथों व पैरों के अत्यंत नुकीले नख हैं तथा चेहरे व शरीर की त्वचा पर अंकित वल्याकार रेखाओं द्वारा प्रतीत होता है कि त्वचा लटकी हुई है, हरित व काली के सम्मिश्रण युक्त पृष्ठभूमि पर अंकित बारीक श्वेत लहरदार रेखाओं द्वारा चित्रित सिंहासन का अत्यंत सुन्दर अंकन किया गया है जिसके कारण प्रस्तुत दृश्य अत्यंत मनोरम पूर्ण है।

इसी श्रंखला का एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 136) में वराह व हिरण्याक्ष के युद्ध का चित्रण है इस चित्र में शूकर रूप धारी वराह भगवान पृथ्वी को जल से बाहर ले जाते हुए चित्रित हैं।

पैरों की मुद्रा को देखकर यही आभास होता है कि वे भागने को उद्धत हैं वहीं दंतों पर धारण किए पृथ्वी के मध्य बैठी गौमाता बैठी किन्तु उठते हुए अंकित हैं वराह हरि के पृष्ठ में जिव्हा निकाले हाथों से रोकते हुए तथा दूसरे हाथ में गदा पकड़े हिरण्याक्ष का अंकन है।

वराह अवतार से जुडे इस चित्र श्रंखला के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 137) में वराह हरि व हिरण्याक्ष राक्षस का युद्ध दृश्य का अंकन है अर्धमानवीय शूकर मुख धारी श्री वराह के हाथों में शंख, चक्र, पद्म, शोभायमान है वहीं सम्मुख खड़े विशाल मुखी वीभत्स रूप धारण किए असुरराज व वराह हरि गदा से लड़ते

हुए अंकित हैं, शीश पर स्वर्णिम मुकुट तथा अलंकृत आभूषणों व अधोवस्त्र पहने व शरीर पर चन्दन का तिलक लगाए वराह हरि देवत्व स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत हो रहे है। वहीं नुकीले नख, दन्त व द्विसींगधारी विशाल काय वेशभूषा तथा जिव्हा निकाले हिरण्याक्ष असुर का प्रतिबिम्ब जान पड़ता है। वराह युद्ध के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 139) में अर्धमानवीय रूप धारण किए हिरण्याक्ष से युद्ध दृश्य का चित्रांकन है। श्वेत वलयाकार रेखा युक्त सरोवर की पृष्ठ भूमि पर खड़े हुए वराह हरि का मुख शूकरयुक्त है। मस्तक पर स्वर्ण मुकुट पहने, चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में पद्मपुष्प के अतिरिक्त गदा तथा शंख है। शरीर पर स्वर्ण व मोक्तिक आभूषण पहने श्री हरि अधोवस्त्र पहने हैं तथा हिरण्याक्ष से युद्ध करने को तत्पर हैं।

सम्मुख खड़े हिरण्याक्ष हरित वर्णीय व नुकीले दंत नखयुक्त हैं। पूछ उठाए लंगोट पहने असुर राज स्वर्णिम व मौक्तिक आभूषणों से सुसज्जित हैं विशाल मुखी द्विसींगधारी असुर ने अपने त्रिशूल को श्री हरि के ऊपर फेंका जिसके श्री हरि ने अपने चक्र से दो टुकड़े कर दिये। दोनों हाथों को हिरण्याक्ष राक्षस इस तरह फैलाए है मानों वराह हरि को बाहुयुद्ध करने को ललकार रहा है।

वसौहली शैली के वराह अवतार से जुड़ चित्र श्रंखला के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 138) में वराह हरि गदा से राक्षस की छाती पर प्रहार करते हुए चित्रित हैं दोनों हाथों को ऊपर उठाए द्विसींगयुक्त हिरण्याक्ष की छाती से रक्त प्रवाहित हो रहा है वहीं शूकर मुखधारी चर्तुभुजी वराह हरि अपने हाथों में प्रचलित आयुध पकड़े स्वर्ण मुकुट शीश पर धारण किए अलंकृत वस्त्राभूषणों से सुसज्जित

है। चित्र की पृष्ठभूमि ·तीन भागों में विभाजित है। निम्न भाग में श्वेत वलयाकार रेखाओं द्वारा सरोवर को दर्शाया गया है मध्य भाग में हरित वर्णीय धरा का अंकन है वहीं उच्च भाग में श्वेत वर्णीय बादलों में मध्य से झांकते हुए खुश होते हुए ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य देवताओं का चित्रण किया गया है। वराह व हिरण्याक्ष युद्ध दृश्य के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 142) वराह व हिरण्याक्ष को युद्ध करते हुए दर्शाया गया है क्रोधित वराह हरि हिरण्याक्ष से लड़ते हुए तथा अपने चरणों से उसके पैरों पर मारते हुए अंकित है। यह चित्र विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन नामक पुस्तक से संग्रहित हैं जिसके रचयिता देवदत्त पटनायक हैं।[53] वराह अवतार के एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 140) में दानव युद्ध में परास्त व मृत्यु को प्राप्त होते हुए अंकित हैं।

वलयाकार रूपी चित्रित पृष्ठभूमि मं दायीं ओर खड़े शूकरमुखधारी वराह भगवान अपने हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म पुष्प पकड़े हैं तथा शीश पर स्वर्ण मुकुट अलंकृत स्वर्णिम व मौक्तिक आभूषणों को पहने अधोवस्त्र धारण किए श्री हरि के समीप ही परास्त हिरण्याक्ष बैठा किन्तु लेटते हुए अंकित है। विशालमुखी जिव्हा निकाले पूंछ उठाए तथा अपने एक हस्त से दूसरी भुजा पकड़े राक्षस की छाती से अथाह रक्त बह रहा है तथा रक्त की धारा जल में भी प्रवाहित हो रही है। इस प्रकार वराह के हाथों हिरण्याक्ष राक्षस का वध हुआ। प्रस्तुत चित्रित श्रंखला के चित्र ऐफुज्जुद्दीन एफ.एस. द्वारा रचित पहाड़ी पेन्टिंग्स सिक्ख पोर्टेट नामक पुस्तक से संग्रहित किये गये हैं।

वराह हरि के वराह अवतार से जुड़े एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 141)

जिसे मानक व अन्य कलाकारों ने 1730 ई. में चित्रित किया।[52] जलाशय के मध्य खड़े शूकरमुख व अर्ध मानवीय रूपधारी वराह भगवान ने अपने नुकीले दंतों पर पृथ्वी को उठा रखा है वहीं अण्डाकार रूप में दर्शित पृथ्वी के मध्य भवन के निकट पृथ्वी स्वरूपा गौ माता खड़ी हैं जिनके चारों और विविध रूपी चट्टानों व शिलाओं का अंकन है। शीश पर मुकुट पहने चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में प्रचलित आयुधों के साथ पद्म पुष्प शोभायित हैं तथा वे निकट ही बैठे सामने को मुख किए हिरण्याक्ष के पैरों के ऊपर अपने चरण को रखे हैं। नुकीले किन्तु मुड़े हुए सींगों वाले असुरराज की बड़ी–बड़ी मूछें तथा नुकीले दन्त ऊपर की ओर उठे हुए हैं वह एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में ढाल पकड़े तथा एक पैर को मोड़कर बैठे हुए हैं, शरीर पर आभूषणों को धारण किए कोपीन पहने हिरण्याक्ष कमर में पटका बांधे हैं।

पृष्ठभूमि तीन भागों में विभाजित है निम्न भाग में जलाशय अंकित है वह मध्य भाग में दर्शित हरितिमायुक्त धरा पर यत्र तत्र वानस्पतिक अंकन है वहीं उच्च भाग में बादलों का पट्टिकादार चित्रण है जिसके नीचे दो पंछी उड़ते हुए दृष्टव्य हैं।

गुलेर

कांगड़ा के राजा हरीशचन्द्र ने गुलेर राज्य की स्थापना 1405 ई. कांगड़ा की एक शाखा के रूप में की।[54] 17वीं सदी से गुलेर राज्य का सांस्कृतिक विकास हुआ यहां की राजधानी हरितपुर कई वर्षों तक कला का केन्द्र बनी रही।[55] गुलेर के राजा दिलीप सिंह (1695–1730) राजा गोवर्धन सिंह (1730–73 ई.) और राजा प्रकाशसिंह (1873–90) के शासनकाल में गुलेर कला पोषित एवं पल्लवित

हुई।[56] गुलेर राज्य को मुगल संरक्षण मिलने से इसकी प्रतिष्ठा व कला का वैभव बना रहा। इस तथ्य के प्रमाण स्वरूप डॉ. आनन्द कुमार स्वामी की पुस्तक 'राजपूत पेन्टिंग' में उन्होंने 'द्रोपदी चीर हरण' का चित्र प्रस्तुत किया है, जिससे ज्ञात होता है कि कला पर मुगलिया प्रभाव होने के बाद भी हिन्दू धार्मिक विषयों के चित्रों के प्रति कलाकारों का रुझान बना रहा। राजा गोवर्धन सिंह के काल में गुलेर चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर थी। गुलेर के चित्रकारों में 'नैनसुख' महत्वपूर्ण थे।[57]

गुलेर के चित्र अपनी सुन्दर कारीगरी व रंगों के सही मिश्रण का अनमोल संगम है इन चित्रों में मनुष्य के मनोभावों व प्रेम और अनुराग को अत्यंत कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है। रंगों व चित्रों पर मुगलिया प्रभाव स्पष्टतः दर्शित है।

गुलेर चित्रों में रामायण, महाभारत के चित्रों के अतिरिक्त विष्णु के अवतार चित्रों का भी अंकन किया गया है। गुलेर चित्र शैली के अन्तर्गत 1750–75 ई. मे निर्मित श्री हरि के कूर्मावतार का चित्रण किया गया है। कूर्मावतार से जुड़े एक चित्र (चित्र संख्या 143) में समुद्र मंथन का चित्राकन है।[58]

गुलेर शैली के इस चित्र में समुद्र के मध्य निम्न भाग में कूर्म का अंकन है जिसकी पीठ पर मेरू पर्वत धारीदार शंकुआकार है जो नीचे से पतला तथा ऊपर से चौड़ा है। मेरू पर्वत पर लम्बवत् धारियों के मध्य पर्वत श्रंखलाओं को दर्शाकर उसमें यत्र तत्र वानस्पतिक अंकन भी किया गया है। वही पर्वत के उच्च भाग में लघुरूपी वृक्षों तथा पर्वत की चोटियों पर चतुर्भुजी श्री गणेश विराजमान हैं। मस्तक पर शीश मुकुट व अलंकृत वस्त्राभूषणों से सुशोभित श्री गणेश दैत्यों की

ओर मुख किए विराजित हैं। वहीं मेरू पर्वत से लिपटे शेषनाग के मुख की ओर अनेक राक्षस चित्रांकित हैं जो विभिन्न वर्ण, वेशभूषा तथा सींगधारी व पूंछधारी हैं। वहीं बांयीं ओर पूंछ को पकड़े हुए ब्रह्मा व शिव के अतिरिक्त अन्य देवगण अंकित हैं।

समुद्र का चित्रांकन ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित जान पड़ता है। गोलाकार कोमल रेखाओं द्वारा दर्शित समुद्र की लहरों के बीच में अश्व दमयन्ती, कामधेनु, अप्सरा व लक्ष्मी जी लहरों के मध्य अठखेलिया करते हुए चित्रित हैं। वहीं असुरों की ओर समुद्र की लहरों में एक व्यक्ति अंकित है जिसे एक देत्य रस्सी के सहारे से बाहर को निकालते हुए अंकित है वहीं देवगणों की ओर उकडू बैठे देवगण हैं, जो हाथ बढ़ाकर मुकुटधारी अश्व को अपनी ओर खींचते हुए चित्रित हैं उनके निकट ही अमृतकलश रखा है। चित्र के उच्च भाग में बांयी ओर कुछ देवता चित्रित हैं जिनमें से एक अपने सिर पर कलश रखे हैं। चितेरों ने प्रत्येक आकृति को व्यक्ति विशेषताओं के साथ अंकित किया है, जिनमें दाढ़ीयुक्त चतुर्मुखी ब्रह्मा कमण्डल पकड़े मानवीय रूप में दर्शित हैं, वहीं शिव बाघाम्बर पहने केशों का जूड़ा बांधे शोभायित हैं। कूर्म का चित्रांकन सजीव व साधारण है तथा शेषनाग की पीठ को अर्धश्याम वर्ण प्रदान करके छाया प्रकाश दर्शाने का प्रयास किया है, किन्तु कहीं–कहीं पर आड़ी रेखाओं द्वारा छाया प्रकाश का प्रभाव उत्पन्न किया गया है।

कूर्मावतार से जुड़े एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 144) में सुर व असुर द्वारा समुद्र मंथन का चित्र दर्शित हैं[59] इस चित्र में समुद्र मंथन की कथा का चित्रण है। निम्न भाग में दर्शित जलाशय के मध्य से फब्वारा के आकार का मेरू पर्वत

अंकित है, जिसके ऊपर चतुर्भुजी श्री हरि विराजमान हैं। मेरू पर्वत से लिपटा शेषनाग जो मथानी की रस्सी बने हुए हैं, उनके फन की और विचित्र मुखी दैत्य खड़े हैं जो अधोवस्त्रों के अतिरिक्त कमर में पटका बान्धे हैं, उनके पैर पक्षियों के समान हैं जिनके नख नुकीले एवं मुड़े हुए हैं। एक दैत्य का मुख पशु का है तो दूसरे के मुख पर बड़ी–बड़ी आंखे कान, नुकीली नाक तथा ढाढ़ी व मूंछ भी अंकित है। चित्र के दांयीं ओर शेषनाग की पूंछ पकड़े चतुर्मुखी ब्रह्मा जो हाथ में कमण्डल पकड़े है। उनके निकट ही शिव भी खड़े हैं। दानवों के गले में लटकती लघु घटिया मुगलकालीन कृतियों में भी देखी जा सकती है।

कांगड़ा

कांगड़ा शैली पहाड़ी चित्रकला में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस शैली का उदय 18वीं शती में हुआ।[60] इस शैली पर मुगल व राजस्थानी शैली का प्रभाव दर्शित है। इस कला का पल्लवन राजा हमीरचन्द्र (1700–74) व राजा संसार चन्द के काल में हुआ।[61] राजा संसारचन्द्र के काल में सर्वोत्कृष्ट चित्रों का निर्माण हुआ। उक्त राजा संसारचन्द्र के समय के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार 'परखू' एवं मानकू हैं। कागड़ा के चित्रकारों के प्रमुख विषय राधा कृष्ण थे। इस चित्रकारों ने जयदेवकृत गीत गोविन्द, भगवतपुराण, बिहारी सतसई, कविप्रिया, रसिकप्रिया आदि ग्रंथों की चित्रावली ने राधाकृष्ण को अपनी अराधना का विषय बनाया।

इसी प्रकार कांगड़ा शैली में गीत गोविन्द के आधार पर बने चित्रों में दशावतार चित्रों की सूची उपलब्ध है। भारतकला भवन वाराणसी राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली, प्रिंस ऑफ वेल्स, संग्रहालय मुम्बई के अतिरिक्त चण्डीगढ़ संग्रहालय

में अधिक संख्या में दशावतार चित्रावलियों की सूची प्राप्त होती है। अतः पहाड़ी चितेरों के मुख्य चिंतन स्त्रोत श्री हरि के अवतार रहे हैं।[62]

कांगड़ा शैली में विष्णु के दशावतारों का चित्रण बहुतायत में मिलता है। कांगड़ा शैली को एक चित्र इसके मध्य में चित्रित श्री कृष्ण दरबार के चारों ओर आयत व वर्गाकार खण्डों में विभक्त विष्णु के दशावतारों का चित्रण किया गया है। प्रथम वर्गाकार खण्ड में श्री मत्स्यावतार का चित्रण है। (चित्र संख्या 063) जिसमें मत्स्य मुख से निकलते हए्ु नीलवर्णीय चतुर्भुजी श्री विष्णु अंकित हैं, जो पीत व रक्तिम वर्णीय वस्त्रों व अलंकृत आभूषणों से सुशोभित हैं। उनके हस्तों में प्रचलित आयुधों के अतिरिक्त, एक हस्त से श्वेत शंख से निकलते सींगधारी असुर के केशों को पकड़ते हुए अंकित हैं। पृष्ठभूमि के उच्च भाग में वर्तुलाकार श्वेत बादलों का अंकन है, वहीं मध्य भाग में हरितिमा दर्शित है और निम्न भाग में अंकित सरोवर जिसमें मुकुलित पद्म पुष्प पल्लवित होते हुए चित्रित है।

मत्स्यावतार के बाद आयताकार खण्ड में श्री हरि के कूर्मावतार का अंकन है (चित्र संख्या 064) इस चित्र में सरोवर के मध्य कूर्म की पीठ पर मेरू पर्वत का अंकन किया है जिसके ऊपर चर्तुभुजी विष्णु पद्पुष्प पर विराजमान हैं। मेरू से लिपटे शेषनाग की पूंछ की ओर ब्रह्मा व अन्य देवगण खड़े हैं वहीं फन की ओर स्वर्ण मुकुट पहने सींगधारी दैत्यों का अंकन है, जो अलंकृत वस्त्रों व आभूषणों से सुसज्जित हैं चित्र की पृष्ठभूमि मत्स्यावतार के सदृश्य है।

कांगड़ा शैली के वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 065) में श्री हरि वराह अवतार लिए अंकित हैं। सरोवर में खड़े नीलवर्णीय मुख युक्त श्री वराह

भगवान का शरीर मानवीय रूप लिये गौर वर्णीय है, जो पीताम्बर व रक्तिम वस्त्रों व आभूषणों से शोभायित है। मस्तक पर स्वर्ण जड़ित मुकुट पहने वराह भगवान अपने दंतों पर पृथ्वी को उठाए हुए हैं तथा अपने एक अन्य हाथ से सींगधारी देत्य के केश पकड़ते हुए अंकित हैं सींगधारी ह्यग्रीव रक्तिम दुपट्टा गले में डाले व हल्के पीले रंग का लंगोट पहने हाथ में गदा थामें बैठा है, जिसके पैरों के ऊपर श्री हरि अपना एक चरण रखे उसे दबाते हुए चित्रित हैं। इस चित्र की पृष्ठभूमि भी प्रथम व द्वितीय चित्र से साम्य रखती है।

कांगड़ा शैली में दशावतार चित्रण हमें आभूषण रखने वाले बक्से में भी देखने को मिलता है इस बक्से में श्री हरि के मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के अतिरिक्त अन्य अवतारों का चित्रण भी उल्लेखित है।

मत्स्य अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 145) में यह अण्डाकार स्वरूप लिए है जिसके अन्दर लहरदार रेखाओं द्वारा पूरित सरोवर के मध्य मत्स्यमुख से विकसित होते चर्तुभुजी विष्णु विराजमान हैं जिनके हाथों में पद्म, शंख, गदा, चक्र शोभायमान है उनके निकट ही द्विसींगधारी ढांढी, मूंछ युक्त राक्षस हाथ में तलवार व ढाल पकड़े निढाल मुद्रा में अंकित हैं वहीं सरोवर के ऊपरी भाग में तीन चार देव करबद्ध मुद्रा में श्री विष्णु के सम्मुख खड़े उनकी स्तुति कर रहे हैं। कूर्मावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 145) यह चित्र भी अण्डाकार स्वरूप लिए है जिसके मध्य में लहरदार बारीक रेखाओं द्वारा दर्शित सरोवर के निम्न भाग में कूर्म पीठ पर विराजित मेरूपर्वत के उच्च भाग में पद्मासीन श्री विष्णु व लक्ष्मी अंकित है। मेरू पर्वत से लिपटे वासुकि के फन की तरफ विविध रंग रूपी दैत्यगण खड़े हैं जो

वासुकि के शरीर को पकड़े हैं वहीं पूंछ को पकड़े दांयीं ओर ब्रह्मा शिव व अन्य देवता खड़े हैं जो अपने प्रचलित आयुधों व वस्त्रालकारों से शोभित हैं। चित्र की पृष्ठ भूमि दो भागों में विभाजित है। निम्न भाग में सरोवर व उच्च भाग में आकाश दर्शाया है जिसमें चहुंओर यत्र तत्र समुद्र मंथन से प्राप्त ऐरावत गण, धनुष, सप्तमुखी अश्व जिसकी पीठ पर सूर्य देव आसीन हैं अमृत कलश के अतिरिक्त चांद का भी चित्रण किया गया है। अश्व के निकट ही स्त्री–पुरुष बैठे हुए श्री हरि से प्रार्थना करते हुए चित्रांकित हैं।

वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 145) में कोमल रेखाओं द्वारा अंकित सरोवर के मध्य, मुंह ऊपर किये वराह अंकित हैं, जिन्होंने अपने नुकीले दन्तों पर पृथ्वी को उठा रखा है। अण्डाकार रूप में दर्शित पृथ्वी के भवनों, वृक्षों, चट्टानों के अतिरिक्त बैठी हुई गौ माता का भी अंकन है। वही सरोवर में बैठे किन्तु लेटा हुआ सींगधारी दैत्य चित्रित है जो अपने हाथों में तलवार व ढाल पकड़े हुए व लंगोट धारण किये हैं। वराह हरि ने अपने चरण द्वारा उसका एक पैर दबा रखा है।

चम्बा शैली

चम्बा के शासक राज राजसिंह के समय चम्बा चित्रकला खूब पल्लवित हुई चम्बा की कला पर कांगड़ा वसौहली की छाप दिखाई देती है जीत सिंह जो संसार चंद्र (कांगड़ा) के समकालीन थे तथा कला में रूचि रखते थे अतः उनके समय में चित्रकला का विकास हुआ। चम्बा के ही शासक पृथ्वी सिंह का विवाह वसौहली की राजकुमारी से होने के कारण चम्बा व वसौहली की कला का समन्वय

हुआ चम्बा में 18वी शती में बने आरम्भिक चित्रों पर वसौहली शैली का प्रभाव दर्शित है।[63] राजसिंह के समय में चम्बा शैली खूब पनपी उस समय नैनसुख के पुत्र निक्काने गुलेर से चम्बा में आकर अनेक चित्रों का निर्माण किया।[64] अतः चम्बा की चित्रकला में कृष्ण विषयक चित्रों के साथ, भागवत पुराण, गीत गोविन्द काव्य के ऊपर चित्रावलियों का निर्माण हुआ इसके साथ ही विष्णु के दशवतारों का चित्रण पौराणिक गाथाओं के अनुरूप हुआ।

चम्बा चित्रकला में मत्स्यावतार का एक चित्र (चित्र संख्या 147) है इसमें विशाल मत्स्य मुख से विकसित होते चर्तुभुजी विष्णु अपने हाथों में शंख, चक्र, पद्म, गदा लिए ऊपर की ओर मुख किए अंकित हैं, शीश पर मुकुट धारण किए व गले में आलंकारिक स्वर्णिम मौक्तिक माला पहने हुए तथा अधोवस्त्र पहने हैं उनके शरीर पर श्वेत तिलक, उनके दैवीय स्वरूप को प्रदर्शित करने में सहायक है। पृष्ठभूमि दो भागों में विभाजित है। निम्न भाग में कोमल रेखाओं द्वारा सरोवर को चित्रित किया है वहीं मध्यम भाग में हरितिमा युक्त धरा का अंकन है जिसमें लघु पुष्प पत्रावलियों को चित्रित किया है वहीं ऊपरी भाग में श्वेत पट्टिका द्वारा बादलों को अंकित किया जो आकाश का आभास कराता प्रतीत होता है।

चम्बा शैली वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 146) का अत्यंत सुन्दर चित्रांकन दृष्टव्य है। मुकुलित पद्मपुष्प व पत्रों युक्त सरोवर में विराजित श्री वराह भगवान ने अपने नुकीले ढ़ाढों पर पृथ्वी को उठा रखा है अण्डाकार लम्बवत स्वरूप वाली पृथ्वी में वास्तुशिल्प के अतिरिक्त हरितिमा चट्टानों का अंकन है जिसके मध्य श्वेत व श्यामल वर्णवाली गाय खड़ी है जो पृथ्वी का स्वरूप लिए है। शूकर मुख वाले वराह भगवान का शरीर मानवीय रूप लिए है। शीर्ष पर स्वर्ण व

मौक्तिक से सुसज्जित मुकुट व शरीर में अलंकृत स्वर्णिम व मौक्तिक आभूषण पहने तथा गले में श्वेत पुष्प युक्त वैजयन्ती माला धारण किए तथा अधोवस्त्र पहने तथा कंधे पर पटका डाले हुए है जो दोनों और से लहराता हुआ प्रदर्शित है। कमर में पहने अधोवस्त्र को कोमल रेखाओं द्वारा अधिक सुन्दर बनाने का प्रयास किया है।

चतुर्भुजी विष्णु जो हाथों में पद्म, शंख, चक्र लिए हैं तथा एक अन्य हाथों में निकट बैठे हुए असुर के सिर पर गदा से प्रहार करते हुए अंकित हैं। सरोवर में नीचे सिर किए द्विसींगधारी राक्षस के कान हस्ति से साम्य रखते प्रतीत होते हैं तथा उसकी जिव्हा बाहर निकली हुई है हाथों में तलवार व ढाल पकड़े इस राक्षस का शरीर चिकत्तेदार है। कमर में पटका बांधे लंगोट पहने राक्षस की ढ़ाड़ी वर्तुलाकार है तथा वह गले में माला व हाथों में कंगन पहने है। चित्र की पृष्ठभूमि दो भागों में विभाजित है निम्न भाग में सरोवर अंकित है वहीं मध्य भाग में हरितिमा लिए पृथ्वी तथा उच्च भाग में दर्शित आकाश में बादलों को लहरदार श्वेत पट्टिका द्वारा चित्रांकित किया गया है।

चम्बा शैली में ही वराह अवतार का एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 148) में श्यामवर्णीय श्री वराह मानवीय शरीर युक्त है जो अपने नुकीले श्वेत दन्तों पर अर्धवृताकार रूप लिए पृथ्वी को उठाए है वहीं पृथ्वी में वास्तुशिल्प के अतिरिक्त चट्टान पट्टिकाओं के साथ–साथ वानस्पतिक अंकन भी दृष्टिगोचर है। अलंकृत आभूषण व शीश पर स्वर्ण मुकुट पहने प्रचलित आयुधों से पूरित नारंगी अधोवस्त्र धारण किये है तथा अपने एक हाथ से चिकत्तेदार गौरवर्णीय राक्षस की छाती पर

गदा से प्रहार करते हुए अंकित है कमर में लंगोट व पटका लगाये नुकीले नखों व दन्तों व दाढ़ी मूछ युक्त पूंछधारी असुर हाथ में ढाल पकड़े है तथा उसके दूसरे हाथ से गिरी हुई तलवार उसके पैरों के निकट पड़ी है। चित्र की पृष्ठभूमि द्वि भाग में विभाजित है, ऊपरी भाग पीले रंग से पूरित है वहीं निम्न भाग में सरोवर को श्याम रंग में दर्शाया गया है चित्र का हाशिया लाल वर्ण से सपाट रंग द्वारा परिपूरित है।

कुल्लू की चित्रकला

राजा जगत सिंह के वैष्णव धर्मानुयायी होने से उन्होंने कुल्लू चित्र शैली को अधिक बढ़ा दिया। उन्होंने रामायण व भागवत पर आधारित भित्ति चित्रों का निर्माण कराया जो कुल्लू में प्रारम्भिक चित्र कहे जा सकते हैं।[65] अजय सिंह, मानसिंह, देवीसिंह व प्रीतम सिंह (1800 ई.) के समय कुल्लू कला ने काफी विकास किया। ठाकुर गोपाल अर्थात् कृष्ण पर आधारित चित्रों में उनके चारों तरफ अवतार चित्रण देखने को मिलता है यहां की चित्रकला पर नेपाल शैली की छाप दिखाई देती है। यहां पर दो प्रकार की भित्तियों पर भित्ति चित्रों का निर्माण किया गया।

1. विशेष प्रकार की कोणियों को पीसकर उसमें रासायनिक पदार्थ मिलाकर विशेष प्रकार से तैयार की गई भित्ति 'कोणी गच्च' के नाम से प्रसिद्ध है इस तरह के चित्र मणिपुर महल में निर्मित हैं। अन्य कहीं भी पहाड़ी शैली में इस तरह के भित्ति चित्र नहीं देखे गये।[66] सादे प्लास्टर पर भी भित्ति चित्रावलियां तैयार की गई पर दुर्भाग्यवश इनकी संख्या बहुत कम है।

कुल्लू चित्रकला में विष्णु के दशावतारों का चित्रण दर्शनीय है जिनमें से कुल्लू शैली 1800 शती में निर्मित मत्स्यावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 149) में विशाल मत्स्यमुख से उदित होते चर्तुभुजी विष्णु अपने प्रचलित आयुधों व पद्मपुष्प के साथ उल्लेखित हैं। सरोवर में खड़ी मत्स्य की पूंछ ऊपर की ओर है और उसके शरीर के अर्ध भाग में शल्क का अंकन उसके यथार्थ स्वरूप का बोध कराता है, मत्स्य के निकट है श्वेत शंख से निकलते ह्यग्रीव नामक असुर लेटे हुए अंकित हैं जिसका मुख का अस्पष्ट चित्रण है, निम्न भाग में सरोवर व ऊपरी भाग में आकाश का अंकन हैं।

कूर्मावतार के एक चित्र (चित्र संख्या 150) में यर्थाथरूपी कूर्म की पीठ पर चतुर्भुजी विष्णु शंख, चक्र, गदा, पद्मपुष्प के साथ विराजित हैं, गले में लम्बा पटका डाले, हार पहने, शीश पर स्वर्ण मुकुट धारण किए तथा अधोवस्त्र पहने विष्णु को चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि सपाट है व दो भागों में विभाजित है।

वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 151) में शूकर मुख लिए श्री हरि मानवीय शरीरधारी है तथा अपने नुकीले लम्बे दन्तों पर अण्डाकार स्वरूप वाली पृथ्वी को धारण किये है पृथ्वी में वास्तुशिल्प का अंकन दृष्टव्य है। वहीं श्री हरि के पैरों के निकट लेट हुए राक्षस का सिर वराह भगवान के चरणों के पास है और वे अपनी गदा से राक्षस की छाती पर चोट करते हुए चित्रांकित हैं, लंगोट धारी द्विसींग व मूंछ व ढ़ाड़ीयुक्त राक्षस कमर में पटका बांधे है तथा उसके पैर ऊपर की ओर उठे हुए हैं द्विभाग में दर्शित पृष्ठभूमि के निम्न भाग में सरोवर काले रंग से पूरित है वहीं ऊपरी भाग में श्वेत रंग का सपाट अंकन है।

जम्मू शैली

जम्मू शैली का समय 17वीं शती से पूर्व का माना गया है।[67] जम्मू में प्रतिष्ठा के कारण अन्य स्थानों के कलाकारों की यहां आवाजाही बनी रही उनमें से कुछ कलाकार यहीं बस गये। अपनी पुस्तक इण्डियन पेन्टिंग इन पंजाब हिल्स में डब्ल्यू जी आर्चर ने 16 चित्रों को प्रकाशित किया जो जम्मू शैली के माने जाते हैं।[68] कुमार स्वामी के अनुसार 18वीं शताब्दी में कोई चित्रकार इस ओर आकृष्ट हुए होंगे परन्तु जम्मू शैली के अस्तित्व का प्रमाण नहीं मिल पाया है।[69]

अतः जम्मू शैली का एक चित्र (चित्र संख्या 152) मानकूट से प्राप्त होता है यह 1700 ई. में निर्मित किया गया है इस चित्र में श्री हरि के वराह अवतार का उल्लेख है, वराह मुख वाले श्री हरि मानवीय रूप में अंकित हैं जो अपने नुकीले दन्तों पर पृथ्वी को उठाए अंकित हैं। अर्ध अण्डाकार रूपी पृथ्वी में भवन, चट्टानों के अतिरिक्त वृक्षों का अंकन शोभनीय है। अधोवस्त्र पहने अंलकृत आभूषणों से सुसज्जित शीश पर मुकुट धारण किए वराह हरि अपने चर्तुभुजी हाथों में शंख, चक्र, पद्म पुष्प से शोभायित हैं तथा एक अन्य हाथ में गदा पकड़े हैं जिससे निकट ही बैठे किन्तु लेटने की मुद्रा लिए राक्षस की छाती पर गदा से प्रहार करते हुए दर्शित हैं। गदा की चोट से राक्षस की छाती से रक्त प्रवाहित हो रहा है जो अपने एक हाथ में तलवार व दूसरे हाथ में ढ़ाल पकड़े हैं द्विसींगधारी नुकीले दन्तों व बड़े कर्णयुक्त राक्षस के शरीर पर चिकत्तेदार त्वचा है तथा वह लंगोट पहने हैं उसके पैर पशु समान हैं।

कश्मीर शैली –

कश्मीर में 16वीं से 18वीं शती के बीच चित्र रचनाऐं हुई। यद्यपि कश्मीर शैली स्वतंत्र रूप में पल्लवित नहीं हो सकी, अपितु उसने राजस्थानी व मुगल शैली के विकास में अपना सहयोग प्रदान किया। तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ के अनुसार, हसुराज नामक मूर्तिकार व चित्रकार ने कश्मीर शैली में अपना योगदान दिया।[70] महाराजा ललितादित्य ने कन्नौंज विजय के उपरांत मध्यप्रदेश में कतिपय चित्रकारों को लाकर कश्मीर शैली में कुछ चित्रों का निर्माण कराया ऐसा विसेन्ट स्मिथ का कथन है। यहां पर कोई स्वतंत्र शैली विकसित नहीं हो सकी परन्तु निजी विशेषताओं को लेकर यहां विभिन्न शैलियों में कलाकृतियों का अंकन हुआ। यह चित्र कश्मीरी पेन्टिंग नामक पुस्तक से संग्रहीत किया है। 20.8 cm x 13 cm की माप वाला यह चित्र दशावतार श्रंखला से लिया है जो इस पुस्तक की फलक 57 पर है इस चित्र के रचियता देवी भगत हैं जो स्वयं को देवी कौल कश्मीरी कहते हैं।[71]

वराह अवतार क एक चित्र (चित्र संख्या 153) कश्मीरी चित्रकला का उदाहरण है इसमें द्विसींगधारी पूंछयुक्त राक्षस के ऊपर खड़े वराह भगवान ने अपनी ढ़ाढ पर पृथ्वी को उठाया हुआ है जिससे मानव जाति व पृथ्वी जलमग्न होने से बच गई। चित्रकार ने वराह हरि को सर्वशक्तिमान नील वर्णीय पीताम्बर वस्त्रों से सुशोभित कर अवतार रूप में उनका अंकन किया है उसकी चर्तुभुजाओं में शंख, चक्र, गदा व पद्मपुष्प सुशोभित है।

विशाल नेत्रों वाला मूंछयुक्त राक्षस गले व हाथों में आभूषणों के साथ

लंगोट पहने है तथा कर्ण कुण्डल और पैरों में पाजेब पहने अपने एक हाथ से श्री हरि के चरणों को पकड़े है।

गले में पटका डाले व आलंकारिक अधोवस्त्र पहने श्री हरि के दन्तों पर विराजित अण्डाकार स्वरूप लिए पृथ्वी में वानस्पतिक अंकन के अतिरिक्त विविधरूपी वृक्षों का अंकन है जिसके बीच में भवन को भी दर्शाया गया है वहीं भवन के नीचे श्वेत गाय विराजमान है। पृष्ठभूमि में प्रस्तर पर उत्कीर्ण पुष्पपत्र युक्त वल्लरियों के सदृश्य बिछाव से ऐसा अंकन उस चित्रकला को अलग पहचान देता है वहीं निम्न भाग में चित्रकार ने फूल पत्तियों के मध्य अपना नाम भी अंकित किया तथा उसने गुलाबी, जामुनी, पीले और नीले रंगों का प्रयोग अधिक किया है।

गढ़वाल शैली

मुकुन्दी लाल ने गढ़वाल शैली का जन्म 1658 ई. माना है।[72] शामदास तथा हरदास जो शाहजहां के दरबारी चित्रकार थे तथा दाराशिकोह के साथ राजा प्रीथीपतशाह के दशावतार में 1658 ई. में शरणागत रूप में आये इन्हीं को गढ़वाल शैली का जन्मदाता माना गया है श्यामदास व हरदास की चौथी सीढ़ी में मौलाराम चित्रकार हुआ जो गढ़वाल शैली का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार माना गया।

गढ़वाल शैली का वास्तविक स्वरूप 17 ओर 18वी शती में हमारे समक्ष आता है, राजा पृथ्वीशाह के राज्यकाल से (1646–1660) गढ़वाल राज्य प्रकाश में आया। उसके बाद ललितशाह प्रधुम्न शाह (1797–1804) का शासन रहा जिसके राज्यकाल में नैपाली सेना के गढ़वाल पर आक्रमण कर दिया और उसे अपने अधिकार में कर लिया।[73] गोरखों के आक्रमण में उपरांत प्रधुम्नशाह के भाई राजा

संसारचन्द्र के पास चलें गये और उसके पुत्र सुदर्शन शाह ने अंग्रेजों की शरण ली ऐसी आस्था में कई कलाकार कांगड़ा व अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में चले गए। 1815 में अंग्रेजों ने गढ़वाल को गोरखों के नियंत्रण से आजाद कराकर उसकी बागडोर सुदर्शन को सौंप दी तब सुदर्शन ने कला के प्रति रुझान दिखाया और कांगड़ा के शासक द्वारा अपनी बहनों का विवाह सुदर्शन शाह से करने के बाद वहां से आये चित्रकारों द्वारा पुनः गढ़वाल शैली ने अपना खोया हुआ स्वरूप प्राप्त किया और यह छवि 19वीं शती के आठवें दशक तक रही।[74] कुमार स्वामी के अनुसार गढ़वाल और कांगड़ा की चित्रकारी में बहुत समानता है।[75] गढ़वाल शैली के अध्येता मौलाराम के अपूर्व कार्य के द्वारा इनकी प्रसिद्धि कांगड़ा, सिरमौर गुलेर, मंड़ी आदि कला केन्द्रों तक फैल गई।[76]

गढ़वाल के चित्रकारों ने लौकिक एवं अलौकिक दोनों प्रकार की विषय वस्तु को अपनाया। लौकिक के लिए उन्होंने इतिहास व पुराणों व जनसामान्य को अपना माध्यम बनाया व अलौकिक प्रभाव हेतु उन्होंने पुराणों में वर्णित देवताओं के भिन्न–भिन्न कथानकों को अत्यंत रुचिकर ढंग से चित्रांकित किया। मुकुन्दी लाल की गढ़वाल चित्रकला के पृष्ठ 80–82 पर विष्णु के अवतार चित्रों का दर्शन है जिसमें मत्स्यअवतार का चित्रांकन दर्शनीय है।[77]

गढ़वाल शैली का एक चित्र मौलाराम द्वारा रचित है, मत्स्यावतार के एक चित्र (चि.सं. 154) में श्वेत वर्णीय विशाल मत्स्य मुख से विकसित होते श्री हरि चतुर्भुजी हैं जो अपने चारों हाथों में लाल, श्वेत, पीत व नील वर्णीय ऋग, यर्जुव, साम, अथर्ववेद तथा कटि प्रदेश में पद्म, शंख गदा रखे हैं। उनके गले में पड़ा

दुपट्टा पीतवर्णीय है जो लहरा रहा है तथा स्वर्णमुकुट पहने गले में व हाथों में स्वर्णिम आभूषणों से सुशोभित श्री विष्णु में शीश के पृष्ठ में स्वर्णिम आभामण्डल प्रकाशित है वहीं मत्स्य मुख का श्वेत दन्त तथा उसकी त्वचा पर हल्की रेखाओं व शल्ख द्वारा निर्मित मत्स्य की पूछ नारंगी रंग से पूरित है।

मत्स्य मुख के पास ही नाव का अंकन है जिसके एक कोने से नाग लिपटा है, जो मत्स्य दन्त से बंधा है। नाव में बैठे सप्तऋषि, मनु करबद्ध मुद्रा में बैठे एवं खड़े हुए अंकित हैं गौर व श्वेत वर्णीय ऋषिगण नारंगी, पीत, गुलाबी, श्वेत व हरित वस्त्रों से सुशोभित है तथा रुद्राक्ष को आभूषण के रूप में वरण किये हैं। नाव के निम्न भाग में हल्के भूरे रंग में श्वेत मुख धारी ह्यग्रीव मरा पड़ा है। हरित लंगोट पहने तथा कमर में बैंगनी दुपट्टे में कटार बांधे ह्यग्रीव के हाथ में टूटी तलवार है। निकट ही ढाल पड़ी है उसके पास में टूटी तलवार का शेष भाग दर्शित है, श्वेत मुख धारी ह्यग्रीव के नुकीले दन्त तथा मुख से जिव्हा बाहर निकली है, पृष्ठभूमि सागर का प्रलयकालीन दृश्यांकन दर्शाने हेतु उसमें हल्के स्लेटी रंग की पृष्ठ भूमि पर काली रेखाओं का अंकन द्वारा वर्तुलाकार एवं लहरदार रेखाओं द्वारा चित्रकार ने लहरों व उतार एवं चढ़ाव दिखाने का सार्थक प्रयास किया है। पहाड़ी चित्रकला के अन्य उत्कृष्ट नमूने अथवा अन्य चित्र पहाड़ी चित्रकला के इन चित्रों में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार का चित्रण अत्यंत सुन्दर अंकित है, अतः प्राप्त चित्रों के निर्माण स्थल व चित्रकार के बारे में जानकारी का अभाव होते हुए यह चित्र पहाड़ी कला का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हैं। इन चित्रावलियों में से कतिपय चित्र जो दशावतारों के हैं जिनका अध्ययन इस अध्याय में सचित्र वर्णित है।

मत्स्य अवतार का एक चित्र (चित्र संख्या 155) वेबसाइट www.Crystallotus.com/vishnu/images/052.jpg में से संग्रहीत है। इस चित्र में मत्स्यावतार से जुड़े सम्पूर्ण कथानक को एक श्रंखलाबद्ध रूप में चित्रित किया गया है। चित्र को बांयीं ओर से दांयीं ओर देखने पर चित्र के कला क्रम का स्पष्ट कथानुसार आभास होता है। मत्स्यावतार के इस चित्र में राजा मनु को मत्स्य का एक लघु पात्र में डालते हुए चित्रित किया गया है। बांयीं ओर मुख किये राजा का वस्त्र व केश विन्यास एकदम सामान्य हैं। वहीं चित्रावली में घटना को ओर आगे बढ़ाते हुए जूड़ाधारी साधारण वेशभूषा युक्त मनु दुबारा बड़े पात्र में मछली डाल रहे पानी का चित्रांकन हल्के रंग की रेखाओं द्वारा पूरित है वहीं मत्स्य के शरीर पर कोमल रेखाओं का अंकन हैं निकट ही एक अपेक्षाकृत बड़ा पात्र रखा है और आगे बड़ी मत्स्य का चित्रण है जो पात्र तोड़कर बाहर आ गई। इस मत्स्य के आंख का आकार वृत के स्थान पर परवलनुमा है तथा मुख पर मूंछ व शरीर अलंकृत कंगूरे व पंख चित्रांकित है इसमें मछली का मानवीयकरण करने का प्रयास किया है। वहीं आगे मत्स्य का आकार विशाल है तथा उसके मुख पर आंख, मूंछ व दांत हैं व मत्स्य मुख मानवीय स्वरूप से साम्य रखता प्रतीत होता है जिसे राजा ने समुद्र में छोड़ा है। मत्स्य के चारों ओर आयत का अंकन कर उसे समुद्र रूप देने का प्रयास किया है जिसके चारों ओर पुष्प पत्र का अंकन है वहीं अन्दर पुष्प वल्लरियां अंकित हैं। मत्स्य के पृष्ठ भाग में विपरीत दिशा में मुख किये करबद्ध अवस्था में राजामनु अंकित है जो आलंकारिक वेशभूषाधारी है उनके सम्मुख विशाल मत्स्य समुद्र में अंकित है जिसकी पीठ पर संभवतः विष्णु को आर्शीवाद देते हुए चित्रित है। समुद्र में पाये जाने वाले जीव जन्तुओं का चित्रण भी मत्स्य के आसपास किया है।

मत्स्यावतार का एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 157) यह भी पहाड़ी शैली से प्रेरित है इस चित्र में विशाल सागर में मत्स्यमुख से उदित श्री विष्णु व श्वेत शंख से निकलते ह्यग्रीव राक्षस के युद्धांकन का दृश्य अंकित हैं

श्वेत व स्लेटी आभायुक्त विशाल मत्स्य के मुख से विकसित होते नील वर्णीय चतुर्भुजी विष्णु नारंगी अधोवस्त्र व नारंगी दुपट्टा हाथों में डाले श्वेत बड़ी पुष्पमाला एवं अलंकृत आभूषणों व स्वर्ण मुकुट से सुशोभित श्री हरि अपने शंख से निकलते द्विसींगधारी ह्यग्रीव की छाती के ऊपर अपने चरणों से उसे दबाते हुए अंकित है। श्वेत केशव श्वेत ढ़ाढी मूछ युक्त असुर अपना एक हाथ ऊपर एक हाथ नीचे की ओर किए व भय के कारण मुख से जिव्हा निकालते हुए चित्रित है। राक्षस के सम्पूर्ण शरीर पर लाल व नीले रंग की चिकत्तेदार त्वचा है।

शहरी स्लेटी आभायुक्त सागर के ऊपर हल्की नीली मोटी रेखाओं द्वारा कड़कती हुई बिजली के सदृश्य चित्रांकन किया है। सागर के ऊपरी भाग में विविध वृक्षों का सौन्दर्यपूर्ण अंकन है तथा आकाश में श्वेत वर्णीय बादलों का घुमावदार अंकन से सम्पूर्ण चित्र सौन्दर्यमयी दृष्टव्य है।

मत्स्य अवतार का एक अन्य चित्र (चित्र संख्या 157) गढ़वाल शैली के मौलाराम की कृति से साम्य रखता है। विशाल मत्स्य मुख से विकसित होते चर्तुभुजी विष्णु अपने हाथों में वेद पत्र पकड़े व एक हाथ से, नाव में खड़े सप्तऋषियों सहित मनु को आर्शीवाद देते अंकित हैं। वहीं मत्स्य के दन्त से रस्सी द्वारा बंधी नाव को मत्स्य सहारा दिये है। पृष्ठभूमि में सागर का अंकन है जो कोयल रेखाओं द्वारा वर्तुलाकार व लहरदार स्वरूप लिए पूरित है।

पहाड़ी चित्रकला के एक चित्र (चित्र संख्या 158) यह भी अज्ञात चित्रकार द्वारा रचित है इस चित्र में समुद्र मन्थन का दृश्य अंकित है। मानवीय मुखधारी कच्छप की पीठ पर दण्ड समान मेरू पर्वत के शीर्ष पर, पद्मासीन विष्णु चर्तुभुजाधारी है उनके हाथों में क्रमशः शंख, पद्म सुशोभित है एक अग्र हस्त वरद मुद्रा लिए है। मेरू पर्वत से लिपटे वासुकि में मुख की ओर असुर चित्रांकित है जिनके मुख, पशु समान एवं शरीर मानीवय रूप में वर्णित है वही पूंछ की ओर ब्रह्मा शिव के साथ अन्य देव अंकित हैं जो हाथों में वासुकि को पकड़े हैं अलकृंत आभूषणों व वस्त्रों से सुशोभित ब्रह्मा आदि देवगण श्वेत व श्याम वर्णो से पूरित है। पृष्ठ भूमि द्विभाग में विभाजित है। ऊपरी भाग में समुद्र मंथन से निकले बहुमूल्य रत्न के अतिरिक्त श्री लक्ष्मी, कामधेनु कल्पवृक्ष पारसमणि, अप्सराऐं, ऐरावत, उच्चेश्रवा, सूर्य चन्द्रमा शंख का यत्र–तंत्र अंकन है वहीं निम्न भाग में दर्शित सागर का चापाकार अंकन है जिसकी सतह पर जल में पाये जाने वाले जीव पर अंकित है।

इंटरनेट द्वारा प्राप्त पहाड़ी चित्रकला में मत्स्य अवतार (चित्र संख्या 159) का सौन्दर्यपूर्ण चित्रांकन है। चित्र के मध्य भाग में मत्स्य मुख से विकसित श्री हरि अलंकृत आभूषणों से सुशोभित हैं।

अतः पहाड़ी एवं राजस्थानी शैली में श्री हरि में मस्य, कूर्म, वराह अवतारों का चित्रण भिन्न–भिन्न शैली में विविध रंग संयोजन व विविध वस्तुओं पर अंकित है कहीं पर अवतार के एक घटना को अंकित किया है तो कहीं पर अवतार से जुड़े सम्पूर्ण कथानक की मनोहर चित्राकृति वर्णित है।

सन्दर्भ

1. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास" प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली, 1928, पृ.सं. 209

2. नीरज जयसिंह – "राजस्थानी चित्रकला परम्परा और स्वरूप" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, पृ.सं. 83

3. दास रामकृष्ण "भारत की चित्रकला" इलाहाबाद, 1973, पृ.सं. 42

4. नीरज जयसिंह – "राजस्थानी चित्रकला परम्परा और स्वरूप" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, पृ.सं. 83

5. पंत गायत्रीनाथ – शोध संचय, 1997, पृ.सं. 45

6. चौहान सुरेन्द्र सिंह – "राजस्थानी चित्रकला' नई दिल्ली, 1994, पृ.सं. 5

7. वशिष्ठ राधाकृष्णन – "मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा' जयपुर

8. गोस्वामी प्रेम चन्द्र व संग्राम सिंह – "राजस्थान की लघु चित्र शैली", प्रथम खण्ड, राजस्थान ललितकला अकादमी, पृ.सं. 4

9. वर्मा डॉ. बद्री नारायण – "कोटा भित्तिचित्रांकन परम्परा" (हड़ौती भित्ति चित्रकला की पृष्ठभूमि) राधापब्लिकेशन्स 1989 नई दिल्ली, पृ.सं. 91

10. वर्मा डॉ. बद्री नारायण एवं वशिष्ठ आर.के. – "कोटा भित्तिचित्रांकन परम्परा" (हड़ौती भित्ति चित्रकला की पृष्ठभूमि) राधापब्लिकेशन्स 1989 नई दिल्ली, पृ.सं. 94 तथा

    मेवाड़ के आरम्भिक चित्र, आकृति 80, पृ.सं. 36

11. "रागमाला" (चांवड) 1605 ई. चित्रकार निसारुद्दीन गोपीकृष्ण कनोरिया संग्रह, कलकत्ता।

12. शर्मा लोकेशचन्द्र – "भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास" मेरठ, पृ.सं. 75

13. पंत गायत्री नाथ एवं वर्मा बद्री नारायण – ''राजपूत लघु चित्रकला'' शोध संचय 1997 पृ.सं. 46

एवं कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा, राधा पब्लिकेशन्स 1989, नई दिल्ली, पृ.सं. 95

14. वर्मा बद्री नारायण – ''कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा'', राधा पब्लिकेशन्स 1989, नई दिल्ली, पृ.सं. 95

15. गोस्वामी प्रेमचन्द्र – ''राजस्थान की लघु चित्र शैलियां'' जयपुर, पृ.सं. 46

16. तदैव

17. द्विवेदी प्रेमशंकर – 'गीत गोविन्द' कला प्रकाशन वाराणसी, 1988, पृ.सं. 59

18. वही

19. नीरज जयसिंह – ''राजस्थानी चित्रकला परम्परा और स्वरूप'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी पृ.सं. 87

20. वर्मा बद्री नारायण – ''कोटा की भित्ति चित्रांकन परम्परा'' नई दिल्ली, 1989, पृ.सं. 93–105

21. वाचस्पति गौरेला – ''भारतीय चित्रकला'', चौखम्भा प्रकाशन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 164

22. वही

23. नीरज जयसिंह – ''राजस्थानी चित्रकला परम्परा और स्वरूप'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ.सं. 88

24. आर्चर. डब्ल्यू.जी. – इण्डियन पेन्टिंग इन बूंदी एंड कोटा, पृ.स. 47

25. वर्मा बद्री नारायण – ''कोटा की भित्ति चित्रांकन परम्परा'', नई दिल्ली, पृ.सं. 93–105

26. द्विवेदी प्रेमशंकर – ''पश्चिमी भारतीय लघुचित्रों में गीतगोविन्द'', कला प्रकाशन, वाराणसी, 1988

27. वर्मा बद्री नारायण – "कोटा भित्ति चित्राकंन परम्परा;;, पृ.सं. 97

28. द्विवेदी प्रेमशंकर – "साहित्य एवं कलागत अनुशीलन", कला प्रकाशन वाराणसी, 1988, पृ.सं. 61

29. वही

30. वही

31. माथुर बेला – 'अलवर की चित्रांकन परम्परा' जयुपर भूमिका के अन्तर्गत

32. गोस्वामी प्रेमचन्द्र – "राजस्थान की लघु चित्रशैलियां" प्रथम खण्ड, जयपुर, पृ.सं. 19

33. नीरज जयसिंह – "राजस्थानी चित्रकला : परम्परा ओर स्वरूप", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 89

34. नीरज जयसिंह एवं माथुर बेला – "अलवर की चित्रांकन परम्परा", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 45

35. वर्मा बद्री नारायण "कोटा की भित्ति चित्रांकन परम्परा हाड़ोती भित्ति चित्रकला की पृष्ठभूमि" राधा पब्लीकेशन नई दिल्ली, 1989, पृ.सं. 97

36. नीरज जयसिंह – "राजस्थानी चित्रकला परम्परा और स्वरूप", पृ.सं.89

37. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", 1968, पृ.सं. 209

38. गौरेला वाचस्पति – "भारतीय चित्रकला", चौखम्भा प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 240

39. वही

40. अग्रवाल आर.ए. – "भारतीय चित्रकला का विकास", मेरठ, 1979, पृ.सं. 146

41. द्विवेदी प्रेमशंकर – "पहाड़ी लघुचित्रों में गीत गोविन्द", कला प्रकाशन वाराणसी, 1988, पंचम संस्करण, पृ.सं. 10

42. वही

43. वैध किशोरी लाल एवं द्विवेदी प्रेमशंकर – पहाड़ी चित्रकला, 1969, पृ.सं. 36, पहाड़ी लघु चित्रों में गीत गोविन्द, पृ.सं. 10

44. द्विवेदी प्रेमशंकर – पहाड़ी लघु चित्रों में गीत गोविन्द, पृ.सं. 10

45. वही

46. ब्रह्मा, विष्णु, महेश शिव के पालनकर्ता संहारक सभी हैं।

47. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", 1968, पृ.सं. 136

47. द्विवेदी प्रेमशंकर – "पहाड़ी लघु चित्रों में गीतगोविन्द", कलाप्रकाशन, वाराणसी, पृ.सं. 10

48. वही, पृ.सं. 19

49. वही, पृ.सं. 19

50. वही, पृ.सं. 23

51. ऐफुज्जुद्दीन एफ.एस. – "पहाड़ी पेन्टिंग एण्ड सिक्ख पोर्टेट इन द लाहौर म्यूजियम", लंदन, पृ.सं. 12–27

52. वही, पृ.सं. 6

53. पटनायक देवदत्त – "विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन", प्रथम संस्करण, 1999, प्रकाशक – मिसेस जीन गिनिडाडे, वर्कल्स फीफर एण्ड सिमोन्स लि. मुम्बई, पृ.सं. 31

54. वर्मा अविनाश – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", 1968, पृ.सं. 136

55. सक्सेना एस.एन. – "भारतीय चित्रकला", मनोरमा प्रकाशन।

56. द्विवेदी प्रेम शंकर – "पहाड़ी लघुचित्रों में गीत गोविन्द" कला प्रकाशन, वाराणसी, पृ.सं. 40

57. वही

58. पॉल प्रतापादित्य – कोर्ट पेन्टिंग ऑफ इण्डिया (16–19 शती) कुमार गैलरी नई दिल्ली, पृ.सं. 298

59. ओरी विश्वा चन्द्रा – "ऑन द ऑरीजन ऑफ पहाड़ी पेन्टिंग", चि.सं. 10 नूरपुर (1670–80) हिमाचल स्टेट म्यूजियम, शिमला नई दिल्ली, चि.सं. 10

60. सक्सेना एस.एन. – "भारतीय चित्रकला", मनोरमा प्रकाशन, पृ.सं. 79

61. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", 1968, पृ. सं. 125

62. ओरी विश्वचन्द्रा – "ऑन द ऑरीजन ऑफ पहाड़ी पेन्टिंग", चि.सं.10 नूरपुर (1670–80) हिमाचल स्टेट म्यूजियम, शिमला, नई दिल्ली, चि.सं. 10

63. द्विवेदी प्रेमशंकर – "पहाड़ी लघुचित्रों में गीतगोविन्द", कला प्रकाशन वाराणसी पृ.सं. 50

64. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", 1968, पृ. सं. 143

65. वही, पृ.सं. 145

66. वही, पृ.स. 148

67. सक्सेना एस.एन. – "भारतीय चित्रकला", मनोरमा प्रकाशन, पृ.स. 85

68. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", पृ.सं. 1968, पृ.सं. 157

69. वही

70. वर्मा अविनाश बहादुर – "भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास", पृ. सं. 158

71. गोस्वामी करुणा – "कश्मीरी पेन्टिंग", आर्यन बुक, इन्टरनेशनल नई दिल्ली, पृ.सं. 173

72. मुकुन्दीलाल — ''गढ़वाल चित्रकला'', प्रथम संस्करण 1983, प्रकाशन विभाग नई दिल्ली, पृ.सं.

73. द्विवेदी प्रेम शंकर — ''पहाड़ी लघुचित्रों में गीतगोविन्द'', कला प्रकाशन वाराणसी, पृ.सं. 44

74. वही

75. सक्सेना एस.एन. — ''भारतीय चित्रकला'', मनोरमा प्रकाशन, पृ.सं. 86—87

76. गौरेला वाचस्पति — ''भारतीय चित्रकला'', चौखम्भा प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 221

77. मुकुन्दीलाल — ''गढ़वाल चित्रकला'', प्रथम संस्करण, 1983, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ.सं. 80—82

पंचम अध्याय

लोक कला में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार आकृतियां

अध्याय – 5

लोककला में चित्रित मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार आकृतियां –

जनसामान्य में प्रचलित कला लोककला की श्रेणी में आती है। जनमानस की आन्तरिक अभिव्यक्ति कलात्मक सौन्दर्य के साथ समन्वित होकर सहज सुलभ वस्तुओं का आश्रय लेकर सुन्दर आकार प्राप्त करती है, वही लोक कला कहलाती है।

लोककला का अभ्युदय कला के जन्म से ही परिलक्षित है, प्रागैतिहासिक कालीन मनुष्य अपनी आन्तरिक भावनाओं को प्रस्तर पर चित्र उकेर कर उसे साकार रूप प्रदान करता था, यह भी लोक कला का ही स्वरूप था। इनके चित्रांकन हेतु वह गेरू, चूना, पत्ती आदि रंगों का उपयोग करता था। अतः आदि मानव भी चित्रकला हेतु विषयों के चुनाव में शूकर, मछली, को प्रमुखता देता था। गुहा की भित्तियों पर, चट्टानों पर चित्रित पशु पक्षी लोक कलाओं में दर्शित पशु पक्षियों का विकसित स्वरूप प्रतीत होते हैं। आगे चलकर मनुष्य ने साजसज्जा हेतु गृह की भित्तियों बर्तनों भोजपत्रों और दैनिक जरूरतों की वस्तुओं पर बेल, पुष्पों के आलेखन बनाने शुरू किये। जब उसके अर्न्तमन ने सौन्दर्य को सामाजिक आवश्यकता माना तब वह अलंकरण की ओर आकृष्ट हुआ और उसका परिणाम घर आंगन की भित्तियों, जमीन, बैठक को सवांरने के रूप में दिखाई दिया। वाचस्पति गोरौला के अनुसार कला हमारे पारिवारिक सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन की परम्पराओं के साथ जुड़कर हमारे आंगनों में पल्लवित हुई।[1]

लोककला स्थान विशेष की सांस्कृतिक एवं पारम्परिक मान्यताओं के आंकलन का सशक्त माध्यम है जिसके अन्तर्गत अल्पना, मांडना, विविध भूमि एवं भित्ति चित्र, मेहन्दी, माहवर, गृहकला, लिपाई, पुताई, गोबरकला, मधुबनीकला, बंगाल की कुम्हारी कला, गोदना आदि प्राचीन लोक कलाऐं समाहित हैं। जापान के लोककला की शोध एवं पुनरुत्थान के प्रणेता डॉ. सोयत्सु ने लोक कला की विवेचना करते हुए कहा है कि जन सामान्य द्वारा रचित कृतियां लोककला की श्रेणी में आती हैं।[3]

हरी मोहन पुरवार के अनुसार चित्रकला को जब लोक जीवन द्वारा अंगीकार किया गया, तब यह लोक भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर चित्रकला के रूप में प्रतिबिम्बित हुई। लोक कला परिप्रेक्ष्य एवं शारीरिक अनुपातों से परे होकर नेत्रों को सुख प्रदान करती है। इन चित्रों में चित्रकार अपने नाम नहीं उल्लेखित करता, न ही वह नकल करता है। वह घरों की भित्ति को सजावट हेतु मांगलिक कार्य हेतु, बर्तनों को सजाने के उद्देश्य से तो कभी धार्मिक अनुष्ठान व पारम्परिक अनुकरण के लिए इन चित्रों को प्रकृति रंगों, जैसे आटे, गोबर, गेरू आदि की सहायता से चित्रण कार्य करता है और लोक कला को आगे बढ़ाने का कार्य भारतीय ग्रामीण जनता ने किया।

प्राचीन समय में हवन वेदी के चारों ओर गेरू या चावल के आटे से आलेखन रूप में चौक पूरा जाता है अतः शुभ कार्यों से पहले जैसे तिलक, विवाहोत्सव, यज्ञोपवीत या कोई भी शुभ कार्य के शुरूआत में पूजा स्थल पर अल्पना बनाना शुभ माना जाता था। इसका प्रचलन मौर्य युग में भी था।[4]

लोककला की प्राचीन परम्परा हमें शुंग कालीन सांची को तोरण में उत्कीर्णित जातक कथाओं के लोक चित्रों में दिखाई देती थी, यहीं कारण है कि सांची की कला को इतनी प्रसिद्धि मिली क्योंकि उसमें लोक रूचि का समावेश था।[5]

अजन्ता की चित्रकला पर भी लोक कला का प्रभाव दर्शित है। जैन व अपभ्रंश शैली के चित्रों पर भी लोककला की छाप दिखाई देती है।[6] अतः भारतीय संस्कृति एवं लोककला विभिन्न प्रदेशों के भूमि चित्रों में विविध नामों से दर्शित है जैसे महाराष्ट्र में रंगोली, गुजरात में साथिया, राजस्थान में मांडना, बिहार में कोहवर आदि रूप में दर्शनीय है।

भारतीय कला लोक चित्रों के बिना अधूरी है यद्यपि धर्मिक एवं सामाजिक उत्सवों पर भारतीय नारी घर की दीवारों एवं जमीन पर भिन्न–भिन्न प्रकार की आकृतियों को चित्र रूप में उकेर कर अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त तो करती ही है, साथ ही आनन्दानुभूति को भी प्राप्त करती हैं। अतः लोककला के निर्माण का उद्देश्य धार्मिक भावना के साथ–साथ मनोरंजन भी रहा है।[7] लोककला की यह विरासत भारत में विभिन्न गाँवों, समाजों में अनेकों रूप लिए हमारे समक्ष परिलक्षित है।

लोककला का सामाजिक एवं धार्मिक महत्व भी है। साथ ही प्रकृति प्रेम का भी उसमें समावेश है। कहीं पर ऋतुओं से जुड़े त्यौहारों पर लोकचित्र बनाने का विधान है जिसका उद्देश्य सुखसमृद्धि, मंगल कामना होता है, तो कहीं पर धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक अभिव्यक्ति हेतु देवी–देवताओं से जुड़े चित्र व कथानक

का भी चित्रण परिलक्षित है। अतः भारतीय लोककला में अन्य विषयों के चित्रों के साथ श्री हरि के अवतार चित्रों का बाहुल्य भी है।

भारतीय लोककला में विष्णु के दशावतार का चित्रण भारत में विभिन्न प्रान्तों अनेकों रूप, शैलियों व चटक रंगों के साथ चित्रांकित है। जिनका वर्णन इस प्रकार है –

1. बिहार की लोक कला
   अ. मधुबनी कला
   ब कोहबर कला
2 उड़ीसा की लोक कला
3. बंगाल की लोक कला
4. आन्ध्रप्रदेश की लोक कला
5. इन्टरनेट से प्राप्त लोक कला

1. बिहार की लोक कला

भारतीय लोक संस्कृति व परम्परायें काफी पुरानी हैं अतः प्रत्येक राज्य में किसी न किसी रूप में लोक संस्कृति के दर्शन हो जाते हैं, बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र में दर्शित लोक भित्ति कला पूरे भारत में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है। भारत की लोककला में मधुबनी चित्रकला अत्यंत प्राचीन है।[8] मधुबनी कला, दरभंगा, मधुबनी समस्तीपुर, बेजूसराय, कटिहार, सीतामढ़ी आदि स्थानों पर चित्रित की जाती है।[9] सर्वप्रथम मधुबनी क्षेत्र के चितेरों ने इस कला को पोषित किया इस कारण इसका नाम 'मधुबनी' विख्यात हुआ।

मधुबनी चित्रांकन की परम्परा का शुभारम्भ मैथिल क्षेत्र की महिलाओं द्वारा किया गया। पहले सामाजिक, धार्मिक उत्सवों व शुभ दिनों में महिलाऐं मिट्‌टी द्वारा घर आंगन, भित्तियां आदि को लीपने के पश्चात् लकड़ी की कूची बनाकर उससे सज्जा का कार्य करती थीं परन्तु अब इस कला का चित्रण कागज, कपड़ा एवं लकड़ी पर भी किया जाता है। विषयवस्तु के चुनाव में महाकाव्यों एवं पौराणिक कथानक को प्राथमिकता दी गई। रामायण, महाभारत, शिव पुराण, गौरी पुराण, दुर्गाशप्शती के साथ–साथ विष्णु पुराण में वर्जित दशावतार श्री गणेश, हनुमान आदि से जुड़े विविध प्रसंग मधुबनी कला में प्रस्तुत है।[11] चित्रों में उल्लेखित शिव व शक्ति पुरुष व नारी के प्रतीक है। बड़ी प्राकृतिक सौन्दर्य मत्स्य, मूसक, शुक, कच्छप के साथ–साथ पशु–पक्षियों को भी अंकित किया गया हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य का अंकन प्रष्ठ भूमि की सुसज्जा हेतु किया है।

यहां के चित्रों में रंगाकन की अलग ही प्रक्रिया है। प्रकृति रंगों को रुई तथा फोहे की सहायता से चित्रों को पूरित किया जाता था। मधुबनी कला में श्याम रंग का प्रयोग अधिक किया गया है। बांस की तीली एवं सूत के धागों द्वारा निर्मित कूची द्वारा आकृति व रेखायें बनाई जाती हैं।[12] मिथिला की मनोहारी चित्रकला मधुबनी में विष्णु में मत्स्य, कूर्म वराह अवतार के चित्र कहीं चटक रंगों द्वारा तो कहीं काले रंगों द्वारा चित्रांकित है। मधुबनी कला में मत्स्य अवतार विविध रूपों में चित्रांकित है कहीं पर मत्स्य के अन्दर श्री हरि बांसुरी बजाते हुए अंकित हैं तो कहीं पर मत्स्य मुख से विकसित होते हुए चित्रांकित हैं।

मधुबनी कला का एक चित्र (चि.सं.160) में मत्स्य अवतार का चित्र

अत्यन्त सुन्दर निर्मित है। विशाल रूप लिए मत्स्य की काले रंग की दो वृत्ताकार चक्षु है मत्स्य की त्वचा हल्के भूरे रंग की हैं, जिस पर निर्मित शल्क क्रमशः लाल, नारंगी, श्याम, पीत रूप में अंकित है। मत्स्य के चित्र की बाहरी रेखा क्रमशः श्याम व रक्तिम वर्ण में दर्शायी गई है। मत्स्य के पंख श्याम, नारंगी व पुनः श्याम रंग से पूरित हैं।

मत्स्य के अन्दर बांसुरी बजाते श्री हरि कृष्ण रूप में निर्मित हैं जो श्याम वर्णीय हैं। मत्स्य पर मोर मुकुट धारण किए तथा पीत व नारंगी रंग का दुपट्टा गले में डाले हुए हैं। गले में लम्बी पुष्पमाला तथा हाथों में बाजूबन्द का अंकन है। चिरपरिचित मुद्रा में अपने पैरों को मोड़े हुए नारंगी अधोवस्त्र धारण किए विष्णु अपने अधरों से बांसुरी लगाये हुए हैं। चटक रंगों से पूरित यह चित्र मधुबनी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मत्स्य अवतार के अन्य चित्र (चि.सं. 161) में विशाल मत्स्य मुख से उदित होते श्री विष्णु का अत्यन्त सुन्दर चित्रांकन किया गया है। बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित जलाशय में विशाल मत्स्य के अतिरिक्त अन्य रूप रंग लिए लघु व वृहद मत्स्य के साथ–साथ कच्छप, सर्प, घोघ आदि जीवजन्तुओं को स्थान दिया गया है। श्री हरि के मत्स्य के पृष्ठ भाग में दर्शित आभा मण्डल हल्के पीत रंग द्वारा दर्शाया गया है। विशाल नेत्रों वाले चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में क्रमशः चक्र, शंख, पद्म पुष्प के अतिरिक्त गदा भी थामे हुए हैं। पृष्ठ भूमि के मध्य में दांयीं एवं बांयीं ओर चापाकार के मध्य अलग–अलग पक्षियों का अंकन है। सम्पूर्ण चित्र में गहरा गुलाबी अथवा रानी कलर (महावरी रंग) एवं नीले पीले रंगों का बाहुल्य है। रिक्त

स्थानों की पूर्ति हेतु ज्यामितीक स्वरूपों के साथ पुष्प पत्रों का भी चित्रण किया गया है।

मत्स्य अवतार का एक अन्य चित्र (चि.सं. 274) में भी श्री हरि के मत्स्य अवतार को चटक रंग से दर्शाया गया है।

मत्स्य अवतार के एक अन्य चित्र (चि.सं. 162) में दो नारी आकृतियों के मध्यम मत्स्यावतार का अंकन है। इस चित्र में श्री हरि को मत्स्य मुख से विकसित होते हुए दिखाया गया है जैसा कि अन्य चित्रों में वर्णित श्री हरि मानवीय पुरुष रूप में अंकित हैं लेकिन इस चित्र में नारी आकृति लिए है जो अपने केशों को जूड़े के रूप में बांधे हुए तथा नसिका में नथ धारण किए हुए है। शीश पर मुकुट धारण किए विष्णु अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित है तथा उनके आसपास विभिन्न रूप लिए लघु रूप में मत्स्य, सर्प व कूर्म अंकित हैं। दोनों हस्तों को ऊपर उठाए विष्णु में एक हाथ से पत्र युक्त वल्लरी को पकड़े हुए हैं। मत्स्य के शल्क चापाकार रूप लिए है जिनके मध्य लम्बवत व लहरदार रेखाऐं उत्कीर्णित हैं वहीं मत्स्य पंख का भराव सीधी व सर्पकार रेखाओं से पूरित है व पृष्ठभूमि में विभिन्न जीवजन्तुओं के अतिरिक्त पुष्प पत्र व ज्यामितीय रेखाओं का अंकन है।

मधुबनी शैली में चित्रित कूर्मावतार का एक चित्र (चि.सं. 275) में श्रीहरि श्वेत पृष्ठभूमि वाले कूर्म मुख से विकसित होते हुए श्याम वन लिए सम्मुख मुद्रा में अंकित हैं मस्तक पर मुकुट धारण किए तथा चर्तुभुजी हाथों में प्रचलित आयुध व पुष्प के साथ शोभायमान हैं। चित्र नीले, काले हरे रंग से परिपूर्ण है जिसमें पीत रंग का बाहुल्य है।

वराह अवतार के इस चित्र (चि.सं. 076) श्री हरि वराह अवतार में दर्शित है। जैसा कि अन्य चित्रों में वराह हरि अपने दन्तों पर पृथ्वी धारित किए चित्रित हैं लेकिन इस चित्र में वे वराह रूप लिए हुए है। सम्पूर्ण चित्र चटक रंग का समायोजन है।

कोहवर कला

विवाह के पश्चात् वर वधु का मिलन कक्ष कोहवर गृह कहलाता है।[13] कोहवर गृह की दीवारों पर दर्शित चित्रकारी को कोहबर लिखना कहते हैं। कोहबर कला प्रमुखतः तीन स्थानों पर लिखी जाती है। प्रथम जहां कुल देवता का निवास स्थान होता है वह स्थान गोसाई घर कहलाता है, द्वितीय कोहवर घर जहां वर–वधु का प्रथम मिलन होता है, तृतीय कोहवर घर का कोनिया यह कोहवर कक्ष का बाहरी भाग होता है इन स्थानों पर अलग–अलग ढंग से चित्रों का निर्माण होता है।[14] नव दंपति के भावी जीवन की मंगल कामना, वंशवृद्धि व बुरी नजर से बचाव के लिए ही इन आकृतियों का निर्माण किया जाता है।

कोहवर चित्रण कार्य घर की समाज की अनुभवी महिलाऐं करती हैं। इसमें तोता, मूषक, कच्छप, कमल पुष्प व पत्र पुरइन पत्र सर्प, चार चिड़िया एक जोड़ा हंस, पान का पत्र, बास, मयूर, घोड़ा, हाथी, पालकी को कोहवर कला में चित्रित किया गया है।[15]

कोहवर चित्र के चारों और मत्स्ययुक्त बार्डर होता है जिसमें मुख्य स्थान में विष्णु के अवतारों के साथ ऊपर की ओर सूर्य, चन्द्र तथा नीचे योगनिया चित्रांकित की जाती है। चित्रों में दर्शित सभी आकृतियां अर्थपूर्ण होती हैं, जिसमें

बांस साधु पुरुष का प्रतीक है, पद्म देव पुरुष का प्रतीक है, नारी लक्ष्मी का।[16] एवं मछली का चित्रांकन पुत्रवान होने के लिए किया जाता है, तो कच्छप वर–वधु के दीर्घायु होने तथा शुभ ज्ञान व विकास का प्रतीक माना गया है, पुरइन पत्र को चित्रित कर वंश वृद्धि की कामना की जाती है जिस तरह पद्म कीचड़ में मुकुलित होकर उस पर कीचड़ का प्रभाव नगण्य है उसी प्रकार नवदम्पत्तियों के लिए यह कामना की जाती है कि वह इस संसार में रहते हुए उससे बुराई दूर रहे, और वह ब्रह्मानन्द आनन्द की प्राप्ति करके ऐसी कामना की जाती है।[17]

यद्यपि विहार की कोहवरकला प्रतीकात्मक रूप लिए है जिसे घर की महिलाऐं ही केवल शुभ व खास अवसरों पर ही लिखतीं है इसमें प्रस्तुत आकृति प्रभावपूर्व व आकर्षक रूप लिए है।

कोहबर कला में श्री विष्णु में दशावतारों का चित्रण प्रमुखता लिए है। मत्स्य अवतार के एक चित्र (चि.सं. 163) जो दरभंगा जिले के डरेमा गांव के बंगाली दस नामक भवन मालिक के घर की महिलाओं द्वारा चित्रित किया गया।[18] नौ खण्डों में विभाजित इस चित्र में प्रथम भाग के तृतीय एवं द्वितीय भाग के षष्ठम खण्ड में वराह एवं कूर्मावतार का चित्रण अन्य देवी–देवताओं के साथ चित्रांकित है।

वराह अवतार के चित्र में पुरुष आकृति लिए मूंछयुक्त भगवान विष्णु अंकित है जिनके मुख से निकले नुकीले दन्तों पर पृथ्वी द्वारा विराजित है। विभिन्न लघु वृत समूहों में पूरित पृथ्वी लघु रूप में अंकित है। चतुर्भुजी विष्णु जिनके शीश पर मुकुट तथा हाथों में शखं, पुराण जिस पर रामराम लिखा है तथा कमण्डल एवं

रुद्राक्ष माला शोभायमान है। पृष्ठभूमि में मयूर व शुक्र तथा पुष्प पत्रों का अंकन है। चित्र में ऊपरी भाग में दाहिनी और हरि अवतार का नाम ''वराह रूप'' लिखा है। षष्ठम खण्ड में इस आयताकार खण्ड में मत्स्य मुख से विकसित होते हुए मूंछ धारी शीश पर मुकुट पहने तथा हाथों में कमण्डल एवं रुद्राक्ष माला पकड़े हुए है। ऊपरी भाग में दाहिनी एवं बांयी ओर चापाकार आकृति में आलंकरिक आलेखन है वही पृष्ठभूमि का भराव पत्रों के अतिरिक्त शंख द्वारा भी किया गया है। चित्र का हाशिया आड़ी रेखाओं द्वारा परिपूर्ण है।

कोहवरकला का अन्य एक चित्र (चि.सं. 164) जिसमें आयताकार पट्टिका के मध्य वृतों द्वारा रचित पुष्प के प्रत्येक पत्र में श्री हरि के अवतारों का अंकन है। वही मध्य में बने वृत में शिवजी आसानासीन है। दांयीं एवं बांयीं और रचित पत्राकृति सदृश में क्रमशः मत्स्य व कूर्म का अंकन है। चित्र का हाशि पुष्प पत्र युक्त वल्लरी से अलंकृत है।

मत्स्यावतार का एक चित्र (चि.सं. 164) जो वृत में सिति वामन अवतार के बांयीं ओर अंकित पत्र के मध्य में निर्मित है। पत्राकार आकृति के मध्य अंकित मत्स्य जिसका मुख एक ही है लेकिन निम्न भाग तीन अलग–अलग मत्स्यरूप में दर्शांकित है। तीन धड़वाली मत्स्य जिसका मुख एक है उसके मुख से उदित होते विष्णु अपने चारों भुजाओं में प्रचलित आयुधों के साथ सुशोभित हैं जिनके मस्तक के पीछे आभामण्डल प्रकाशित है तथा रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु पुष्पों का अंकन किया गया है।

वृत में स्थित वराह हरि के चित्र में दांयी और पत्राकार रूप के मध्य

कूर्मावतार का चित्र है। कूर्मावतार के एक चित्र में (चि.सं. 164) श्री विष्णु कर्म मुख विकसित होते हुए चित्रांकित है जिनके हाथों में चक्र. गदा व पद्म पुष्प है तथा विविध आभूषणों से सुसज्जित श्री हरि के मस्तक के पृष्ठ में आभामण्डल अंकित है चित्र का हाशिया पुष्प पत्र द्वारा पूरित है।

मध्य में निर्मित वृत के चारों ओर अन्य छः वृतों का अंकन है जिसके एक खण्ड में वराह हरि पद्मासीन हैं। (चि.सं. 165) चतुर्भुजी विष्णु के हाथों में क्रमशः चक्र, शंख, गदाव पंकज शोभायमान हैं। शीश पर मुकुट मडित तथा अपने दन्तों पर पृथ्वी को उठाए वराह भगवान के केश घुघराले हैं तथा वे आभूषणों को धारण किये गले में दुपट्टा डाले तथा अर्ध अधोवस्त्र पहने हुए अंकित है। सम्पूर्ण चित्र में रेखाओं का संतुलित धारा प्रवाह है। कहीं पर वे आड़ी हैं तो कहीं सीधी। कहीं पर लहरदार रेखाऐं अंकित हैं तो किसी स्थान पर बिन्दुओं तथा चित्र को पूरित किया है। सम्पूर्ण चित्र विविध रूपी रेखाओं द्वारा सर्वोत्कृष्ट रूप लिए है।

2. उड़ीसा की लोककला

उड़ीसा की लोककला में पट चित्रण कला का महत्वपूर्ण स्थान है। उड़ीसा में रेखा पंचमी उत्सव अगस्त में मनाया जाता है। इस उत्सव पर लोककला का निर्माण करने वाले चितेरे एक पद भैरव, गणेश, शिव के अतिरिक्त विष्णु के चित्र भी बनाते थे। देवी–देवताओं के चित्र घर के पिछवाड़े दरवाजे पर इसलिए बनाये जाते थे जिससे बुरी आत्माओं से घर की रक्षा हो सकें।[19]

ये पट चित्र लकड़ी एवं मिट्टी को जलाकर उस पर बनाये जाते थे। इसके साथ ही मठ व मन्दिरों की भित्तियों पर इन चित्रों का अंकन किया गया।

साथ ही ग्रामों में खेले जाने वाले नाटकों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।[20]

उड़ीसा की लोक कला में दर्शित कच्छप अवतार के एक चित्र (चि.सं. 166) में श्याम वर्ण कच्छप मुख खोले हुए है जिसमें से दो भुजाधारी विष्णु विकसित होते हुए है हाथों में शंख व चक्र धारण किए तथा शीश पर मुकुट एवं गले में हार तथा कटि में करधनी पहने हुए अंकित है। सम्पूर्ण चित्र श्वेत श्याम रेखाओं द्वारा पूरित है।

3. बंगाल की लोक कला

बंगाल की लोक कलाओं में वहां के 'पट चित्र' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इस चित्रविधा को 'पट' कहा जाता है। इस प्रकार के चित्र केवल बंगाल में ही बनते हैं। आसाम तथा उड़ीसा के पट चित्र बंगाल के पट चित्रों से प्रभावित है। इस लोककला में मानवीय आकृति में अनुपात हीनता पाई जाती है। चित्रों में श्वेत, लाल, काले, नीले, हरे व गहरे रंगों का उपयोग अत्यधिक आकर्षक रूप लिए है पट का चित्रण सरल मधुर व आकर्षक रूप लिए आडम्बर हीन होता है।[22]

लकड़ी के पट चित्रों को अधिक चमकीला व सौन्दर्य रूप प्रदान करने के लिए एक विशेष प्रकार की पारदर्शी वार्निश का लेपन किया जाता है जिससे वह चित्र अधिक चमकदार एवं सुन्दर दिखाई देता है।

बंगाल की कला में दर्शित मिदनापुर से प्राप्त दशावतार पर (चि.सं. 167) चार आयतों में विभक्त है जिसमें विष्णु के वराह, नरसिंह, कूर्म, मत्स्य अवतारों को चित्रांकित किया गया है। प्रथम आयत खण्ड में वराह अवतार का अंकन है जिसमें श्री वराह भगवान पृथ्वी को अपने दन्तों पर धारण न कर, कंधे पर

गदा रखते हुए चित्रित है। गौर वर्णीय भगवान विष्णु का मुख शूकर एवं शरीर मानवीय है जो नीले रंग का अधोवस्त्र एवं पीत वर्णीय दुपट्टा पहने है जिस पर नारंगी रंग की रेखाऐं अंकित हैं सम्पूर्ण चित्र सादा एवं सपाट है।

तृतीय आयत खण्ड में (चि.सं. 167) कूर्मावतार का अंकन है जिसमें नील वर्णीय विष्णु हरित वर्ण वाले कूर्म मुख से विकसित होते हुए दृष्टव्य है। चतुर्भुजी विष्णु अपने प्रचलित श्वेत रंग युक्त आयुधों एवं रक्तिम आभा वाले पद्म पुष्प के साथ हैं। मस्तक पर मौर मुकुट धारण किये व गले में श्वेत मौक्तिक माला श्रंगारिक साज सज्जा के साथ अनुपम रूप सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

चतुर्थ आयतखण्ड में मोर मुकुट पहने नील वर्णीय शरीर धारण किए चार भुजाओं वाले श्री हरि विष्णु कूर्मावतार रूप लिए है। श्वेत मत्स्य मुख से उदित होते श्री हरि के हाथों में श्वेत रंग का चक्र, शंख, गदा व लाल रंग का पद्म पुष्प चित्रांकित है। गले में पीत वर्ण युक्त दुपट्टा डाले तथा मौलिक माला पहने हुए हैं। शरीर व चेहरे पर किया श्रंगार कूर्मावतार में विष्णु में श्रंगार जैसा ही दृष्टव्य है। सम्पूर्ण चित्र का हाशिया पुष्पपत्र युक्त है जिसमें लाल रंग के पुष्प तथा हरित वर्ण के पत्रों का अंकन है।

4. आंध्र प्रदेश की लोक कला

आंध्र प्रदेश की लोक कला के एक चित्र (चि.सं. 168) में कूर्मावतार का अत्यंत सुन्दर अंकन है। चित्र के मध्य में स्थित मंदराचल पर्वत के शीर्ष पर पद्मासीन लक्ष्मी का अंकन है जो अपने हाथों में शंख, त्रिशूल, तलवार तथा शीश पर मुकुट धारण किए अलंकृत आभूषणों से सुसज्जित है। मदराचल से लिपटे शेष

नाग के पूंछ की ओर स्वर्ण मुकुट व अधोवस्त्र पहने गौरवर्णीय देवताओं का अंकन है जो क्रमशः रक्त, पीत, हरित वस्त्रों तथा स्वर्णाभूषणों व स्वर्ण मुकुट पहने शेषनाग की श्वेत वर्णीय पूंछ पकडते हैं।

चित्र के दांयीं ओर शेष नाग फन उठाये दर्शित हैं जिसके निकट पीत व नील वर्ण वाले असुर लाल पीले अधोवस्त्र धारण किये है चित्र में दर्शित देवता मुकुट पहने है लेकिन असुर न ही मुकुट पहने ही और न ही गले में उत्तरीय वस्त्र धारण किए हैं। सरोवर श्वेत रेखाओं द्वारा चित्रांकित किया है जिसमें अनेक मत्स्य लघु वृहत रूप लिये हैं।

वहीं उपरी भाग की पृष्ठभूमि में दायी ओर नील वर्णीय स्वर्णाभूषणों से सुसज्जित देवता विराजमान है जो श्वेत व रक्त वर्ण के वस्त्र पहने हैं चतुर्भुजी देवता के हाथ में आयुध शोभा पा रहे हैं।

बांयी ओर गौर वर्णीय देव विराजमान हैं जो सम्भवतः विष्णु है जिनकी पृष्ठ भुजाओं में त्रिशूल व चक्र शोभायित हैं तथा पीत वर्णीय अधोवस्त्र पहने स्वर्णाभूषणों व हरित वर्ण युक्त गले में दुपट्टे डाले हुए हैं। ऊपरी भाग में ही समुद्र मंथन से निकले रत्न, कामधेनु गाय अश्व, पारितजात वृक्ष के अतिरिक्त पीतवर्णीय सूर्य व श्वेत वर्णीय चन्द्रमा का अंकन है।

चित्र को आलंकारिक सौन्दर्य प्रदान करने हेतु यंत्र तंत्र पुष्प पत्र का चित्रांकन शोभनीय है। आन्ध्र पेदश की लोकशैली में कूर्म अवतार का एक अन्य चित्र (चि.सं. 103) भी दर्शनीय है।

5. इंटरनेट से प्राप्त लोककला के चित्र

आज का युग वैज्ञानिक युग कहा जाता है। अतः भारतीय कला के चित्र हमें कागजों, भित्तियों, पटों के अतिरिक्त इंटरनेट पर भी दर्शित हैं।

www.info.sikh.com/24vishnuavtardacqhtml वेबसाइट पर उलब्ध एक चित्र (चि.सं. 160) पर श्री हरि के 24 अवतारों को लोककला में अत्यंत सुन्दर रूप चित्रांकित किया गय है, चार आयत खण्डों में विभक्त इस चित्र पट्टिटा के तृतीय खण्ड में कृष्ण, बलराम, बायन, परशु के बाद मत्स्यावतार का अंकन है।

इसमें श्री हरि मत्स्य मुख से विकसित होते हुए अंकित है। श्यामवर्णीय चतुर्भुजी विष्णु अपने प्रचलित आयुधों व पद्मपुष्प के साथ शोभायित है। श्री हरि का मुख गौर वर्णीय एवं शरीर श्यामम वर्णीय है। वहीं मत्स्य मुख श्यामवर्ण लिए तथा शरीर गौर वर्णीय रूप में दर्शित है। अलंकृत आभूषणों एवं पीत वर्णीय अधोवस्त्र धारण किए श्री हरि का चित्र लोककला का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है।

चतुर्थ आयत खण्ड में द्वितीय आकृति वराह हरि की है (चि.सं. 160) इसमें गौर मुख लिए तथा श्याम वर्ण का शरीर धारण किए वराह भगवान अपनी नासिका पर पृथ्वी का भार वहन किए वृताकार रूप लिए धरणी को उनके दन्त छूते हुए अंकित हैं। मुकुट व अलंकृत आभूषण युक्त श्री हरि के अधो वस्त्र का रंग भी उनके शरीर से साम्य रखता प्रतीत होता है।

चतुर्थ आयत खण्ड के अंतिम आयताकार पट्टिटा के मध्य कूर्मावतार लिए श्री हरि शोभायित है। (चि.सं. 160) श्री हरि का मुख व कूर्म का मुख गौर वर्ण

का ही वहीं कूर्म एवं विष्णु का शरीर श्याम वर्णीय है। कूर्म की पीठ पर ज्यामितीय आलेखन का अंकन है। चर्तुभुजी विष्णु प्रतीक चिन्हों के साथ अधोवस्त्र व अलंकृत आभूषणों के साथ दृष्टव्य है। श्री हरि के मत्स्य, कूर्म वराह अवतार चित्रों में तीनों ही रूप के चरणों के निम्न भाग में तांत्रिक कला कासुन्दर अंकन है जिसके ऊपर वे विराजमान हैं।

लोककला का सुन्दर चित्र इस शैली का उत्कृष्ट नमूना है इन चित्रों में चटक रंगों की अपेक्षा धुधले व मटमेले रंगों का प्रयोग है सम्पूर्ण चित्र का हाशिया अंलकृत पुष्प पत्र युक्त वल्लरियों से परिपूर्ण है। लोककला में चौबीस अवतारों का एक अन्य चित्र (170) भी दर्शनीय है।

इंटरनेट द्वारा प्राप्त लोक शैली के एक अन्य चित्र (चि.सं. 171) जिसमें विष्णु के दशावतार का चित्रण है। आयत खण्ड में सर्व प्रथम मत्स्यावतार व तृतीय में कूर्मावतार का अंकन है।

मत्स्यावतार लिए विष्णु का चित्रण पूर्णतः लोककला से प्रेरित है इसमें विष्णु कटि प्रदेश में मत्स्य का अंकन है जो नीचे की ओर द्वि भाग में विभक्त है। मत्स्य मुख से उदित होते श्री हरि का वर्ण गहरे नील रंग से पूरित है। मस्तक पर श्री हरि लाल वर्ण का मुकुट धारण किए हैं जिनके पीछे पीत व लाल वर्ण संयोजन से आभामण्डल शोभायमान व श्वेत वर्ण से पूरित अलंकृत आभूषण श्री विष्णु शरीर पर शोभा पा रहे हैं। उनके चरणों के नीचे तंत्रकला का चित्रण है जिसकी पृष्ठभूमि लाल है।

तृतीय अवतार के रूप में नील वर्णीय विष्णु कूर्मावतार रूप में दर्शित हैं।

कूर्म मुख से निकलते विष्णु चतुर्भजी हैं जिनके हाथों में गदा शंख, पद्म, चक्र शोभायित है। रक्तिम वर्ण का अर्ध बाजू का कुर्ता पहने श्री हरि जिस पर श्वेत व पीत वर्ण युक्त कशीदाकार का सौन्दर्य दर्शनीय है। कूर्म मुख नील वर्णीय व जिसकी पीठ श्वेत वर्णीय जिस पर रक्तिम रंग के लघु वृतों का अंकन है। इस चित्र में श्री हरि तंत्र कला के एक अन्य चित्रांकन पटल पर विराजित हैं। श्री हरि के मस्तक के पृष्ठ भाग में पीत वर्ण का आभामण्डल रचित है जिस पर निकली किरणें रक्तिम वर्णीय हैं।

लोक शैली का प्रतिनिधित्व करता यह चित्र अन्य से सर्वथा भिन्न है इस चित्र में सभी अवतार तंत्र कला पटल पर विराजमान हैं तथा सभी के पृष्ठ भाग में दर्शित आभामण्डल एक समान है। इसमें श्री हरि का वर्ण गहरा नीलयुक्त है तथा नसिका श्वेत रंग से पूरित है।

मधुबनी शैली से प्रेरित एक अन्य चित्र (चि.सं. 172) जो goole image search.matsya.htm वेबसाइट पर उपलब्ध इंटरनेट द्वारा प्राप्त है इसमें मत्स्यावतार का अत्यंत सुन्दर चित्रण है। विशालाकृति लिए मत्स्य जिसके पंख एवं शरीर पर विविध रंगों द्वारा शल्ख का निर्माण किया है जो अपने पीठ पर वृहदाकार रूप वाली नाव को उठाए हुए है। जिनके निकट ही संभवत मेरू पर्वत है जिससे लिपटे शेषनाग की पूंछ से नाव बंधी है इस चित्र को देखकर यही प्रतीत होता है कि प्रलय काल में उठती तूफानी लहरों से सम्प्रदायियों की रक्षा श्री हरि कर रहे हैं उस नाव को शेषनाग अपनी पूंछ का सहारा देकर उसे बांधे हुए हैं।

नाव को कलात्मक रूप प्रदान करने हेतु ज्यामितीय व चापाकार आकृति

के अतिरिक्त सीधी रेखाओं का अंकन प्रचुर मात्रा में किया गया है। वही हल्के नील रंग से पूरित सरोवर में उठती लहरें काले रंग द्वारा दर्शायी गयी हैं। वहीं जल में यंत्र तंत्र शंख सीप का अंकन है। नाव में बैठे सप्तऋषि जो कर्ण कुण्डल के अतिरिक्त गले में माला एवं यज्ञोपवीत धारण किये हैं जिनमें से एक ऋपि का दुपट्टा नाव के बाहर दर्शित है। प्रथम ऋषि की उत्तरीय नाव के बाहर लहराती हुई अंकित है।

एक अन्य चित्र (चि.सं. 173) जो इन्टरनेट द्वारा प्राप्त है यह चित्र सिल्क पर निर्मित फेब्रिक रंगों द्वारा चित्रित है इस चित्र में सागर के मध्य मेंरू पर्वत आसीन है जिससे लिपटे शेषनाग के शीश को पकड़े संभवत असुर दर्शित हैं चित्र में उनके रूप में वेशभूषा को देखकर वे असुर कम एवं सामान्य जन मानस प्रतीत होते हैं जो मस्तक पर लघु मुकुट व लगोंट धारण किए तथा अलंकारिक आभूषणों से शोभायित है वहीं पूंछ की ओर देवता जल के मध्य अंकित है जिनका कहीं पूर्ण शरीर अंकित है तो किन्हीं को लहरों में डूबे हुए अर्ध रूप में दिखाया गया है।

पूंछ की ओर चित्रित देवता जो शरीर को ढके हुए अर्ध बाजू का कुर्ता, अधोवस्त्र व दुपट्टा पहने हुए हैं तथा मस्तक पर टोपीनुमा आकार का मुकुट पहने हैं। मंदराचल से सटे हुए अमृतकलश उठाए धन्वंतरि का अंकन है जो आलंकारिक वस्त्राभूषणों से सुसज्जित है उनके समीप हाथ फैलाए श्याम वर्णीय का अंकन है जो अमृत कलश को मांगता प्रतीत होता है।

चित्र की पृष्ठभूमि दो भागों में विभक्त है नीचे की ओर सागर का अंकन है तो ऊपरी पृष्ठभूमि में आकाश को चित्रित किया गया है जिसमें चहुंओर यंत्र तंत्र

समुद्र मंथन से निकली सामग्रियों जैसे ऐरावत गज, अश्व, अप्सरा, तीरकमान, पारिजात वृक्ष जिसे पद्मपुष्पाकार दिया हो के अतिरिक्त पुष्पों का अंकन है। चित्र का हाशिया सादा पुष्पयुक्त है जिसकी पुनरावृत्ति चहुंओर है।

http://www.exoticindiaart.com/painting वेबसाइट द्वारा संग्रहित लोक शैली से प्रेरित एक अन्य चित्र (चि.सं. 174) में श्री हरि के कूर्मावतार का अंकन है, विशालाकृति युक्त कूर्म जिसका भूरा हरित है मुख एवं चरण लाल व कत्थई रंग से पूरित है इस कूर्म के मुख से निकलते श्री हरि वर्ण गौर व हल्के नीले रंग के संयोजन द्वारा रचित है। चर्तुभुजी विष्णु के हाथों में डमरू, पुष्प, शंख व त्रिशूल शोभायमान है। मस्तक के पीछे दर्शित आभामण्डल हल्के गुलाबी रंगयुक्त है जिस पर लाल रंग से लघुवृतों का अंकन है।

पुष्ठभूमि लहरदार रेखाकृति द्वारा पूरित है। जिसमें क्रमशः हल्के रंगों का प्रयोग किया है जिसमें हल्का पीला, हल्का हरा, स्लेटी, गुलाबी, गौर वर्णीय रंग, आसमानी कत्थई, भूरा हरित रंग आदि रंगों का समायोजन चित्रकार की रंगों के प्रति अभिरूचि को दर्शाता है।

लोककला से प्रेरित एक अन्य चित्र (चि.सं. 175) भी इंटरनेट द्वारा लिया गया है। इस चित्र में कूर्मावतार को दर्शाता समुद्र मंथन का चित्रण है। हल्के नारंगी रंग की पृष्ठभूमि पर कूर्म की पीठ पर स्थित मंदराचल का ऊपरी भाग नुकीला है मदराचल पर अनेकों लघु वृहत वृतों का रंग बिरंगा अंकन है जिसमें पीत–हरित, रक्तिम वर्णों का बाहुल्य है। मेरू पर्वत से लिपटे वासुकि का भी अत्यंत सुन्दर कलात्मक चित्रण किया है। वासुकि के मुख की ओर नुकीले बालों वाले कुछ

हरित वर्णीय व श्याम बर्ण वाले दैत्यों का अंकन है जिनमें से कोई अर्ध अधोवस्त्र धारण किए है। असुरों के निकट ही अमृत कलश अंकित है।

चित्र में दांयी ओर पूंछ पकड़े शीश पर मुकुट धारण किए गौर वर्णीय देवता व उनके समीप खड़े नीलवर्णीय शिव गले में नाग को धारण किये वाघ चर्म को अधोवस्त्र के रूप में पहने हैं। पूंछ से लिपटे त्रिशूल दण्ड में डमरू बंधा हुआ है अन्य देवता आलंकारिक वस्त्राभूषणों से सुशोभित हैं। रक्तिम मुख यमराज बासुकि के शरीर पर काले–पीले रंग युक्त पट्टिकाओं का अंकन है चित्र के ऊपरी भाग में मेरू पर्वत के दांयीं और उच्चैश्रवा अश्व, कामधेनु गाय, नारगीव श्वेत युक्त धनुष, शंख, बैठी हुई नारी आकृति का अंकन है जिसके समीप ही असुर हाथ उठाये खड़ा है। बांयी ओर मदिराचल पर्वत के समीप चर्तुभुजी लक्ष्मी सुन्दर अलंकृत वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं। जिनके चारों हाथों में पद्म पुष्प शोभा पा रहे हैं उनके बगल में पारिजात वृक्ष तथा वृक्ष के चित्रांकन के बाद संभवतः नृत्य मुद्रा में अंकित नारी दूसरे हस्त के पास ही संभवतः अमृत कलश रखा हुआ है जिससे प्रतीत होता है कि यह नारी आकृति मोहिनी है। किनारे ओर श्याम रंग युक्त ऐरावत गज का अंकन है। चित्र को देखकर यही आभास होता है कि चित्रकार ने अपनी कथा के आधार पर समुद्र मंथन से जुड़ी घटना को पूर्व रूप देने का प्रयास किया है। इंटरनेट द्वारा प्राप्त मधुबनी शैली का एक अन्य चित्र (चि.सं. 174) इस चित्र से साम्य रखता है जिसको पर्वत एवं नाग के फन चित्रांकन में मधुबनी की शैलीगत विशेषताऐं दृष्टिगोचर होती हैं।

इंटरनेट द्वारा प्राप्त मधुबनी शैली का एक अन्य चित्र (चि.सं. 176) से

साम्य रखता है जिसमें पर्वत एवं नाग के फन के चित्रांकन में मधुबनी शैली की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। चित्र में प्राप्त रत्नों एवं सुर असुर का प्रसाद सुन्दर अंकन भी चित्र 175 से साम्य रखता है, वहीं उनमें रंग संयोजन में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इसमें समस्त असुरों को नीलवर्णीय चित्रित किया गया है।

धीरेन्द्र झा द्वारा रचित लोककला का एक अन्य चित्र (चि.सं.177) मधुबनी शैली से प्रेरित है आयताकार रूप लिए इस चित्र में वराह हरि नीले सरोवर के मध्य चित्रांकित हैं। सरोवर में यंत्र तंत्र शंख सीप का अंकन भी किया गया है। श्यामवर्णीय वराह हरि का एक चरण पद्मपत्र पर मुड़ा हुआ आसीन है वही दूसरा चरण जल की सतह पर स्थित है सरोवर में उठती लहरों को मोटी काली रेखाओं से चित्रित किया है। चतुर्भुजी वराह भगवान ने अपने पृथ्वी को दन्तों पर न उठाकर पृथ्वी स्वरूप नारी आकृति जो रक्त व पीत वर्ण के वस्त्र पहने हैं। वे कंधे पर विराजमान है।

श्री हरि अपने प्रचलित आयुधों तथा पद्म पुष्प को हाथों में धारण किये अलंकृत आभूषणों के साथ अंकित है उनके शीश पर ऊपर छात्र शोभायित है कंधे पर बैठी नारी स्वरूप पृथ्वी आकृति करबद्ध मुद्रा में बैठी श्री हरि की ओर देखते हुए अंकित हैं। तथा कशीदाकारी युक्त वस्त्र धारण किए श्री हरि का रक्तिम आभायुक्त रूप लिए कंधे पर पीत वर्णीय दुपट्टा धारण किए जिसके निम्न भाग में अलंकारिक आलेखन है तथा रक्तिम अधोवस्त्र पहने जिस पर श्वेत वर्ण से

कशीदाकारी शोभा पा रही है। श्री वराह भगवान का अनुपम सौन्दर्य युक्त चित्र सर्वोत्कृष्ट रूप लिए है।

इस प्रकार भारतीय चित्रकला में लोक शैली के अन्तर्गत विष्णु के अन्य अवतारों के साथ–साथ मत्स्य कूर्म वराह अवतार का अंकन भी चित्रकारों ने अपनी रूचि के अनुसार किया है। कहीं–कहीं पर चित्रों में एक ही दृश्य को अंकित किया है तो कहीं–कहीं अवतार से जुड़ी पूर्ण घटना को चित्रांकित कर अपनी कुशलता का परिचय दिया है। उनके द्वारा रचित अवतारचित्रों में सहजता व सरलता का परिचय मिलता है। इन अवतार चित्रों के साथ में अन्य प्राकृतिक दृश्यों व पशु पक्षियों को अंकित किया है जिसके पीछे मंगल कामना व सिद्धि समाहित है। भारतीय लोकशैली को जीवित करने में भारतीय नारियों की प्रमुख भूमिका रहीं है।
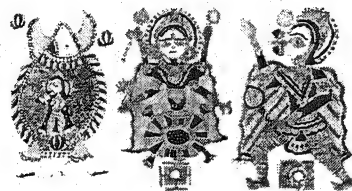
सन्दर्भ

1. गोरोला वाचस्पति – "भारतीय चित्रकला" चोखम्बा सांस्कृतिक प्रतिष्ठान, दिल्ली 1990, पृ.सं. 245
2. बड़ेरिया तारकनाथ – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं. 16
3. गोस्वामी प्रेमशंकर – "भारतीयकला के विविध रूप", पंचशील प्रकाशन जयपुर पृ. 41
4. गौरोला वाचस्पति – "भारतीय चित्रकला", चोखम्बा, सांस्कृतिक प्रतिष्ठान दिल्ली, 1990, पृ.सं. 246
5. वही
6. वही.
7. वही, पृ.सं. 249
8. बड़ेरिया तारकनाथ – "भारतीय चिकित्सा का इतिहास" नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृ.सं. 20
9. गोस्वामी प्रेम शंकर – "भारतीय कला में विविध स्वरूप", पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, पृसं. 64
10. बड़ेरिया तारकनाथ "भारतीय चिकत्रकला का इतिहास नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृ. 2.0
11. गोस्वामी प्रेम शंकर – "भारतीय कला में विविध स्वरूप", पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, पृसं. 65

12 वही

13. ठाकुर उपेन्द्र – "मधुबनी पेन्टिंग्स" अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.70
14. बड़ेरिया तारकनाथ – "भारतीय चित्रकला का इतिहास", नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृ.सं. 17

15. वही, पृ. 18.

16. ठाकुर उपेन्द्र – ''मधुबनी पेन्टिंग्स'', अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.70

17. बड़ेरिया तारकनाथ – ''भारतीय चित्रकला का इतिहास'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृ.सं. 18

18. आचार्य एम – ''इण्डियन पाप्यूलर पेन्टिंग्स इन द इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी'', यू.पी.एस. पब्लिशर्स पृ.सं. 94

19. मोहन्ती बी – ''पाठा पेन्टिंग्स ऑफ उड़ीसा'', पब्लिकेशन डिवजीन मिनिस्ट्री ऑफ इन्फोर्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग ऑफ उड़ीसा, पृ. 4

20 वही

21. बड़ेरिया तारकनाथ – ''भारतीय चित्रकला का इतिहास'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, पृ.सं. 24

22. वही।

विभिन्न शैलियों में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार आकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन

१. जम्मू कश्मीर
२. हिमाचल प्रदेश
३. पंजाब
४. राजस्थान
५. उत्तर प्रदेश
६. मध्य प्रदेश
७. बिहार
८. असम
९. गुजरात
१०. बंगाल
११. महाराष्ट्र
१२. उड़ीसा
१३. गोवा
१४. कर्नाटक
१५. आंध्रप्रदेश
१६. तमिलनाडु
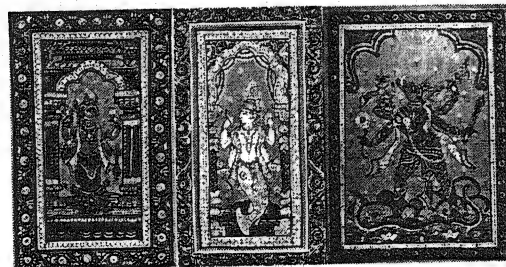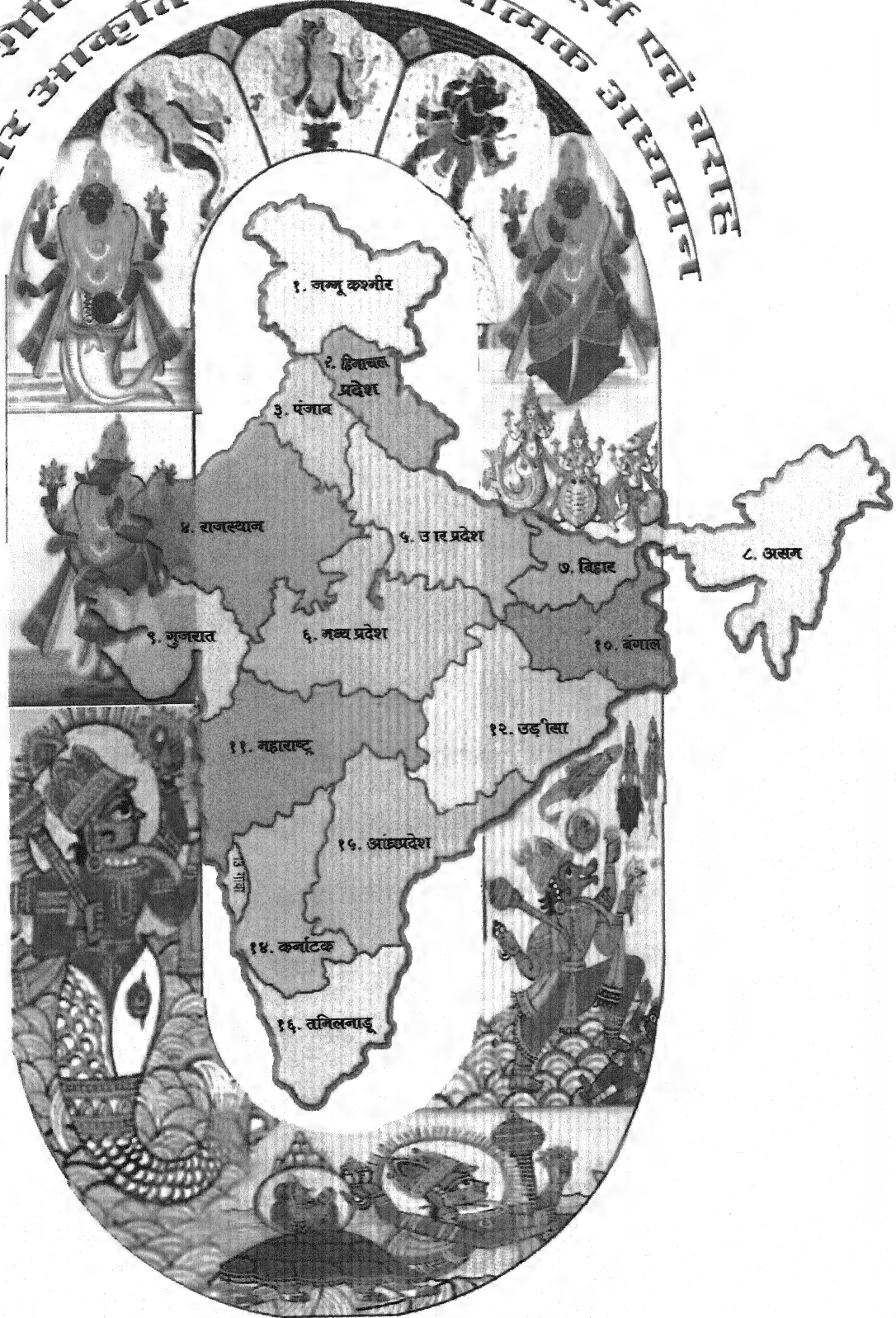
अध्याय – 6

विभिन्न शैलियों में चित्रत मत्स्य कूर्म वराह अवतार आकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय कला में श्री विष्णु के अवतार चित्रण विभिन्न शैलियों में विविधता लिए दर्शित है। प्रस्तुत अध्याय में विष्णु भगवान के मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार आकृतियों को तत्कालीन कलाकारों ने अपनी रूचि और समकालीन शासकों की अभिरूचि एवं धार्मिक भावना से ओतप्रोत होकर भित्तियों, पटचित्रों व कागजों एवं उपयोगी वस्तुओं पर अंकित किया, यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शैली होती है और यह शैली तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक मूल्यों से प्रभावित होती है, यही कारण है कि प्रत्येक शैली की अपनी–अपनी विशेषताऐं होती हैं, साथ ही वह अपने आस–पास के क्षेत्रों में प्रचलित अन्य कला शैलियों से भी सम्बद्ध रखती है। बहुधा विभिन्न रियासतों के बीच मैत्री सम्बन्ध व वैवाहिक सम्बन्ध भी शैलियों में समानता का कारण बनते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप दो अलग–अलग शैलियों के चित्र गुण या तो तत्कालीन चित्रों पर अपना प्रभाव डालते हैं या फिर दो अलग शैलियों के समन्वय से एक नई चित्र शैली जन्म लेती है। वर्तमान की आधुनिक शैली क्षेत्र व किसी एक शैली के बंधन से मुक्त है क्योंकि संचार साधनों के कारण एक दूसरे से तत्काल सम्पर्क स्थापित होने के कारण एक स्थान के चित्र दूसरे स्थान के चित्रों को बहुत प्रभावित करते हैं अतः आधुनिक शैली स्थान विशेष की विशेषताओं से प्रेरित न होकर चित्रकार की कला

शैली से पहचानी जाती है। अवतार चित्रों के विषय में भिन्न–भिन्न शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि आधुनिकतम भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के मुख, मानवीय आकृति रंग संयोजन पृष्ठभूमि व चित्रों में प्रयुक्त विभिन्न तत्वों में कहीं समानता तो कहीं असमानता परिलक्षित होती है।

1. विभिन्न शैलियों में मत्स्य अवतारांकन

भारतीय चित्रकला में मत्स्य अवतार का चित्रण भिन्न–भिन्न प्रकार से चित्रित है। चितेरों ने एक ही विषय को अपनी रूचि व कल्पना के आधार पर विविध रूप में अंकित किया है। जहां अपभ्रंश शैली में मत्स्य का पूर्ण रूपेण यर्थाथ अंकन है। वहीं राजस्थानी शैली में मत्स्य को सागर की सतह पर पूर्ण मत्स्या रूप में चित्रित किया गया है। (चित्र संख्या 115) पहाड़ी शैली में चित्रों में मत्स्य को पूरा बनाया गया है किन्तु उसका निम्न भाग जल की लहरों में अदृश्य है। (चि.सं. 147 व चि.सं.156)

राजस्थानी शैली अप्रभंश शैली के चित्रों में मत्स्य के नेत्र गोलाकार हैं जिसमें दो वृतों के मध्य एक लघु वृत का श्यामल अंकन है, वहीं पहाड़ी शैली के चित्रों में वृत्ताकार के अतिरिक्त पत्राकार नेत्र दर्शित हैं तथा कहीं–कहीं मत्स्य के नुकीले दन्तों के साथ–साथ मत्स्य के मुख पर मूंछ, भोहें व पलकों का चित्रांकन भी किया गया है। (चित्र संख्या 154 व चित्र संख्या 155) पहाड़ी चित्रों में अंकित मत्स्य के नेत्र लम्बवत् पत्राकार के मध्य वृत को स्थान दिया गया है। (चित्र संख्या 147)। मत्स्य की त्वचा पर अंकित शल्क को पूर्ण अंकन अपभ्रंश शैली के अतिरिक्त महाराष्ट्र व गोआ के चित्रों में भी दर्शित है।

जहां अपभ्रंश शैली में (चित्र संख्या 109) मत्स्य मुख गोलाकार है, वहीं पहाड़ी, राजस्थानी लोक शैली के अतिरिक्त आधुनिक शैली में मत्स्य मुख का यर्थाथवादी व आलंकारिक अंकन है। (चित्र संत्रया 154 व चित्र संख्या 068, चित्र संख्या 105) जबकि बंगाल शैली में चित्रित मत्स्यावतार में दर्शित मत्स्य का पूर्णतः सजीवांकन है। (चित्र संख्या 082)। राजस्थानी शैली के चित्रों में अंकित मत्स्य कहीं श्वेत रूप लिए है तो कहीं पर श्वेत व श्याम का अर्ध समागम लिए मत्स्य दर्शित है। कहीं पर मत्स्य का अलंकृत अंकन राजस्थानी शैली के चित्रों में दिखाई देता है। गोआ महाराष्ट्र व मधुबनी शैली में किन्हीं–किन्हीं चित्रों में मत्स्य मुख का अंकन नहीं है। केवल मत्स्य धड़ से ही श्री हरि को उदित होते हुए चित्रांकित किया है। (चित्र संख्या 085, 099, 076)

मत्स्य अवतार से जुड़े कथानक में ह्यग्रीव राक्षस वेदों का हरण कर लेता है। इस कथा का अंकन उड़ीसा शैली के पटचित्र, पहाड़ी शैली एवं आधुनिक शैली में वर्णित है। जहां उड़ीसा शैली एवं आधुनिक शैली के चित्रों में श्री हरि वेद रूपी चारों बालकों को अपने अंक में समाहित किए है वहीं पहाड़ी शैली के चित्र में श्री हरि ह्यग्रीव नामक देत्य के पेट को चीरकर उसमें से वेद स्वरूप चारों बालकों को निकालते हुए चित्रित हैं। (चित्र संख्या 013, 088, 156)

श्री हरि के मत्स्य अवतार को पारम्परिक आधुनिक व लोक शैली में सम्मुख व अर्धपृष्ठ मुद्रा में चित्रांकित किया है किन्तु बंगाल शैली (आधुनिक) में अंकित मत्स्य अवतार लिए श्री विष्णु के पृष्ठ भाग का अंकन है वहीं उनका मुख भी मत्स्य रूपी चित्रित है। (चित्र संख्या 082)

भारतीय चित्रकला में विष्णु के मत्स्यावतार लिए चित्रों में श्री हरि स्वर्णिम मुकुट धारण किये है। किन्तु इन मुकुटाभूषणों का आकार–प्रकार व आलेखन भिन्न–भिन्न प्रकार का है जैसे – राजस्थानी शैली में निर्मित स्वर्ण मुकुट के ऊपरी भाग में मोर पंख शोभायमान हैं वहीं पहाड़ी शैली मे दर्शित स्वर्ण मुकुट का ऊपरी भाग त्रिकोणीय होने के साथ–साथ उसमें पद्मपुष्प का अंकन किया गया है। (चित्र संख्या 068, 148)

इन दो शैलियों में विभिन्नता के बाद भी समानता प्रतीत होती है। जयपुर व अम्बर शैली में निर्मित मुकुट कागड़ा व चम्बा शैली के मुकुट से साम्य रखते हैं। (चि.सं. 147, 122) इसके अतिरिक्त स्वर्ण मुकुटधारी विष्णु के मुकुट में अलग–अलग शैलियों के चित्रों में समानता दिखाई देती है और गोआ महाराष्ट्र, माइका एवं आधुनिक शैली में चित्रित मुकुट एक दूसरे से साम्य रखते प्रतीत होते हैं। (चित्र संख्या 097, 085, 077)

गोआ शैली में दर्शित श्री विष्णु का स्वर्णिम मुकुट आधुनिक चित्र शैली के हरीश जौहरी के चित्र के मुकुट में अधिक समानता रखता है। (चित्र संख्या 100, 105) मधुबनी शैली के चित्रों में निर्मित मुकुट भिन्न–भिन्न रूपाकारों में अंकित है उनमें कहीं भी समानता दिखाई नहीं देती कहीं पर वे त्रिकोणीय आकार लिए हैं तो कहीं अर्धवृताकारों के मध्य मोर पंख से सुशोभित हैं कहीं पर केवल अर्धवृत्त के मध्य मोर पंख शोभायमान हैं।

श्री विष्णु के मत्स्य अवतार लिए पहाड़ी शैली में चित्रित श्री हरि अपने शरीर के विभिन्न भागों पर चन्दन का लेप लगाए हैं वहीं राजस्थानी शैली में चित्रों

में अंकित श्री हरि के शरीर पर चन्दन लेप का चित्रण नहीं है। (चित्र 157, 127)

भारतीय कला में विष्णु के मत्स्य अवतार के भिन्न भिन्न रूप है तथा विविध वस्त्राभूषणों से सुसज्जित है। कश्मीर शैली के चित्र में श्री विष्णु मुगलिया वस्त्रों से अपने शरीर को ढके हुए शोभायित हैं (चित्र संख्या 60) तथा राजस्थानी शैली के फड चित्र में वे पूर्ण वस्त्रों से अपना शरीर ढके हैं। (चित्र संख्या 068) तो कहीं पर स्वर्ण कवचधारी हैं। (चित्र संख्या 077)। कहीं पर वे उनका ऊपरी भाग वस्त्र विहीन है। (चित्र संख्या 082) तो कहीं पर श्री विष्णु कांधे पर उत्तरीय अथवा पटका डाले हुए हैं। (चित्र संख्या 127)

श्री हरि अपने चतुर्भुजी हाथों में विविध आयुधों (शंख, चक्र, गदा) के साथ शोभायित है, आधुनिक शैली के मत्स्य अवतारधारी श्री विष्णु चक्र के स्थान पर वृत्ताकार आयुद्ध थामे है जिसके मध्य तंत्रकला का प्रतीक चिन्ह अंकित है (चित्र संख्या 013) पहाड़ी शैली के एक चित्र में चक्र के स्थान पर चूड़ी की भांति वृत्ताकार रूप का अंकन है (चित्र संख्या 147)। इसके साथ ही विष्णु के हाथों में पद्मपुष्प विविध शैलियों में शोभायमान है। गढ़वाल शैली में दर्शित मत्स्यावतार के चित्र में असमानता दिखाई देती है इस चित्र में श्री हरि अपने हाथों में पद्मपुष्प को न पकड़कर उनके नाभि से उदित होता हुआ अंकित है। (चित्र संख्या 154)

श्री विष्णु के मत्स्य अवतार लिए विभिन्न शैलियों में चित्रित पृष्ठभूमि विविधता लिए है। गढ़वाल शैली एवं आधुनिक शैली में चित्रित सागर के जल का पारदर्शी अंकन है जो समानता दर्शाता है। (चित्र संख्या 013, 154) में यद्यपि

भारतीय कला की विविध रूपी शैलियों में जल के ऊपर मत्स्य का अंकन है वहीं उड़ीसा के पट चित्र (चित्र संख्या 088) में जल की लहरों में मत्स्य का निम्न भाग छिपा हुआ दृष्टिगोचर है व पहाड़ी शैली में चित्र में मत्स्य का मध्य भाग जल में पूरित है केवल मत्स्य पूछ जल की लहरों पर दर्शित है। (चित्र संख्या 154)

राजस्थानी शैली के मत्स्यावतार में वेदों को पत्र रूप में चित्रांकित किया है। (चित्र संख्या 068) वहीं पहाड़ी शैली में वेदों का मानवीकरण दृष्टिगोचर है (चित्र संख्या 156)

2. विभिन्न शैलियों में कूर्म अवतारांकन

भारतीय कला में विष्णु के कूर्मावतार का रूचिकर अंकन दृष्टव्य है कहीं पर कूर्मावतार से जुड़ी सम्पूर्ण कथानक का चित्रण है तो कहीं पर केवल कूर्म का अंकन कर चित्रकार ने अपनी धार्मिक भावना को उजागर किया है। विविध शैलियों में दर्शित कूर्मावतार का चित्रण कहीं पर भिन्नता लिए है तो कहीं पर समानता प्रतीत होतीहै। भारतीयकला में अपभ्रंश शैली के अधिकतम चित्रों में कूर्मावतार लिए पूर्ण कच्छप का अंकन है। (चित्र संख्या 110) तो मेवाड़ शैली के प्रारंभिक चित्रों में कूर्म अवतार के चित्र में दर्शित कूर्म के ऊपर वृक्ष सदृश मेरू पर्वत आसीन हैं। (चित्र संख्या 15)

कूर्मावतार लिए श्री विष्णु का निम्न भाग कूर्म के धड़ से पूरित है गोआ (चित्र संख्या 100) महाराष्ट्र (चित्र संख्या 086) व आधुनिक शैली में हरीश जौहरी के चित्र में (चित्र संख्या 106) कूर्म का धड़ चित्रित है कूर्म मुख नहीं है।

भारतीय कला की विविध शैलियों में बंगाल शैली के चित्र में कूर्म का यर्थाथवादी अंकन है (चित्र संख्या 83), तो कहीं पर मेरू पर्वत को अपने ऊपर उठाये कूर्म का शरीर कच्छप का न होकर खरगोश के सदृश्य है। (चित्र संख्या 061)

इसके साथ ही आंध्र की लोककला में मेरू पर्वत के मध्य कच्छप का अंकन दिखाई देता है। (चि.सं. 103) तो आधुनिक शैली में निर्मित हरीश जौहरी के चित्र में मेरू पर्वत के मध्य श्री लक्ष्मी विराजित हैं। (चित्र संख्या 014)

भारतीय कला में कथा के अनुरूप चित्रण न होकर उसका अलग रूप में चित्रांकन है। आंध्र की लोककला में मेरू पर्वत के निम्न भाग में कच्छप के स्थान न देकर मेरू पर्वत के मध्य चित्रित किया है। (चित्र संख्या 103) वहीं कुल्लू शैली में मेरू पर्वत का अंकन नहीं है। चित्रकार ने केवल कच्छप की पीठ पर श्री विष्णु कों विराजमान अंकित कर अपनी कल्पना को साकार रूप प्रदान किया है। (चित्र संख्या 150)

कूर्मावतार के इन चित्रों में चित्रित मेरू पर्वत का अंकन भारतीय कला की शैलियों में विविध रूप से चिंत्रांकित किया है। ओरछा शैली व पहाड़ी शैली के चित्रों में मेरू पर्वत का अंकन दण्ड स्वरूप लिये है। (चित्र संख्या 112, 158) वहीं गलेर शैली के कर्मावतार चित्र में अंकित मेरू पर्वत शंक्वाकार सदृश्य आकृति लिए है। (चित्र संख्या 143)

मेरू पर्वत के मध्य चट्टानों के चित्रण के साथ–साथ उसमें वानस्पतिक अंकन भी चितेरों की कल्पना का भाग रहा है। मंदराचल के ऊपरी भाग मे श्री हरि

विष्णु पद्मासीन हैं तो कहीं पर श्री विष्णु के साथ लक्ष्मी जी विराजमान हैं। वहीं गुलेर शैली में चित्र में मंदराचल के ऊपरी भाग में श्री गणेश पद्मासीन हैं (चित्र संख्या 143) तो कहीं पर मंदराचल का ऊपरी भाग केवल पद्म पुष्प से सुसज्जित है, पल्लवित पद्म पुष्प पर किसी भी देवता या विष्णु व लक्ष्मी विराजित नहीं है। (चित्र संख्या 084, 103)

श्री हरि के कूर्मावतार के चित्रों में अधिकतर समानता दर्शित है कोहवर कला (बिहार) तथा मधुबनी शैली में दर्शित कूर्म के आकार समान रूप में दृष्टव्य है। (चित्र संख्या 164, 075)

भारतीय कला में दर्शित कूर्मावतार के चित्र में श्री हरि जहां वस्त्रों से अपने शरीर को पूर्णतः ढंके है वहीं आधुनिक शैली में अंकित श्री हरि के ऊपरी भाग में वस्त्रों का सर्वथा अभाव है। केवल हाथों में लिपटा दुपट्टा शोभायमान है। (चित्र संख्या 069, 146)

श्री विष्णु कूर्मावतार लिए विविध अलंकृत आभूष्झणों से सुशोभित होने के साथ अपने चर्तुभुजाओं में प्रचलित आयुधों के साथ अंकित है वहीं कोहवर कला में कूर्मरूपी जगदीश्वर अपने हाथों में कमण्डल व रुद्राक्ष की माला के साथ चित्रित है। (चित्र संख्या 163) तथा इंटरनेट से प्राप्त कूर्मावतार के एक चित्र में विष्णु भगवान हाथ में डमरू लिए हैं (चि.सं. 174) जो इन चित्रों से असमानता का भाव प्रकट करता है।

3. विभिन्न शैलियों में वराह अवतारांकन

भारतीय चित्रकला में धार्मिक चित्रों का अपना स्थान है धार्मिक विषयों से सम्बन्धित चित्रों को कलाकार ने अपने–अपने ढंग से तथा रूचि व कल्पनानुसार

अलग–अलग रूपों में चित्रांकित किया है। श्री विष्णु के दशावतारों की चित्र श्रंखला के अन्तर्गत वराह अवतार के चित्रण भारतीय पारम्परिक, लोककला व आधुनिक कला में बखूबी हुआ है, चितेरों ने श्री विष्णु के वराह स्वरूप को विविध रूपों में चित्रित कर चित्र का सौन्दर्यवर्धन कर अपनी धार्मिकता का परिचय दिया है।

1. भारतीय कला में विष्णु को कहीं अर्ध मानवीय रूप में तो कहीं पूर्ण वराह रूप में अंकित कर वराह हरि का सजीवांकन किया है। आधुनिक शैली के (चित्र संख्या 003) व वसौहली शैली के (चित्र संख्या 135) में विष्णु भगवान पूर्ण शूकर रूप में चित्रित हैं।

2. पहाड़ी व राजस्थानी शैली में दर्शित वराह भगवान द्विरूपों में अर्ध मानवीय व वराह स्वरूप में अंकित हैं। (चित्र संख्या 119) वहीं ओरछा दतिया बिहार की लोककला में दर्शित वराह हरि एक रंगों द्वारा पूरित हैं (चित्र संख्या 111)

भारतीय शैलियों में विविध स्वरूप लिए विष्णु भगवान जिनका आकार विशालता लिए है, अर्थात् विशाल रूपधारी वराह भगवान अपने दन्तों पर लघु वृताकार रूपी पृथ्वी को उठाये हुए चित्रित हैं। (चित्र संख्या 003, 090, 165) उड़ीसा के ताड़पत्र पर बने वराह भगवान, गोवा शैली के वराह हरि व मधुबनी व आधुनिक शैली में चित्रित विष्णु भगवान के चित्र इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

विष्णु भगवान जो वराह स्वरूपधारी हैं उनका विविधांकन दर्शित है उसी प्रकार समीप ही चित्रित हिरण्याक्ष नामक राक्षस का अलग–अलग शैलियों में चित्रांकन विविधता लिए है, कहीं पर वह एक दंतयुक्त है तो कहीं पर व द्विदंतयुक्त

हैं। किन्हीं चित्रों में वह केशधारी हैं तो कुछ चित्रों में केशविहीन अंकित हैं, उसी प्रकार हिरण्याक्ष नामक असुर श्री वराह रूपी विष्णु से खड़े हुए, बैठे व लेटकर युद्ध करते हुए चित्रित है। कहीं पर वराह भगवान उसे मारते हुए उसकी छाती पर गदा से प्रहार करते तथा केशों को पकड़कर घसीटते हुए अपने आयुध से सिर व धड़ को अलग करते हुए चित्रित हैं। इन सब चित्रों के साथ श्री हरि अधिकांश चित्रों में राक्षस के पैरों अथवा छाती को दबाये हुए तथा उसके शरीर के ऊपर खड़े दृष्टव्य हैं वहीं कुल्लू शैली के इस चित्र में (चित्र संख्या 151) वराह हरि के पैरों के पास राक्षस का सिर अंकित हैं अन्य चित्रों में राक्षस सम्मुख मुद्रा में अंकित है वहीं कुल्लू शैली के चित्र में भगवान के पैरों के नीचे राक्षसराज के सिर के केश हैं और पैर विपरीत दिशा में ऊपर की ओर उठे हुए चित्रित हैं।

भारतीय कला के विविध शैलियों में वराह हरि अपने दन्तों पर पृथ्वी का भार उठाए हुए है। वहीं आधुनिक (चित्र संख्या 009) लोककला (चित्र संख्या 177) व उड़ीसा ताड़ पत्र (चित्र संख्या 088) पर चित्रित वराह हरि अपने कंधे अथवा हाथों पर नारी स्वरूपा पृथ्वी को बिठाए हुए हैं।

भारतीय कला में वराह हरि ने पृथ्वी को हिरण्याक्ष की कैद से मुक्ति प्रदान करने हेतु उसे रसातल से निकालकर विजय स्वरूप अपने दन्तों पर उठाकर वराह अवतार धारण किया है। अतः पारम्परिक व लोककला तथा आधुनिक चित्र शैलियों में उनके इस स्वरूप का अंकन किया गया है वहीं कतिपय चित्रों में पृथ्वी विहीन वराह हरि अपने प्रचलित आयुधों के साथ शोभायित है। (बंगाल शैली चित्र संख्या 102, माइका शैली चित्र संख्या 079, गोआ शैली चित्र संख्या 100)

पृथ्वी का स्वरूप भी भिन्नता लिए है कहीं पर चितेरों ने पृथ्वी को वृत्ताकार रूप दिया है तो कहीं पर अण्डाकार रूप में दर्शित है किन्हीं चित्रों में पृथ्वी अर्धचन्द्राकार रूप लिए दर्शित है, यद्यपि राजस्थानी व पहाड़ी शैली के चित्रों में पृथ्वी विभिन्न स्वरूपों में अंकित हैं वहीं आधुनिक बंगाल शैली (शैली 084 व बूंदी शैली चित्र संख्या 119) में अर्धचन्द्राकार रूपी पृथ्वी का अंकन है।

अपने दन्तों पर पृथ्वीउठाये वराह हरि के चित्रों में वर्णित वृताकार रूपी पृथ्वी में समानता व विभिन्नता परिलक्षित है, यद्यपि आधुनिक शैली के इस चित्र (चित्र संख्या 003) तथा हरीश जौहरी के वराह अवतार के एक चित्र (चित्र संख्या 107) में वृतरूप में अंकित पृथ्वी के अन्दर जहां मानचित्र का अंकन है वहीं जयपुर शैली के फड़ चित्र (चित्र संख्या 070) में वृत के मध्य में नारी आकृति को स्थान दिया गया है।

यद्यपि पहाड़ी शैली के अधिकांश चित्रों में वृताकार, अण्डाकार व अर्धचन्द्राकार रूपी पृथ्वी का चित्रण कर उसे वानस्पतिक व वास्तुशिल्प तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ चित्रित कर उसके मध्य पृथ्वी स्वरूपा गौ का अंकन कहीं बैठे अथवा खड़े तथा बैठे किन्तु खड़े होते हुए गौ माता चित्रित है। लेकिन राजस्थान प्रान्त के अलवर शैली का (चित्र संख्या 120) पहाड़ी शैली में दर्शित पृथ्वी से साम्य रखता प्रतीत होता है। इसमें पृथ्वी के मध्य वास्तु व प्राकृतिक अंकन के साथ–साथ गाय को भी स्थान दिया गया है।

पृथ्वी का अंकन भी विभिन्नता लिए है। पृथ्वी में जहां वानस्पतिक व वास्तु अंकन दृष्टव्य है वहीं जयपुर शैली के चित्रों में पृथ्वी का सपाट अंकन है।

(चित्र संख्या 129) तथा कश्मीर शैली के चित्र में भी पृथ्वी का सपाट अंकन किया गया है। (चित्र संख्या 062)

भारतीय कला में वराह हरि ने सागर से पृथ्वी को निकाल कर अपने दंतों पर धारण किया था, अतः विभिन्न कला शैलियों के चितेरों ने सागर का विविधतारूपी अंकन किया है, वहीं विभिन्नता के साथ समानता भी दृष्टिगोचर है। ओरछा (चित्र संख्या 111) व जयपुर शैली के फड़ चित्रों चित्रों में (चित्र 070) सागर का जल चापाकार रेखाओं द्वारा पूरित है। यद्यपि पारम्परिक व आधुनिक चित्रों में सागर का विविध अंकन चितेरों ने अपनी कल्पनानुसार किया हैं। कहीं पर सागर में लहरों के उतार चढ़ाव का सौन्दर्य दर्शित है तो कहीं पर सरोवर में मुकुलित पद्मपुष्प का अंकन किया गया है। किन्तु कश्मीरी शैली के (चित्र संख्या 153) में सागर के स्थान पर पुष्प वल्लरी युक्त पृष्ठभूमि का उत्कीर्ण दृष्टव्य है, वहीं मेवाड़ शैली के चित्र में पीतवर्णीय सपाट पृष्ठभूमि में वराह हरि व हिरण्याक्ष का चित्रांकन किया गया है। (चित्र संख्या 116)

श्री वराह के चित्रों में कहीं भी छत्र का अंकन नहीं किया गया। मधुबनी शैली में इस तरह का चित्रण देखने को मिलता है। इसमें वराह हरि के ऊपर छत्र का अंकन किया गया है। (चित्र संख्या 177)

वराह हरि विभिन्न शैलियों में अपने रूप सज्जा के साथ दृष्टव्य है जिनमें कहीं वे कच्छाधारी हैं तो कहीं पर अधोवस्त्र व पीताम्बरधारी वस्त्रों से सुसज्जित हैं जिनमें उन्होंने पीत, नारंगी व रक्तिम वस्त्रों को धारण किया है किन्तु बंगाल पट चित्र (चि.सं. 167) व माइका पेन्टिंग (बिहार) (चि.सं. 079) में वर्णित श्री हरि, नील, श्वेत व हरितिमा वस्त्रों से सुशोभित है।

राजस्थानी शैली के वराह अवतार चित्रों में वराह के अधो वस्त्रों पर सुन्दर अलंकृत आलेखन हैं, वहीं पहाड़ी शैली के चित्रों में वराह हरि साधारण अधोवस्त्रों में सुशोभित हैं। (चित्र संख्या 120, 065)

जहां वराह आकृतियों में भिन्नता है तो वहीं अलग–अलग शैलियों में दर्शित वराह के रूप वस्त्रालकारों में सामानता भी दिखाई देती है पंजाब प्रान्त के पटियाला शीशमहल में भित्ति पर चित्रित वराह अवतार व कांगड़ा शैली में दर्शित वराह आकृति व वस्त्रों के पहनावे में समानता दिखाई देती है।

दो विभिन्न शैलियों में अंकित वराह अवतार के चित्रों में समानता दर्शित है। जम्मू शैली के वराह अवतार के चित्र (चि.सं.152) तथा चम्बा शैली के एक चित्र (चि.सं. 148) में वराह हरि की आकृति, प्रचलित आयुध, वस्त्रालंकारों के अतिरिक्त अर्धचन्द्राकार रूपी पृथ्वी व हिरण्याक्ष नामक राक्षस की वेशभूषा, आयुध में समानता दृष्टव्य है।

राजस्थानी शैली में वराह अवतार के चित्रों में वराह द्वारा पृथ्वी को पुनः स्थापना हेतु अपने दन्तों पर पृथ्वी को धारण करने की घटना का दर्शन मिलता है। (चि.सं. 126) वहीं पहाड़ी शैली में वराह अवतार से जुड़ी अन्य घटनाओं का चित्रांकन भी किया गया है। (चि.सं. 132—142)

राजस्थानी शैली में दानव को वीर योद्धा के रूप में अलवर शैली में (चि.सं. 120) सुन्दर चित्रांकन किया है वहीं पहाड़ी शैली में (चि.सं. 148) क्रूर राक्षस के रूप में हिरण्याक्ष का चित्रण किया गया है।

भारतीय कला के मुगल शैली में चित्रित वराह हरि युद्ध में जाने वाले अश्व से साम्य रखता प्रतीत होता है जिसके दन्त अन्य शैलियों में चित्रित दन्त से अपेक्षाकृत लम्बे हैं तथा हरि के गले में घंटियां व मुख पर अंकित नकेल इस अन्य शैलियों में चित्रित वराह आकृति से पूर्णतः भिन्नता प्रदान करती है। (चि.सं. 071)

अतः भारतीय कला में मत्स, कूर्म, वराह अवतार का चित्रण में जहां भिन्नता देखने को मिलती वहीं साम्यता भी दर्शित है। कहीं पर मत्स्य, कर्म, वराह पूर्ण रूप में तो कहीं अर्धमानवीय रूप में चित्रित हैं। कतिपय चित्रों में मत्स्य, कूर्म के मुख से उदित होते हुए श्री विष्णु अंकित है, तो कहीं पर ऊपरी भाग मानवीय निम्न भाग में मत्स्य व कूर्म का केवल धड़ का अंकन है। इस प्रकार चित्रकारों ने अपनी रूचि व कल्पना के द्वारा विविध रूपों में श्री विष्णु का अंकन कर उस कृति को सौन्दर्य रूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया है।

उपसंहार

प्राचीन काल से ही कला और धर्म में गूढ़ संबंध है। कला और धर्म को एक दूसरे के पर्याय मानना भी अनुचित न होगा। प्रकृति में समाहित अनन्त शक्तियां आदिमानव की आस्था व प्रेरणा का केन्द्र बनी रहीं। धार्मिक आस्था ने कला को जितना अधिक संवारा, उतना ही कला ने धर्म को प्रचारित–प्रसारित करने में अहम भूमिका निभायी। धर्म और कला दोनों मनुष्य को सुख, शांति व आनन्द प्रदान करते हैं। वेद और पुराणों में इनकी उत्पत्ति सम्बन्धी अनेकानेक कथानक उल्लेखित हैं। कल्कि पुराण में उल्लेखित कथानुसार ब्रह्मा एवं संध्या द्वारा चौंसठ कलाओं की उत्पत्ति एवं बैल के रूप में धर्मोत्पत्ति का वर्णन है।

भारत की कला धर्म से सम्बन्धित है इसमें बौद्ध, जैन, शिव, शाक्त एवं वैष्णव आदि सम्प्रदायों का विभिन्न काल से भिन्न–भिन्न कला शैलियों के साथ समागम होकर अलंकारिक प्रस्तुतिकरण चित्र एवं शिल्प के माध्यम से होता आया है। इस प्रकार कलाओं ने धर्म और धार्मिक ग्रंथों के प्रचार प्रसार में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपभ्रंश शैली, राजस्थानी, उड़ीसा, तमिलनाडू पहाड़ी बुन्देली एवं मधुबनी क्षेत्रीय कलाओं में भी शैलीगत विशेषताओं के साथ धर्मोपासना के क्षेत्र में भिन्न प्रकार के भित्ति चित्रों, पोथी चित्र, ताड़ पत्रों, पाण्डुलिपियों एवं पटचित्रों हाथी दांत की पतली, कागज, जनउपयोगी वतुओं, ताड़पत्र कपड़े आदि पर चित्रण हुआ।

धार्मिक चित्रों की श्रृखला में वैष्णव सम्प्रदाय के चित्रों ने विष्णु के

विभिन्न अवतारों को चित्रित किया। ऐसी मान्यता है कि पृथ्वी पर जब धर्म की हानि होगी, पाप बढ़ेगा तब–तब श्री हरि, विष्णु अवतरित होंगे और दुष्टों का संहार कर भक्तों का कल्याण करेंगे।

"जब–जब होई धरम की हानि। बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब–तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा।।"

ब्रह्मपुराण, गीता, आश्वमेधिक पर्व, वन पर्व, देवी भागवत, वायु पुराण आदि में भी पूर्वोक्तः वचनों के सदृश वचन पाये जाते हैं।

इस भावना पर आधारित भिन्न–भिन्न युगों में विष्णु द्वारा विभिन्न अवतारों का उल्लेख मत्स्य, कूर्म, वराह, वायु, अग्नि, ब्रह्म, कल्कि, भागवत, विष्णु, आदि पुराणों में मिलता है। इस प्रकार विष्णु के लगभग 24 अवतार माने गये हैं। यद्यपि सभी अवतारों का चित्रण चित्रकारों व शिल्पकारों द्वारा किया गया, किन्तु इनमें से 10 अवतारों को अधिक महत्वता एवं लोकप्रीयता मिली। विष्णु के मुख्य रूप के अतिरिक्त अवतार चित्र चित्रकारों का प्रमुख रूचिकर विषय था, जिनमें से प्रत्येक युग में अवतरित, अवतारों में से दस अवतारों को अधिक महत्व एवं लोकप्रियता मिली जिनमें –

1. चार अवतार क्रेता युग – (1) मत्स्य (2) कूर्म (3) वराह (4) नरसिंह
2. तीन अवतार त्रेता युग (1) वामन (2) परशुराम (3) श्री राम
3. दो अवतार द्वापर युग – (1) श्री कृष्ण (2) बलराम
4. एक अवतार कलियुग – (1) कल्कि

इन दशावतारों के अतिरिक्त विष्णु के अनेक रूप हैं जैसे त्रिविक्रम,

गजग्राह, विश्वरूप, ह्यग्रीव, सनतकुमार, कपिल, व्यास, मधन्त आदि। पुराण भी धर्म की पुनः स्थापना हेतु एवं असुरों का नाश करने के उद्देश्य से श्री हरि के विविध रूपों में अवतरित होने का उल्लेख पुराणों व ग्रंथों में मिलते हैं।

अवतार चित्रों के संयोजनों को भलीभांति समझने के लिए पुराणों एवं अवतारों के कथानक, उनके आयुध, भेष–भूषा आदि की संक्षिप्त जानकारी होना अनिवार्य है, क्योंकि इससे अवतार के भिन्न संयोजनों को भलीभांति समझा जा सकता है। यद्यपि चित्रकारों द्वारा उनकी काल्पनिकता का भी समावेश किया जाता है किन्तु पुराणों के कथानक उन अवतार चित्रों की आत्मा हैं।

भिन्न–भिन्न पुराणों में अवतारों की संख्या और क्रम दिया गया जो छः से बढ़कर चौबीस हुआ तो कहीं–कहीं उससे भी अधिक है। यद्यपि वर्तमान में विद्वान अवतारों की संख्या दस ही मानते हैं और उनका क्रम इस प्रकार है –

''वनजो वनजौ सेर्वः त्रिरा भीसकृपीडकयः।
अवतारा दशेवैते कृष्ण भगवान् स्वयम्।।''

अवतार तो दस ही हैं वनजो (जल में उत्पन्न होने वाले दो अवतार मत्स्य तथा कच्छप) वनजौ – जंगल में पैदा होने वाले दो अवतार वराह तथा नरसिंह। सर्व (वामन) त्रिरा भी (तीन राम – परशुराम, दशरथीराम तथा बलराम) सकृपः (कृपायुक्त अवतार बुद्ध) तथा अकृप (कृपाहीन अवतार – कल्कि)

पुराणों में इन समस्त स्वरूपों इनके क्रिया कलापों और इनके जीवन से सम्बन्धित घटनाक्रमों का वर्णन प्रचुरता से प्राप्त होता है।

वेद – पुराणों में पाई जाने वाली कथाओं का मूल आधार परमात्मा में आस्था ही है। आस्थावान समाज की कल्पना और अन्तंचेतना से ही नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण पौराणिक कथाओं का जन्म होता है। कई विद्वानों के मतानुसार वेदों के पश्चात् पुराणों का अंकन हुआ।

(वेद व्यास जी के द्वारा ऋग, यर्जुव, साम और अर्थव वेद की रचना हुई। इतिहास पुराणों को पांचवा वेद मानता है। जो संख्या में अठारह हैं।) मत्स्य पुराण व विष्णु पुराणानुसार –

> "पुराण सर्वशास्त्राणां प्रथम ब्रह्माण स्मृतम
> अनन्तरं चं वक्रत्रभ्यो वेदस्तस्य विनिं सृताः।।"
>
> "मद्धयं भद्धयं चैव व्रत्रम ववतुष्टयम्
> अनापलिंग कुस्कानि पुराणनि पृथक–पृथक।।"

अर्थात् मकरादि दो पुराण (मार्कण्डेय तथा मत्स्य) भकरादि दो पुराण (भगवत तथा भविष्य), ब्रकारादि तीन पुराण (ब्रह्म, ब्रह्माण्ड और ब्रह्मवैवर्त) बकारादि चार पुराण (विष्णु, वामन, वराह और वायु, अ (अग्नि) नौ (नारदीय) प (पद्म) लिड़ (लिंग) ग (गरुण) कू (कूर्म) तथा स्क (स्कन्द) ये अष्टादश पुराणों के पृथक–पृथक नाम हैं। इनमें से अधिकतर पुराण वैष्णव और शैव सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं, पद्म, ब्रह्मवैवर्त और विष्णु मुख्यतः वैष्णव पुराण हैं, भगवान पुराण, मत्स्य पुराण व कूर्म पुराण में भी विष्णु के अवतारों का वर्णन देखने को मिलता है। वायु पुराण तथा अग्नि पुराण भी इसी श्रेणी में आते हैं।

अतः कला, धर्म तथा पुराणों में सह सम्बन्ध रहा। धर्म के आधार पर जिन मान्यताओं को समाज में स्वीकार किया, उनसे मानव एवं अन्य जीव जन्तुओं

व पशुओं को भी सम्मान्नीय धरातल प्रदान किया गया। जिनमें ईश्वरीय सर्वोत्कृष्ट सत्ता भी अवतार रूप में मानवीय देह ही नहीं, अपितु सिंह, कूर्म, वराह, मत्स्य आदि स्वरूपों में अवतरित हुईं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारत में पल्लवित होने वाली प्रत्येक क्षेत्र की समकालीन, पारम्परिक एवं लोक शैलियों में अवतार सम्बन्धी चित्राकृतियों का विभिन्न कोणों से अध्ययन विश्लेषण का प्रयास किया गया है। छः भागों में विभक्त इस प्रबंध का प्रथम अध्याय में विष्णु के चौबीस से भी अधिक अवतारों का भारतीय चित्रकला में, पौराणिक आधार पर सचित्र वर्णन किया गया है।

भारतीय कला में अवतारों का सुव्यवस्थित, सुसंगठित एवं परिमार्जित रूप दिखाई देता है। वहीं दूसरी ओर भारतीय लोककला में अवतार सरलता लिये हुए है। अवतारों को कहीं पौराणिक आधार पर सम्पूर्ण कथानक में, तो कहीं एकल रूप से चित्रित किया गया है। चित्रकला में अवतारों के दैवीय स्वरूपों को कभी पूर्ण पशु रूप तो कभी अर्ध पशु व अर्ध मानव रूप में अंकित किया गया, जोकि अत्यंत रूचिकर एवं आकर्षक लगता है।

विष्णु के विभिन्न अवतार के संबंध में विभिन्न उल्लेख में मिलते हैं। उदाहरणार्थ मत्स्य पुराण में विष्णु के अवतार संबंधी एक रोचक कथा उल्लेखित है। कथानुसार, परिस्थितिवश श्री हरि विष्णु द्वारा दैत्यगुरू शुक्राचार्य की माता का वध हो जाता हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें नारी वध के पाप से, प्रायश्चित हेतु बारम्बार पृथ्वी पर प्रकट होना पड़ता है। जबकि उपनिषदों में परमात्मा के विभिन्न रूप में प्रकट होने का कारण यह माना गया है कि, अनेक देव एक हैं, तो एक देव

अनेकता का रूप भी ले सकते हैं। इस कथन ने अवतारों की कल्पना को जन्म दिया और चित्रकारों ने कला के माध्यम से इन्हें साकार रूप रंग व रेखाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। विष्णु के अवतारों के संबंध में चाहे मतैक्य हो अथवा नहीं किन्तु कलाकारों का यह अत्यंत प्रिय एवं रूचिकर विषय हैं, जिसे उन्होंने विभिन्न प्रकार से भिन्न–भिन्न कालों में मनोहारी ढंग से प्रस्तुत किया है।

भारतीय चित्रकला में श्री हरि के विभिन्न स्वरूपों में से प्रमुख दशावतार एवं भागवत् पुराण में वर्णित 22 अवतारों के अतिरिक्त अन्य अवतारों को चित्रित किया गया है जो इस प्रकार हैं –

(1) युवा पुरुष (2) वराह (3) नारद (4) नर–नारायण (5) कपिल (6) दतात्रेय (7) यज्ञपुरुष (8) श्रषभ (9) पृथु (10) मत्स्य (11) कूर्म (12) धन्वन्तरी (13) मोहनी (14) नरसिंह (15) वामन (16) परशुराम (17) वेद व्यास (18) राम (19) बलराम (20) कृष्ण (21) बुद्ध (22) कल्कि (23) ह्यग्रीव (24) हंसावतार (25) बालाजी (26) मधन्त (27) श्री हरि (गजेन्द्र मोक्षकर्ता) (28) विश्वरूप

युवा पुरुष भारतीय पारम्परिक शैली में ब्रह्मा के चारों मानस पुत्र सनक, सनंदन, सनातन व सन्तकुमार का करबद्ध मुद्रा में चित्रांकन देखने को मिलता है। वहीं आधुनिक शैली में इन्हें श्री हरि के चरणों के निकट आसीन दर्शाया गया है।

वराह अवतार का चित्रांकन भारत की विभिन्न शैलियों में पूर्ण शूकर रूप में तो कहीं अर्ध पशु रूप में देखने को मिलता है। द्वितीय अध्याय से पांचवे अध्याय तक विभिन्न शैलियों में चित्रित वराह अवतार चित्रों का सविस्तार वर्णन उल्लेखित है।

भारतीय चित्रकला में नारद मुनि को भी नदी तट पर हरण्याक्ष से संवाद करते हुए, कभी मैदान में आसानासीन, तो कभी महल में सिंहासनासीन दर्शाया गया है। जिसमें उनकी वीणा को अधिकांशतः मुख्यरूप से, चित्र के मध्य भाग में चित्रित किया गया है।

भारतीय चित्रकला में कपिल मुनि के चित्रों में उनकी वृद्धा अवस्था एवं युवा अवस्था दोनों को ही चित्रित किया गया।

दत्तात्रेय अवतार को गाय एवं श्वानों के साथ चित्रित किया गया, जिनके करकमलों में शंख, चक्र, त्रिशूल, कमण्डल आदि शोभा पा रहे हैं।

आधुनिक चित्रकला में पानी में खड़े यज्ञपुरुष एक हाथ से रक्तवर्णीय नारी स्वरूपा पृथ्वी को संभाले अपने समक्ष खड़े हिरण्याक्ष को चेतावनी देते हुए चित्रित किये गये हैं।

जयपुर शैली में विष्णु के अवतार ऋषभ देव का सुन्दर चित्रांकन हुआ है। जिसमें आसनासीन ऋषभ देव की सम्पूर्ण केशराशी को संमेटकर जूड़ा बनाया हुआ है। पृथु अवतार से संबंधित विभिन्न कथानकों को भारतीय चित्रकारों ने श्रृंखलाबद्ध रूप से चित्रित किया है। पहाड़ी चित्रकला में पृथु अवतार से सम्बन्धित कई चित्र मिलते हैं। जिसमें राजा पृथु द्वारा गाय रूपी पृथ्वी का पीछा करने वाला चित्र उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त एक अन्य रेखा चित्र में सप्तऋषियों द्वारा वेन के शरीर का मन्थन एवं उसकी भुजा से, पृथु प्रकट होने की घटना का गतिपूर्ण रेखांकन है।

आधुनिक शैली में मत्स्य अवतार एवं कूर्म अवतार का सुन्दर चित्र अंकित किया गया है। द्वितीय अध्याय से पांचवे अध्याय तक मत्स्य, कूर्म, एवं वराह अवतारों के भिन्न–भिन्न शैलियों में चित्रांकित चित्रों का उल्लेख विस्तारपूर्ण ढंग से समायोजित है। कूर्म अवतार के एकल चित्रण के अतिरिक्त समुद्र मन्थन को भी चित्रकार ने चित्रों के मुख विषय के रूप में चुना जिसके साथ विष्णु के धन्वन्तरी अवतार एवं मोहनी अवतार को भी सम्बद्ध किया गया है। अमृत कलश लिए धन्वन्तरी वेद एवं सुर तथा असुरों को मन्त्रमुग्ध करती मोहिनी, के चित्र पारम्परिक शैली तथा आधुनिक शैली दोनों ही में देखने को मिलते हैं।

नृसिंह अवतार चित्रण में श्री हरि को कभी हिरण्यकश्यप का वध करते, तो कभी भक्त प्रहलाद को साथ, वात्सल्य रस में ओत प्रोत दर्शाया गया है। वहीं वामन अवतार को राजा बलि के दरबार में, तो कभी त्रिविक्रम नाम को सार्थक करते, तो कभी बालक भिक्षु के रूप में चित्रित किया गया है।

भारतीय चित्रकला में परशुराम अवतार एवं राम अवतार के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं को चित्रित किया गया। उदाहरणार्थ सहस्त्रबाहु एवं परशुराम का युद्ध, रेणुका वध, राम एवं रावण का युद्ध का दृश्य, राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा, हाथी दांत पर चित्रित रामसवारी का दृश्य इत्यादि।

व्यास अवतार को भी पुराणों की रचना करते चित्रित किया गया है। तो वहीं बलराम अवतार को चट्टान से पानी निकालते, कृष्ण की बाल लीला, रासलीला, कंस का वध करते हुए तथा युद्ध भूमि में अर्जुन को उपदेश देते हुए चित्रित किया गया है।

इसी प्रकार बुद्ध, कल्कि, ह्यग्रीव, हंसावतार, बाला जी, मधन्त, गजेन्द्र मोक्षकर्ता, आदि पुरुष एवं विश्वरूप अवतार भारत की भिन्न–भिन्न शैलियों में विविधता लिए हुए प्रस्तुत है। भारतीय चित्रकला में विष्णु के अधिकांश अवतार विभिन्न शैलियों में विभिन्न वेशभूषा में चित्रांकित हैं।

द्वितीय अध्याय में भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार चित्रण का प्रदेशानुसार विश्लेषण किया गया है।

भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतारों का चित्रण भिन्न–भिन्न स्थानों पर विभिन्नता के साथ किया गया है। ये चित्र उस प्रदेश के सांस्कृतिक गौरव, विकास, धार्मिक भावना तथा ऐतिहासिक उत्थान एवं पतन के परिचायक हैं।

जम्मू कश्मीर में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार चित्रण बाहर से आए चितेरों द्वारा किया गया। अतः यहां कोई स्वतंत्र शैली विकसित नहीं हो सकी। हिमाचल प्रदेश में पोथी चित्रों के प्रारम्भिक पृष्ठों तथा महलों की भित्तियों एवं उपयोगी वस्तुओं पर दशावतारों का चित्रण बहुतायत से हुआ जिसमें मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार का चित्रण प्रायः कांगड़ा, वसोहली, गुलेर, नूरपुर आदि शैलियों में भिन्नता लिए हुए दृष्टिगोचर होता है। यहां के कतिपय चित्र मुगल शैली से प्रेरित प्रतीत होते है। पंजाब के महलों की भित्तियों पर यह अवतार चित्र फ्रेस्को पद्धति में चित्रांकित हैं। उत्तर प्रदेश की चित्रकला में अवतार चित्रों का अंकन अत्यल्प है जिस पर मुगल कला का प्रभाव अधिक है। मुगल शैली में चित्रित वराह का चित्र, अन्य शैलियों में चित्रित वराह से पूर्णतः भिन्न है।

म.प्र. में विष्णु के अवतारों को प्रमुख रूप से भित्तियों पर विभाजन रहित ढंग से चित्रांकित किया गया है। इसके उदाहरण दतिया व ओरछा के महलों, मन्दिरों तथा छतरियों की भित्तियों पर परिलक्षित हैं। यह भित्ति चित्र बुन्देली कलम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बिहारी की मधुबनी शैली में, एवं कोहवर कला में अवतार चित्रों के उत्कृष्ट उदाहरण प्राप्त हैं। वहीं मिथिला की पुरनिया हवेली से प्राप्त माइका चित्र बिहार की एक विशिष्ट शैली से परिचित कराते हैं। दशावतारों के यह चित्र पश्चिमी एवं पूर्वी कलाओं के अनूठे संगम से बने हैं। इन्हें विद्वानों द्वारा "फिरंगी आर्ट" की उपमा दी गई।

पूर्वी भारत में स्थित आसाम पोथी चित्रण में दशावतार चित्र, श्रंखलाबद्ध रूप में चित्रांकित किये गये। जिनमें ह्यग्रीव अवतार को सर्वाधिक महत्व मिला। गुजरात की अपभ्रंश शैली में चित्रित मत्स्य, कूर्म, वराह आदि अवतार चित्रों पर जैनपोथियों का प्रभाव प्रतीत होता है।

बंगाल शैली में एक और मांस्लय सौन्दर्य से परिपूर्ण अवतार चित्र बने, तो वहीं दूसरी ओर लोक कला में सरलता लिए हुए इन्हें अंकित किया गया। इसी प्रकार महाराष्ट्र की चित्रकला में, तोरणों के मध्य चित्रांकित अवतार चित्रण पर, पाल शैली का प्रभाव देखने को मिलता है।

उड़ीसा में अवतार चित्रों को विभिन्न माध्यमों में भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया। जैसे ताड़ पत्र पर, ताश पत्र पर एवं पट चित्रों में कहीं इन्हें क्रमानुसार चित्रित किया गया, तो कहीं वृत में दशावतारों को एक साथ दर्शाया

गया। कहीं पटों पर इनका एकल चित्रण है, तो कहीं लम्बवत् पट्टिका में विष्णु के दशावतारों का अत्यंत सुन्दर कलात्मक आलेखनों के मध्य, कोमल रेखाओं व चटक रंगों द्वारा अलंकारिक सौन्दर्य प्राप्त हुआ है।

गोआ की चित्रकला में मत्स्य कूर्म तथा वराह अवतारधारी श्री हरि के मुकुट ही नहीं अपितु उनके मुख के पृष्ठ भाग में चित्रित आभा मण्डल कहीं गोलाकार है, तो कहीं अण्डाकार, तो कहीं अर्धवत्ताकार रूप में चित्रित है इन चित्रों की आकृतियां बौने कद की हैं व चेहरे से बाल रूप लिये दर्शित हैं। वहीं कटि प्रदेश में बधा कटिबन्ध एवं यज्ञोपवीत इन चित्रों की विशेषता है।

कर्नाटक की मैसूर और तंजौर शैली में बने पट चित्रों की अपनी अलग पहचान है। यहां के पट चित्रों में विष्णु अवतारों के अतिरिक्त अन्य दैवीय स्वरूपों का अंकन विभिन्न खण्डों में अंकित है।

आन्ध्रप्रदेश की लोककला में कूर्म अवतार की समुद्र मन्थन की घटना विविधता लिए हुए चित्रित है। जिसमें सम्पूर्ण घटनाक्रम का चित्रण है। तमिलनाडु एवं पॉण्डिचेरी की चित्रकला में अवतारों के मध्य तिरुपति बालाजी के चित्र को प्रमुख स्थान दिया गया।

आधुनिक चित्रकारों द्वारा निर्मित धार्मिक चित्र केवल केनवास, कागज, पुस्तकों व भवनों की भित्तियों पर ही बने देखे जा सकते हैं। वरन् आधुनिक संचार माध्यमों में भी धार्मिक अवतार चित्रों का दर्शन होता है जो हमें टी.वी., इन्टरनेट आदि पर उपलब्ध हैं।

इन्टरनेट द्वारा प्राप्त आधुनिक शैली में हरीश जौहरी की वाश पेन्टिंग्स सर्वोत्कृष्ट है, जिसमें मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार के एकल चित्रांकन के अतिरिक्त समुद्र मन्थन का चित्रण भी उल्लेखनीय है।

अतः भारतीय चित्र कला में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार चित्रों को पारम्परिक शैलियों एवं आधुनिक शैलियों के अतिरिक्त लोककला में भी प्रमुख स्थान प्राप्त है।

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में भारत में पल्लवित होने वाली मध्यकालीन विभिन्न शैलियों में मत्स्य, कूर्म वराह अवतार आकृतियों का विभिन्न कोणों से अध्ययन विश्लेषण का प्रयास किया गया है। भारतीय मध्य काल में कला का उद्भव लगभग 8वीं शती से माना गया है। अपभ्रंश शैली की चित्रित पाण्डुलिपियों में अवतार चित्रण का एक विशेष स्थान रहा। यहां पर गीत गोविन्द की विभिन्न पोथियों में अवतार चित्र त्रुटिपूर्ण ढंग से बनाए गये इस कला में रंगाकन से ज्यादा रेखांकन को महत्व प्रदान किया गया। इसके साथ ही अपभ्रंश शैली में विष्णु के अवतार चित्र हमें आसाम, उड़ीसा, बंगाल के पोथी, पटचित्रों में भी गीतगोविन्द की काव्य प्रति में प्राप्त होते हैं। जहां अपभ्रंश में पाण्डुलिपि एवं पोथी चित्रों में दशावतारों का उल्लेख एवं चित्रांकन है। वहीं ओरछा व दतिया के भित्ति चित्रों में अवतारों को प्रमुखता दी गई हैं। यहां की पृष्ठभूमि पर विष्णु के विभिन्न अवतारों को एक साथ चित्रांकित किया गया, जो देखने पर एक ही परिवार के सदस्य प्रतीत होते हैं।

यद्यपि अपभ्रंश एवं बुन्देली शैली बने मत्स्य, कूर्म, वराह, अवतारों के

चित्रों में यदाकदा त्रुटिपूर्ण एवं भावहीन अंकन होने पर भी चटक रंग संयोजन तथा प्रवाहपूर्ण रेखांकन से विविध अवतारों का चित्रांकन प्रभावशाली प्रतीत हो रहा है।

शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार के चित्रण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। राजस्थानी शैली के चित्रों में वैष्णव भक्ति की भावना पूर्ण रूप में पनपी। यहां दशावतारों का चित्रण बहुतायत से हुआ पूर्व के चित्रों में जैन व अपभ्रंश शैली का प्रभाव दर्शित है इसके साथ ही राजस्थानी शैली के स्वतंत्र चित्रों का निर्माण हुआ, वहीं बाद के चित्रों पर मुगल प्रभाव दृष्टव्य है।

मेवाड़ के अधिकतर चित्रों में मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार को सामुहिक रूप में एवं एकल रूप में इन्हें पूर्ण पशु रूप एवं अर्ध पशु अर्ध दैवीय रूप में चित्रित किया गया है। चित्रों के साथ क्षेत्रीय लिपि में अवतार सम्बन्धित तथ्य अंकित हैं।

मारवाड़ के जोधपुर संग्रहालय में मत्स्य रूप, कूर्म, वराह अवतार आदि के चित्र सुरक्षित हैं। इन चित्रों में पीत वर्ण का बाहुल्य है और मत्स्य अवतार के रोद्र रूप का चित्रांकन इस शैली का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हाड़ोती शैली की बूंदी से प्राप्त में चित्रित वराह अवतार के चित्र में, वानस्पतिक अंकन एवं पृथ्वी का वास्तुतः अंकन दर्शनीय है। चित्र में नारंगी तथा हरे रंग की प्रधानता है एवं चित्र का हाशिया भी इन्हीं वर्णो से पूरित है। राजस्थान की ढूंढार शैली में अवतारों का चित्रांकन सर्वाधिक हुआ, जिसमें अलवर, जयपुर एवं अम्बर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं

पहाड़ी चित्रकारों का मुख्य चिन्तन स्रोत राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं का प्रदर्शन ही रहा। यहां के चित्रकारों ने ग्रंथों को चित्रित करने के पूर्व विष्णु के दशावतारों को अवश्य चित्रित किया और उनसे सम्बन्धित श्लोक भी अंकित किये। यहां की कला अवतार चित्रों में वराह अवतार का श्रंखलाबद्ध रूप से चित्रण वसोहली शैली में मिलता है। गुलेर और नूरपुर की कला में समुद्र मन्थन के सुन्दर दृश्य प्रस्तुत हैं। कांगड़ा शैली में भित्तियों, पोथियों पर एवं जनउपयोगी वस्तुओं पर भी अवतार चित्र देखने को मिलते हैं। जिनमें आभूषणों के बक्से पर अंकित अवतार चित्र उल्लेखनीय हैं। कुल्लू शैली में मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार को एकलरूप में चित्रित किया गया। मानकूट से प्राप्त वराह अवतार चित्र में श्री हरि द्वारा दानव मर्दन का चित्र दर्शनीय है। कश्मीर के चित्रों पर मुगल शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। यह मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार चित्रों की वेशभूषा मुगल शैली से प्रेरित प्रतीत होती है। मौलाराम द्वारा चित्रित गढ़वाल शैली में अंकित मत्स्य अवतार चित्रों में अर्धपारदर्शी जलांकन का अनोखा चित्रण है। पहाड़ी शैली की अन्य उपशैलियों में भी मत्स्य, कूर्म एवं वराह के उत्कृष्ट नमूने प्राप्त हैं।

भारतीय कला लोक चित्रों के बिना अधूरी है, यद्यपि धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों पर भारतीय नारियां घर की दीवारों एवं जमीन पर भिन्न–भिन्न प्रकार की आकृतियों को, चित्र रूप में उकेर कर अपनी धार्मिक आध्यात्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त तो करती ही हैं, साथ ही आनन्दानुभूति को भी प्राप्त करती हैं। अतः लोककला में अन्य विषयों के चित्रांकन के साथ ही, श्री हरि अवतार चित्रों को अंकित कर धार्मिकता का परिचय देती है। भारतीय लोककला में विष्णु

में दशावतार का चित्रण भारत में विभिन्न प्रान्तों व अनेकों रूप, शैलियों तथा चटक रंगों के साथ चित्रांकित है।

बिहार की मधुबनी शैली में मत्स्य के मुख से, कभी श्री हरि का उद्भव, तो कभी उन्हें स्वयं मत्स्य के अन्दर चित्रित किया गया है। यहां विवाह के पश्चात् वर–वधू कक्ष की दीवारों पर, बुजुर्ग महिलओं द्वारा चित्रित कोहवर कला में भी मत्स्य, कूर्म, वराह के अतिरिक्त अन्य दैवीय स्वरूपों के सुन्दर चित्र प्रस्तुत हैं।

उड़ीसा में अगस्त माह में पंचमी उत्सव पर चितेरों द्वारा बनाये जाने वाले पटचित्रों में, विष्णु अवतारों का विशेष महत्व है। इन्हें घर के पिछवाड़े में बुरी आत्माओं से रक्षा हेतु लगाया जाता है। उड़ीसा व बंगाल के लोककला में निर्मित इन पट चित्रों की, वहां की नाट्य क्रीड़ा में भी विशेष भूमिका होती है।

आन्ध्र प्रदेश की लोक कला में कूर्म अवतार की, समुद्र मन्थन की घटना का सविस्तारपूर्वक चित्रण देखने को मिलता है। इन्टरनेट पर भी लोक कला में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार के उत्कृष्ट उदाहरण उपलब्ध हैं। इन अवतार चित्रों में सहजता व सरलता का परिचय मिलता है, जिनके विकास में भारतीय ग्रामीण महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई है।

शोध प्रबंध के षष्ठम अध्याय में भारत की विभिन्न शैलियों में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार आकृतियों का तुलतात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक स्थान की कला समकालीन समाज, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक मूल्यों से प्रभावित होती है। दो राज्यों के मध्य व्यापार, आवागमन प्रचार–प्रसार एवं वैवाहिक सम्बन्धों के कारण भिन्न –भिन्न क्षेत्रों की चित्रकला का प्रभाव एक दूसरे

पर दिखाई देना स्वभाविक है। राजस्थान और पहाड़ी शैली में बने अवतार चित्रों में अनेक समानताऐं एवं भिन्नताऐं होती हैं। कहीं–कहीं पहाड़ी शैली में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार की वेशभूषा मुगल शैली से प्रेरित है। उनका स्वतंत्र निजस्व भी दिखाई देता है, जो वहां की स्थानीय शैली का प्रतिनिधित्व करता है, तो कहीं राजस्थान के चित्रों में चित्रांकित वास्तु अंकन भी मुगल शैली से प्रभावित लगता है। अपभ्रंश शैली में बने अवतार चित्रों में जैन पोथी चित्रों के लक्षण हैं। बुन्देली कला मुगल व राजपूत कला से प्रभावित है। ओरछा और दतिया में बने अवतार चित्रों की शैली एक दूसरे से साम्य रखती है। महाराष्ट्र के अवतार चित्रों, पर पाल शैली का प्रभाव है। उड़ीसा और बंगाल की लोक कला में कुछ समानताऐं दिखाई पड़ती हैं, जबकि मधुबनी शैली में निर्मित अवतार चित्र अन्य शैलियों में बने अवतार चित्रों से पूर्णतः भिन्न हैं। आधुनिक शैली में चित्रित मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार के चित्र पारम्परिक शैलियों में निर्मित चित्रों से प्रेरित प्रतीत होते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध भारत में परम्परागत भारतीय शैली में बने अवतार चित्र, पाश्चात्य यथार्थवादी शैलियों से प्रेरित अवतार चित्र, नवीन चेतना के प्रयोगवादी चित्रकारों द्वारा चित्रित एवं ग्रामीण जन मानस द्वारा लोक कला में निर्मित अवतार चित्रों में से विशेष रूप से मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार के सन्दर्भ में पल्लवित एवं प्रचलित कला शैलियों के सर्वांगीण तत्वों के विश्लेषण पूर्ण अध्ययन का वामन प्रयास है।

सद्धर्म ग्रंथ

सूची
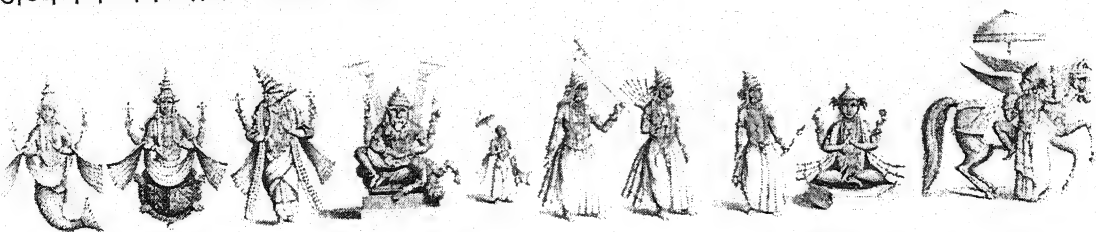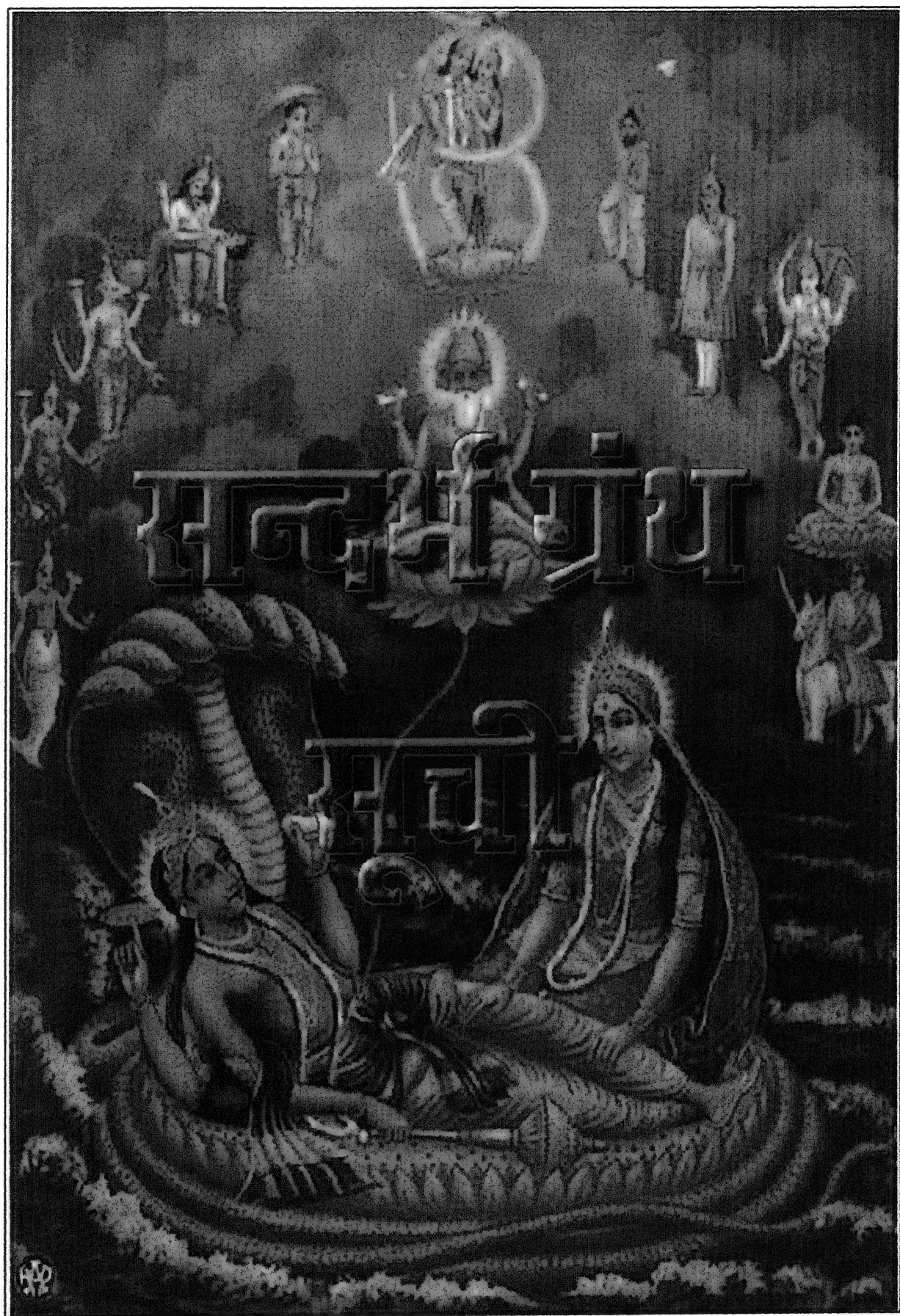
संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी मूलग्रंथ

1. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द – साहित्य एवं कलागत अनुशीलन" प्रथम संस्करण 1988,
2. गौरोला वाचस्पति "भारतीय चित्रकला" चौखम्बा सांस्कृतिक प्रतिष्ठान, दिल्ली 1990,
3. द्विवेदी प्रेम शंकर "राजस्थानी चित्रकला" कला प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण वाराणसी 2002
4. द्विवेदी प्रेमशंकर – "पश्चिमी भारतीय लघु चित्रों में गीत गोविन्द" कला प्रकाशन वाराणसी, 1988
5. चहल आई.एम. "ओरछा के भित्ति चित्र" पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश, भोपाल, सम्पादकीय में से
6. झा लक्ष्मीनाथ "मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला" मिन्नाथ झा प्रकाशन, ग्राम सरिसब विहार
7. तारकनाथ बड़ेरिया "बडेरिया "भारतीय चित्रकला का इतिहास" नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
8. द्विवेदी प्रेमशंकर "गीत गोविन्द पूर्वी भारतीय लघु चित्रों में;; कला प्रकाशन, वाराणसी
9. डॉ. सक्सेना एस.एन. "भारतीय चित्रकला" मनोरमा प्रकाशन
10. चतुर्वेदी गोपालमघुर "भारतीय चित्रकला – ऐतिहासिक संदर्भ" जागृति प्रकाशन, अगरा रोड़, अलीगढ़
11. क्षत्रिय शुकदेव "बंगाल शैली और उसके प्रमुख चित्रकार" चित्रायन प्रकाशन मुजफ्फर नगर
12. चोहान सिंह सुरेन्द्र, "भारतीय चित्रकला" राहुल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

. 1994

13. पं. दीनानाथ पाण्डे, भगवान, रथ विजय कुमार ''जयदेव और गीत गोविन्द – उड़ीसा के विशेष संदर्भ में'', हर्मन प्रकाशघर नई दिल्ली

14. सक्सेना एस.एन. – भारतीय चित्रकला (चित्रकला में आधुनिक परिवेश में विश्वविद्यालयों की भूमिका) मनोरमा प्रकाशन

15. चतुर्वेदी गोपाल मधुकर – भारतीय चित्रकला (ऐतिहासिक संदर्भ) जागृत प्रकाशन अलीगढ़, 1982

16. प्रदीप किरण ''भारतीय कला – आकृति'' कृष्णा प्रकाशन, मेरठ

17. गोस्वामी प्रेम शंकर – ''भारतीय कला में विविध स्वरूप'' पंचशील प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर

18. पगारे शरद – ''पूर्व मध्ययुगीन धार्मिक आस्थाएं – ऐतिहासिक सर्वेक्षण'', नेश्नल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

19. भण्डारकर आर.जी. – वैष्णव, शैव एवं अन्य धार्मिक मान्यताऐं

20. पाण्डेय राजबली – 'हिन्दु–धर्म कोश' लखनऊ

21. अग्रवाल वीणा – 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण में चित्रकला विधान' सन्दीप प्रकाशन दिल्ली

22. श्रीवास्तव ए.एल. – 'भारतीय कला सम्पदा' उमेश प्रकाशन इलाहबाद

23. शर्मा – नुपुर एवं प्रकाश विश्वेश्वर – 'कला दर्शन' कृष्णा मीडिया प्रकाशन मेरठ 2005

24. आनन्द कुमार स्वामी – राजपूत पेन्टिंग – 1975 न्यूयार्क।

25. चतुर्वेदी जगदीश चन्द्र – 'मध्यप्रदेश के कला मण्डप'।

26. ठा. लक्ष्मण सिंह गौर – 'ओरछा का इतिहास – 1988 टीकमगढ़।

27. नीरज जयसिंह – ''राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य।

28. त्रिवेदी एस.डी. – बुन्देलखण्ड का पुरातत्व।

29. डॉ. रामनाथ – मध्यकालीन कलाऐं एवं उनका विकास।

30. वैद्य किशोरीलाल व हाण्डा ओमचन्द्र – 'पहाड़ी चित्रकला' 1959, इलाहाबाद।

31. अग्रवाल भानू – "भारतीय चित्रकला के मूल स्त्रोत" – अलगारिद्म पब्लिकेशन, 1990, वाराणासी

32. तिवारी रघुनाथ प्रसाद – "भारतीय चिकत्रला और उसके मूल तत्व" – 1973 वाराणासी

33. वर्मा अविनाश बहादुर – भारतीय चित्रकला का इतिहास – प्रकाश बुकडिपो बड़ा बाजार, बरेली।

34. झा चिरोंजीलाल – "कला के दार्शनिक तत्व" – इलाहाबाद 1964।

35. हल्दर असित कुमार – "भारतीय चित्रकला" – इलाहाबाद, 1959।

36. अग्रवाल आर.ए. "भारतीय चित्रकला का विकास" मेरठ 1979

37. हाण्डा किशोरीलाल वैद्य, ओमचन्द्र "पहाड़ी चित्रकला"

38. दास रायकृष्ण "भारत की चित्रकला", इलाहाबाद, 1974

39. वशिष्ठ डॉ. राधाकृष्णन – "मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा", यूनिक ट्रेडर्स जयपुर

40. गोस्वामी प्रेमचन्द्र व संग्राम सिंह – "राजस्थान की लघु चित्रशैली", प्रथम खण्ड, राजस्थान ललितकला अकादमी।

41. डा. बद्री नारायण – "कोटा के भित्ति चित्रांकन परम्परा (हाडौती भित्ति चित्रकला की पृष्ठ भूमि)" राधा पब्लिकेशन्स 1989, नई दिल्ली।

42. रागमाला (चांवड) 1605 ई. "चित्रकार निसारदीन गोपी कृष्ण कनोरिया संग्रह" कलकत्ता।

43. शर्मा लोकेश चन्द्र – "भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास", मेरठ

44. पंत डॉ. गायत्री नाथ – "राजपूत लघु चित्रकला" शोध संचय 1997

45. नीजर जयसिंह एवं माथुर बेला – "अलवर की चित्रांकन परम्परा", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

46. मुकुन्दीलाल .– "गढ़वाल चित्रकला, प्रथम संस्करण प्रकाशन विभाग नई दिल्ली 1983।

47. अग्रवाल मधु प्रकाश "मारवाड़ की चित्रकला", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

48. व्यास राजशेखर "मेवाड़ की कला और स्थापत्य" राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।

अंग्रेजी मूलग्रंथ

49. सिंह कवल जीत "वाल पेन्टिंग ऑफ पंजाब एण्ड हरियाणा" आत्मराय एण्ड सन्स प्रकाशन दिल्ली, लखनऊ, चित्र सन्दर्भ से।

50. बेक्आड येव्स "द आर्ट आफ मिथिला" सेरीमोनियल पेन्टिंग फ्राम एन. एनसिएन्ट किंगडम" थामस एण्ड हुडसन, लण्डन।

51. ठाकुर उपेन्द्र "मधुबनी पेन्टिंग्स" शक्ति मलिक, अभिनव प्रकाशन नई दिल्ली,

52. एडवर्ट गार्ट "हिस्ट्री ऑफ असम", 1973 ई.

53. वात्सायन कपिला "जावर गीत गोविन्द" राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

54. दत्त सरोज जीत "फोक पेन्टिंग ऑफ बंगाल" खामा प्रकाशन नई दिल्ली।

56. टैगोर सुरेन्द्र मोहन "द प्रिन्सपल अवतार्स ऑफ दि हिन्दूस", कलकत्ता 1980.

57. रोसी बरब्रा "फ्राम द ओसीन ऑफ पेन्टिंग्स" इण्डियाज पापुलर पेन्टिंग्स 1589 टू दी प्रिजेन्ट, आक्सफोर्ट यूनीवर्सिटी, न्यूयॉर्क, 1998

58. व्यास चिन्तामनी एण्ड दलजीत "साउथ इण्डियन पेन्टिंग फ्राम तंजौर एण्ड मैसूर" गीता प्रकाशक झांसी, उ.प्र. 1988

59. आचार्य एम – "इण्डियन पाप्यूलर पेन्टिंग्स इन द इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी" यू.पी.एस. पब्लिशर

60. मोहन्ती बी – "पाटा पेन्टिंग्स ऑफ उड़ीसा" पब्लिकेशन डिवजीन मिनिस्ट्री ऑफ इन्फोर्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग ऑफ उड़ीसा

60. गोस्वामी करुणा – कश्मीरी पेन्टिंग, आर्यन बुक इन्टरनेशनल, नई दिल्ली।

61. ओरी विश्वचन्द्रा – ''ऑन द ओरिजन्स ऑफ पहाड़ी पेन्टिंग्स'' इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी, शिमला, नई दिल्ली।

62. पॉल प्रतापादित्य – कोर्ट पेन्टिंग ऑफ इण्डिया (16–19 शती) कुमार गैलरी, नई दिल्ली।

63. पटनायक देवदत्त – ''विष्णु एन इन्ट्रोडक्शन'', प्रथम संस्करण, 1999, प्रकाशन – मिसेस जौन गिनिडाडे, वकील्स, फीफर एण्ड सिमोन्स लि. मुम्बई।

64. ऐफुज्जुद्दीन एफ.एस. – ''पहाड़ी पेन्टिंग एण्ड सिक्ख पोर्टेट, इन द लाहौर'' म्यूजियम, लन्दन।

65. आर्चर डब्ल्यू. जी. – ''इण्डियन पेन्टिंग, इन बूंदी एंड कोटा''।

66. पाण्डेय ए.के – ''कोन्सेप्ट आफ द अवतार''

67. ''कल्चर हेरिटेज ऑफ इण्डिया'', भाग तृतीय

68. काणे – ''हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र'' भाग 2 एवं राय चौधरी, अर्ली हिस्ट्री ऑफ वैश्णव सेक्टर

69. गोस्वामी बी.एन. ''फिशर एबेरहार्ड और बौनर जीओरगदे ''सामालुंग एलिस बोबर'' गैस चैनक एण्ड दास म्यूजीयम रेटीबर्ग, ज्यूरिक

70. सिमिनो रोजा मारिया ''वाल पेन्टिंग ऑफ राजस्थान'' अम्बर और जयपुर आर्यन बुक इन्टरनेशनल, नई दिल्ली।

71. टण्डन राजकुमार ''इण्डियन मिनेचर पेन्टिंग'' नाटेसन प्रकाशन, महात्मागांधी रोड, बेंग्लौर

72. आर्चर के.सी. ''अननोन पहाड़ी वाल पेन्टिंग इन नार्थ इण्डिया'' रेखा प्रकाशन, नई दिल्ली।

संस्कृत / वेदपुराण

73. डॉ. तारणीश उपाध्याय, शास्त्री मिश्र बाबूराम ''ब्रह्मावैवर्त'' प्रयाग सन् 1981

74. वर्मा निवास शास्त्री ''श्री वराहमहापुराणम्'' महर्षि श्री वेद व्यास प्रवीणम्'' प्राच्य वाड्मय प्रकाशन, तुलसी प्रेस, सागर गेट, चन्द्र लोक कासगंज, उ.प्र. 1981

75. ''श्री वराह पुराण'', गीता प्रेस, गोरखपुर

76. त्रिपाठी राम प्रसाद ''वायु पुराण'' साहित्य रत्न सम्वत् 207 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

77. शर्मा राम आचार्य ''अग्निपुराण'' संस्कृत संस्थान ख्वाजा कुतुब, बरेली

78. त्रिपाठी भागीरथ प्रसाद चटर्जी अशोक नारायण, ''श्री विष्णु धर्मोत्तर पुराण (चित्र सूत्रम) संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणासी।

79. चौधरी नारायण सिंह ''कूर्म पुराण'' आनन्द स्वरूप गुप्ता, सर्व भारतीय काशिराज न्यास दुर्ग, राम नगर, वाराणसी 1972

80 शर्मा राम आचार्य, गोतम चनलाल मत्स्य महापुराण संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब बरेली, 1970

81. शर्मा राम. आचार्य ''कूर्म पुराण'' संस्कृति संस्थान ख्वाजा कुतुब बरेली, 1970

82. स्लेटा क्रेशिव ''विष्णु धर्मोत्तर पुराण'' प्रिय बाला शाह सं. बड़ोदा, 1961

83. हिन्दी अनुवादक गुप्त मुनि लाल ''संक्षिप्त विष्णु पुराण'' गीता प्रेस गोरखपुर

84. झा. तरिणीश, मिश्रा बाबूलाल प्रभात ''ब्रह्मावैवर्त पुराणम्'' प्रयाग, 1981

85. महाभारत

86. कोटिल्य अर्थशास्त्र

87. माधवाचार्य ''पुराण दिग्दर्शन'' दिल्ली

88. बाल्मीकि रामायण

89. शाह प्रियबाला ''विष्णु धर्मोत्तर पुराण'' तृतीय खण्ड बड़ौदा, 1958

90 शर्मा राम ''हरिवंश पुराण'' बरेली

91. शर्मा राम ''गरुड़ पुराण'' बरेली

92. 'संक्षिप्त पद्म पुराण' गीता प्रेस गोरखपुर

93. शर्मा राम ''पद्मपुराण'' बरेली

94. पोद्दार हनुमान प्रसाद ''विष्णु पुराण गीता प्रेस गोरखपुर

95. पोद्दार हनुमान प्रसाद "श्रीमद् देवी भागवत पुराण" गौरखपुर

96. डोगरे जी महाराज "श्रीमद् भागवत महापुराण" वाराणासी

97. पाण्डेय रामतेज "श्रीमद् भागवत पुराणम्" काशी वाराणसी

98. मिश्रा बालमुकुन्द "संक्षिप्त विष्णु पुराण" गोरखपुर

99. शाह प्रियबाला "विष्णु धर्मोत्तर पुराण बड़ोदा, 1958

100. "कल्याण पुराण", पुराण कथाड्क संग वर्ष 1963

101. "शतपथ ब्राह्मण" गीता प्रेस गोरखपुर

102. "चित्रसूत्रम" गायकवाड़ ओरियन्टल बुक सीरीज बड़ौदा।

103. द्विवेदी माता प्रसाद, "अर्थवेद", संस्कृत संस्थान बरैली, द्वितीय संकरण, 1962

104. "कल्याण मत्स्यपुराणड्क" उत्तरार्ध संख्या, वर्ष 59, गीता प्रेस गोरखपुर

105. "कुर्मपुराड्क" जनवरी एवं फरवरी अंक वर्ष 71, गीता प्रेस गोरखपुरा

106. "धर्मशास्त्रांडक" संख्या 1 वर्ष 70 गीता प्रेस, गोरखपुर

107. "मत्स्य पुराणाडंक" संख्या 1 वर्ष 68, गीता प्रेस, गोरखपुर

108. "संक्षिप्त वराह पुराण" – इंक्यान्हवे वर्ष का विशेषांक, 1977

पत्र–पत्रिकाऐं

109. मजुमदार एन.आर. "जनरल आफ द यूनिवर्सिटी, बाम्बे", 1980

110. चित्ररंजन "श्री संत शुभराम कलाकृति संग्रह" महाराष्ट्र राज्य साहित्य

111. ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक पाठ्यक्रम, प्रजापिता ब्रहमकुमारी, ईश्वरीय विश्वविद्यालय, पाण्डव भवन, आवू पर्वत राजस्थान

112. बुन्देलखण्ड साहित्य दर्पण (वार्षिक पत्रिका 2002)

113. आई.एम. चहल "ओरछा के भित्ती चित्र" पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश भोपाल।

114. कला संगम विविध कलाओं का त्रैमासिक, हेमन्त, ग्रीष्म संयुक्तांक जनवरी, अप्रेल 1980

115. जनरल ऑफ इशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल – 1902 ओरछा गजेटियर।

116. हरिमोहन पुखार "बुन्देली लोक चित्रकला" बुन्देलखण्ड संग्रहालय समिति, भरत चौक, उरई

117. ए टू जैड, "भारत रोड एटलस" इन्टरनेशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007

118. श्री हरि दशावतार" गीता प्रेस गोरखपुर

119. "साधना पथ" डायमण्ड मासिक पत्रिका

120. श्री परहंस योगानन्द "योगदा सम्वाद्" आध्यात्मिक पत्रिका योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया बियर

121. भानावत, महेन्द्र, "राजस्थान की लोक कलाऐं" मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद् भोपाल, 1982

122. इण्डियन हिस्टारिकल क्वाटरली मेग्जीन XXX.

123. दुबे श्यामचरण "मानव और संस्कृति (निबन्ध) चौमासा अंक 1982, मध्यप्रदेश लोक कला परिषद् भोपाल।

124. डॉ. पाण्डेय लक्ष्मीकांत, तुलसीदास कृत, 'विनय पत्रिका'

125. डब्ल्यू जी आर्चर "इण्डियन पेन्टिंग फ्राम दी पंजाब हिल्स 1978, वाल्यूम–2, चम्बा।

126. शोध संचय, 1997

127. पवन कुमार जैन "हमारी लोक कलाऐं"

128. नागर शान्ती लाल "वराह इन इण्डियन आर्ट", कल्चर एण्ड लैक्चर, नई दिल्ली, 1993

129. रंगराजन, हरिप्रिया, "वराह इमेज इन म.प्र.", सिम्बोलिज्म एण्ड आइकोनोग्राफी, इन जनरल ऑफ एसेआटिक सोसाइटी ऑफ बोम्बे, 1997 पी.पी. 100 – 119 वौल्यूम 72

समाचार पत्र

130 मिश्रा मीनल "दानव से देव बनाती है कला", राष्ट्र बोध, बुन्देली कलम, "शनिवार 15 नवम्बर 2003"

131. धर्मध्वज समाचार 23–29 अप्रेल 2006, नई दिल्ली, पृ.सं. 5

फोल्डर

132 Indian Miniatures "Selected works from the art gallery of the Lyudmila Zhivkova International foundation Sofia - Bulyareki Houdozhnik Publisher Sofia - 1988

Vishnu Avatars, Tempera paper 237 x 294mm Rajasthan School 18th Century.

संग्रहालय / पुस्तकालय

133 राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

134. ललितकला भवन, रवेन्द भवन नई दिल्ली

135. मोर्डन आर्ट गेलेरी, नई दिल्ली

136. इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्ट्रल फार द आर्ट नई दिल्ली

137. सिटी पैलेस जयपुर,

138. प्रिंस वेल्स म्यूजियम, मुम्बई

139. राजकीय संग्रहालय, झांसी

140. राजकीय पुस्तकालय झांसी

141. राजकीय संग्रहालय, आगरा

142. राजकीय संग्रहालय, बैंगलौर

143. मानाली नगर आर्ट गैलेरी, हिमाचल प्रदेश

144. माधवराव पुस्तकालय, बाड़ा, ग्वालियर

145. लखनऊ संग्रहालय

146. राजकीय पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

147. सूरत कुण्ड मेला, फरीदाबाद

148. कमलाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय लायब्रेरी, ग्वालियर

149. भारतकला भवन भोपाल।

Web Site : e

1. **Puskar Paintings :: Others :: visnu**

Others. 1 of 12. Lord Vishnu in Vaikuntha. (London, 1984, original, 54" x 40") Lord Vishnu appears with four arms. He is very bright, and around the lower portion of His body, He wears a yellow silken garment. ... Gallery: Puskar Paintings Album: Others. Powered by Gallery v1.4.4-pl4 ***...puskarpaintings.com/gallery/others/visnu*** - 9k - Cached - More pages from this site

2. **Kalki- Incarnation of Vishnu: Vishnu:** Gods: Hindu: Religion: Paintings - Art of Legend India Product Gallery

... Custom Made Portraits. Paintings. Religion. Hindu ... birth as the Kalki incarnation and become the son of Visnu Yasa. At this time the rulers of the earth ...***www.artoflegendindia.com***/details/PBAAE014 - 50k - Cached - More pages from this site

3. **ASPECTS OF EARLY VISNUISM**

... All Products Paintings Sculpture Jewelry Textiles Dolls Book Articles Sold Items ... description of the origin of Visnu, his character, emblems, attributes, incarnations, comparative... ***www.exoticindiaart.com***/book/details/NAB293 - 34k - Cached - More pages from this site

4. **THE AGNI-PURANA:** 4 Parts (Ancient Indian Tradition and Mythology: Vol. 27-30)

... All Products Paintings Sculpture Jewelry Textiles Dolls Book Articles Sold Items ... 2. Manifestation of Visnu as Fish. 3 ... ***www.exoticindiaart.com/***book/details/IDE887 - 79k - Cached - More pages from this site

5. **About - Incarnations of Visnu**

black peacock. indian art - miniatures - archecticture - vedic philosophy. Home. About these Paintings - Incarnations of Visnu. These miniature paintings are part of the manuscripts collection in the Institute of Oriental Studies, St Petersburg. ***www.goloka.com/***docs/gallery/avatars/01incarnations/about.html - 8k - Cached - More pages from this site

6. **Incarnations of Visnu**

black peacock. indian art - miniatures - archecticture - vedic philosophy. Home. Avatars - Incarnations of Visnu - Thumbnail View. Click a picture to see a larger view with description and/ or commentary.***www.goloka.com***/docs/gallery/avatars/01incarnations - 11k - Cached - More pages from this site

7. **The Paintings of Siva in Indian Art/Chitralekha Singh: Book No. 5353**

... The Paintings of Siva in Indian Art/Chitralekha Singh. New Delhi, 1990, 2 ... "Brahma Visnu and Siva constitute the Hindu trinity, Brahma is the creator Visnu is the ... ***www.vedamsbooks.com***/no5353.htm - 6k - Cached - More pages from this site

8. **Vishnu: Gods: Hindu:** Religion: Paintings - Art of Legend India Product Gallery ... Custom Made Portraits. Paintings. Religion ... Tao Paintings. Indian Paintings. Nature Paintings. Hunting Painting ... Global Gallery. Antique Paintings. Modern Art Gallery ...***www.artoflegendindia.com***/browse/PBAAE/aff00339 - 73k - Cached - More pages from this site

9. **Krishna Art - The Art of Vishnu das**

Krishna Art - The art of Vishnudas - transcendental Vaishnava paintings and murals ***www.krishnaland.com*** - 5k - Cached - More pages from this site

10. **Patachitra Painting on Silk**

Paintings of Lord Vishnu. ***www.gangesindia.com***/product/630 - 39k - Cached - More pages from this site

11.THE GODS OF HINDUISM

... Matsya,the fish:it saved humanity's forebears from the flood. ... of Hindu mithology, and is regarded by some not as an avtar but as Vishnu himself.... ***www.destinationindia.com***/editorial/ tradition/hindu/thegodsofhinduism.htm - 19k - Cached - Similar pages

12.DREAMS OF THE BULL, BISON, BUFFALO - THE CREATION, DEATH ...

The incarnation of Lord Vishnu is called Avtar. So far Lord Vishnu has incarnated in the form of Matsya (fish), Kurma (turtle), Varaha (wild boar), ...***www.greatdreams.com***/bison.htm - 36k - Cached - Similar pages

13.Shree Shaligram,Shri Shalagrama Shilas,Exotic Saligram ...

... Kurma-Avtar Shaligram. Kurma-Avtar. Puja of Shri Shaligram Shilas. The Skanda Purana also says that ... Matsya Shaligram. Matsya. Surya Shaligram. Surya ...***www.rudraksha-ratna.com***/shaligrams.htm - 61k - Cached - Similar p=ages

14.VISHNU PURAN - Synopsis and Preview of Hindu Religious and Pooja ...

... Matsya (horned fish), Kurma (Mighty turtle), Varaha (Fierce Boar), Narasimha (man-lion), ... Lord Vishnu is born as 'Vaman Avtar' (a dwarf) to Aditi. ... ***www.intelindia.com***/mahabharat/synopsis_vishnupuran.htm - 177k - Cached - Similar pages

15.Avataars of Lord Vishnu

... MATSYA AVATAR (Incarnation as a Fish) : All the oceans had unified into... Lord Vishnu in his 11th incarnation as a Matsya (Fish) rescued the earth ...

vicharvandana.tripod.com/24avataars.html - 52k - Cached - Similar pages

16.The Sanatana Dharma

... or Swaminarayan follow him and pray to him because they like his avtar.... all the various forms of Lord (Rama, Nrsimha, Baladeva, Kurma, Matsyaetc....***www.hare-krishna.org***/showflat/cat/HareKrishnaNews/1183/3/ collapsed /5/o/all - 85k - Cached - Similar pages

17.Kalki avatara

... Narada, Varaha, Matsya, Yajna, Nara-Narayaлa, Kapila, Dattatreya,...and the last of the Avtar has happened, but gloomy and sad that he has left...***www.audarya-fellowship.com***/printthread. php?Cat=&Board=hinduism&main=37431&type=thread - 119k - Cached - Similar pages

18.1009. Devotees Of Vishnu - Pancharatna Volumes - Amar Chitra Katha ...

... the Padma Purana specify the number as nine, while the Bhagawat Purana specifies it as ten, the Vayu Purana as twelve and the Matsya Purana as fourteen.

www.navrang.com/?Page=Products&ID=191 - 29k - Cached - Similar pages

19.538. The Churning of the Ocean - Regular Titles - Amar Chitra ...

... and the Padma Purana specify the number as nine, while the Bhagavata specifies it as ten, the Vayu Purana as twelve and the Matsya Purana as fourteen. www.navrang.com/ index.php?Page=Products&ID=237 - 30k - Cached - Similar pages [More results from *www.navrang.com*]

20.Encyclopedia: Avatar

... Such avatars include the first five avatars from Matsya to Vamana except for Narasimha. ... Matsya, the fish, represents life in water. ...

www.nationmaster.com/encyclopedia/Avatar - 35k - Cached - Similar pages

21.Aspen no. 10, item 4: Indian Miniature Paintings

Krishna, the most popular incarnation of Vishnu as hero and lover, is the predominant subject for painters of the period of the Indian miniatures, ...

www.ubu.com/aspen/aspen10/indian.html - 21k - Cached - Similar pages

22.Krishna Darshan Art Gallery

Krishna Print # 101, A rare view of Baby Krishna with Vishnu in the background. Krishna Print # 102, A lovely miniature painting of Sri Krishna And Radha ...

www.stephen-knapp.com/krishna_darshan_art_gallery.htm - 90k - Cached - Similar pages

23.Kamat's Potpourri: The Paintings of India

Dakhani Miniatures Amalgamation of Persian and Indian paintings. ... Painting of Lord Vishnu · Painting on the Daria-Daulat Bagh Palace · Painting on a ...

www.kamat.com/kalranga/art/paintings.htm - 23k - Cached - Similar pages

24.Indian Paintings - Paintings of India

At first glance, an Indian miniature painting, to the uninitiated, ... Miniature painters employed at various medieval courts, discovered the potential of ...

www.indianchild.com/indian_paintings.htm - 17k - Cached - Similar pages

25.Visual Library

Mughal miniatures,; Hamzanama,; Akbarnama,; Pahari,; Rajasthani paintings,; Company paintings,; Kalighat painting,; Mithila painting ...

ignca.nic.in/vlb_body.htm - 31k - Cached - Similar pages

26.Pahari painting -- Britannica Concise Encyclopedia - Your gateway ...

Pahari painting Style of miniature painting and book illustration that developed in the independent states of the Himalayan foothills in India &circa; ...

concise.britannica.com/ebc/article-9374369 - 38k - 9 Jan 2006 - Cached - Similar pages

27.INDIAN MIRROR - ARTS - Paintings

The earlier paintings show Vishnu and Lakshmi with clouds in the background. ... Miniature paintings in the western part of India had some Persian influence ...

www.indianmirror.com/arts/arts3.html - 15k - Cached - Similar pages

28.Holdings of National Museum of India,New Delhi(India)

INDIAN MINIATURE PAINTINGS The Museum has in its possession the rich heritage of Indian ... This 18th-19th century chariot, dedicated to Lord Vishnu, ...

www.nationalmuseumindia.gov.in/collection.html - 43k - Cached - Similar pages

29.Lakshmi in Ardhapurusha Rupa (The Vaishnava Ardhanarishvara Form)

In Vaishnava Ardhanarishvara forms, the presence of Vishnu, ... Dr. Daljeet is the curator of the Miniature Painting Gallery, National Museum, New Delhi.

www.hindupaintings.com/product/HV72/ - 40k - Cached - Similar pages

30.Indian Paintings,Indian Sculptures,Sculptures Supplier,Paintings ...

... saraswati, lakshmi, sakthi, ganesha, parvati, krishna, vishnu, brahma, ...

We offer indian silk paintings, marble paintings and miniature paintings. ...

trade.indiamart.com/offer/handicrafts-gifts/ paintings-sculptures/sell5.html - 53k - Cached - Similar pages

31.AltaVista - Image Search results

32.Yahoo! India Search Results

33.Google Image Results

34.Photo Gallery of HDH Pramukh Swami Maharaj's Vicharan, Tithal Page ...

... Shri Harikrishna Maharaj adorned with chandan as Matsya Avtar, Swamishri circumambulates the mandir, Swamishri blesses the volunteers ...

www.swaminarayan.org/vicharan/2001/05/01/tithal1.htm - 19k - Cached - Similar pages

35.New Page 5

... Matsya Avtar (Fish encarnatin of Lord Vishnu). Restrictions on the use of Images.

You may view or download an image to your workstation and store it, ...

ignca.nic.in/asp/body.asp?imgsrc='gg01;gg0766' - 4k - Cached - Similar pages

36.Indira Gandhi National Centre for the Arts - Slide Show of Digital ...

... Matsya Avtar (Fish encarnatin of Lord Vishnu). Kurma Avtar (Tortoise incarnation of Lord Vishnu). Varah Avtar of Lord Vishnu. ...

ignca.nic.in/asp/showbig.asp?projid=gg01 - 28k - Cached - Similar pages

[More results from ignca.nic.in]

37.Orchha Paintings/Aruna

... Rasleela, Rukmani Haran; other divinities - Shiv, Ganesh, Vishnu, Churning of Ocean, Varah Avtar, Narsingh Avtar, Matsya Avtar, Hayagriva, Vaman Avtar, ...

https://www.vedamsbooks.com/no23917.htm - 5k - Cached - Similar pages

38.Hindunet: The Hindu Universe: Got struck at resolving all avataras.

... (=1) Matsya-Avtar came at the end of the last cycle, when human-civilisation of that cycle reached to its extreme Kali, the extreme impurity, ...

www.hindunet.com/forum/showflat.php?Cat=& Board=ramayana & Number = 37479 & page = 0&view=collapse... - 83k - Cached - Similar pages

39.THE LAST VISHNU AVTAR IN THIS KALYUGA AND HE IS KALKI

... SIMILARLY THE KALKI AVTAR MUST ALSO APPEAR IN THE LAST YEARS OF KALIYUG IE ... AT SEVERAL PLACES IN SKAND PURAN, AGNI PURAN, MATSYA PURAN & MAHABHARAT...***www.geocities.com***/ tajesh420/KALKI.html - 295k - Cached - Similar pages

40.VISHNU AVTAR AND MUCH MORE

VISHNU AVTAR AND MUCH MORE ... (1) THE FISH (MATSYA). THE VEDAS WERE STOLEN FROM BRAHMA BY A DEMON, SO THE GODS SENT A FLOOD ON THE EARTH TO DROWN HIM AND ...www.geocities.com /tajesh420/ AVTAR.html - 513k - Cached - Similar pages [More results from ***www.geocities.com***]

41.kids

... Prahlad & Hiranyakashap. Pavanputra Hanuman. Lord Krishna- Bal Leela.The Dashavtar. Matsya Avtar. Kurma Avtar. Varaha Avtar. Narasimha Avtar...***www.ruchiskitchen.com***/ruchiskitchen/kids/ mythside.htm - 5k - Cached - Similar pages

42.kids

... Matsya Avatar - The Fish IncarnationEverybody is familiar with the term "VEDAS".... has come down to earth as a Puranic Lore, called the MATSYA PURANA. ...

www.ruchiskitchen.com/ruchiskitchen/ kids/stories/avtaars/matsya.htm - 10k - Cached - Similar pages

42.HINDUISM AND THE BAH I FAITH Prepared for the Bah Academy By Mr... Beginning of Era of Kalki Avtar h. Duration of Both the Avtars on Earth. i.... AGNI PURAN, MATSYA PURAN & MAHABHARAT f) This is also called as AGNI ...***www.bahacademy.org***/mater/ftp/Hindu_Mishra.txt - 51k - Cached - Similar pages

43.Hingloss

The main references are to Sanskrit terminology, although variants are found and used in other Indian languages. Lakshmi - Lasksmi, Vishnu - Visnu type variants are not always included because of their frequency. ... Avatara. Avtara. One who descends ...***www.slamnet.org.*uk**/re/hingloss.htm - 123k - Cached - More from this site

44.Dwarf trampling in indian culture ...

The Dwarf form was a divine avtara of Visnu, the 5th Avtar, ***Vamana forumhub.com***/ indhistory/2520.13.58.37.html - 17k - Cached - More from this site

45.phorum - General - Translation of Lumbee Choapai

... appeared in physical form, then Shiva was incarnated and then Visnu. It is all the Play of the ... daint jchchan oopjaio adi aunti aikai avtara soei guru smjhiayho hmara (9 ...**www.gursikhijeevan.com**/community/ phorum/read.php?f=1&i=2861&t=2861 - 59k - Cached - More from this site

46.KABIOVACH BAINTI CHAUPAI

KABIOVACH BAINTI CHAUPAI PATSHAI 10TH - By Dalip Singh The Composition of "Kabiovach Bainti Chopai of Sri Guru Gobind Singh Ji, written in symbolic language, but generally literally translated, has been greatly misunderstood. ... when Brahma appeared in physical form, then Shiva was incarnated and then Visnu. It is all the Play of the Temporal Lord ...***www.migurdwara.org***/trans1.htm - 36k - Cached - More from this site

47.Sri Dasam Granth Sahib - Kabio Vach Bainti Chaupai (English Translation)

... appeared in physical form, then Shiva was incarnated and then Visnu. It is all the Play

of the ... jchchan oopjaio adi aunti aikai avtara soei guru smjhiayho hmara (9) ...***srec.gurmat.info***/srecarticles/.../ kabiovachbaintichaupai.html - 23k - Cached - More from this site

48.A Glossary of Hindu terms

... Avatar. Avatara, Avtara. One who descends ... Vishnu. Visnu. A Hindu god ...re-xs.ucsm.ac.uk/gcsere/glossaries/***hindglos.html*** - More from this site

49. Merwara - Marwar Circuit, Rajsathan India, Covers Ajmer, Pushkar, Baghera, Foy Sagar, Kishangarh, Todgarh, Kurki, ...

... renowned of them all is the temple of Varaha Avtar (incarnation of Lord Vishnu in the form of ... southern side of a big sacred tank known as Varaha Sagar. ***...4to40.com/ 4to40.com***_non_ssl/discoverindia /places /index.asp?... - 28k - Cached - More from this site

50. Vaishnav Calendar 2004

... Saturday, Bhaimi Ekadasi (fast from grains & beans) Fast till noon for appearance of Lord Varaha; feast tomorrow ... 20 2005, Sunday, Appearance of Lord Varaha. Feb 21 2005, Monday ***...radhagovinda.org/ calendar.html*** - 18k - Cached - More from this site

51. Tirumala, the Ultimate Destination of Pilgrims

Tirumala Tirupati Temple of Srinivasa, also known as Venkateswara ... So declares the Varaha Purana. Tirumala, the abode of Lord Venkateswara is the ultimate goal of all ... According to the Varaha and Brahmanda Puranas, Lord Brahma instituted this nine ***...www.ramanuja.org/sv/temples/tirumalai/overview.html*** - 11k - Cached - More from this site

52. Chapter 6

CHAPTER SIX. THE TEN AVATARS. The ten incarnations of Vishnu are a recurrent theme in Vedic history. ... He took the form of a gigantic boar, Varaha, and entered the universe to rescue the earth from ... is normally considered to be an ugly animal, Varaha was most beautiful ***...www.fov.org.uk/hinduism/*** 06.html - 41k - Cached - More from this site

53. Merwara - Marwar Circuit, Rajsathan India, Covers Ajmer, Pushkar, Baghera, Foy Sagar, Kishangarh, Todgarh, Kurki, ...

... renowned of them all is the temple of Varaha Avtar (incarnation of Lord Vishnu in the

form of ... southern side of a big sacred tank known as Varaha Sagar. ...*4to40.com/ 4to40.com*_non_ssl/discoverindia/ places/index.asp?... - 28k - Cached - More from this site

54. **Vaishnav Calendar 2004**

... Saturday, Bhaimi Ekadasi (fast from grains & beans) Fast till noon for appearance of Lord Varaha; feast tomorrow ... 20 2005, Sunday, Appearance of Lord Varaha. Feb 21 2005, Monday ...*radhagovinda.org /calendar.html* - 18k - Cached - More from this site

55. **Tirumala, the Ultimate Destination of Pilgrims**

Tirumala Tirupati Temple of Srinivasa, also known as Venkateswara ... So declares the Varaha Purana. Tirumala, the abode of Lord Venkateswara is the ultimate goal of all ... According to the Varaha and Brahmanda Puranas, Lord Brahma instituted this nine ...*www.ramanuja.org*/sv/temples /tirumalai/overview.html - 11k - Cached - More from this site

56. **Chapter 6**

CHAPTER SIX. THE TEN AVATARS. The ten incarnations of Vishnu are a recurrent theme in Vedic history. ... He took the form of a gigantic boar, Varaha, and entered the universe to rescue the earth from ... is normally considered to be an ugly animal, Varaha was most beautiful ...*www.fov.org.uk*/hinduism/06.html - 41k - Cached - More from this site

vishnu+miniatures+painting - Google Search.htm

www.sanatansociety.org/ beeld/pix/hj_vishnu_in Matsya or the Fish Incarnation - by Harish Johari.htm

Black Peacock.com/Thumbnail View - Kangra Paintings - Bihari Sat Sai

Black Peacock.com/The List of Incarnations.htm

Encyclopedia for Epics of Ancient India

Matsya - Wikipedia, the free encyclopedia.htm

Indian Miniatures Outline.htm

Image Gallery (Epics of India).htm

Image Information: Churning the Ocean of Milk from Ramakatha Rasavahini (no artist information provided). Website: Vahini.org

Concise Britannica.com

Concise Encyclopedia Article Pahari painting

57.http://www.tribuneindia.com/2005/20050417/spectrum/main2.htm

www_pondichery_com-french-divinites-avatar2_jpg.htm

www.info-sikh.com/ v24vishnu.jpg

: **http://www.info-sikh.com/**VVPage1.html Chaubis Avtar

www.courses.rochester.edu/.../ Churning.jpg

: ***http://www.courses.rochester.edu***/muller-ortega/rel249/lakshmi/Lakshmi_Ocean.html

www.crystallotus.com/ vishnu/Images/052.jpg

http://www.harekrsna.com/philosophy/incarnations/purusa.htm

ignca.nic.in/images/ gg01/big/bgg0777.jpg

Gita Govinda painting by Sh. Pradeep Mukherjee, painted on cloth in the phad style of Rajasthan, reflects the contents of 292 shaloka ot gita Govinda.

58.goacentral.com/ Goatemples/hinduism.htm

59.***Aspen no_ 10, item 4 Indian Miniature Paintings.htm***

60.***AltaVista.com*** - Image Search results for incarnation of vishnu.htm

61.***http://www.goloka.com/***docs/gallery/avatars/10incarnations

62. **VishnuPuran** (Super Digital) - Volume 15 of 21 Indiaplaza_com DVDs and Movies!.htm

63. ***http://en.wikipedia.org/***wiki/Varaha

64.***Indian Gods & Goddesses.com*** - Main Page

Dasavataram - The story of all the avatarams

65.***The gods of hinduism***1.htm

66.***Orchha Paintings***-Aruna.htm kids.htm

Lord VISHNU in this manner saved his True Devotees from dissolution so as to hand down divine knowledge to the next generation and saved the VEDAS from destruction so as ensure CREATION after the DISSOLUTION.

67.Indira Gandhi National Centre for the Arts - ***Slide Show of Digital Images.htm***

68.gsbkerala. com The main temples of Varaha Swamy in Kerala are at Varapuzha and Cherai

69.Sri Varaha-avatara.htm Varaha in the Vishnu Purana | Varaha in the Vedic Literature | Verses in Prase of Sri Varaha | Holy Places (tirtha-s) of Sri Varaha | Varaha-Darshana: Vison of an Ancient Varaha

70.varha\aakashvahini_com.htm -

Brahma and the other Devas praised Sri Varaha for saving the Earth by chanting the Vedas and showering flowers on Him. Lord Vishnu decided to stay on Earth in the form of Sri Varaha for some time, to punish the wicked and protect the virtuous

71.http://www.ur4da.com/24Avtaar1.htm#adi -

Adi purush avatar,	The eternal youths,	Varaha avatar,	Narad avatar,
Nar-narayan avatar,	Kapil avatar,	Dattatrey avatar,	Yagya avatar,
Rishabh avatar,	Prithu avatar,	Matsya avatar,	Kachchap avatar
Dhanvantari avatar,	Mohini avatar,	Narsimha avatar,	Hayagreev avatar
Vaman avatar,	Parshuram avatar,	Vyas avatar,	Ram avatar
Balaram avatar,	Krishna avatar,	Buddha avatar,	Kalki avatar
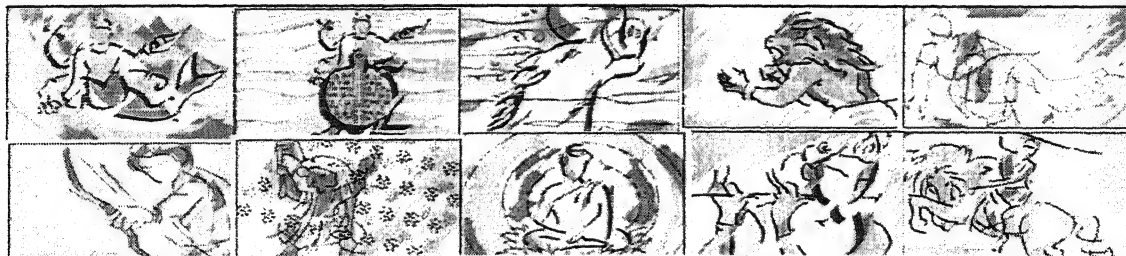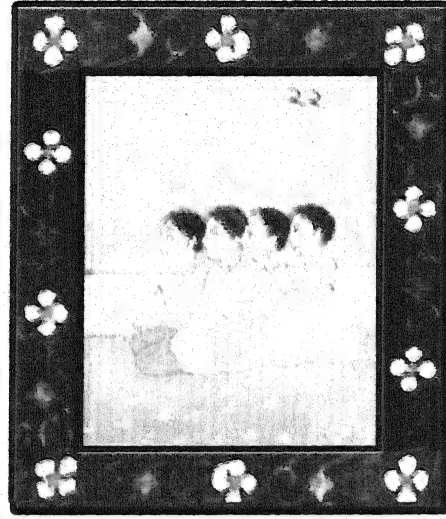
चित्र क्रमांक ००१ - सनत कुमार अवतार - जयपुर शैली
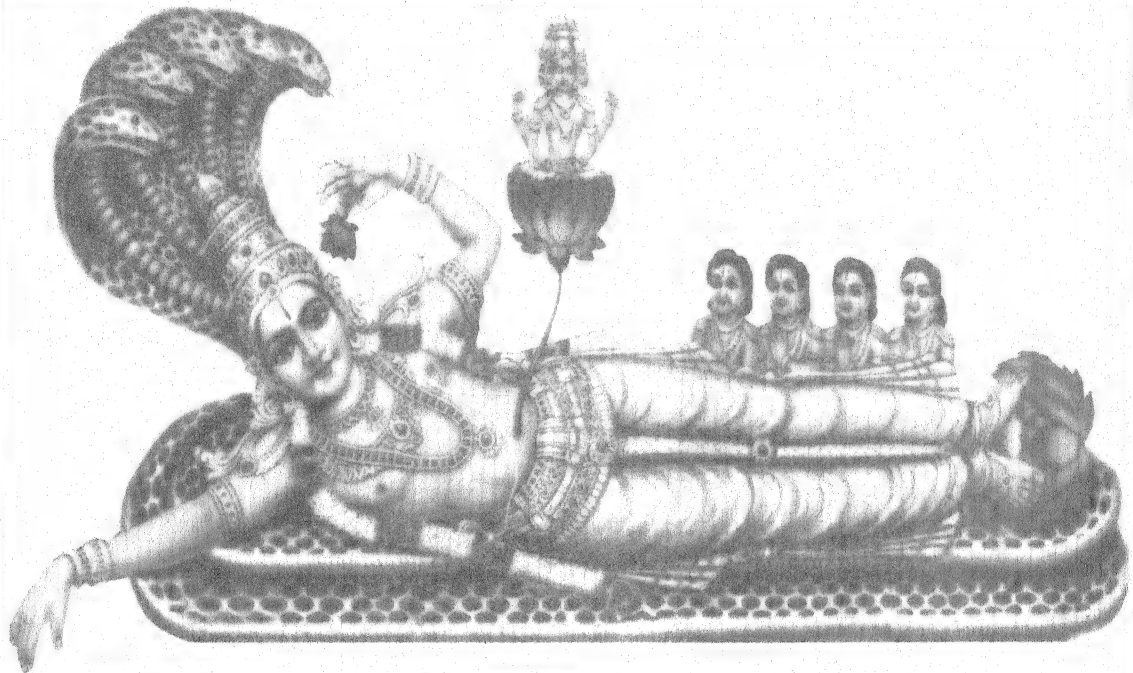
चित्र क्रमांक ००२ - कोमार्य सर्ग अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ००३ - वराह अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ००४ - नारद अवतार
जयपुर शैली
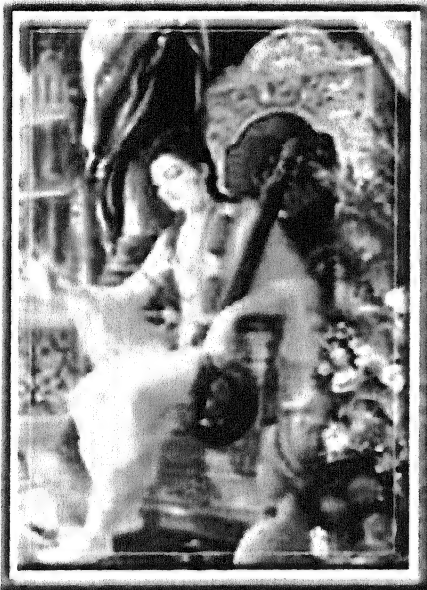
चित्र क्रमांक ००५ - नारद अवतार
आधुनिक शैली
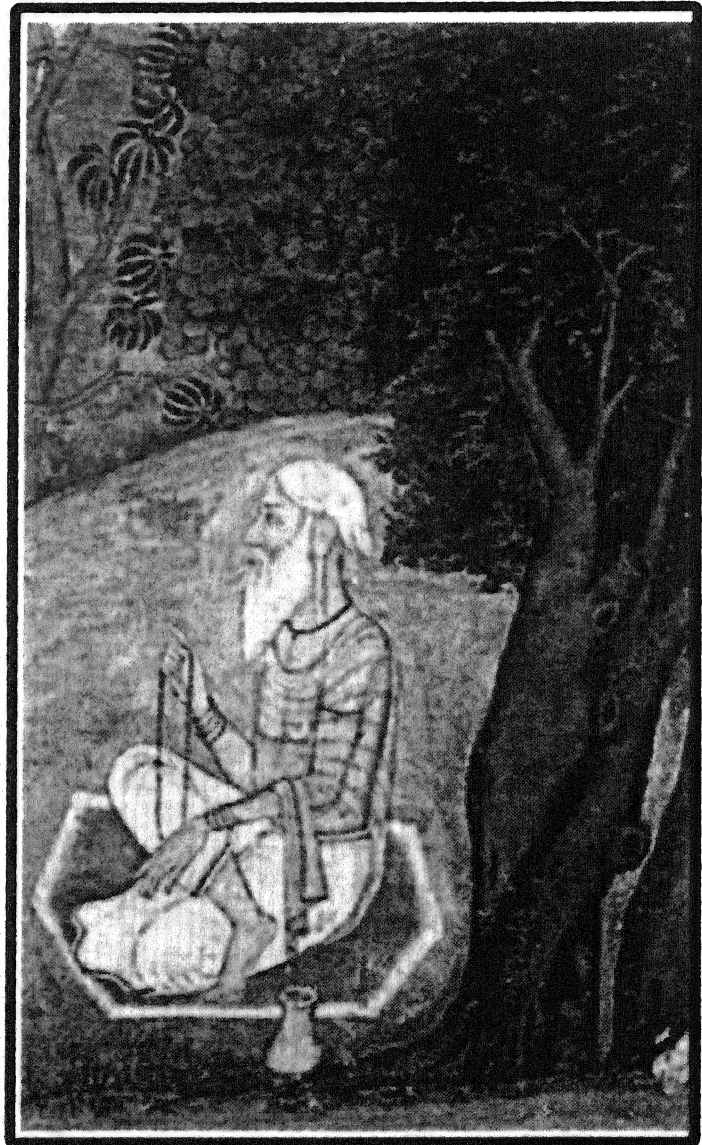
चित्र क्रमांक ००६ - कपिल अवतार -पहाड़ी शैली
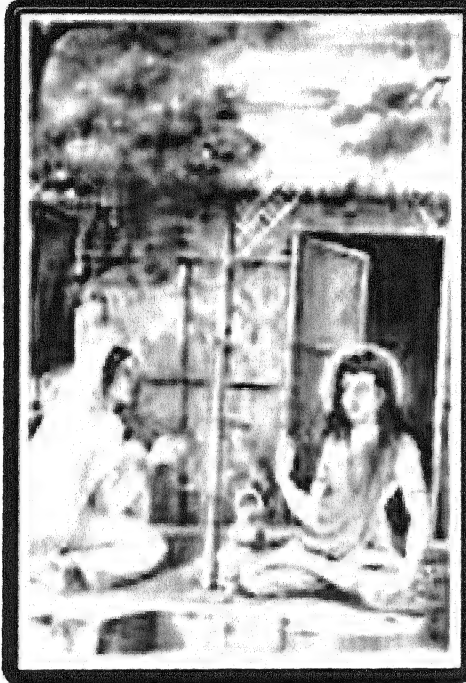
चित्र क्रमांक ००७ - कपिल मुनि अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ००८ - दत्तात्रेय अवतार - आधुनिक शैली
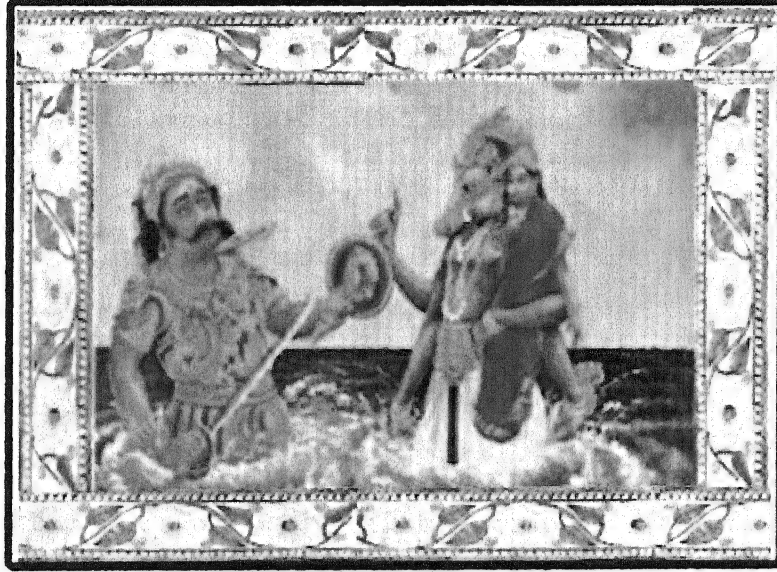
चित्र क्रमांक ००९ - यज्ञ पुरुष अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०१० - ऋषभ देव अवतार - जयपुर शैली
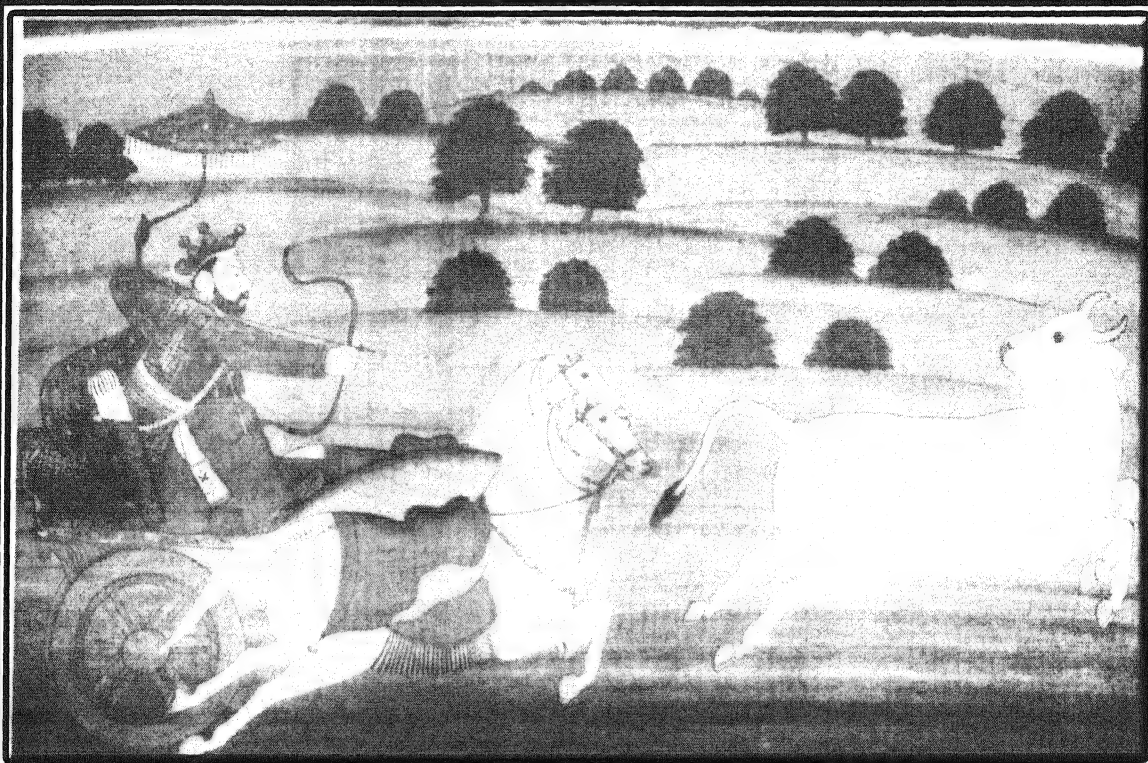
चित्र क्रमांक ०११ - पृथु अवतार - पहाड़ी शैली

रेखाचित्र क्रमांक ०१२ - राजा पृथु अवतार - रेखा चित्र

चित्र क्रमांक ०१३ - मत्स्य अवतार - आधुनिक शैली
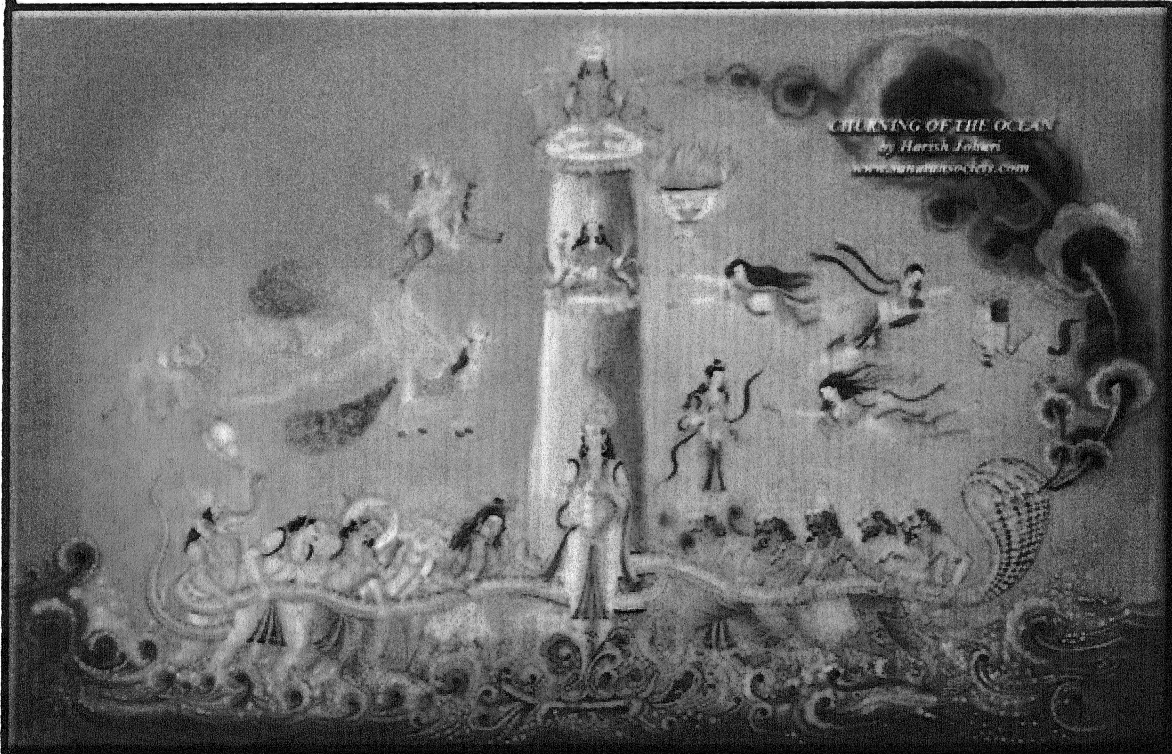
चित्र क्रमांक ०१४ - कूर्म अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०१५ - धन्वन्तरि वैद्य अवतार
आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०१६ - मोहनी अवतार
जयपुर शैली

चित्र क्रमांक ०१७ - मोहनी अवतार - आधुनिक शैली
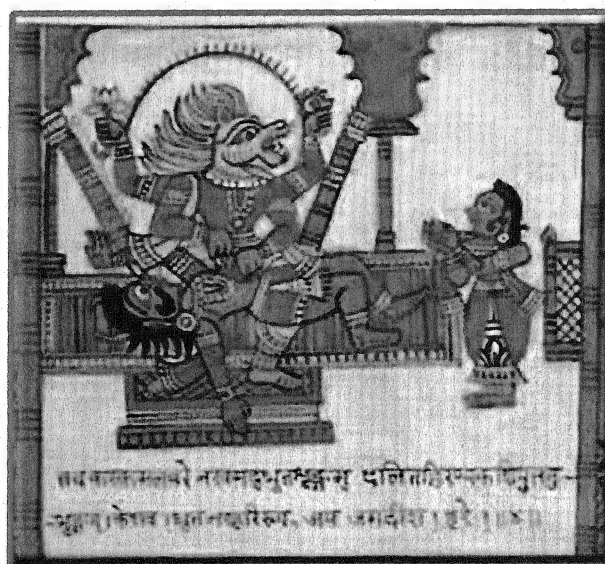
चित्र क्रमांक ०१८ - नरसिंह अवतार
राजस्थानी पड़चित्र

चित्र क्रमांक ०१९ - नरसिंह अवतार
माइका पेन्टिंग्स (मिथिला)

चित्र क्रमांक ०२० - नरसिंह अवतार
आधुनिक शैली
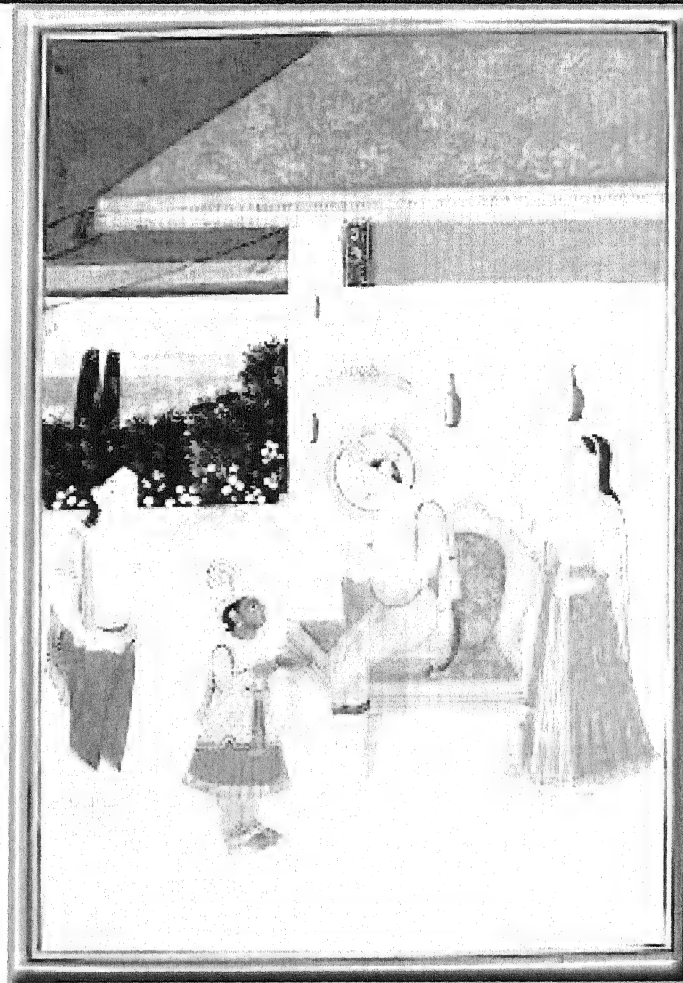
चित्र क्रमांक ०२१ - वामन अवतार -जयपुर शैली

चित्र क्रमांक ०२२ - त्रिविक्रम अवतार - राजस्थानी पट्टचित्र

चित्र क्रमांक ०२३ - वामन अवतार -आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०२४ - परशुराम अवतार
राजस्थानी पड़चित्र
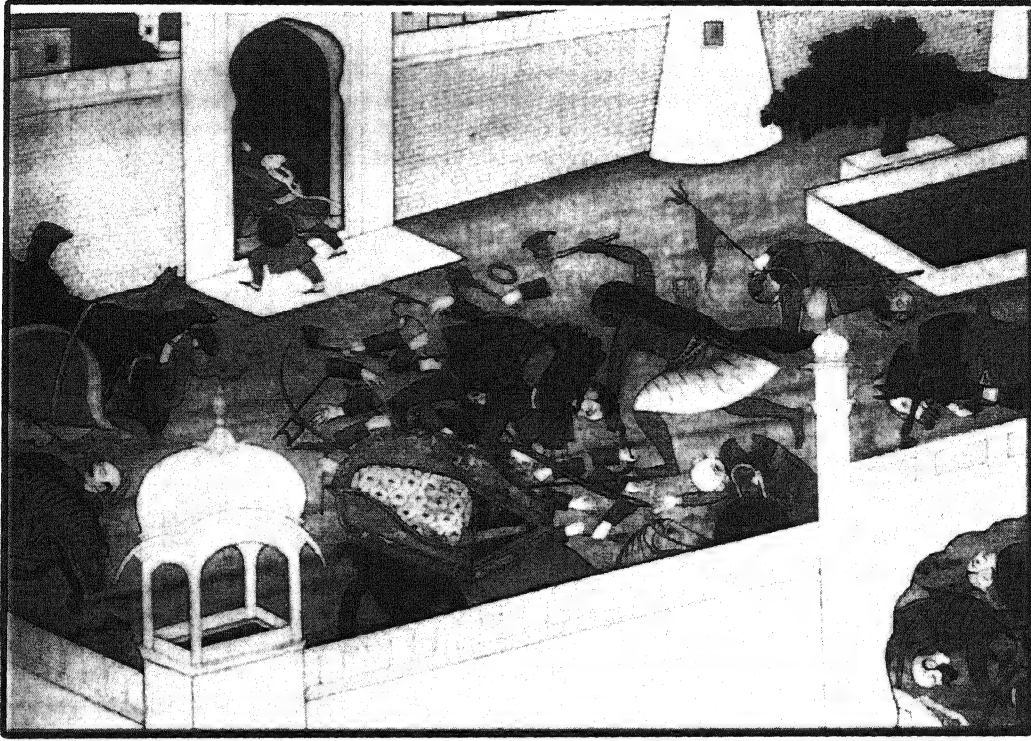
चित्र क्रमांक ०२५ - परशुराम अवतार - पहाड़ी शैली

चित्र क्रमांक ०२६- रेणुका वध- मैसूर शैली

चित्र क्रमांक ०२७ - व्यास अवतार - आधुनिक शैली
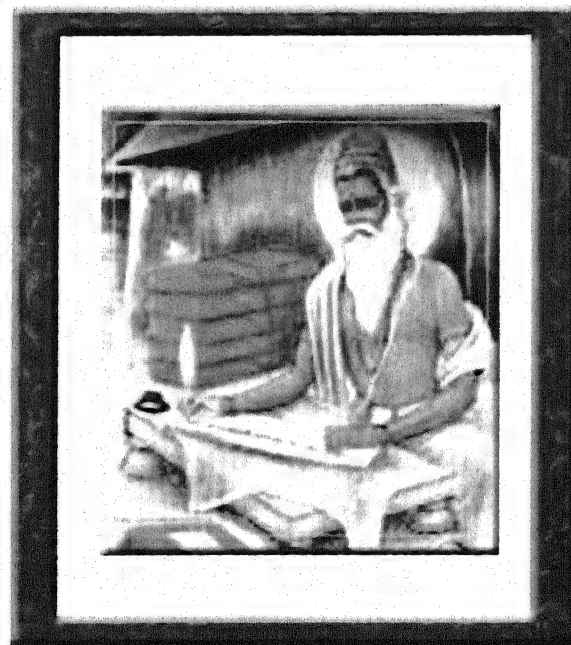
चित्र क्रमांक ०२८ - वेद व्यास - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०२९ - राम अवतार - मैसूर शैली
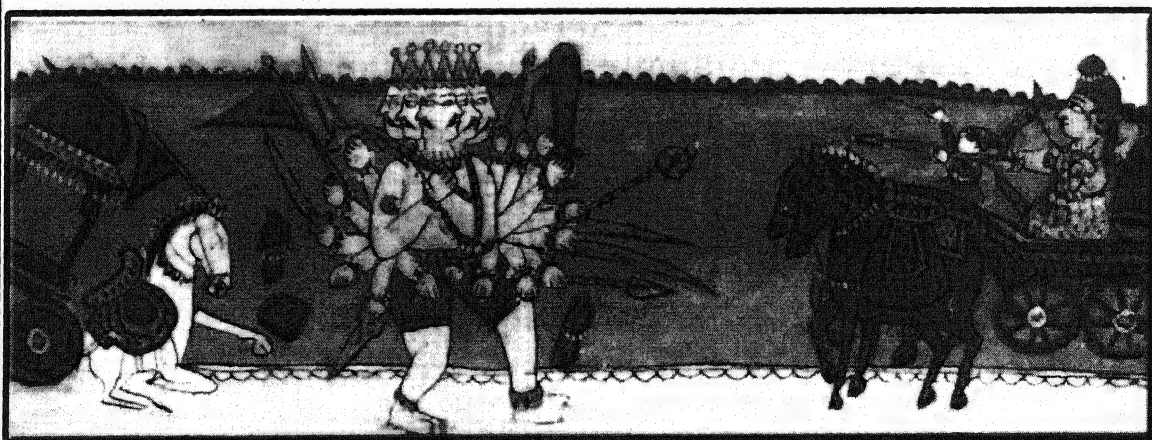
चित्र क्रमांक ०३० - राम एवं रावण का युद्ध दृश्य - ताड़पत्र पर चित्रित
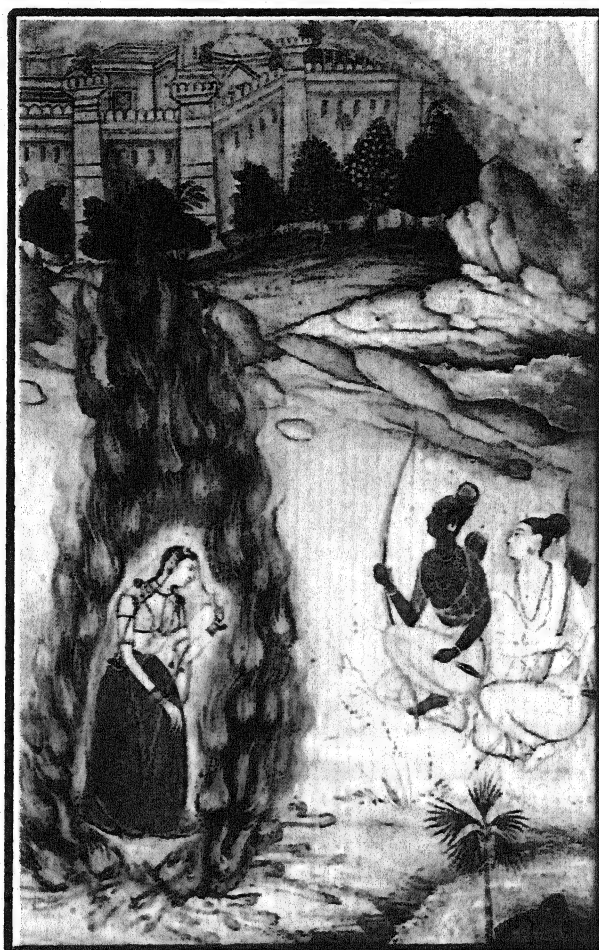
चित्र क्रमांक ०३१ - राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा - मुगल शैली

चित्र क्रमांक ०३२ . हाथी दांत पर चित्रित राम सबारी का दृश्य . अलवर शैली

चित्र क्रमांक ०३३ . बलराम अवतार . गढ़वाल शैली

चित्र क्रमांक ०३४ . बलराम अवतार -बंगाल शैली

चित्र क्रमांक ०३५ . कृष्ण की बाल लीला . उड़ीसा पटचित्र
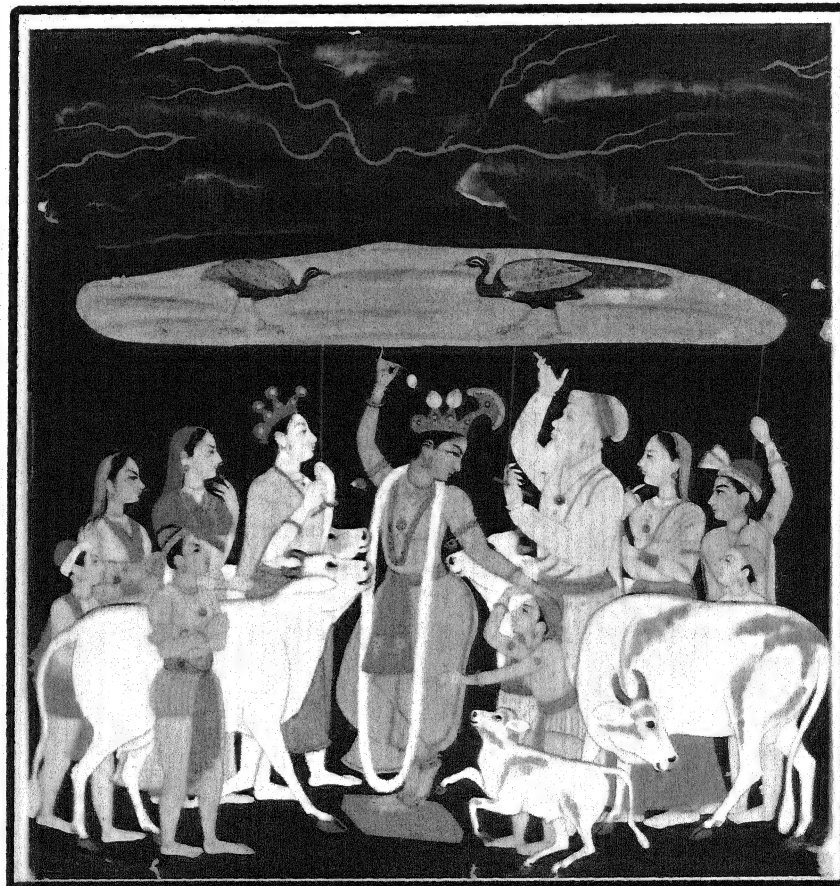
चित्र क्रमांक ०३६ . गोवर्धन धारी श्री कृष्ण - गढ़वाल शैली
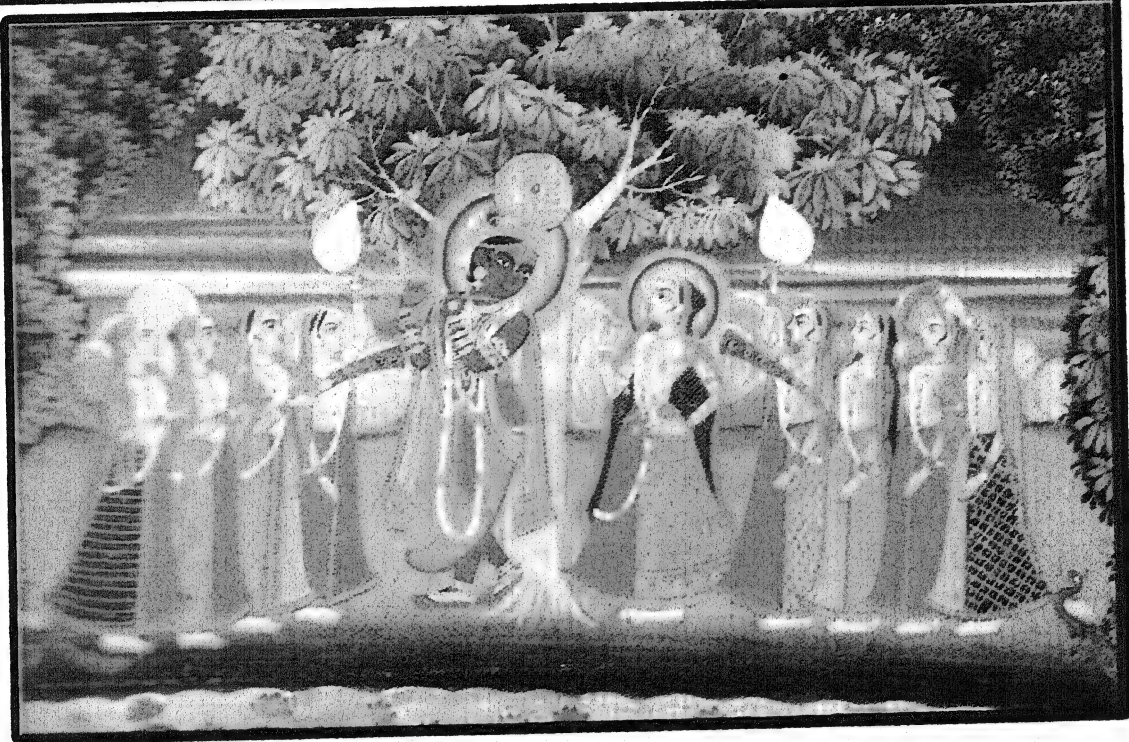
चित्र क्रमांक ०३७ . रासलीला . अलवर शैली

चित्र क्रमांक ०३८ . कृष्ण द्वारा कंस का वध - पहाड़ी शैली
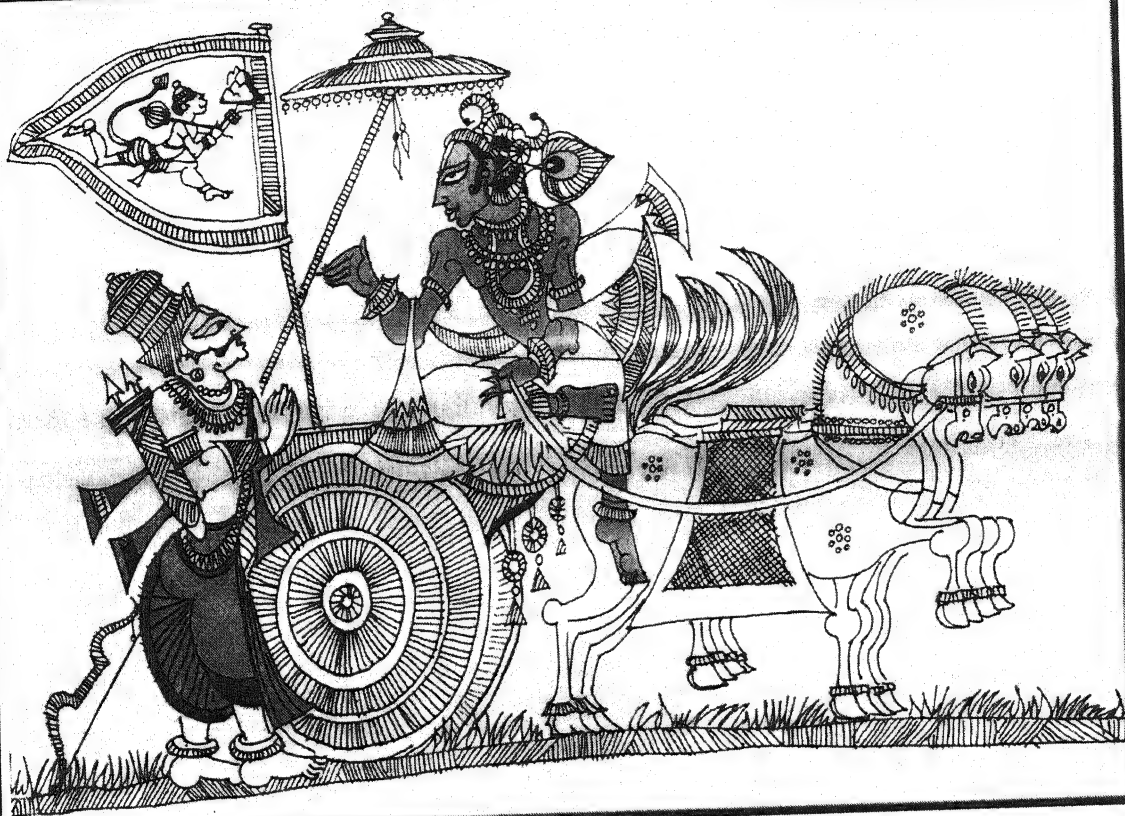
चित्र क्रमांक ०३९ . कृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदेश . रेखा चित्र
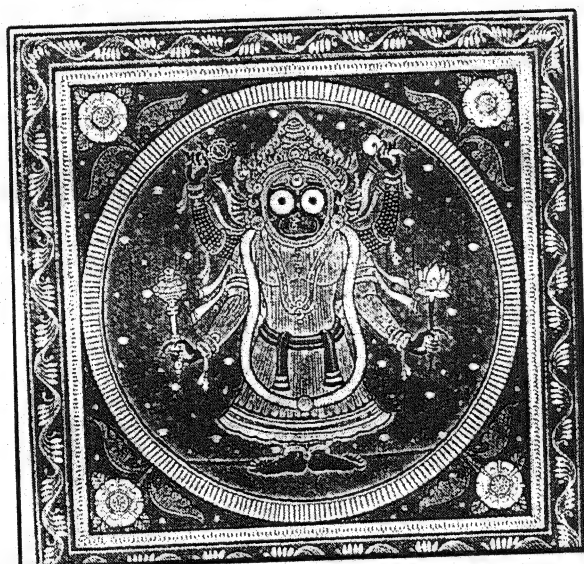
चित्र क्रमांक ०४० . बुद्ध अवतार -उड़ीसा पटचित्र

चित्र क्रमांक ०४१ . बुद्ध अवतार
महाराष्ट्र से प्राप्त
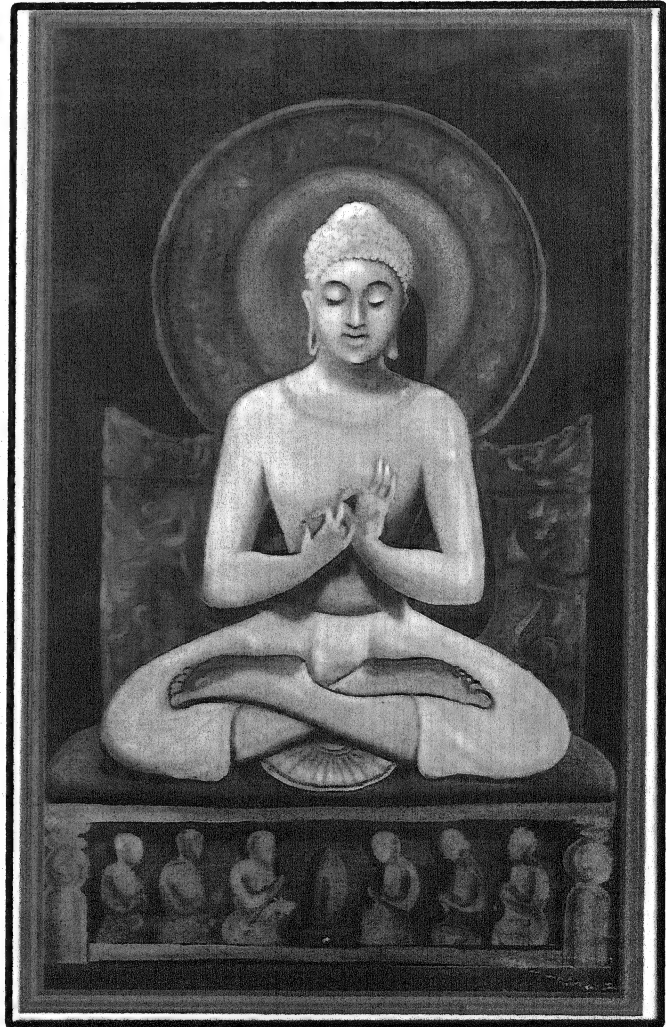
चित्र कमांक ०४२ - बुद्ध अवतार
आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०४३ - कल्कि अवतार .राजस्थानी पड़चित्र
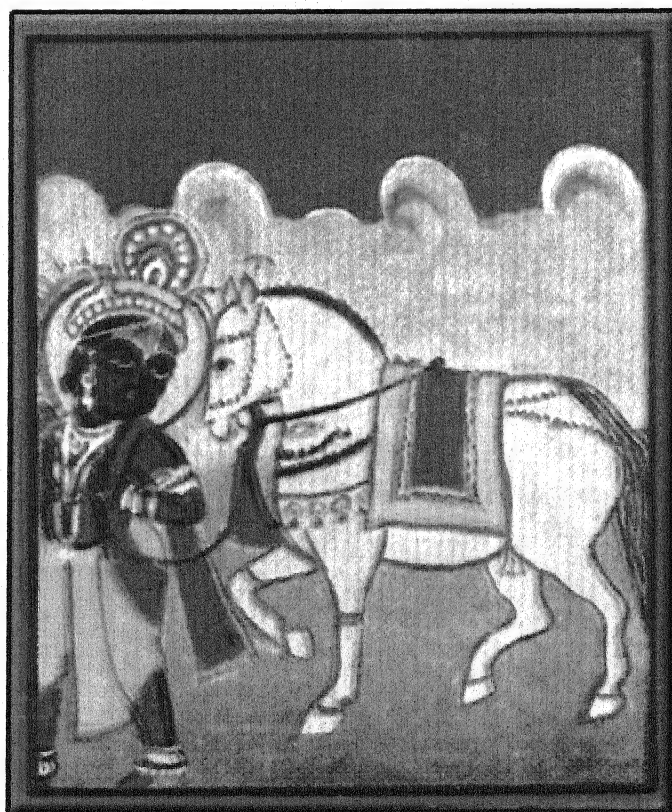
चित्र क्रमांक ०४४- कल्कि अवतार . कांगड़ा शैली
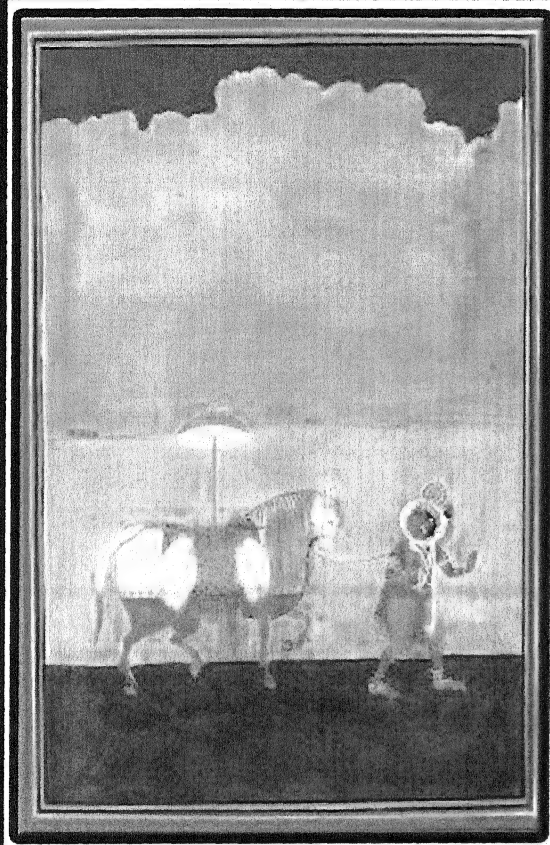
चित्र क्रमांक ०४५ . कल्कि अवतार
जयपुर शैली

चित्र क्रमांक ०४६ . कल्कि अवतार
महाराष्ट्र शैली

चित्र क्रमांक ०४७ . कल्कि अवतार
श्याम श्वेत चित्र

चित्र क्रमांक ०४८ . हयग्रीव अवतार
माइका पेन्टिंग(मिथिला)
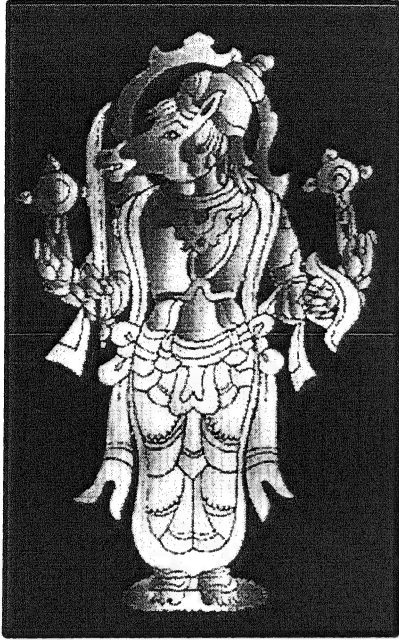
चित्र क्रमांक ०४९ . हयग्रीव अवतार
गोआ से प्राप्त

चित्र क्रमांक ०५० -हयग्रीव अवतार - मैसूर शैली

चित्र क्रमांक ०५१ . हयग्रीव अवतार
जयपुर शैली

चित्र क्रमांक ०५२ . हंसावतार
तंजौर शैली
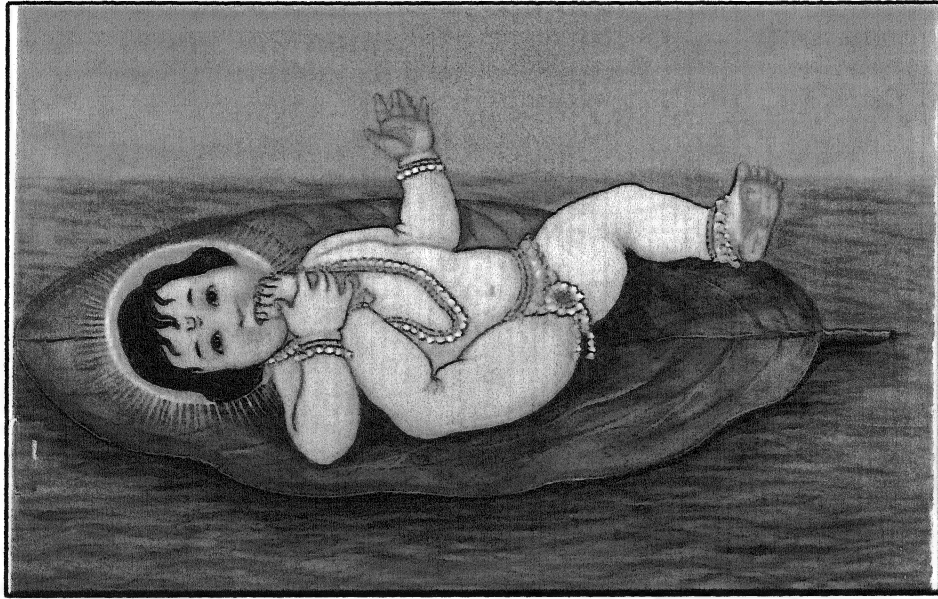
चित्र क्रमांक ०५३ . बरगद पत्र पर बालाजी का बालरूप - आधुनिक शैली
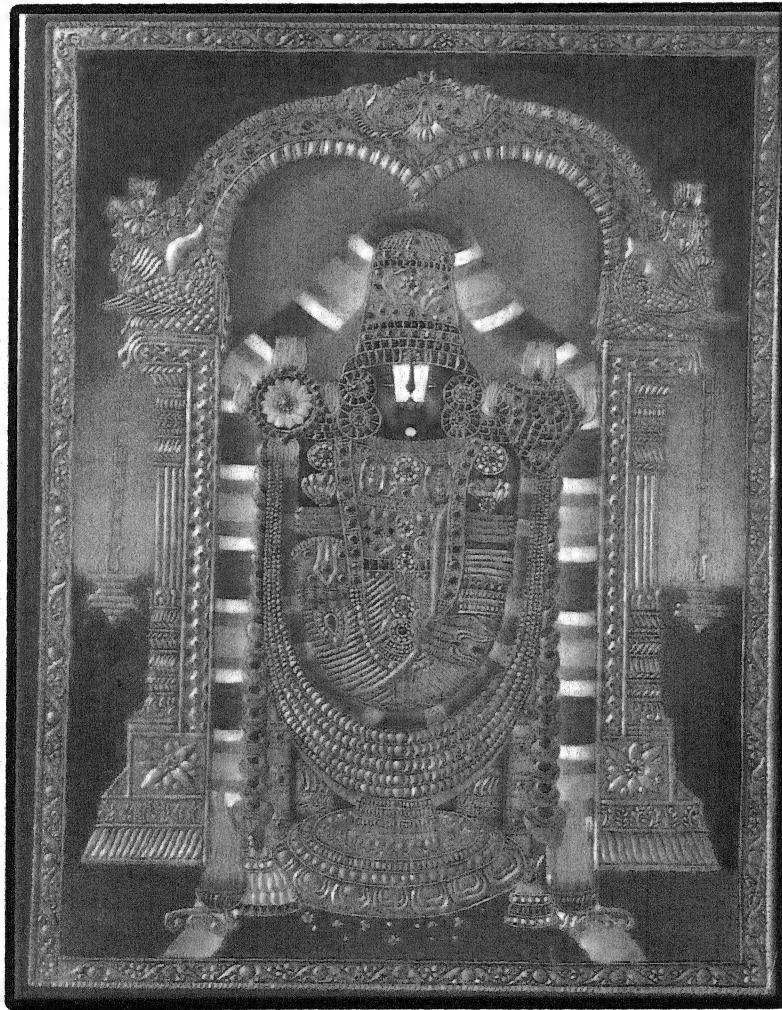
चित्र क्रमांक ०५४ . बालाजी . आंध्र प्रदेश
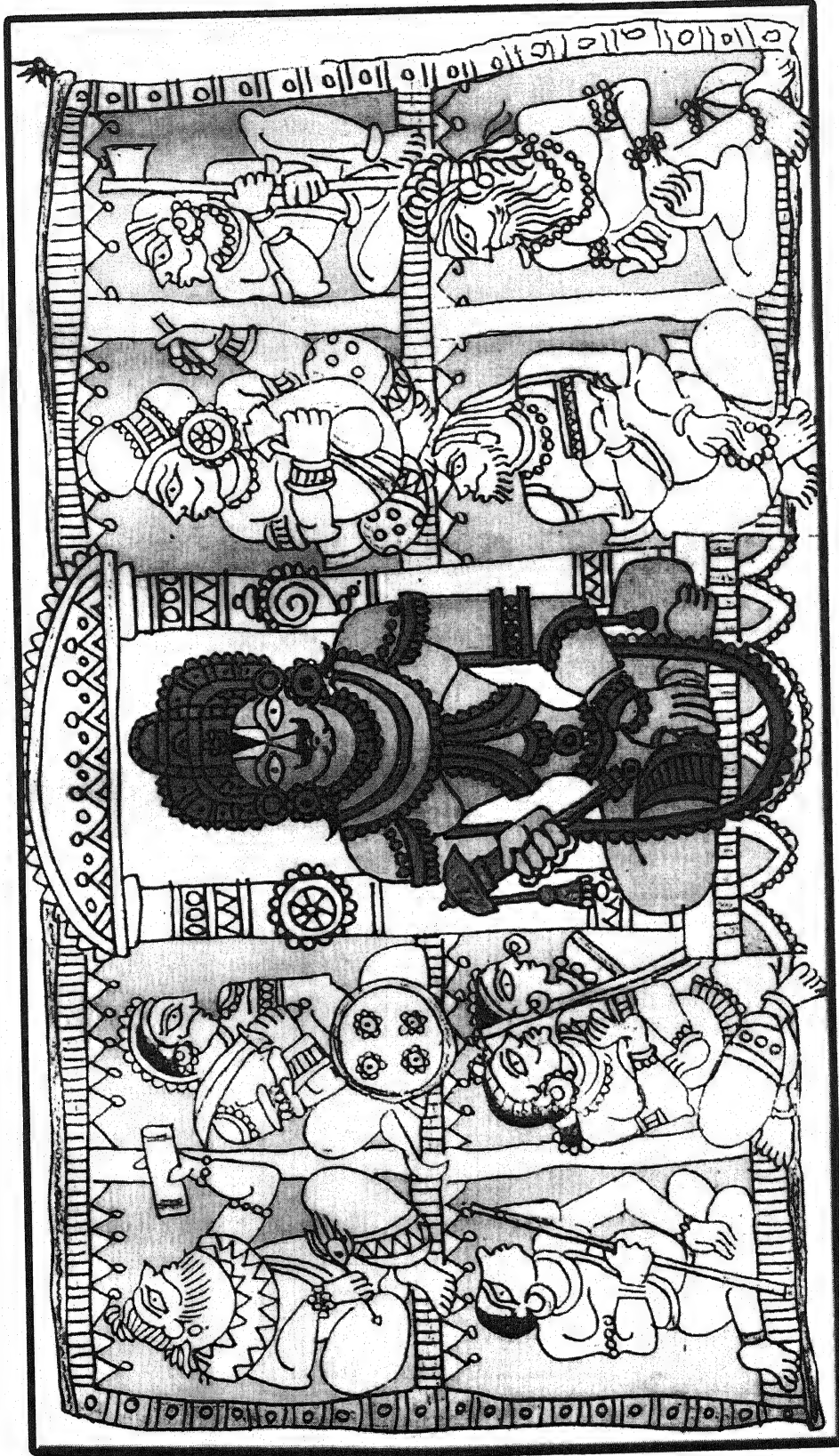
चित्र क्रमांक ०५५ . मधन्त अवतार . रेखा चित्र

चित्र क्रमांक ०५६ - गजेन्द्र मोक्षकर्ता -ओरछा से प्राप्त बुंदेली शैली
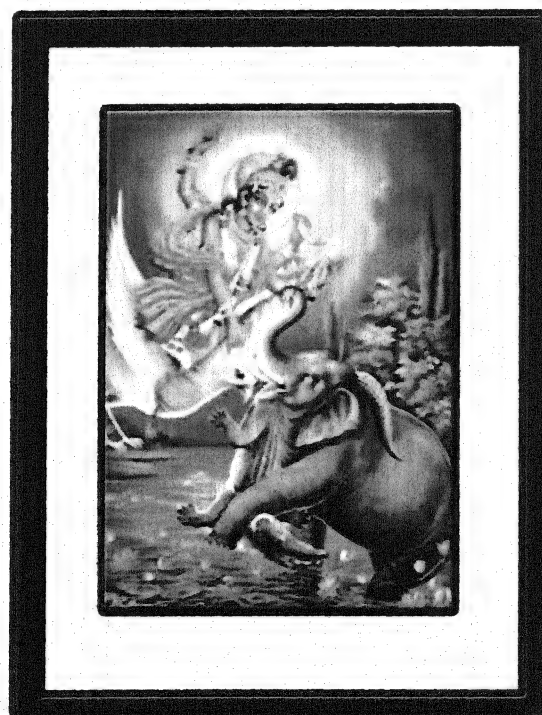
चित्र क्रमांक ०५७ . श्री हरि अवतार - आधुनिक शैली

चित्र क्रमांक ०५८ . आदि पुरुष अवतार
दक्षिण भारतीय शैली
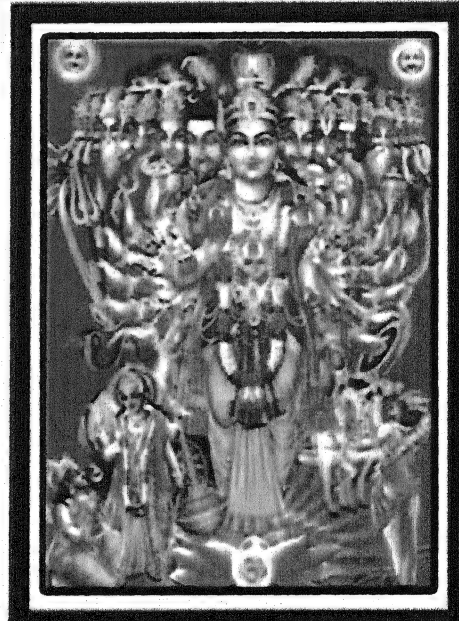
चित्र क्रमांक ०५९ . विश्वरूप
आधुनिक शैली
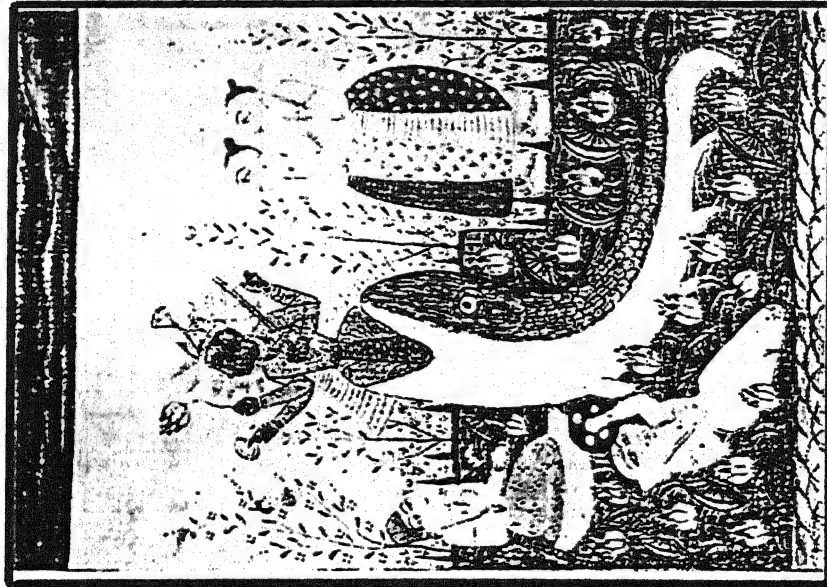
चित्र क्रमांक ०६० . मत्स्य अवतार
कश्मीर शैली
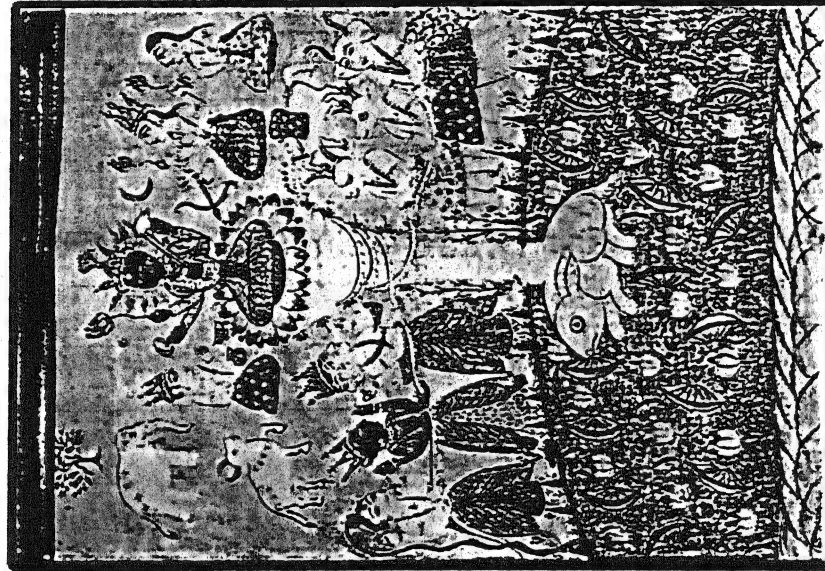
चित्र क्रमांक ०६१ . कूर्म अवतार
कश्मीर शैली
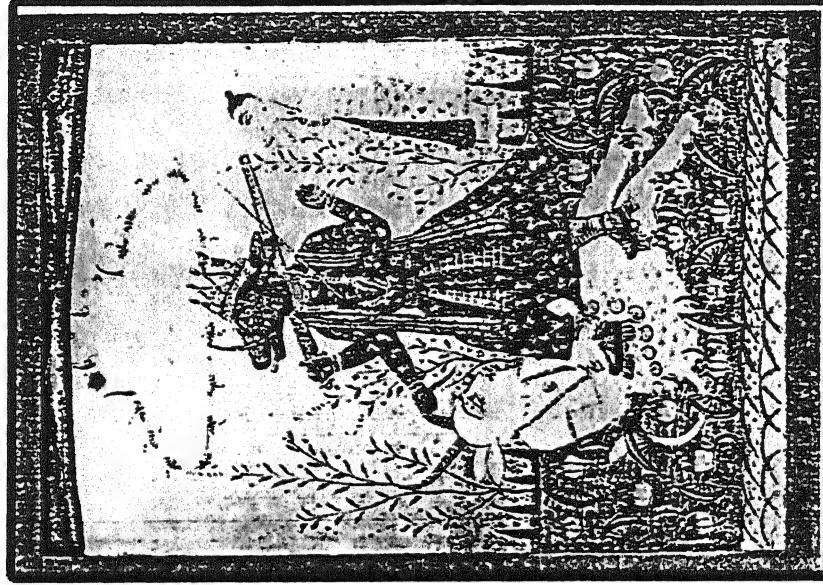
चित्र क्रमांक ०६२ . वराह अवतार
कश्मीर शैली
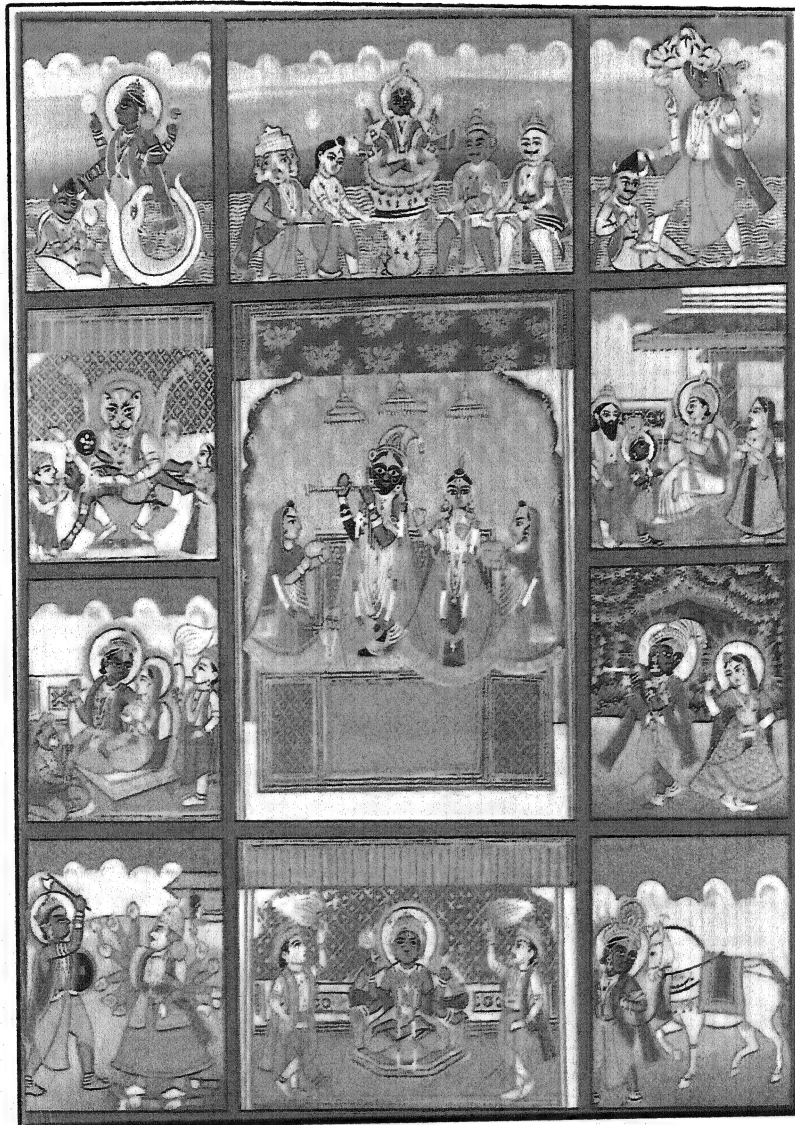
कांगड़ा शैली

चित्र क्रमांक ०६३

चित्र क्रमांक०६४
मत्सय,कूर्म एवं वराह अवतार

चित्र क्रमांक ०६५
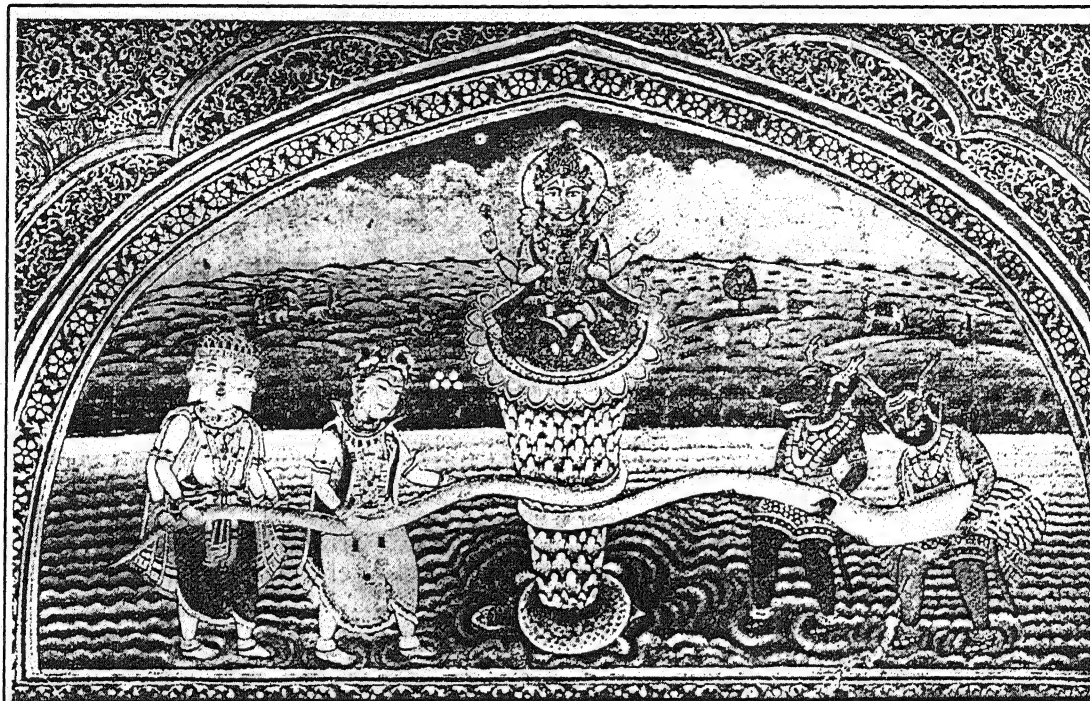
चित्र क्रमांक ०६६ . कूर्म अवतार - पंजाब हरियाणा
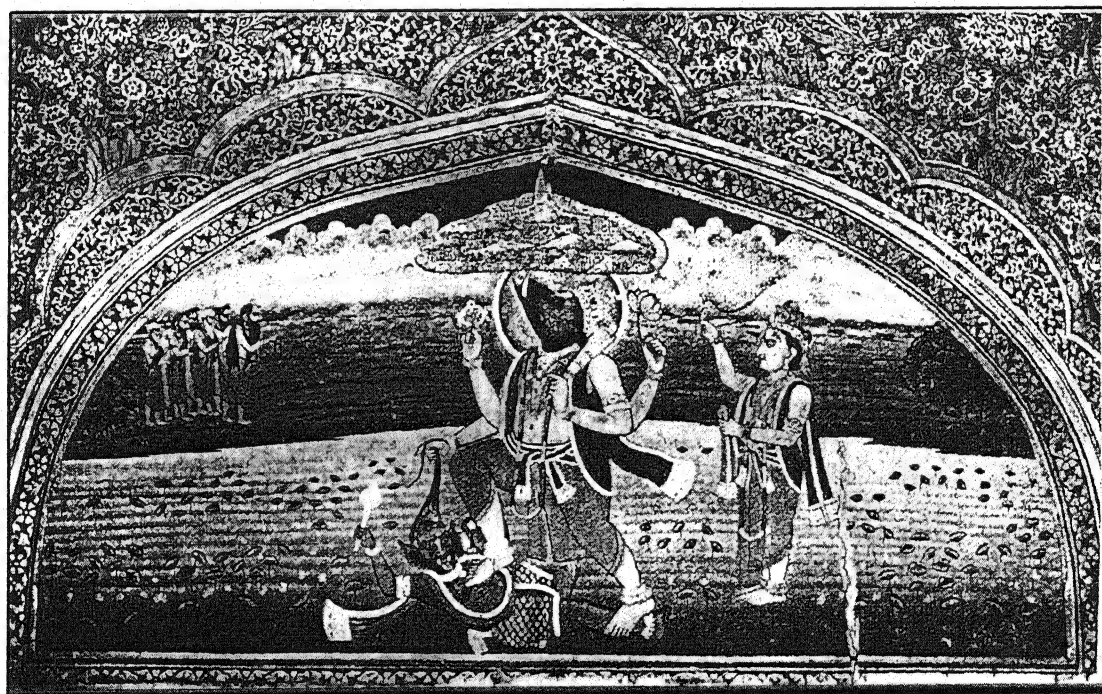
चित्र क्रमांक ०६७ . वराह अवतार - पंजाब हरियाणा

चित्र क्रमांक ०६८ . मत्स्य अवतार

चित्र क्रमांक ०६९ . कूर्म अवतार

चित्र क्रमांक ०७०. वराह अवतार .राजस्थानी पड़चित्र
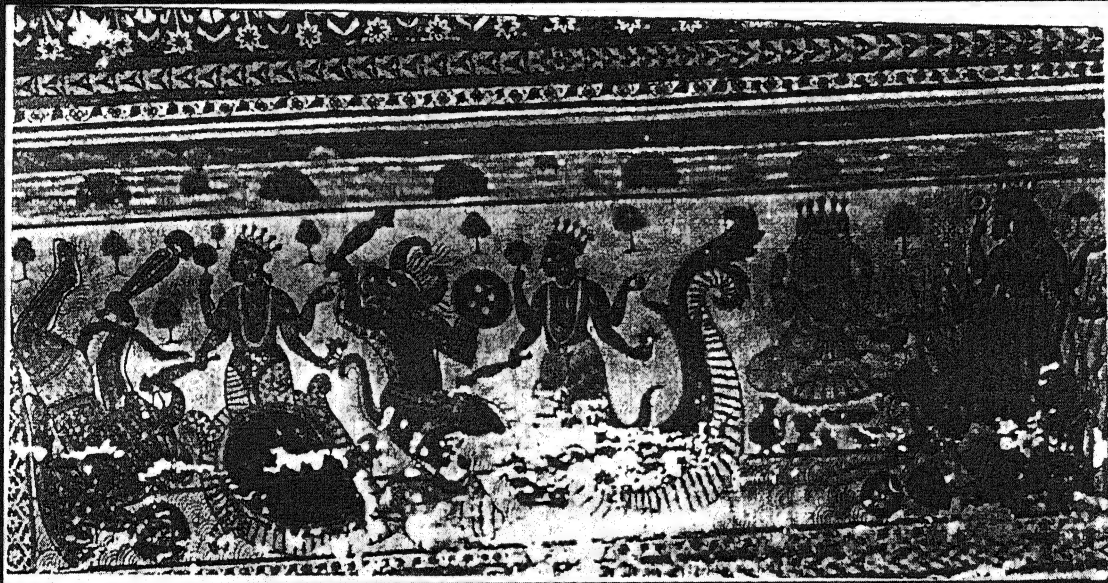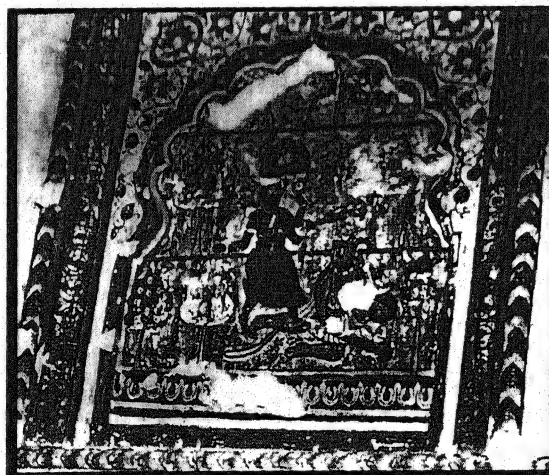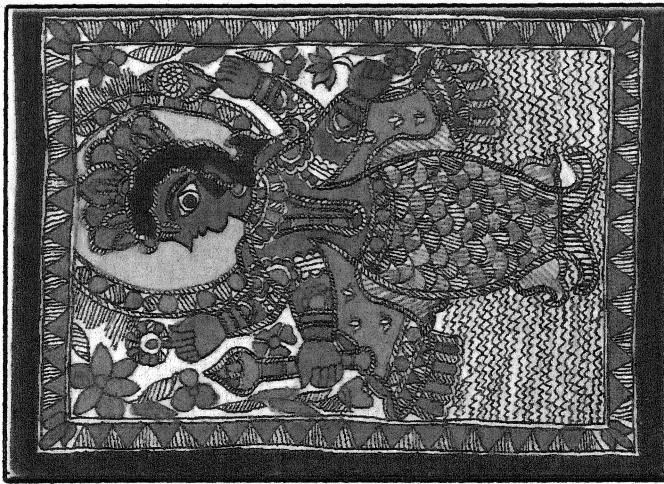
चित्र क्रमांक ०७४ . मत्सय अवतार
बिहार (मधुबनी शैली)
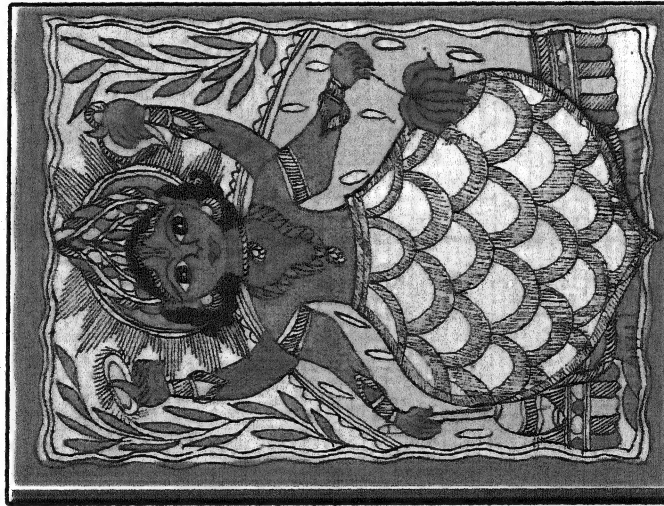
चित्र क्रमांक ०७५ . कूर्म अवतार
बिहार (मधुबनी शैली

चित्र क्रमांक ०७६ . वराह अवतार
बिहार (मधुबनी शैली)
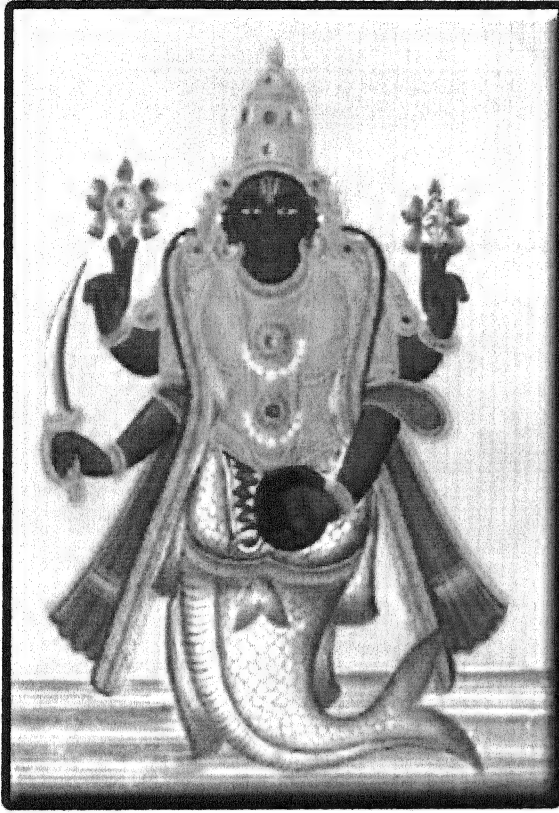
चित्र क्रमांक ०७७ . मत्सय अवतार
बिहार (माइका पेन्टिंग्स)

चित्र क्रमांक ०७८ . कूर्म अवतार
बिहार (माइका पेन्टिंग्स)

चित्र क्रमांक ०७९ . वराह अवतार
बिहार (माइका पेन्टिंग्स)
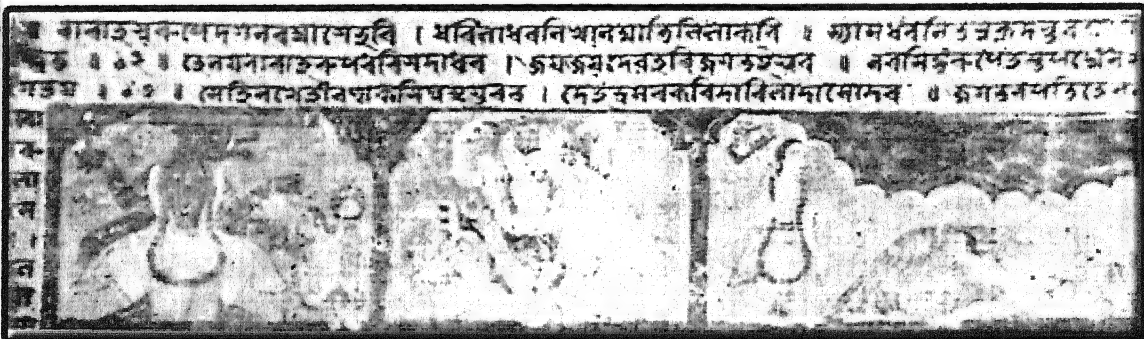
चित्र क्रमांक ०८० . मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार . असम (पूर्वी भारत)
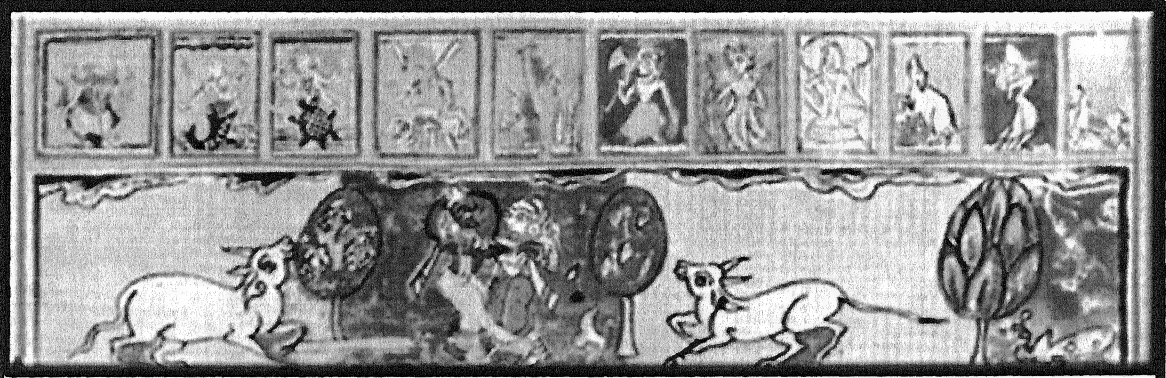
चित्र क्रमांक ०८१ . मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार . गुजरात (अपभ्रंश शैली)
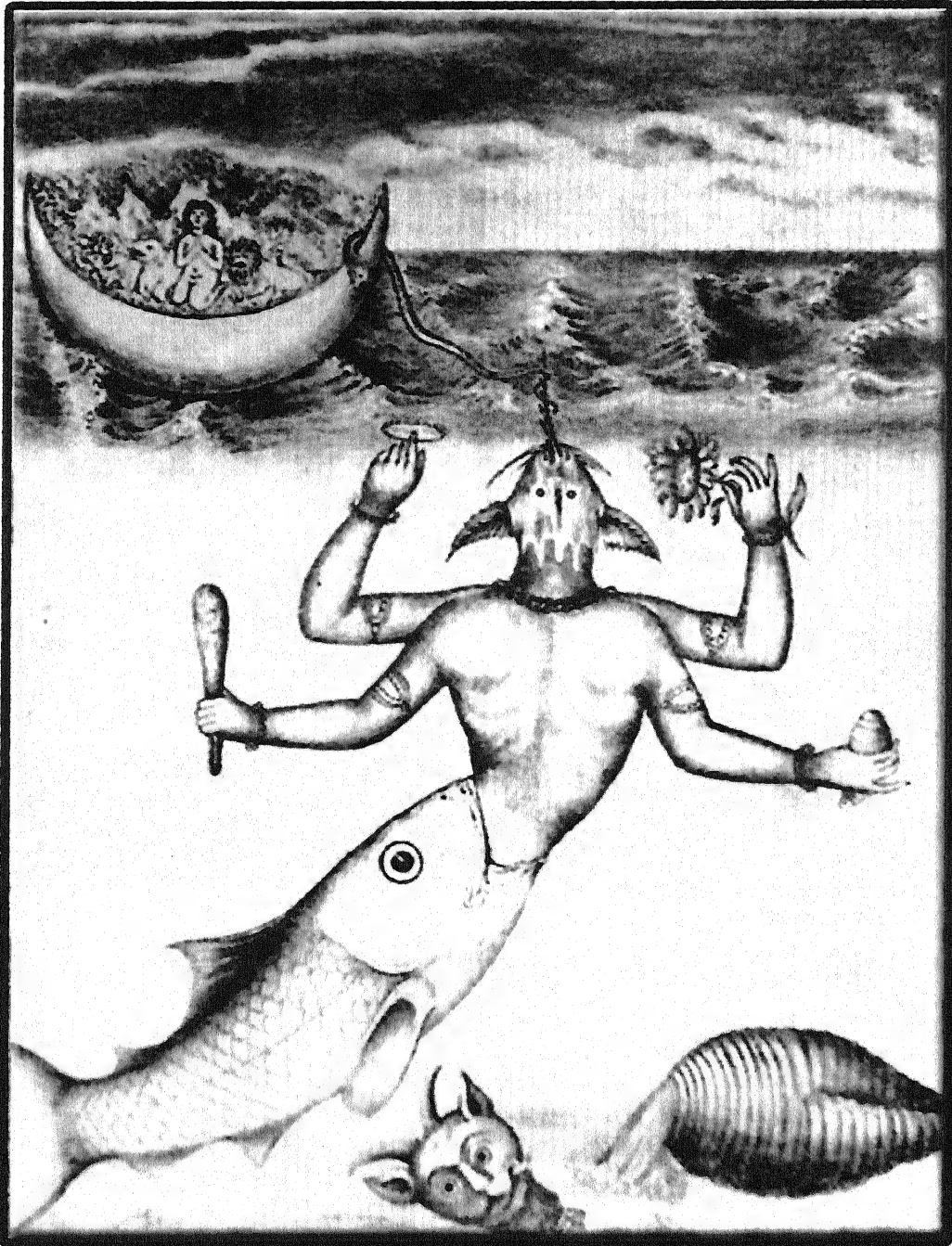
चित्र क्रमांक ०८२ . मत्स्य अवतार . बंगाल शैली (कोलकाता)

चित्र क्रमांक ०८३ . कूर्म अवतार
बंगाल शैली (कोलकाता)

चित्र क्रमांक ०८४ . वराह अवतार
बंगाल शैली (कोलकाता)

चित्र क्रमांक ०८५ . मत्स्य अवतार
महाराष्ट्र

चित्र क्रमांक ०८६ . कूर्म अवतार
महाराष्ट्र

चित्र क्रमांक ०८७ . वराह अवतार . महाराष्ट्र

चित्र क्रमांक ०८८ . मत्स्य अवतार . उड़ीसा पटचित्र

चित्र क्रमांक ०८९ . कूर्म अवतार . उड़ीसा पटचित्र
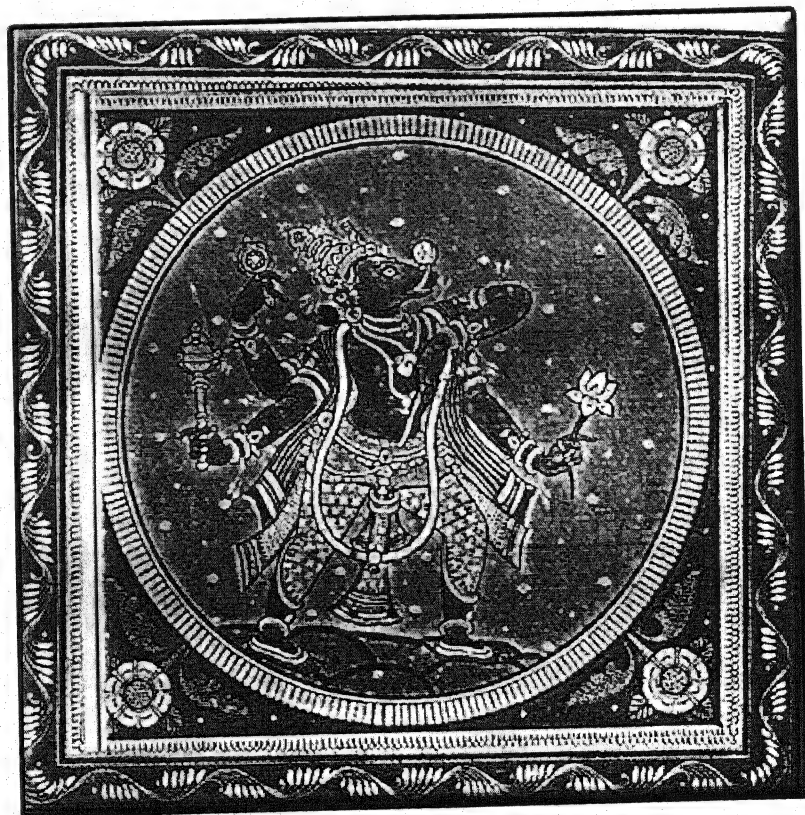
चित्र क्रमांक ०९० . वराह अवतार . उड़ीसा पटचित्र
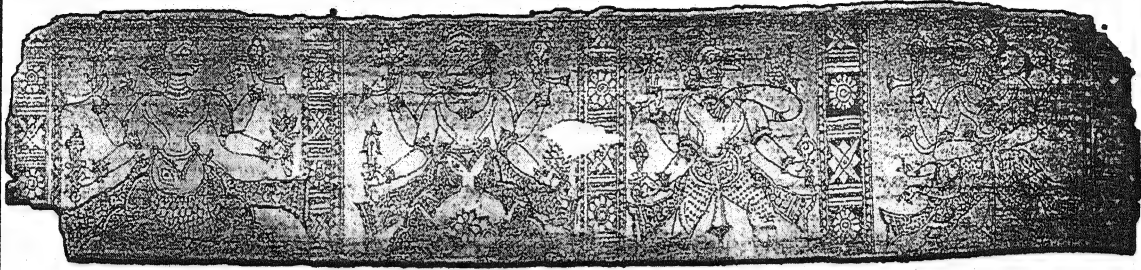
चित्र क्रमांक ०९१ . ताड़ पत्र पर मत्स्य, कूर्म एवं वराह अवतार . उड़ीसा

चित्र क्रमांक ०९२ . ताश पत्र पर दशावतार . उड़ीसा
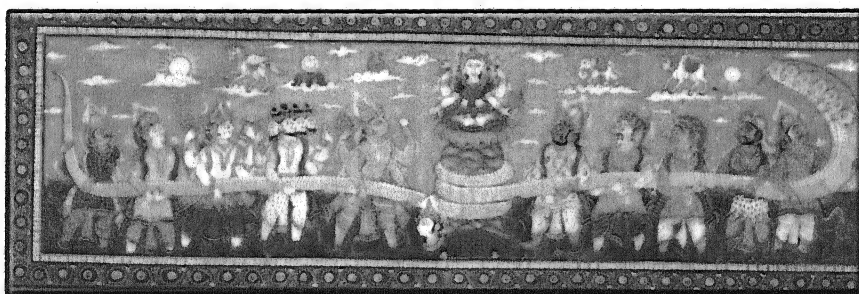
चित्र क्रमांक ०९३ . समुद्र मंथन . उड़ीसा
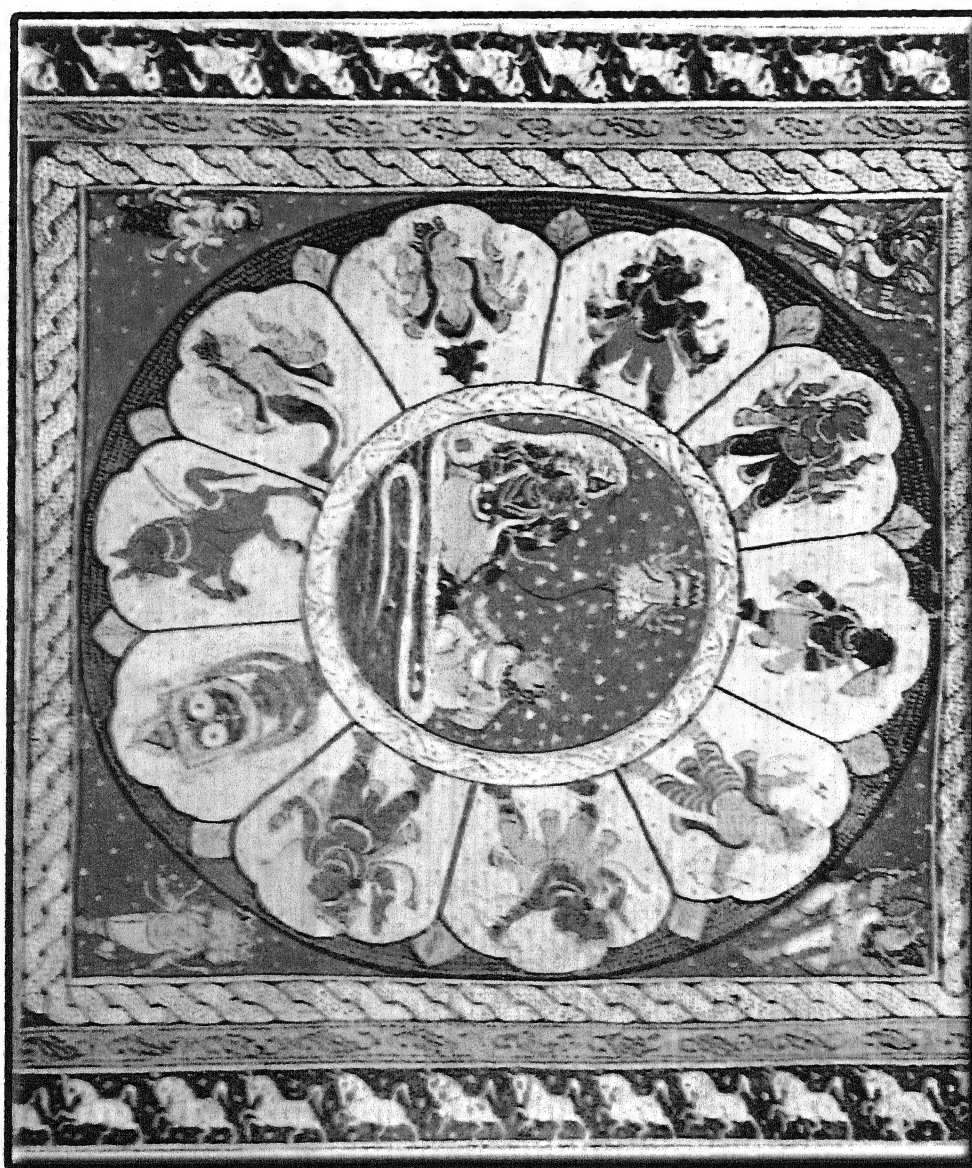
चित्र क्रमांक ०९४ . दशावतार.उड़ीसा पट चित्र
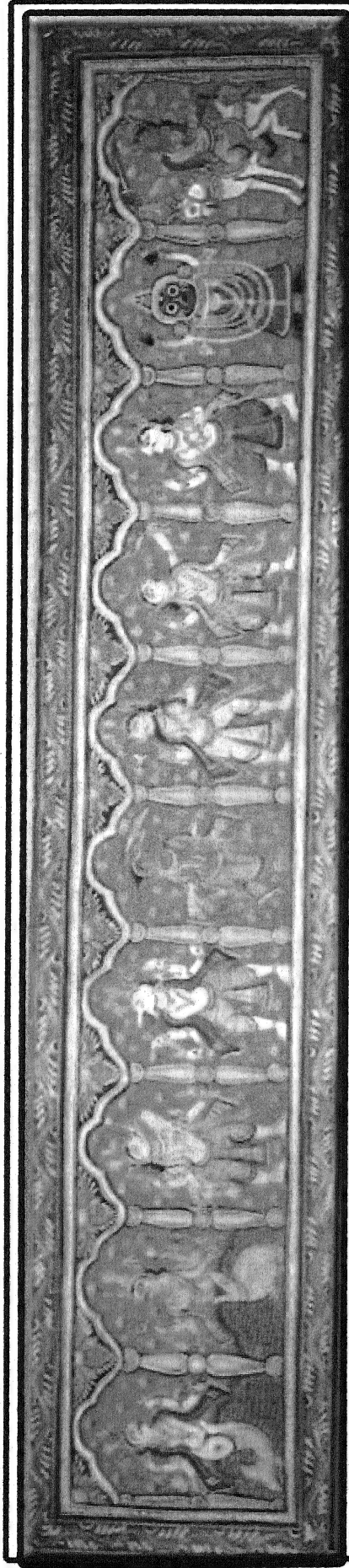
चित्र क्रमांक ०९५. दशावतार . उड़ीसा पटचित्र
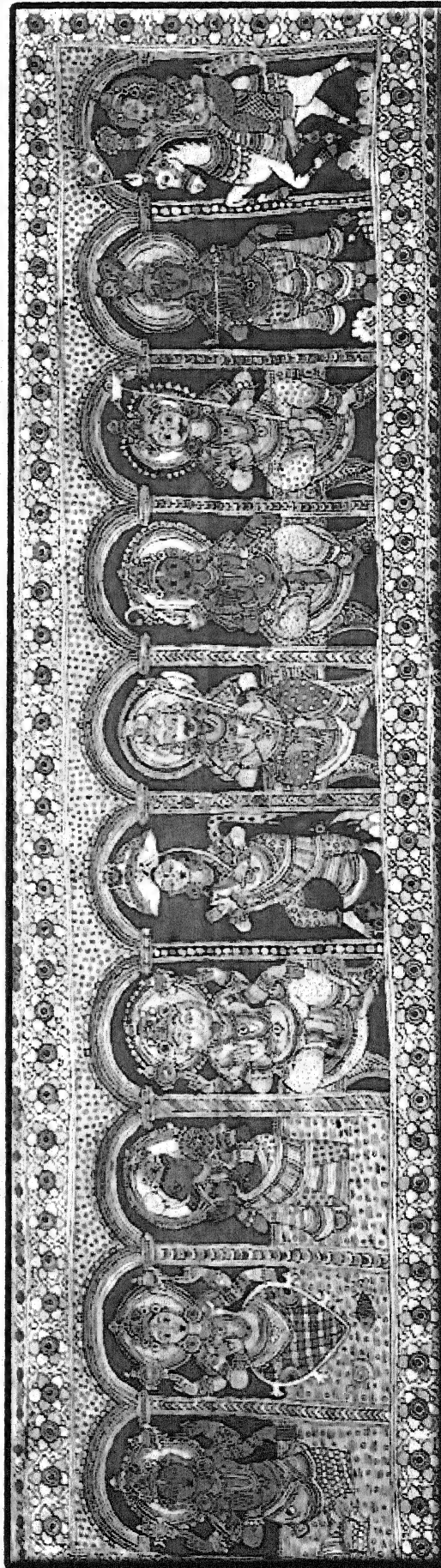
चित्र क्रमांक ०९६ . दशावतार . उड़ीसा पटचित्र
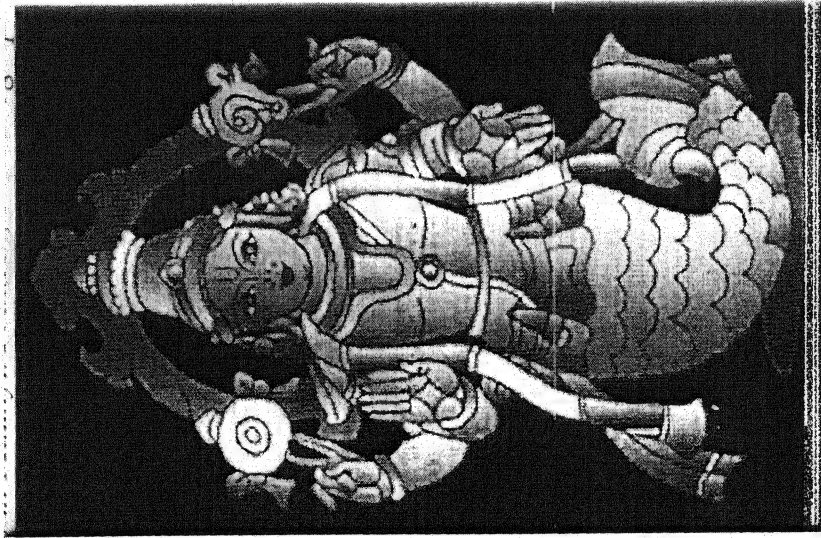
चित्र क्रमांक ०९७ . मत्सय अवतार
गोआ से प्राप्त
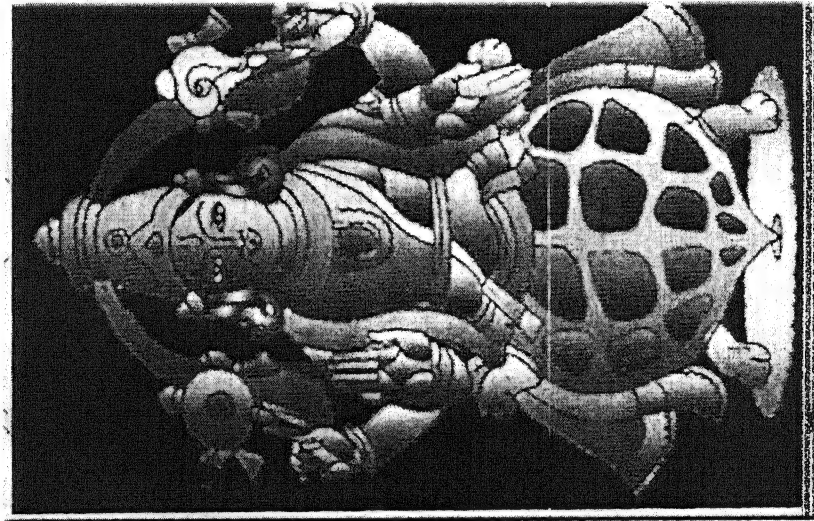
चित्र क्रमांक ०९८ . कूर्म अवतार
गोआ से प्राप्त
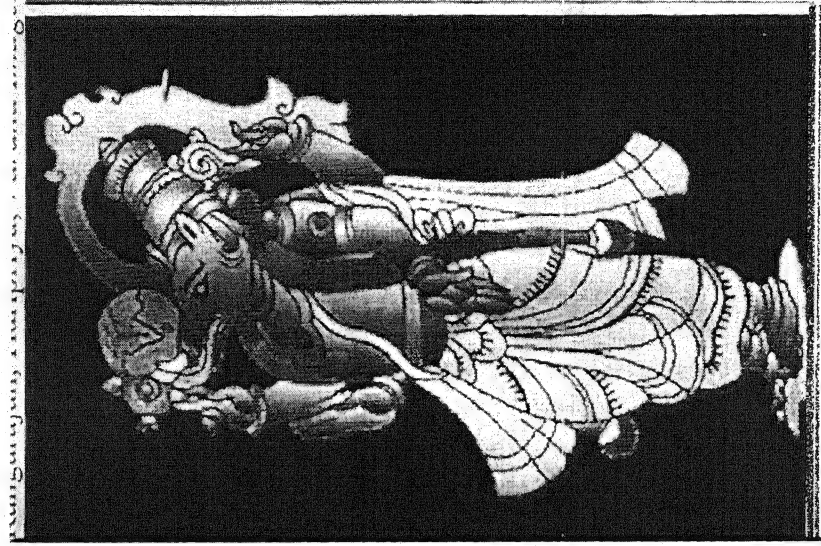
चित्र क्रमांक ०९९ . वराह अवतार
गोआ से प्राप्त

चित्र क्रमांक १०० . मत्स्य , कूर्म ,वराह आदि अवतार . गोआ से प्राप्त
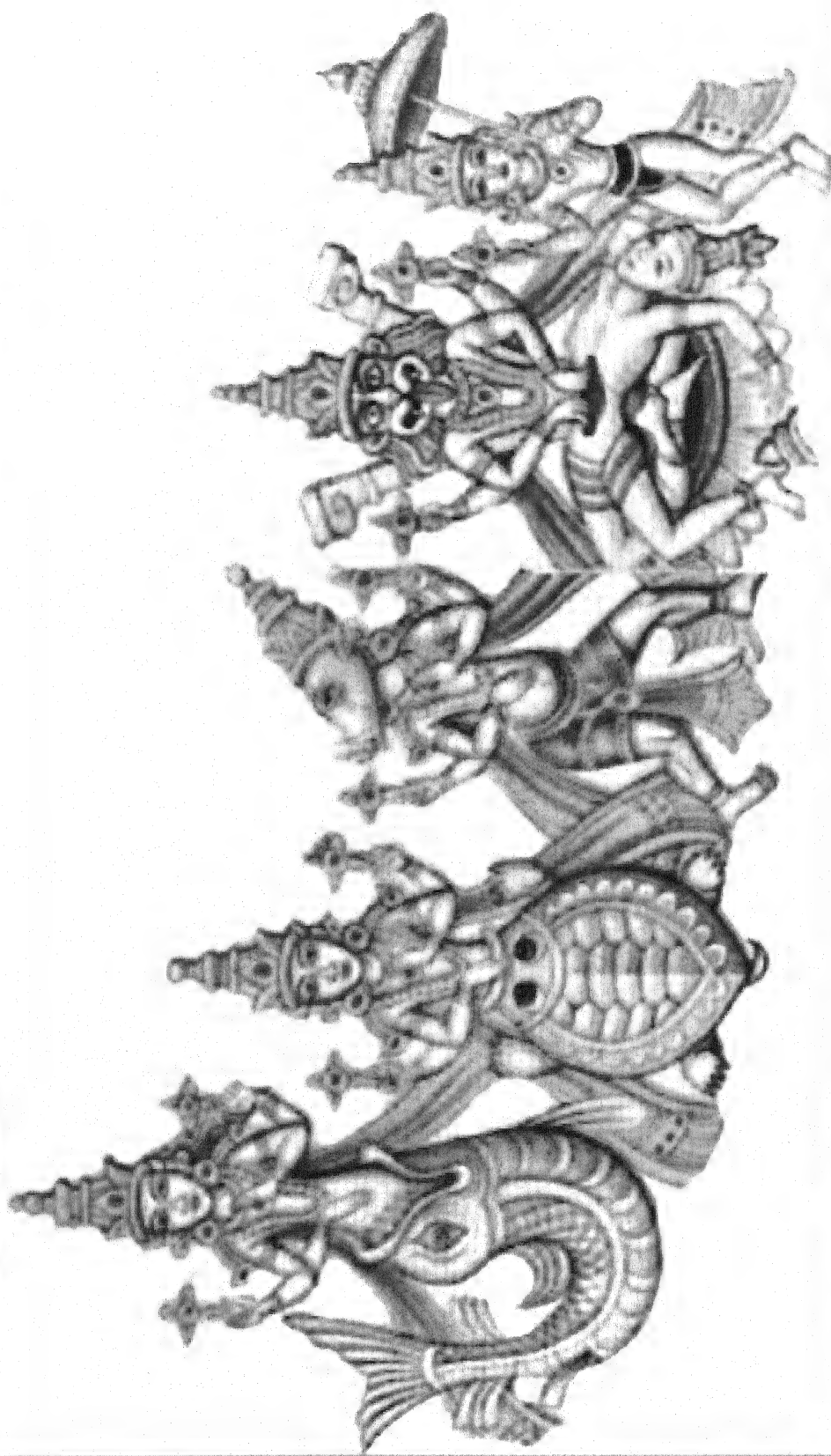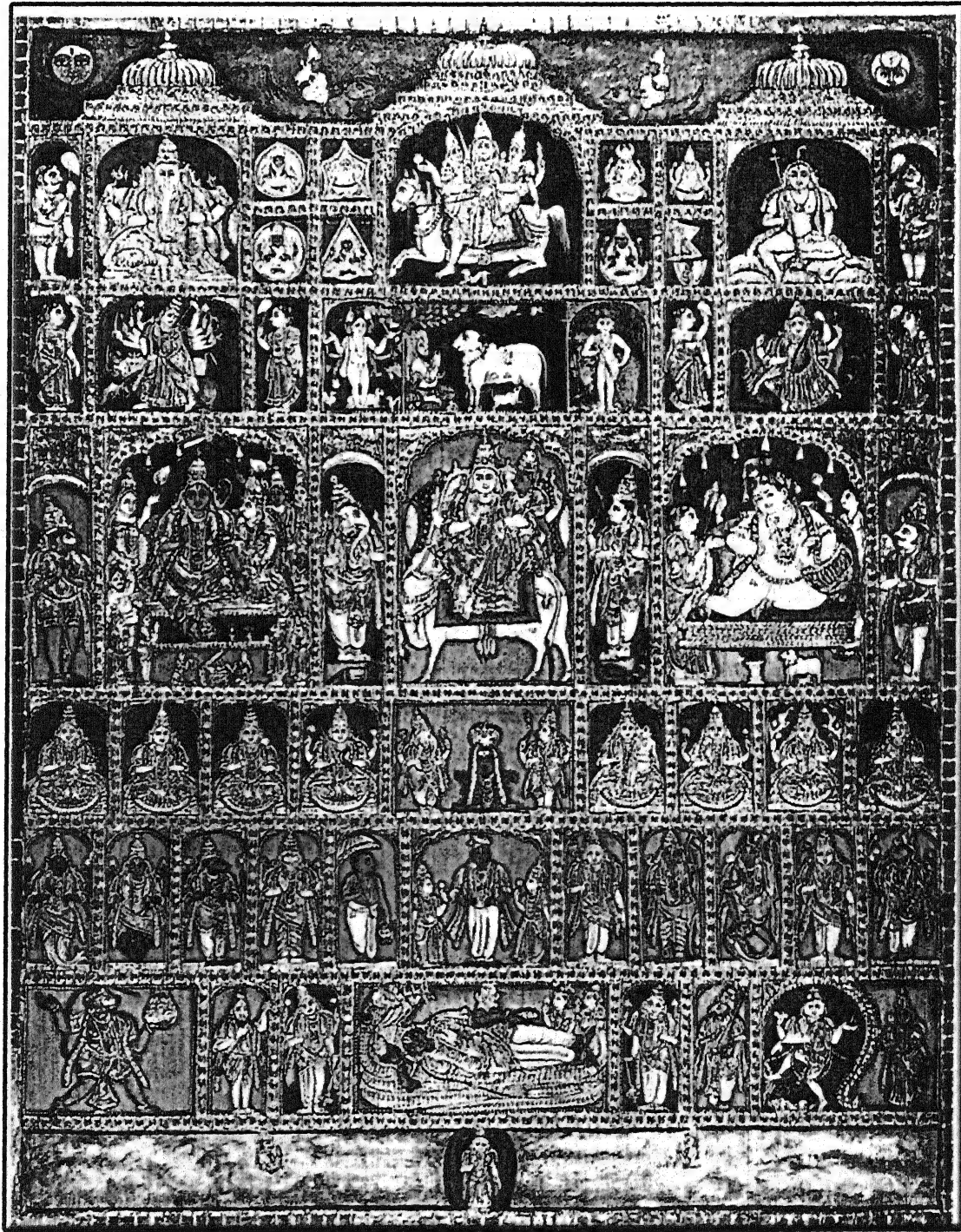
चित्र क्रमांक १०१ . दशावतार एवं विभिन्न देवी - देवताओं का पट चित्र . तंजौर शैली
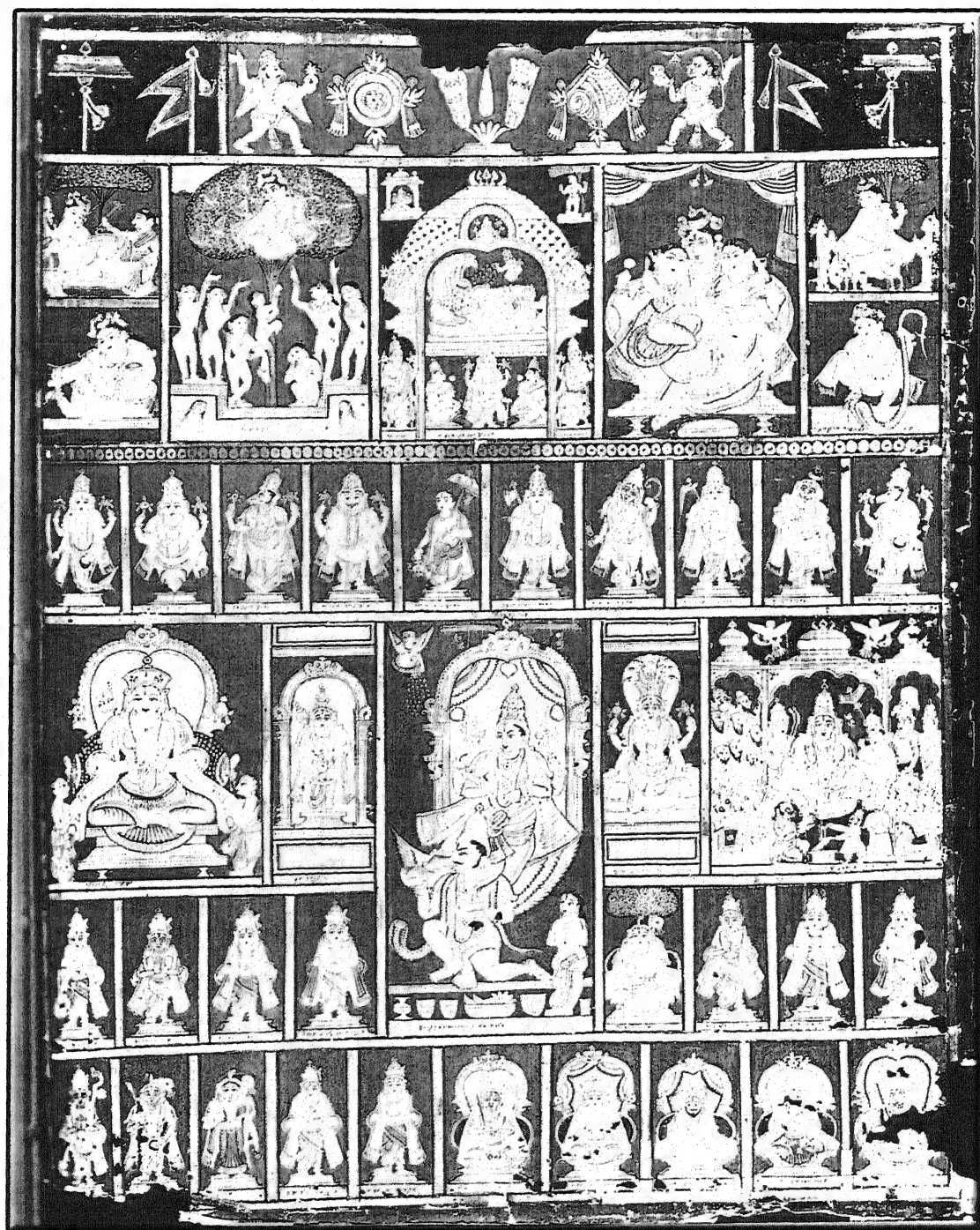
चित्र क्रमांक १०२ . दशावतार एवं विभिन्न देवी -देवताओं का पटचित्र - तंजौर शैली

चित्र क्रमांक १०३ . समुद्र मंथन- आंध्र प्रदेश
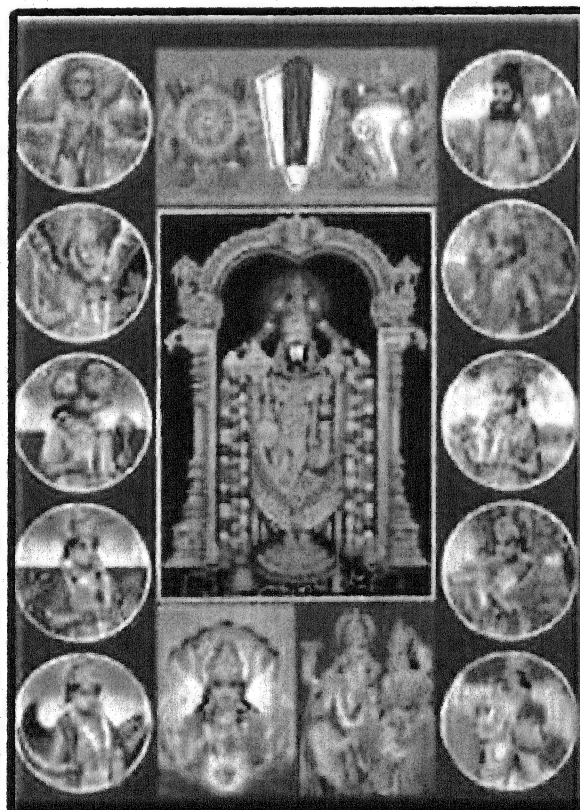
चित्र क्रमांक १०४ . मत्स्य , कूर्म , वराह आदि के अतिरिक्त तिरूपति जी का अंकन
तमिलनाडु और पाण्डुचेरी
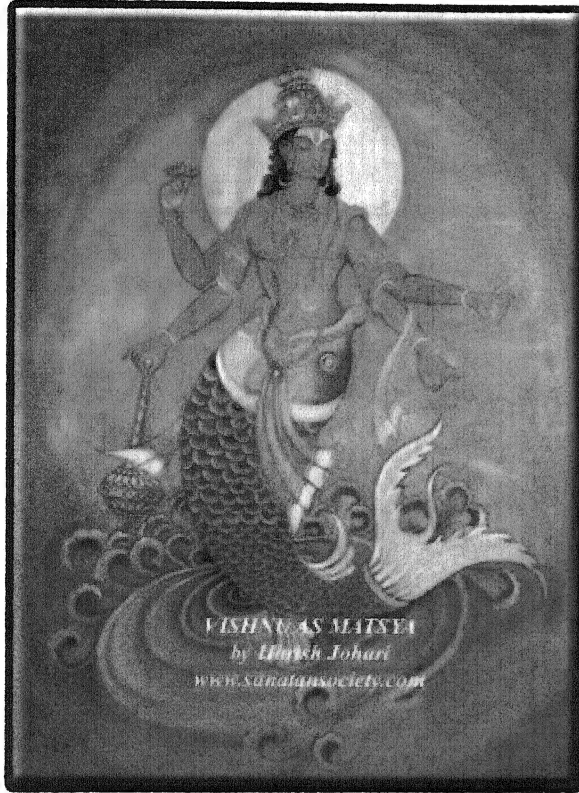
चित्र क्रमांक १०५ . मत्स्य अवतार
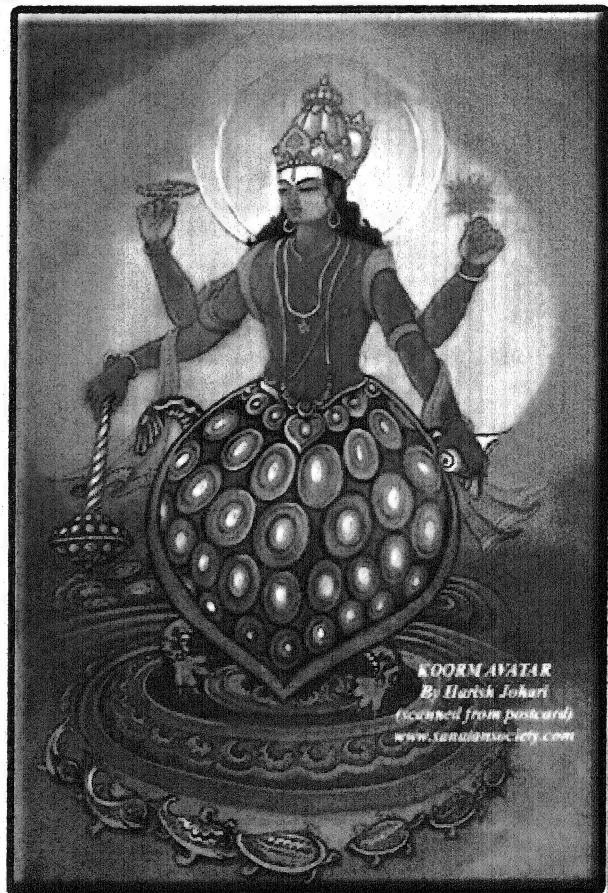
चित्र क्रमांक १०६ . कूर्म अवतार
इन्टरनेट से प्राप्त (हरीश जौहरी-वॉश पेन्टिंग)

चित्र क्रमांक १०७ . वराह अवतार
इन्टरनेट से प्राप्त (हरीश जौहरी-वॉश पेन्टिंग)

चित्र क्रमांक १०८(अ)

चित्र क्रमांक १०८(ब) . पाण्डुलिपि में दशावतार संबंधी अंकन - अपभ्रंश शैली
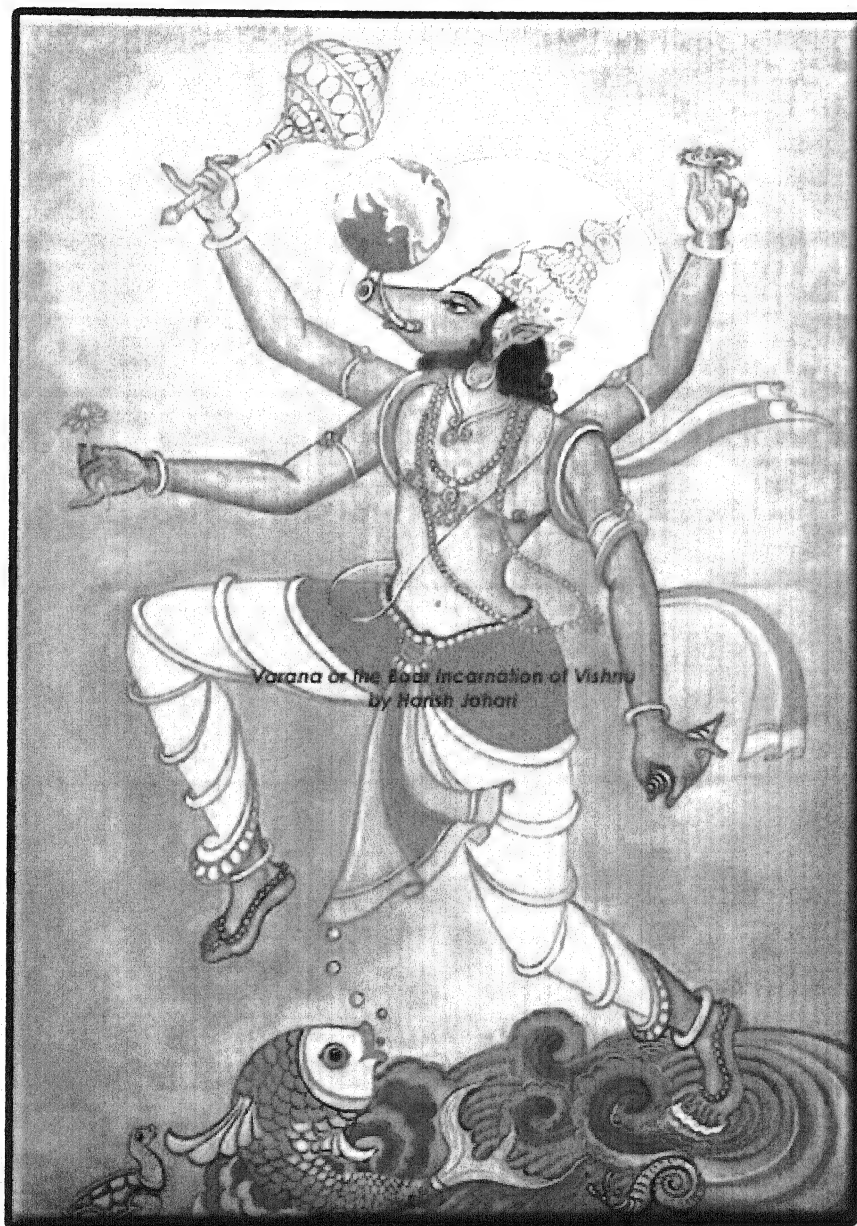
चित्र क्रमांक १०९ . मत्स्य अवतार - अपभ्रंश शैली

चित्र क्रमांक ११० . दशावतार - अपभ्रंश शैली

चित्र क्रमांक १११ . वराह अवतार . बुंदेली शैली (ओरछा)

चित्र क्रमांक ११२ . कूर्म अवतार . बुंदेली शैली (ओरछा)

चित्र क्रमांक ११३ . मत्स्य अवतार - बुंदेली शैली (ओरछा)

चित्र क्रमांक ११४ . वराह अवतार - बुंदेली शैली (दतिया)

चित्र क्रमांक ११५ . मत्स्य, कूर्म, वराह अवतार आदि

चित्र क्रमांक ११६ . वराह अवतार - मेवाड़ शैली (राजस्थान)

चित्र क्रमांक ११७ . मत्स्य अवतार
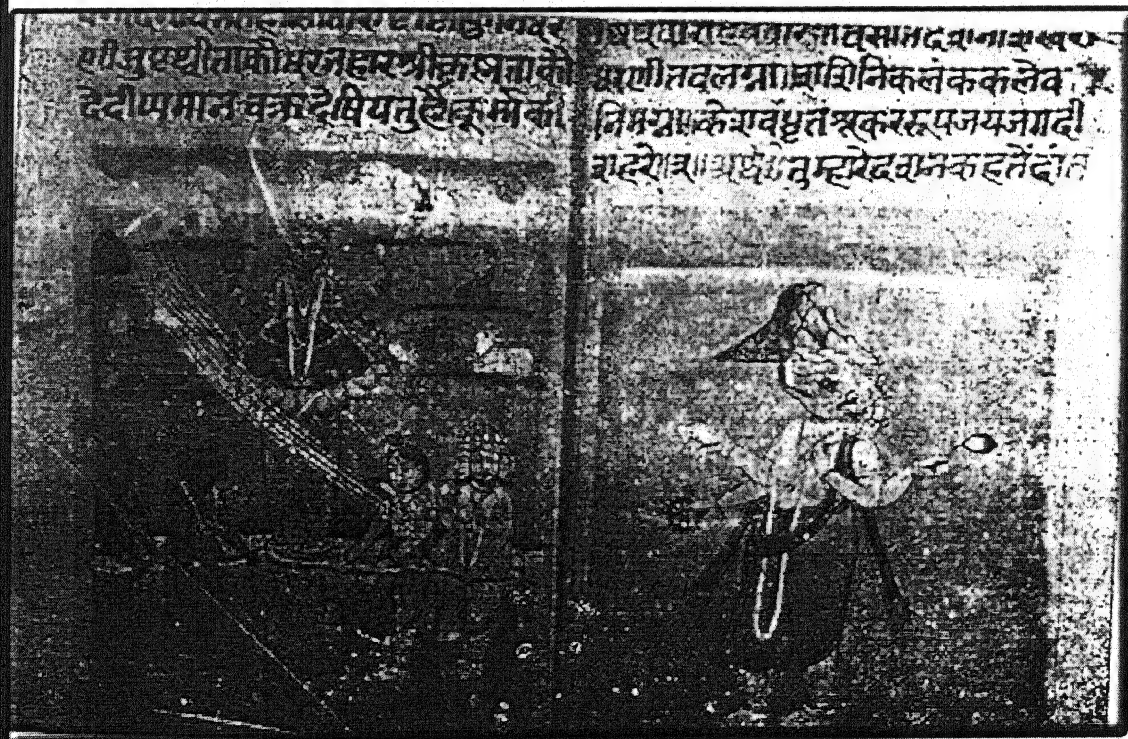
चित्र क्रमांक ११८ . कूर्म एवं वराह अवतार . मेवाड़ शैली (राजस्थान)
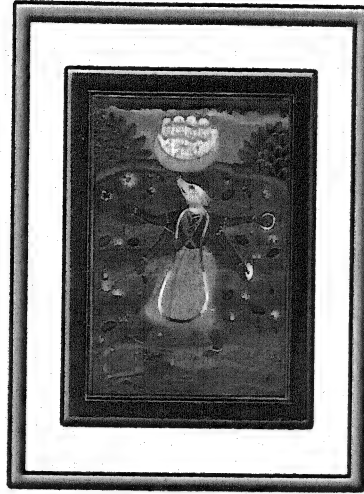
चित्र क्रमांक ११९ . वराह अवतार - बुँदी शैली (हाड़ोती)
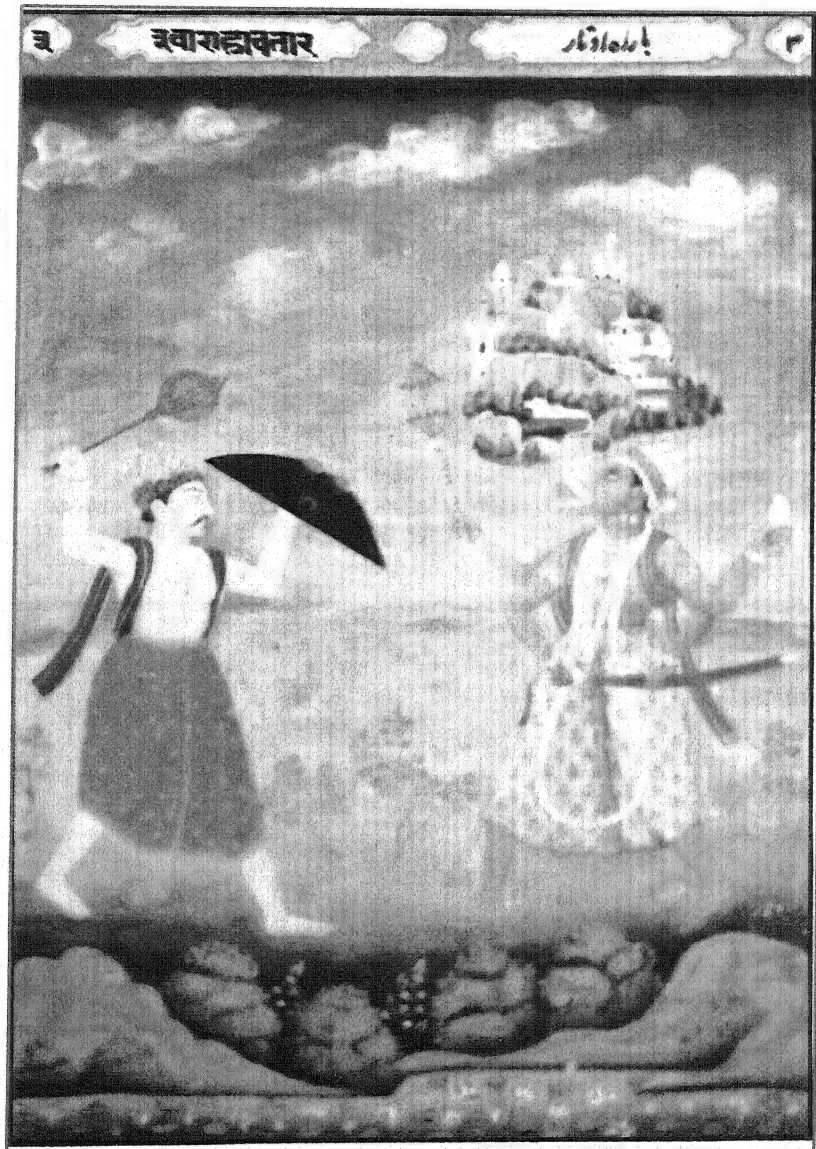
चित्र क्रमांक १२० . वराह अवतार - अलवर शैली (ढूंढार)

चित्र क्रमांक १२१ . वराह अवतार - अलवर शैली (ढूंढार)

चित्र क्रमांक १२२ . मत्स्य अवतार . अलवर शैली (ढूंढार)
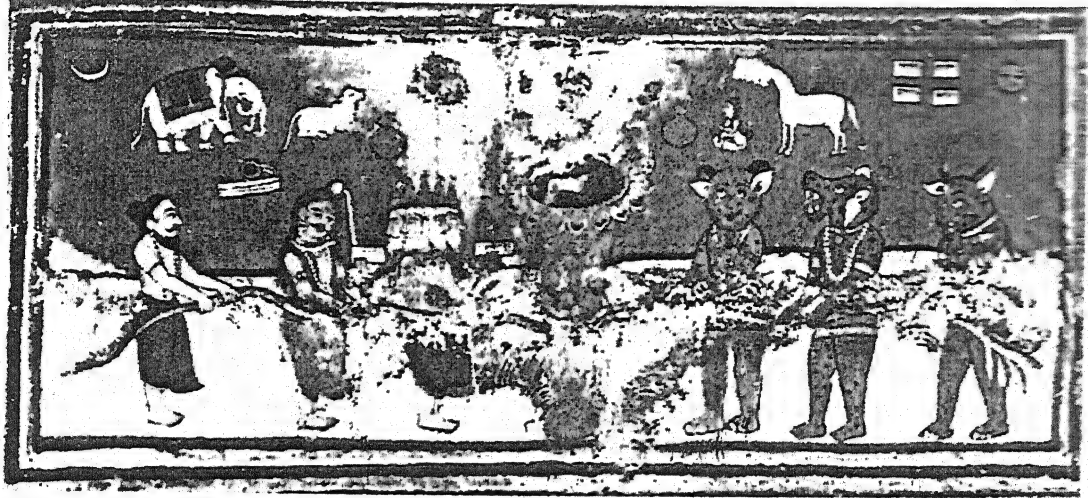
चित्र क्रमांक १२३ . कूर्म अवतार . अलवर शैली (ढूंढार)

चित्र क्रमांक १२४ . मत्स्य अवतार
जयपुर शैली
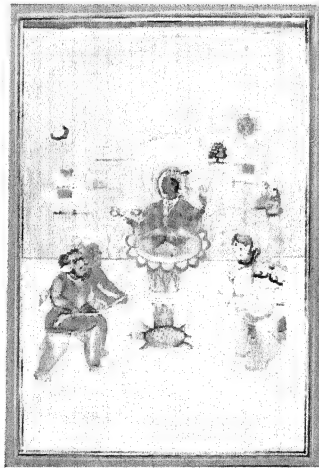
चित्र क्रमांक १२५ . कूर्म अवतार
जयपुर शैली
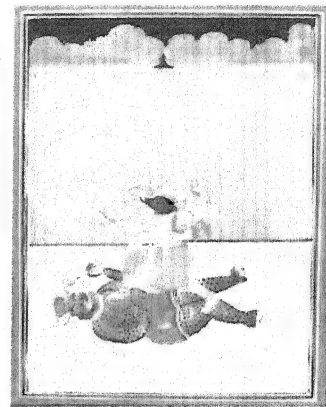
चित्र क्रमांक १२६ . बराह अवतार
जयपुर शैली

चित्र क्रमांक १२७ . मत्स्य अवतार - जयपुर शैली

चित्र क्रमांक १२८ . कूर्म अवतार - जयपुर शैली
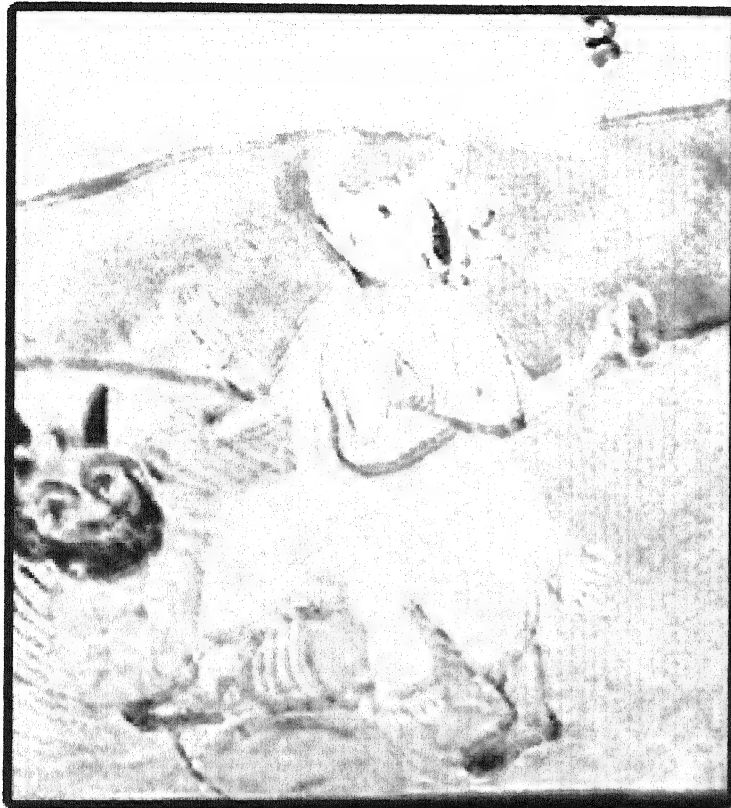
चित्र क्रमांक १२९ . वराह अवतार - जयपुर शैली

चित्र क्रमांक १३० . दशावतार - राजस्थानी पड़चित्र

चित्र क्रमांक १३१ . समुद्र मंथन . कलमकारी
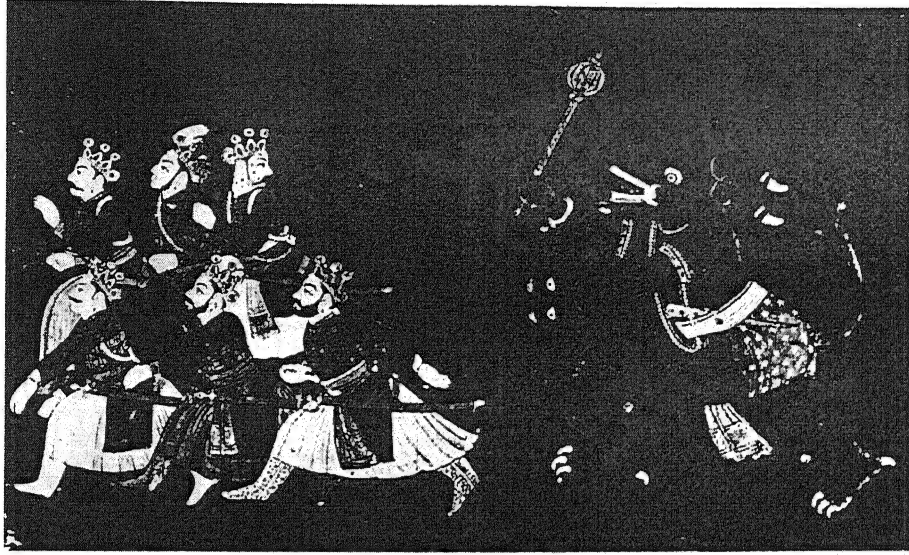
चित्र क्रमांक १३२
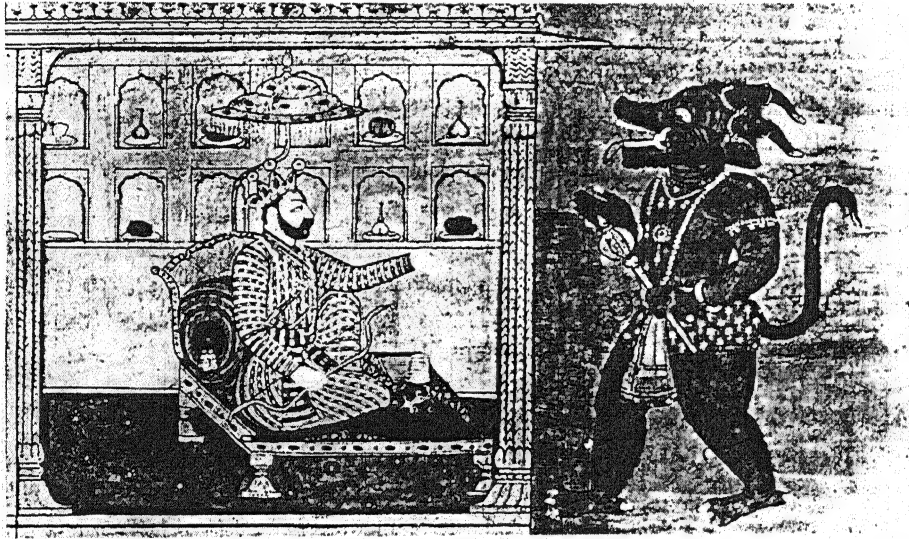
चित्र क्रमांक १३३

चित्र क्रमांक १३४ .वसहोली शैली
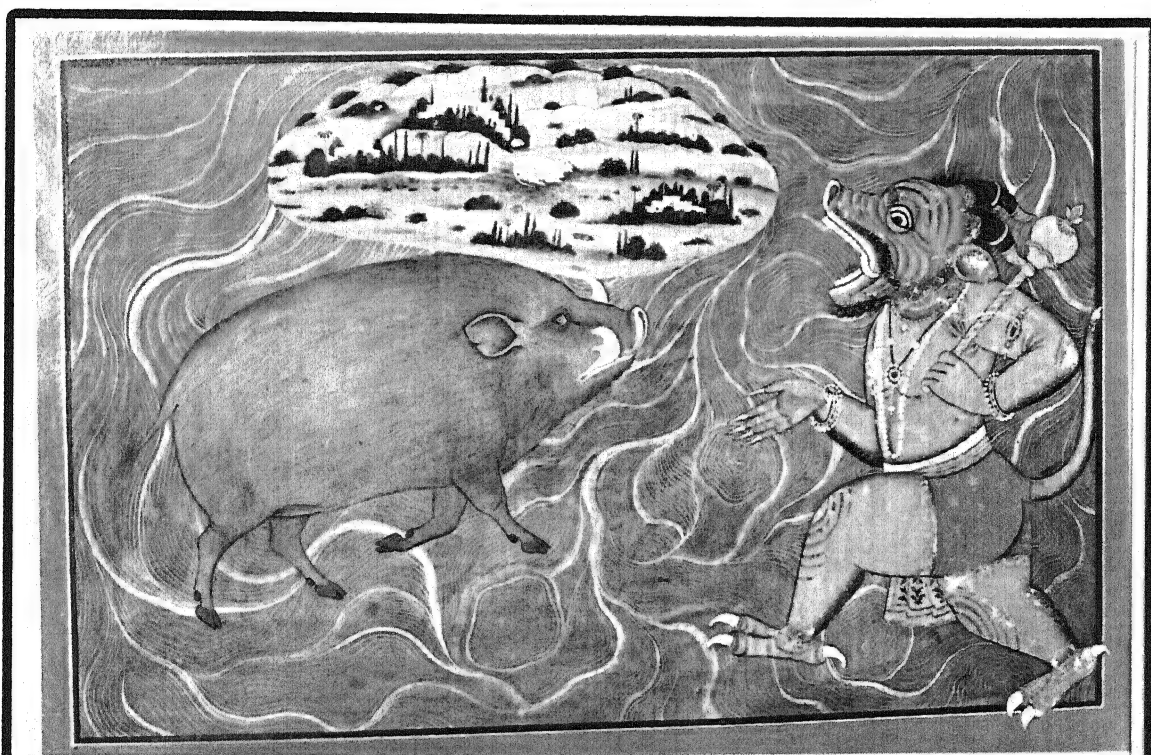
चित्र क्रमांक १३५

चित्र क्रमांक १३६ . पृथ्वी को हिरण्याक्ष से दूर ले जाते हुए वराह . बसौहली शैली

चित्र क्रमांक १३७ - वराह एवं हिरण्याक्ष युद्ध दृश्य- वसोहली शैली

चित्र क्रमांक १३८ - वराह द्वारा हिरण्याक्ष पर प्रहार- वसोहली शैली
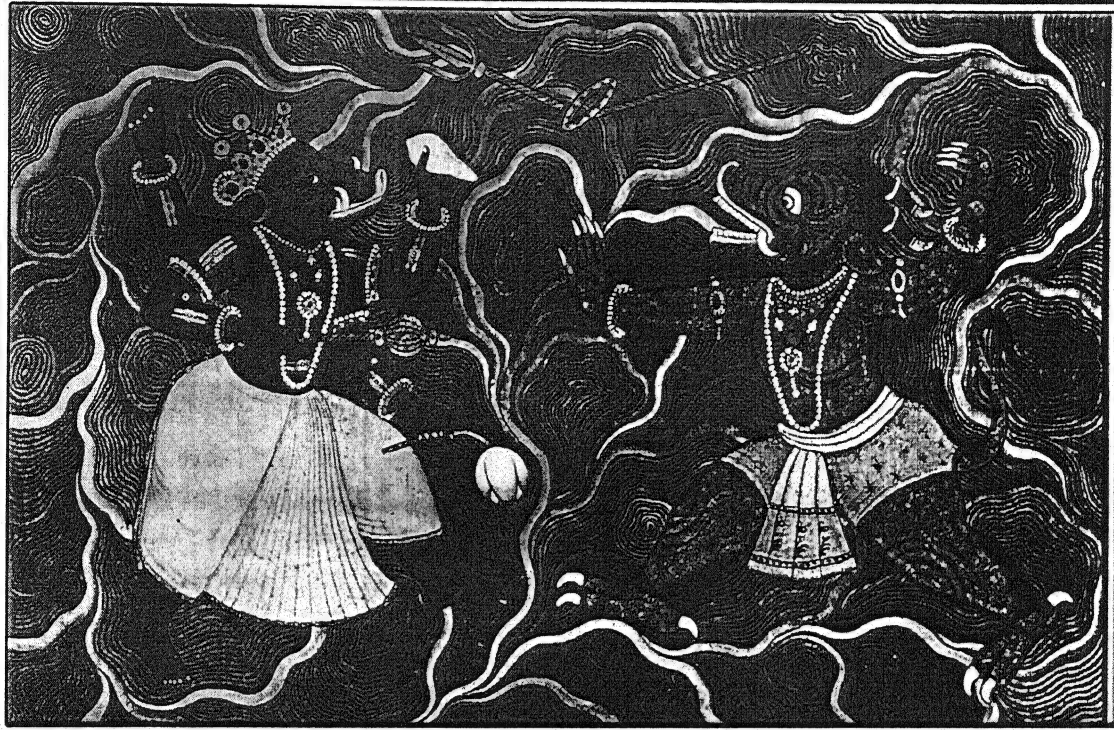
चित्र क्रमांक १३९ . श्री हरि के पराक्रम से दानव का धनुष खण्डित - बसौहली शैली

चित्र क्रमांक १४० . वराह द्वारा दानव का परास्त होना - बसौहली शैली

चित्र क्रमांक १४१ . मानकू एवं बसौहली के क्षेत्रीय चित्रकारों द्वारा बराह का चित्रांकन
बसौहली शैली

चित्र क्रमांक १४२ . बराह व दानव का युद्ध - पहाड़ी शैली
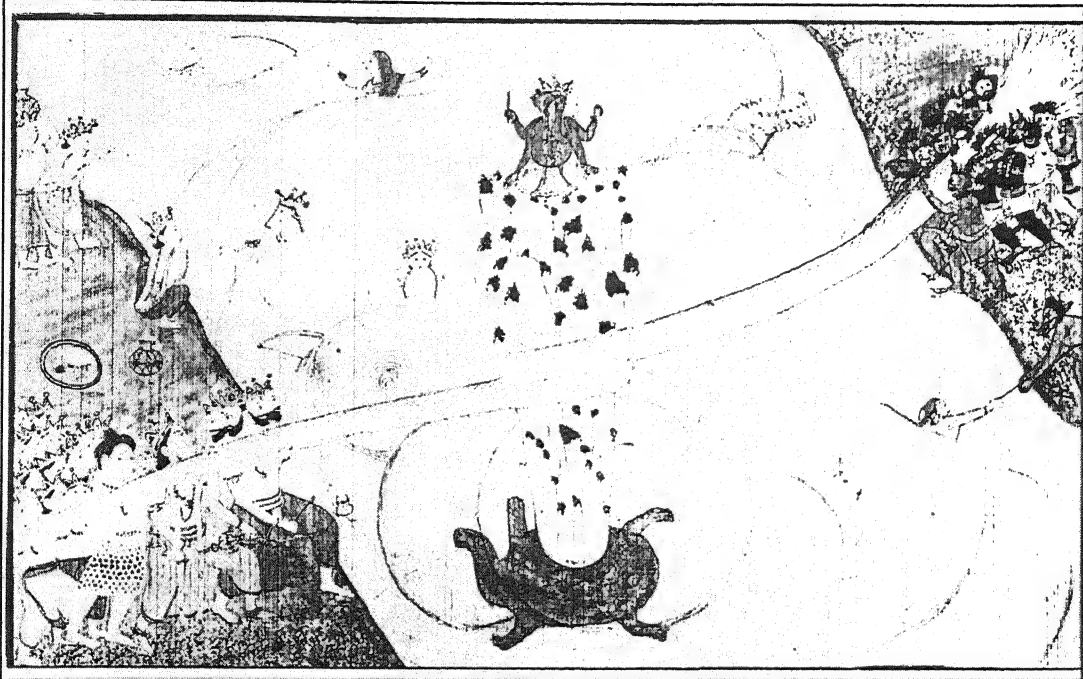
चित्र क्रमांक १४३ . समुद्र मंथन - गुलेर शैली
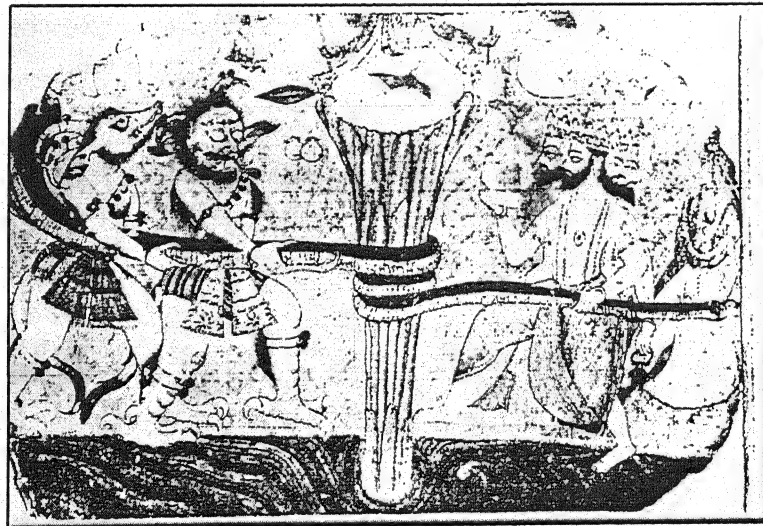
चित्र क्रमांक १४४ . कूर्म अवतार - नूरपुर शैली
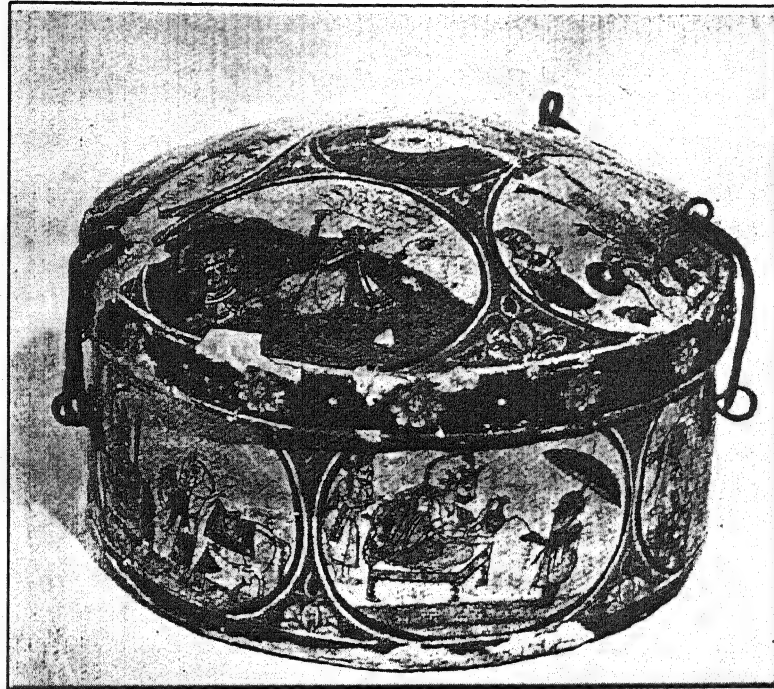
चित्र क्रमांक १४५ . आभूषणों के बक्से पर दशावतार चित्रण - कांगड़ा शैली

चित्र क्रमांक १४६ . वराह अवतार . चम्बा शैली

चित्र क्रमांक १४७ . मत्स्य अवतार - चम्बा शैली
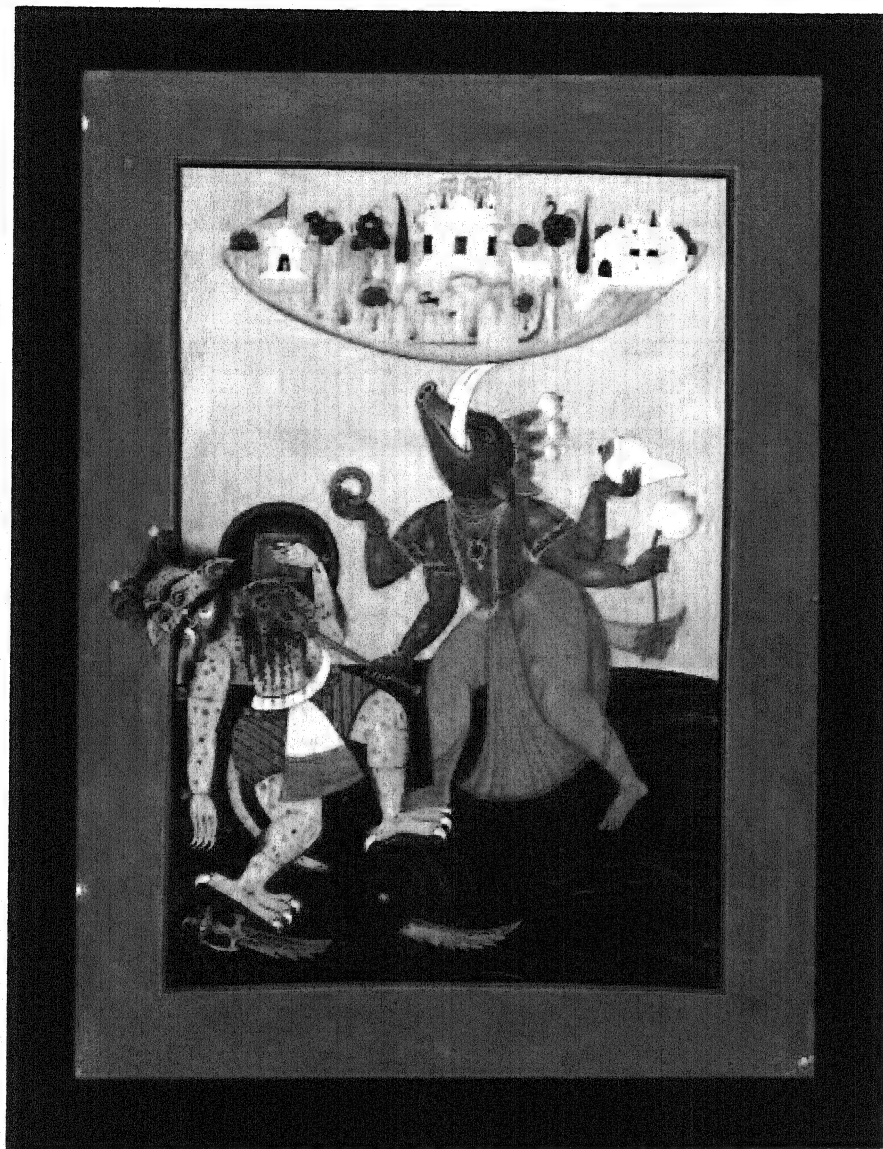
चित्र क्रमांक १४८. वराह अवतार - चम्बा शैली
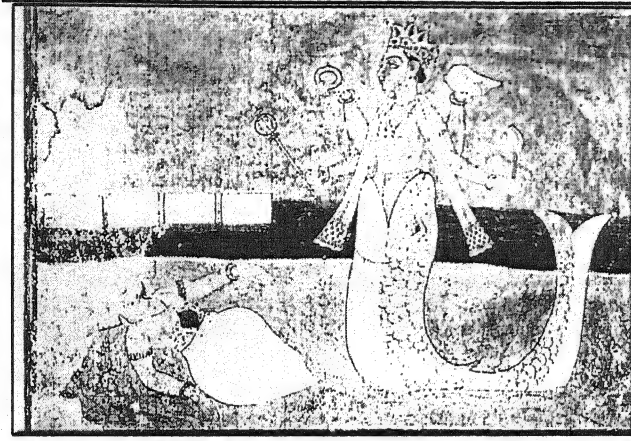
चित्र क्रमांक १४९ - मत्सय अवतार - कूल्लू शैली
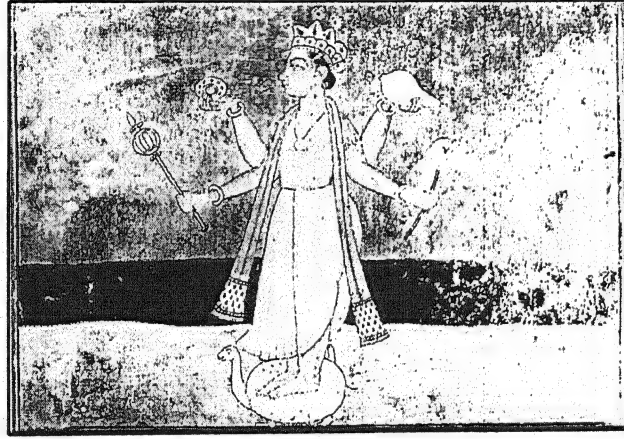
चित्र क्रमांक १५० - कूर्म अवतार - कूल्लू शैली

चित्र क्रमांक १५१ . वराह अवतार - कूल्लू शैली
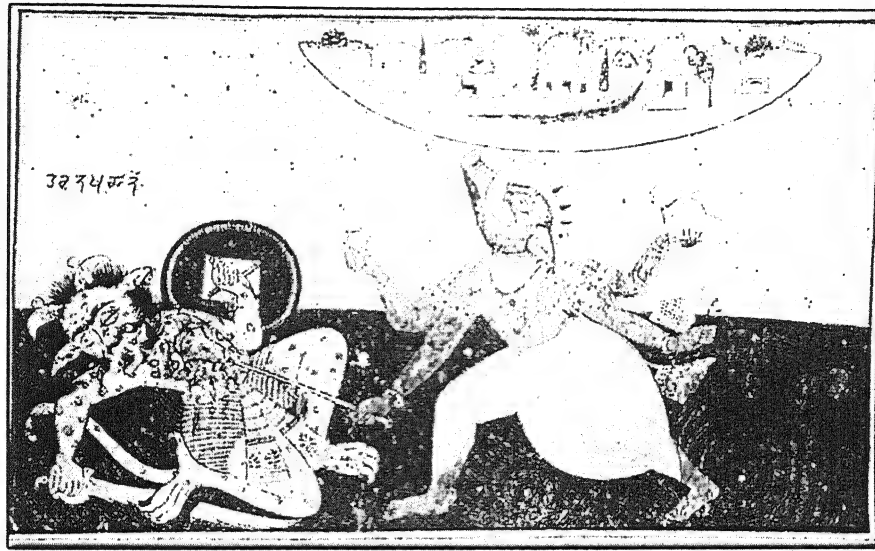
चित्र क्रमांक १५२ . वराह अवतार   जम्मू शैली (मानकूट)

चित्र क्रमांक १५३ . वराह अवतार - कश्मीर शैली
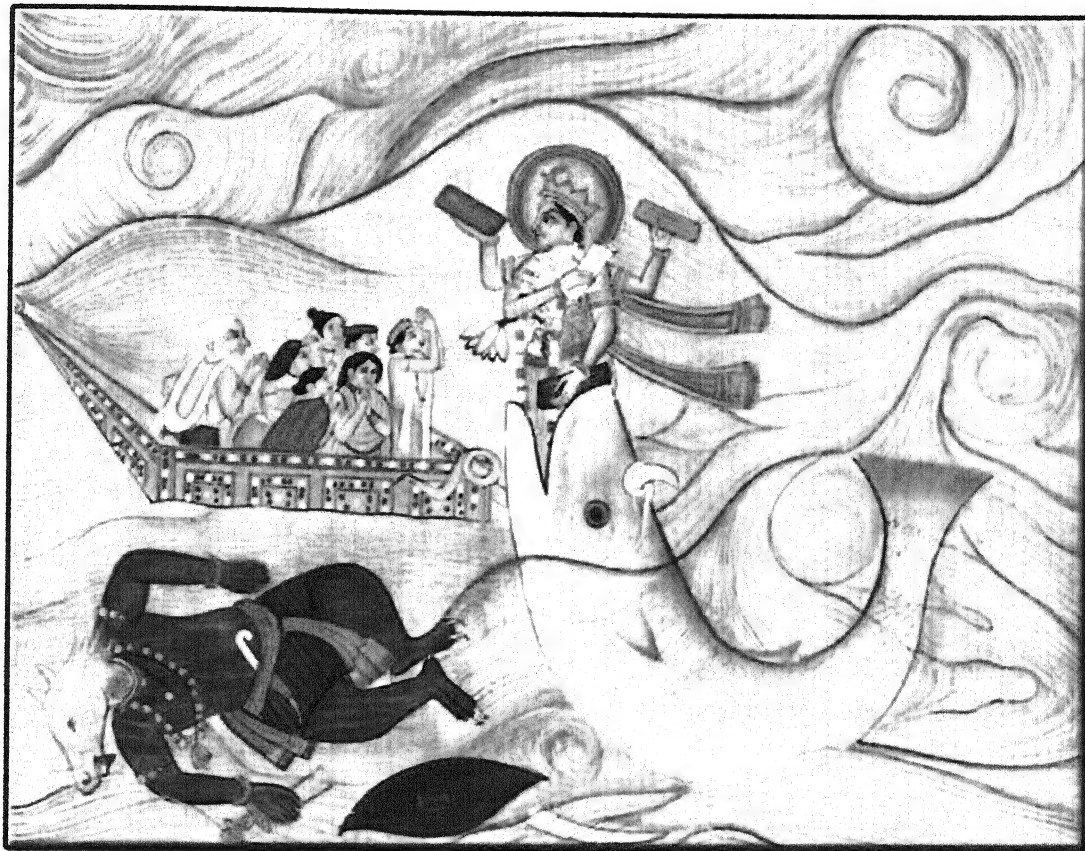
चित्र क्रमांक १५४ - मत्स्य अवतार . गढ़वाल शैली
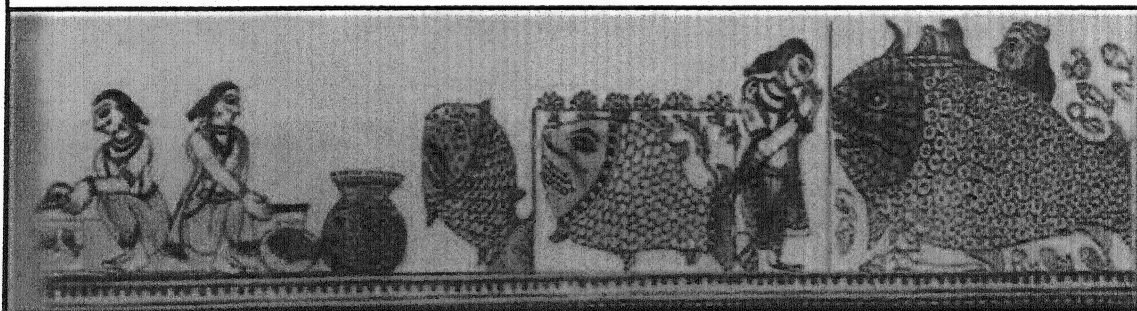
चित्र क्रमांक १५५ . मत्स्य अवतार के कथानक का चित्रांकन -पहाड़ी शैली
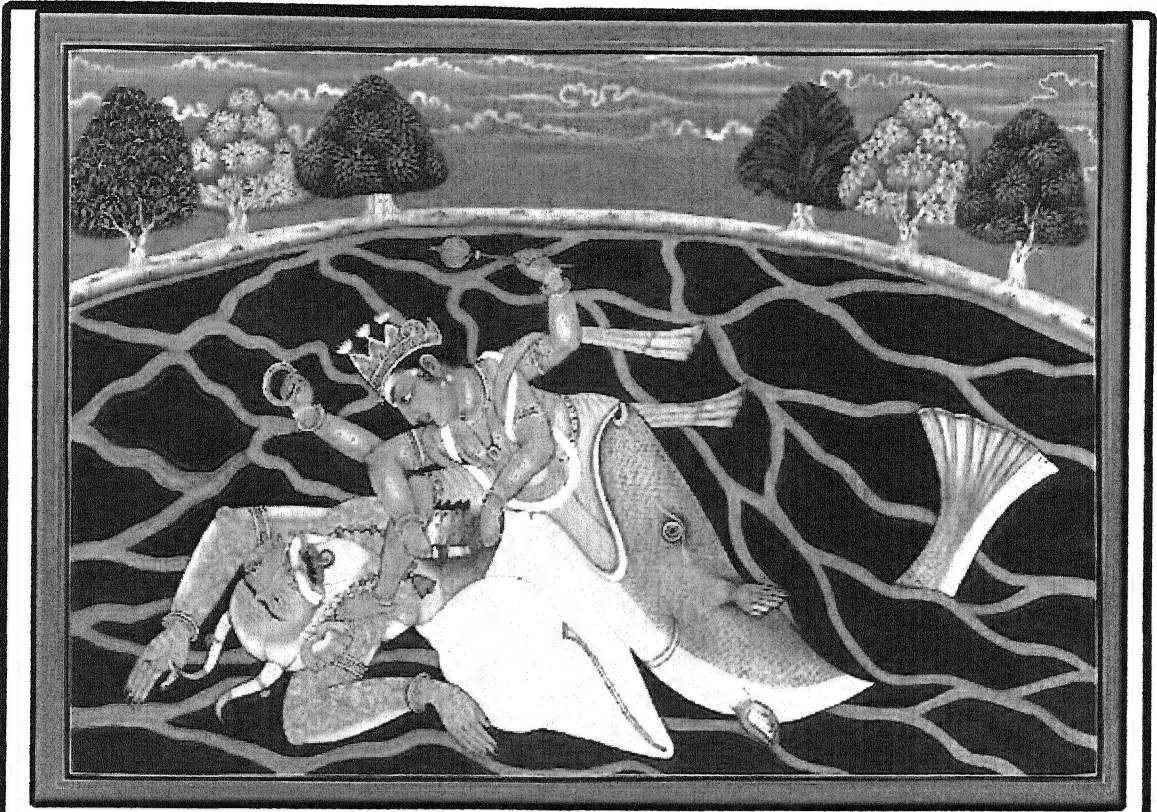
चित्र क्रमांक १५६
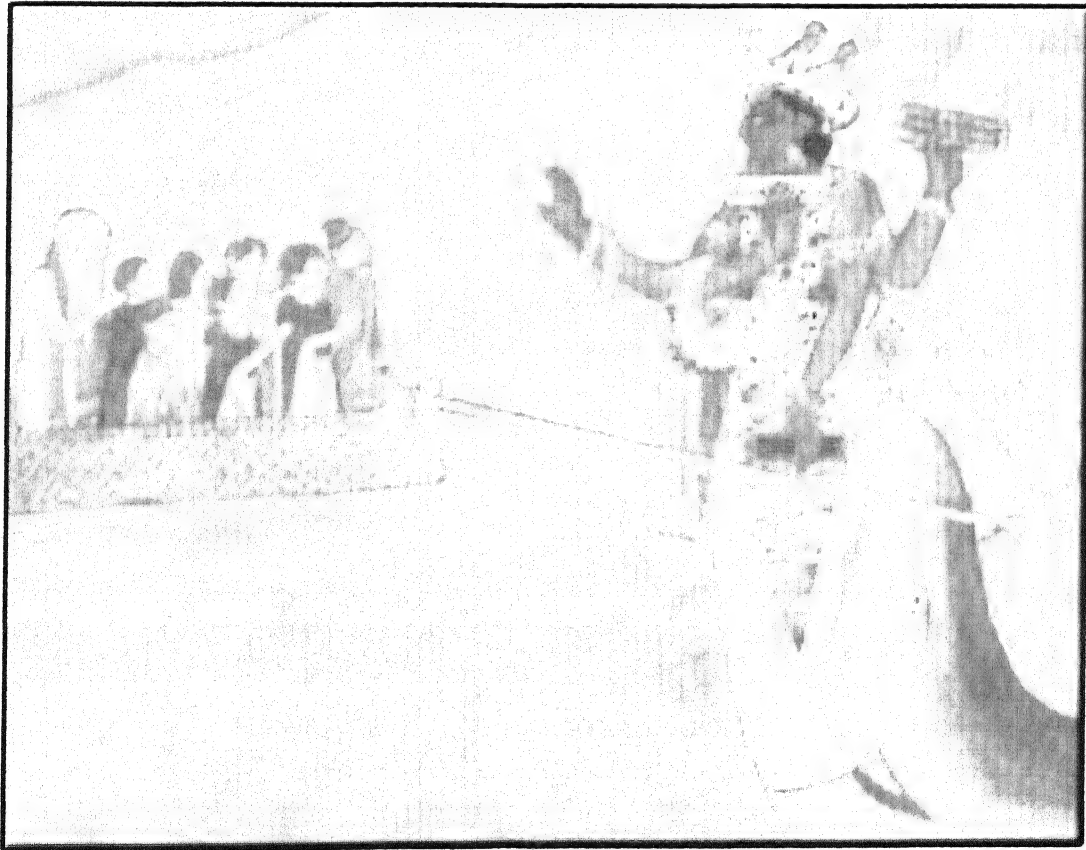
चित्र क्रमांक १५७ . मत्स्य अवतार . पहाड़ी शैली
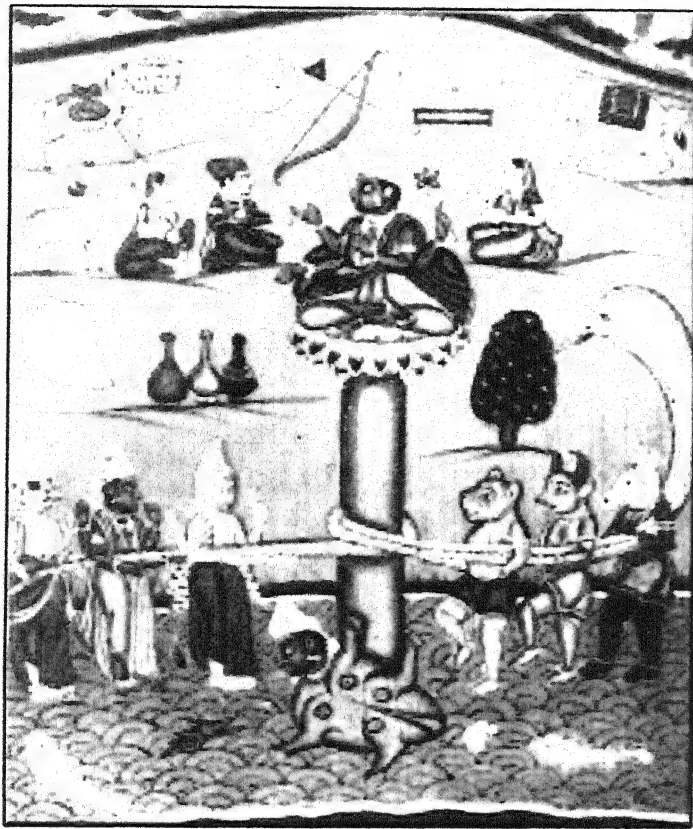
चित्र क्रमांक १५८ . कूर्म अवतार - पहाड़ी शैली
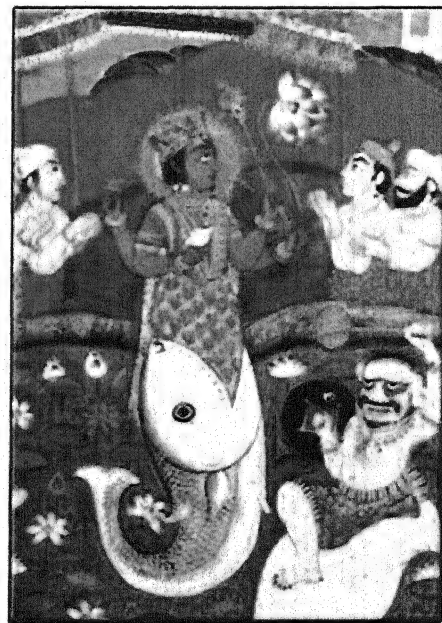
चित्र क्रमांक १५९ . मत्स्य अवतार - पहाड़ी शैली

चित्र क्रमांक १६०

चित्र क्रमांक १६१

चित्र क्रमांक १६२ . मत्स्य अवतार
मधुबनी शैली (बिहार)
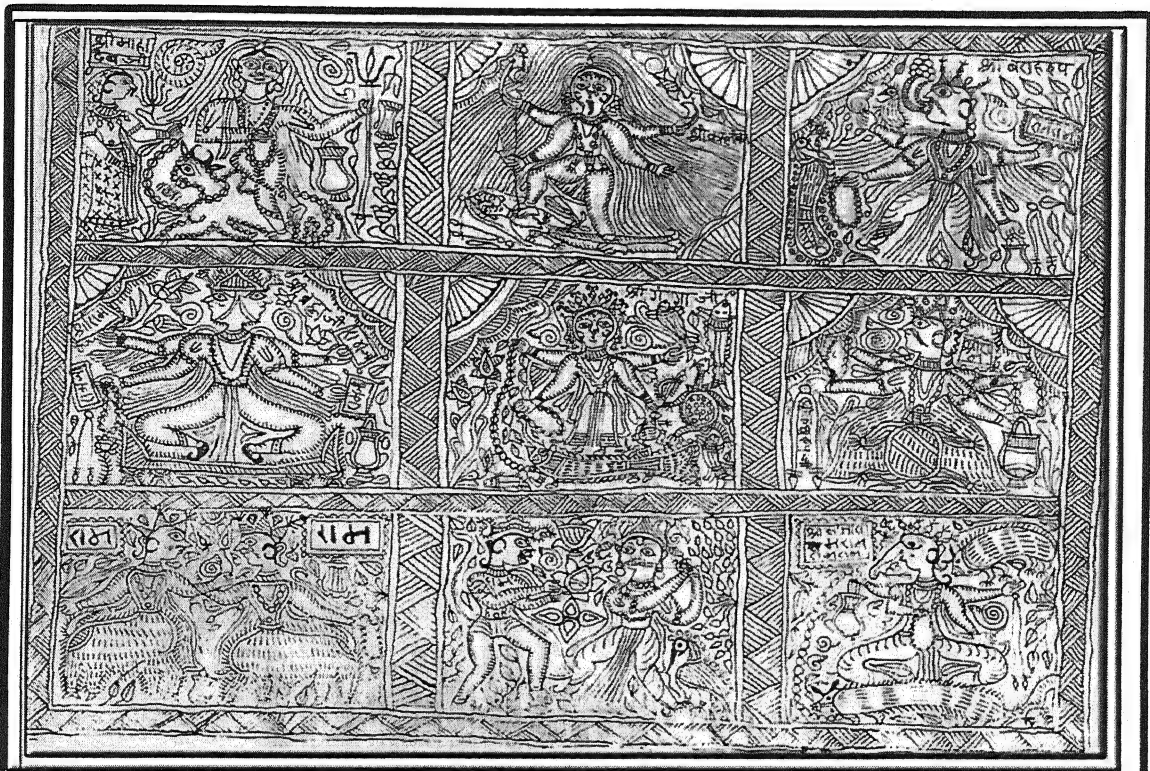
चित्र क्रमांक १६३ - कूर्म , वराह आदि दैवीय स्वरूप - कोहवर कला (बिहार)
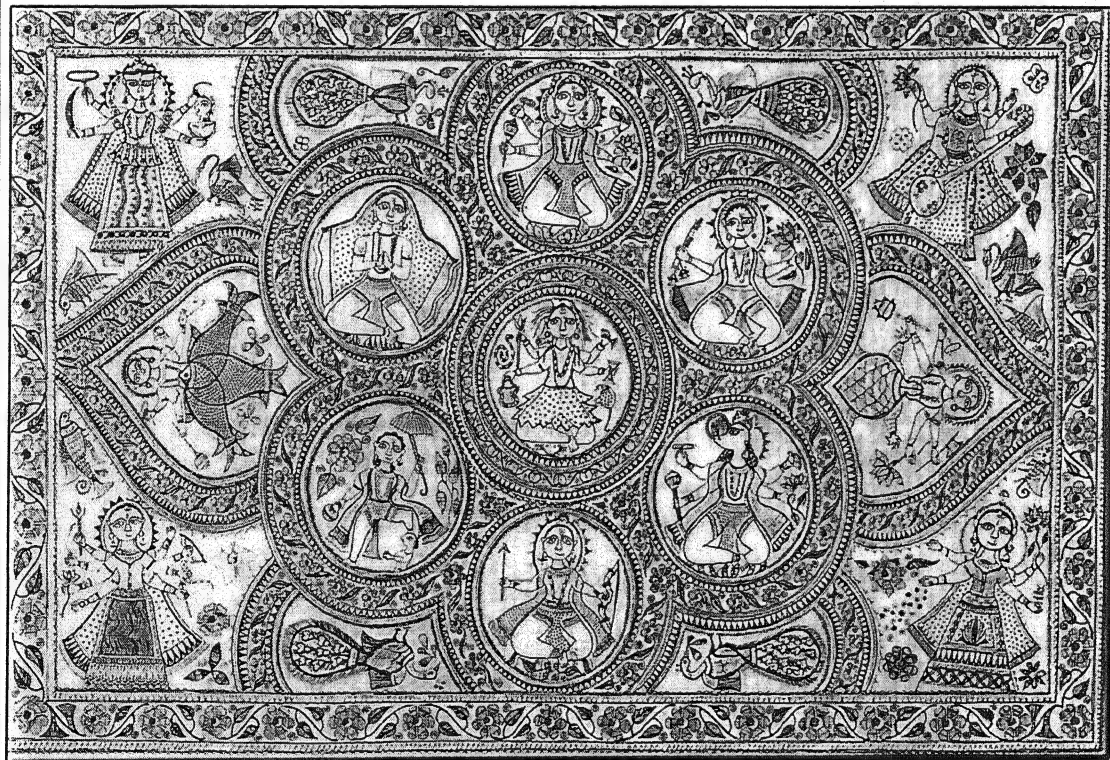
चित्र क्रमांक १६४ - मत्सय, कूर्म , वराह आदि दैवीय स्वरूप - कोहवर कला (बिहार)

चित्र क्रमांक १६५ . वराह अवतार - बिहार की लोक कला

चित्र क्रमांक १६६ . कूर्म अवतार - उड़ीसा की लोक कला

चित्र क्रमांक १६७ - मत्स्य, कूर्म, नरसिंह एवं वराह अवतार- बंगाल की लोक कला
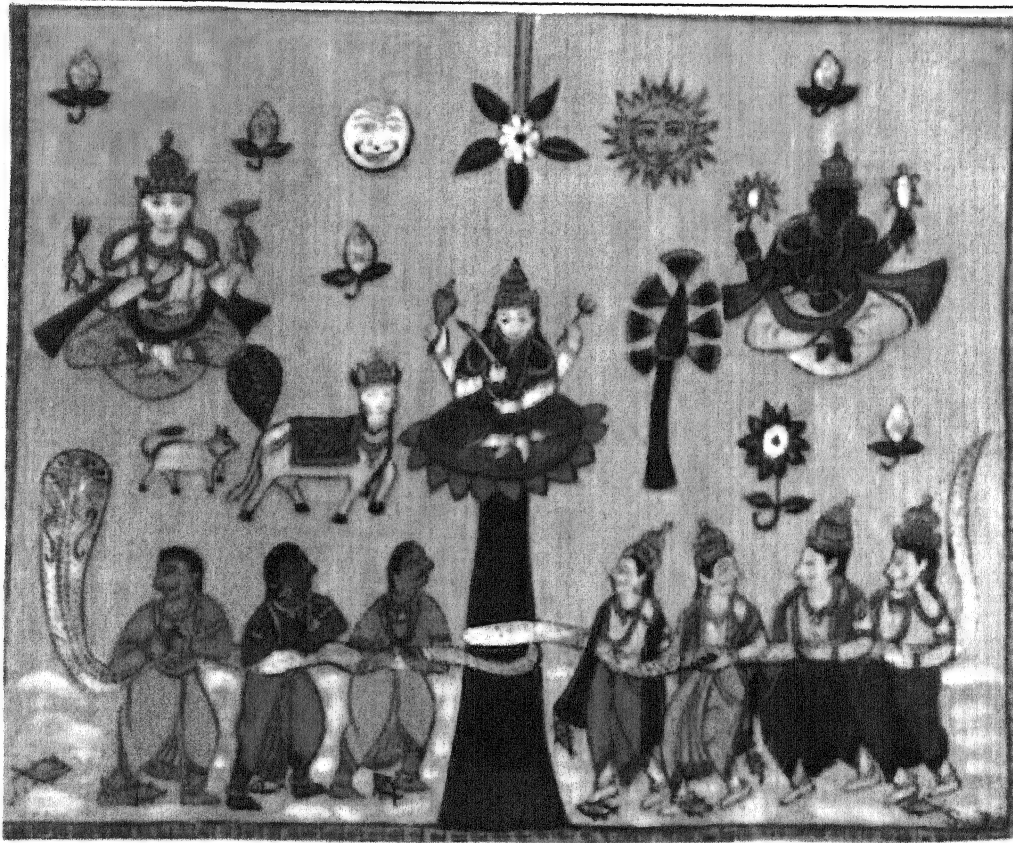
चित्र क्रमांक १६८ . समुद्र मंथन - आंध्र प्रदेश की लोक कला

चित्र क्रमांक १६९ - विष्णु के चौबीस अवतारों का अंकन - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला

चित्र क्रमांक १७० . विष्णु के चौबीस अवतारों का अंकन - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला
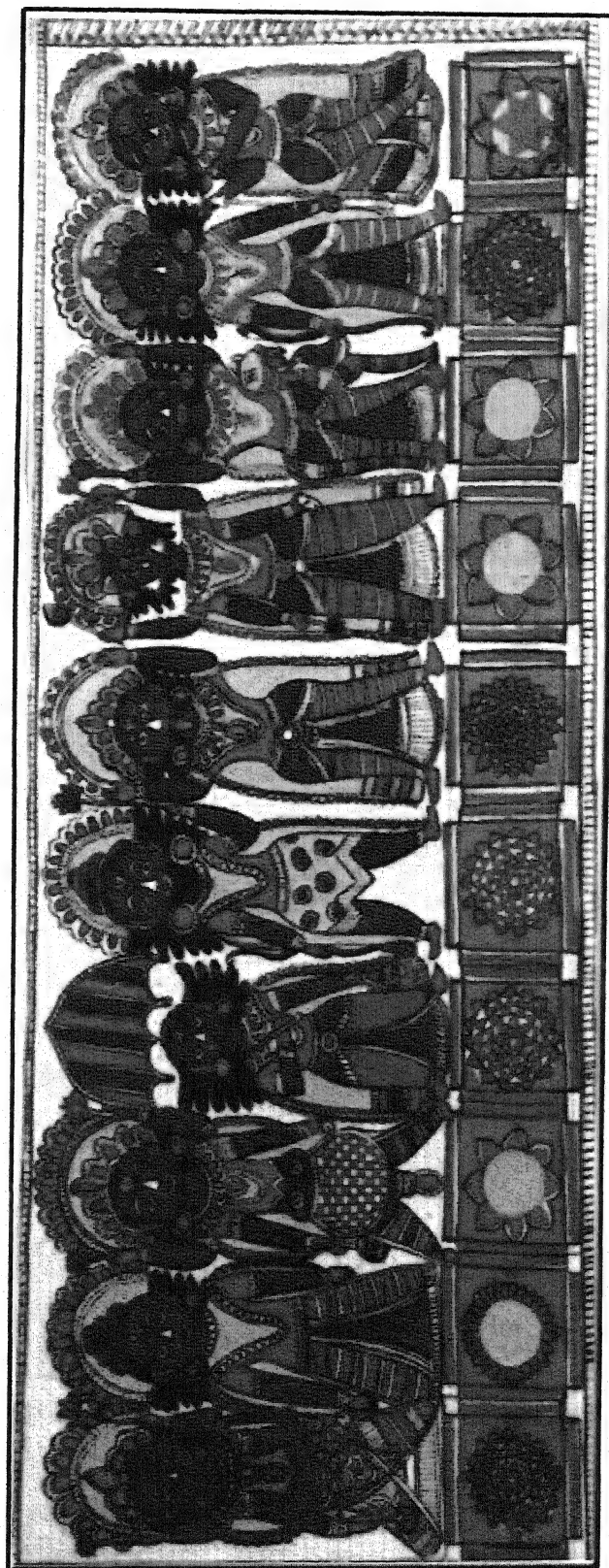
चित्र क्रमांक १७१ . विष्णु के दशावतारों का अंकन - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला
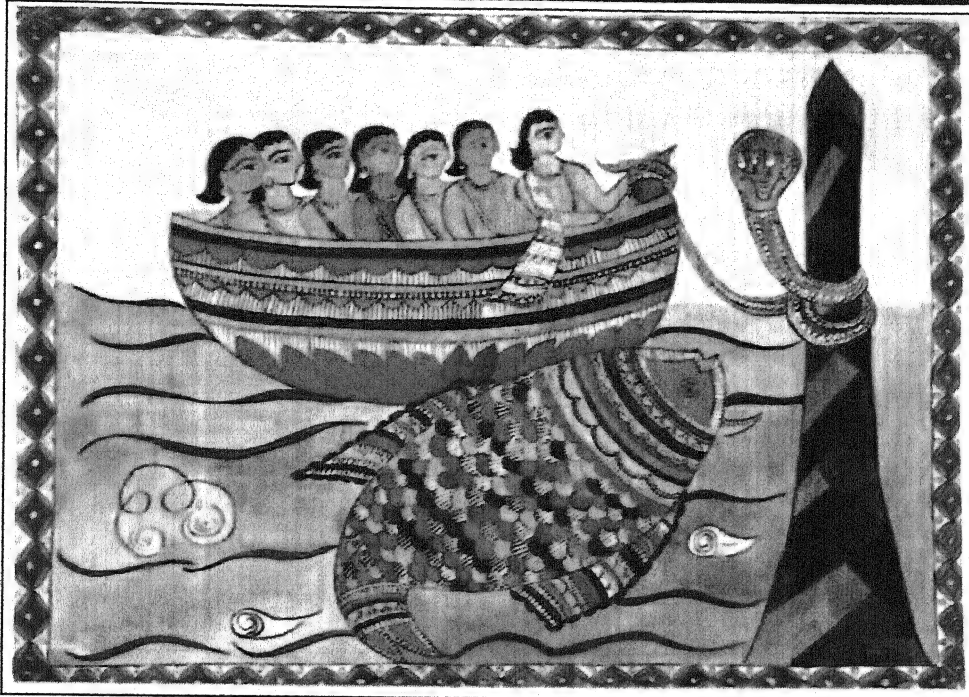
चित्र क्रमांक १७२ . मत्स्य अवतार

चित्र क्रमांक १७३ . कूर्म अवतार - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला

चित्र क्रमांक १७४ . कूर्म अवतार - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला

चित्र क्रमांक १७५ . कूर्म अवतार . इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला

चित्र क्रमांक १७६ . कूर्म अवतार - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला
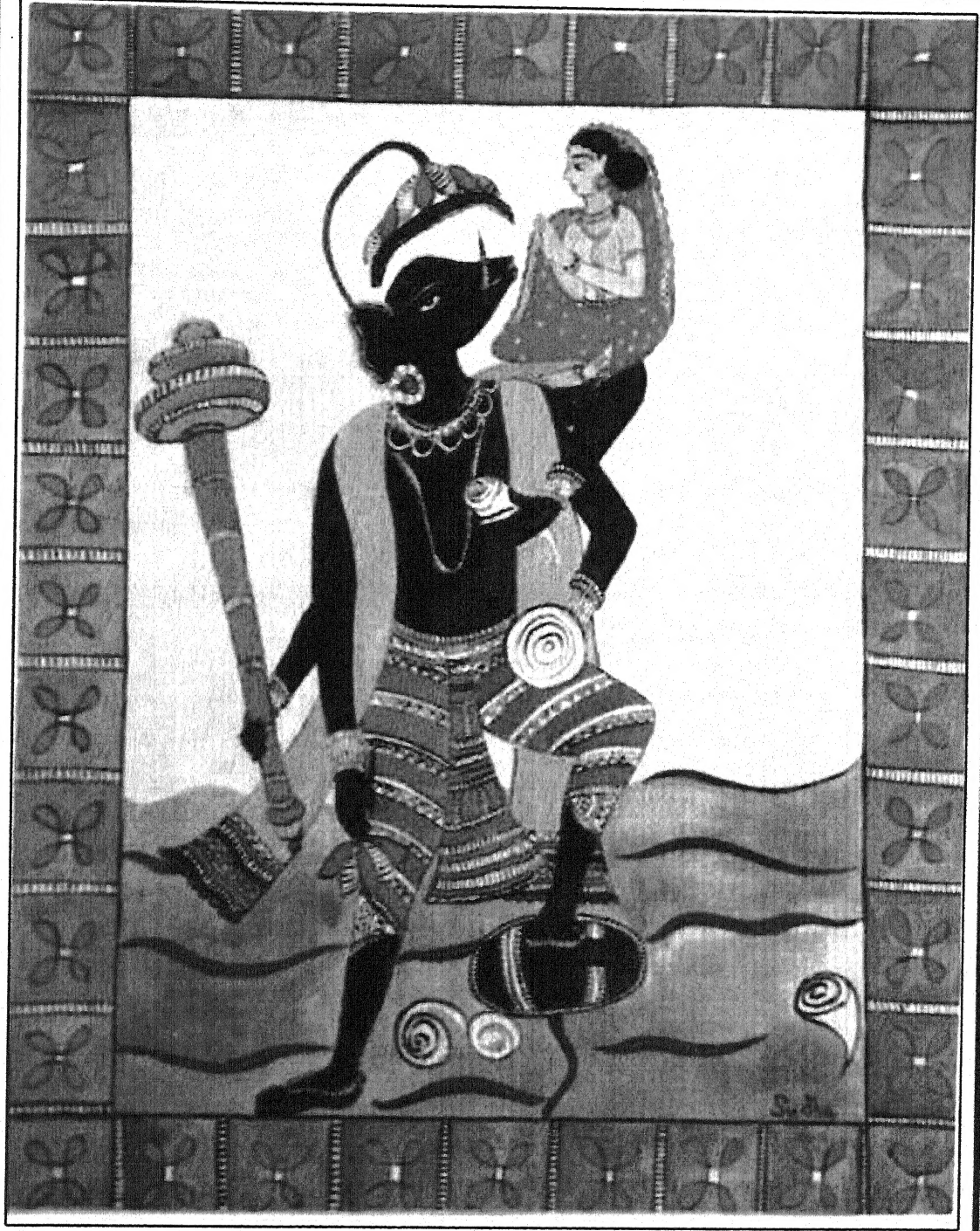
चित्र क्रमांक १७७ . वराह अवतार - इन्टरनेट द्वारा प्राप्त लोक कला